

तुलसी-पूर्व राम-साहित्य



तुलसी-पूर्व राम-साहित्य

[लखनऊ विश्वविद्यालय की पी० एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत
शोध प्रबंध]

डॉ० अमरपाल सिंह

रचना प्रकाशन
इलाहाबाद

प्रकाशक
रचना प्रकाशन
५ खसरोबाग रोड
इलाहाबाद—१

●
प्रथम संस्करण १९६८

●
मन्क
सम्भवन मन्शालय
प्रयाग

मूल्य अठारह रुपये

निवेदन

प्रस्तुत गाव्य प्रबन्ध में तुलसी-पूर्व हिन्दी राम-साहित्य का अध्ययन किया गया है। यह साहित्य अद्यावधि प्रायः अज्ञात एवं अविवक्षित रहा है। आचार्य गुप्त ने गान्ध्यामी तुलसीदास का परिचय दत्त हुए अत्र सतीन दशक पूर्व लिखा था— यद्यपि रामानन्द जी की गिष्य-परम्परा के द्वारा देश के बड़े भाग में राम भक्ति की पुष्टि निरन्तर होती आ रही थी और भक्त लोग फुल्ल पत्तों में राम का महिमा गाते आरंभ पर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में इस भक्ति का परमाञ्ज्वल प्रकाश विद्यमान की मरहटा गतात्मीय पूर्वार्द्ध में गान्ध्यामी तुलसीदास का वाणी द्वारा स्फुरित हुआ। उनका मवनोमुखी प्रतिभा ने नापाकान्त का मारी पद्धतियाँ का राव अपना चमत्कार लिखाया। भाग्य यह है कि रामभक्ति का वह परम विगत साहित्यिक मन्त्र इन्हीं भक्त गिरामणि द्वारा मघटित हुआ जिससे हिन्दी काव्य का प्रौढता का युग आरम्भ हुआ। रामभक्ति का इस परम विगत साहित्यिक मन्त्र के सघटन का श्रेय गान्ध्यामी तुलसीदास की अप्रतिम प्रतिभा को दिया गया है और इस महाकवि का महिमा प्रकाशन में हिन्दी मभाज गव का अनुभव करता रहा है। प्रस्तुत लघु का यह विनम्र मत है कि गान्ध्यामी जी का अनुपम टुनिया का उचित मूल्यांकन का लिए राम साहित्य का विकास नाम एवं परम्परा का अनुगमान परमावश्यक है। इस दृष्टि में पूर्वापर सन्ध्या का सुमचित आकलन अनिवार्य है। गान्ध्यामी जी ने अथ कवियाँ का साथ जि प्राकृत कवि परम मयाने भाषा जिह हरिचरित वचन का उल्लेख कर तथा उनका बलना कर अपन पूर्व-वर्ती कवियाँ एवं पूर्ववर्ती हिन्दी राम-साहित्य का आरंभकत किया है। इस विगा में मात्र करना हमारा कर्तव्य है।

हिन्दी का विज्ञान ने तुलसी-पूर्व हिन्दी राम-साहित्य की सूचना नहीं दी है। आचार्य गुप्त ने गान्ध्यामी तुलसीदास का पूर्व का केवल फुल्ल पत्तों की चर्चा की है। उन्होंने इसमें अधिक जोर नहीं मूखना नहीं की। डा० गान्ध्यामी गुप्त का अल्लोचन का प्रथम चार कवियाँ का पहलू राम राज्य परम्परा में आनना क विमी प्रथ का पता अनातक गदा मियाँ था। डा० राम निरजन पाठ ने तुलसीदास हिन्दी का रामभक्त कवियाँ में गूर सास्थान प्रायः मरप्रथम माना है। इतर डा० भाताप्रमाँ गुप्त और डा० बुल्ब ने इस विषय में कतिपय अनि सति सन सूचताएँ की हैं। इस प्रकार तुलसी का पूर्व का हिन्दी राम-साहित्य अब तक दृष्टिगत नहीं

हो सका। इस कारण मधुन प्राकृत में उपरान्त साहित्य व उपरान्त राम-साहित्य की गौरवगाथा परम्परा तुलसीदास जी व जातिर्भाव व पूर्व श्रुति जान पड़ता थी। इस श्रुति श्रुत्य का गान तथा तुलसी पूर्व व गगन जा सौ वर्षों में रचित राम-साहित्य पर प्रकाश डालने का कार्य गेप बना गया। प्रस्तुत गान प्रबंध में इस अवधि में उपरान्त राम साहित्य की रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रथम प्रयास इस आंग में किया गया है कि हमने पञ्चाय विद्या का ध्यान इस गेप काय का जोर जोरपरिणत होगा।

तुलसी पूर्व हिता राम साहित्य प्रायः अनपलब्ध है। जो सामग्री मिलती भी है वह अधिकांश अप्रकाशित है। सामग्री सम्बन्ध में यह कठिनाई तुलसी सिद्ध है। गत वर्षों में हुए गाय-कार्या तथा राज के परम्बरूप कतिपय ग्रन्थ प्रकाश में आय हैं किन्तु जाकायपाठा गान भन्तरा तथा निजी संप्रदाय में अभा कितना सामग्री भरा पड़ा होगा इसका कल्पना करना भी कठिन है। हस्त-खा तथा अन्य सूत्रा मिलनवाला सामग्री का प्रामाणिकता तथा उमका का निधारण एक जटिल कठिन समस्या है। आगे और काय हान पर इन समस्याओं का निराकरण हो सकेगा एसी मुन जागा है। प्रस्तुत गेप प्रबंध में जन्माया में विभाजित है। सुविधा की दृष्टि से रामचरित मानस के रचनाकाल सन् १६३१ व पूर्व रचित ग्रन्थों को तुलसी-पूर्व हिता राम साहित्य व अलग किया गया है।

प्रथम अध्याय में जाति-का स उक्त ईसा का प्रथम महत्मा की उपरान्त राम साहित्य का मक्षप में विवेचन किया गया है। इस साहित्य पर विचार हिन्दी राम साहित्य की पष्ठभूमि के रूप में किया गया है। रामकथा के पात्रों के नामों का उत्पन्न बन्ध साहित्य में मिलता है। भारतीय परंपरा व रामकथा निहित मानता गया है किन्तु जाधनिक गायकता बन्ध साहित्य में रामकथा का अस्तित्व स्वाकार नही करत। राम साहित्य का उत्पन्न परंपरानुसार इदवाकु के बभवागरी राजवा में आत्याना के रूप में हुई थी। महर्षि वा-मार्ति ने मव प्रथम इन आत्याना का सकलित कर अपन महानाव्य का रचना का थी। महर्षि वात्मीकि की आति रचना का समय विवात्प्रमत्त है किन्तु उपरान्त सामग्री तथा आनुपमिक प्रमाणा व जाधार पर उसका रचनाका ०० व पूर्व से पहले का माना जाना चाहिए। रचनाका की भाति जाति-काय का वनमान स्वरूप में विवात्प्रमत्त है। विद्याना न हम मन्वावाय में प्रपा का कपना का है और वाल का उत्तरका तथा अवतार निर्णय सम्बन्धी स्थान का प्रभिन्न माना है। उनक तकें पर में प म विचार किया गया है। जाति काय में मयप्रथम सम्पूर्ण रामचरित आंग चरित के रूप में प्रस्तुत किया गया है। परवर्ती महाभारत में

भी रामकथा मिलती है किन्तु उसका आधार वात्मीकि रामायण ही है। वात्मीकि रामायण और महाभारत के पश्चात् सस्कृत साहित्य में विद्याल गम साहित्य की रचना हुई। पुराण साहित्य में रामकथा का वर्णन किया गया है। याग वर्णन रामायण अर्थात् रामायण जति मायप्रदायिक रामायणा का रचना हुई। काव्य-नाटक साहित्य में कालिदास के रघुवन तथा भास के प्रतिभा आर अभिषेक नाटका में चक्र परवर्तीका में विपुल गम साहित्य की रचना का गया। यह समस्त साहित्य अपूर्व काव्यश्री सम्बद्ध है। इस साहित्य में रामकथा के स्वरूप में उत्तम नीय परिवर्तन की किया गया है। रामकथा की लालप्रियता से प्रभावित होकर बौद्ध तथा जिनिया न भा इस जपनाया। बौद्ध साहित्य में तोन जानका में रामकथा मिलती है। उनका आधार ब्राह्मण रामकथा है किन्तु उनमें विभिन्नता पाया जाती है। इसा प्रकार धार्मिक आश्रय के कारण रामकथा का जन साहित्य में परिवर्तित किया गया और कथा का जन धर्म के अनुकूल बनाया गया। जनाचार्या न प्राचीन काल में राम साहित्य का प्रणयन किया है। इसा का प्रथम गतात्मा में विमलमूर्ति से चक्र आरम्भिक काल तक जन कविता न पुष्कल राम-साहित्य की रचना का है जिममें विमलन रामकथा मिलती है। भक्ति के उदय के पश्चात् सस्कृत राम-साहित्य में रामकथा में किंचित परिवर्तन भक्ति भावना की तुष्टि के लिए किया गया। ये परवर्ती साहित्य में ललित हुए हैं। यह समस्त सामग्री हिन्दी राम-कविता के गामने था। पञ्चभूमि के रूप में उपलब्ध सामग्री के विवरण में डा० चक्रे तथा अथ विद्वाना के गापकाय में बड़ी सहायता मिली है लवण उनका प्रति आभा प्रकट करता है।

इस साहित्य सिद्धान्तकारण के अतगत रामभक्ति के विवास तथा गित्य में रामकथा पर विचार किया गया है। रामभक्ति का सम्बन्ध अवतारवाद की भावना में है। इस कारण अवतारवाद के विकास तथा आल्लारयता तक भक्ति के विकास पर दृष्टिपात किया गया है। भक्ति प्राल्पलन तथा मध्यरागीन हिन्दी भक्ति-साहित्य का अभिन्न सम्बन्ध है। इसी प्रकार भारतीय गित्य में रामकथा मिलती है। गुणरावान गित्य तथा परवर्तीका में निर्मित मन्त्रि मूर्तिया में रामकथा का अकन हुआ है। रामचरित के इस पर पर मध्ये य विवरण प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय में जन द्वारा अपभ्रंश में रचित राम-साहित्य का विवरण किया गया है। अपभ्रंश में रात महाकविता के राम-साहित्य का पता चलता है। अपभ्रंश का सर्वप्रथम महाकाव्य रूपम् हुन पञ्चम चरित है जिसमें जन धर्म के अनुसार रामकथा का विस्तृत वर्णन किया गया है। स्वयम् आठवीं गतात्मा में

वर्तमान थे। उन्होंने अपनी रचना विमल सूरि की परम्परा में की है। दसवीं शताब्दी में महाकवि पुष्पक ने महापुराण की रचना की जो जादिपुराण और उत्तरपुराण दो खण्डों में विभक्त है। उत्तरपुराण के अन्तर्गत ग्यारह सर्गों में रामकथा का वर्णन किया गया है जिस पद्य चरित अथवा पद्य-चरित कहा जाता है। पुष्पक ने रामकथा की रचना गणभद्राचार्य की परम्परा में की है। तीसरे जन महाकवि रघू ने पद्मपुराण की रचना की है। यह ग्रंथ अप्रकाशित है। रघू विनय की पद्धतों शताब्दी के अन्त में वर्तमान थे। इन तीनों महाकवियों का रचनाश्रम पर सश्रम में प्रकाश प्राप्त हुआ है।

तृतीय अध्याय में दशावतार वर्णन परम्परा तथा हिन्दी में इस विषय पर उपलब्ध रामा में दशावतार वर्णन पर विचार किया गया है। दशावतार वर्णन की परम्परा इमा का प्रथम सहस्राब्दी के मध्य में मिलती है। इस अन्तर्गत अवतारों का कथा शैली का सश्रम में वर्णन किया गया है। इस परम्परा के अन्तर्गत मित्रवाला मामग्री का सश्रम लेखक ने विभिन्न मूला से किया है। ११ वा शताब्दी में रचित क्षम का दशावतार चरितम् इस परम्परा का विनिष्ट रचना है। इन अवतार वर्णन में जय अवतारों की कथा के साथ रामकथा भी मिलती है। रामा के तृतीय समय में जिसे दशावतार वर्णन के कारण जय दसम कहा गया है रामकथा का गवी है। इसमें राम रावण युद्ध का वर्णन विस्तार से किया गया है। जय प्रमगा का सश्रम में निर्देश किया गया है। अवतार वर्णन के रूप में रामकथा का वर्णन परवर्तीकाल में भी मिलता है। इस दृष्टि से रामों का जय दसम तथा उनके अन्तर्गत आपी रामकथा महत्वपूर्ण है।

चतुर्थ अध्याय में मध्ययुगान् धार्मिक चेतना के नेता स्वामी रामानन्द के जीवनवत्त उनकी रामभक्ति तथा उनके नाम से मिलने वाली हिन्दी रचनाओं का अध्ययन किया गया है। स्वामी रामानन्द का स्थितिकाठ विवाहग्रस्त है। प्रस्तुत लेखक ने मग्नराय में माय ग्रंथ अगस्त्य संहिता के आधार पर रामानन्द जी का स्थितिकाल विषय सन् १३५६ से लेकर १४६७ तक माना है। उनके जीवनवत्त के सवध में प्रामाणिक सामग्री का अभाव है। अगस्त्य संहिता तथा जय मूला में मिलने वाली मामग्री का उल्लेख इस सवध में किया गया है। नाभास के माय पर तथा स्वामी जी के दो प्रामाणिक ग्रंथ वर्णवमना जभास्कर तथा श्री रामानन्द पद्धति के आधार पर उनकी विषय परम्परा रामभक्ति, सवधी सिद्धान्त तथा रामभक्ति के प्रचार के सवध में विचार किया गया है। स्वामी रामानन्द के नाम में अब तक जितनी हिन्दी रचनाओं की सूचना मिली है उनका उल्लेख इस परिष्कार में किया गया है और उन पर विचार किया गया है। इन रचनाओं

की प्रामाणिकता विवादास्पद है। प्रस्तुत लेखक ने हनुमान-स्तुति सम्बन्धी पत्र को छाड़ गये रचनाओं का प्रामाणिक नहीं स्वीकार किया है। इनमें से कई रचनाएँ स्पष्टतः स्वामी रामानन्द कृत नहीं हैं। रचनाओं के जब तक प्राचीन हस्तलेख न मिल जायें तब तक उनकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध में निश्चित मत व्यक्त नहीं किया जा सकता। भक्ति आन्दोलन के प्रसार तथा हिन्दी भक्ति साहित्य के निर्माण में स्वामी रामानन्द के अमूल्य योग का उल्लेख तथा मूल्यांकन इस परिच्छेद में किया गया है।

पाँचवें अध्याय में आदिकाव्य के भाषा रूपान्तर की परम्परा तथा गास्वामी विष्णुनाम कृत भाषा वाल्मीकि रामायण का विवचन प्रस्तुत किया गया है। वार्त्तिक रामायण महाभारत तथा श्रीमद्भागवत का भाषा रूपान्तर प्रस्तुत करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। महाभारत तथा श्रीमद्भागवत के हिन्दी रूपान्तर उपलब्ध हैं। वार्त्तिक रामायण का भाषा रूपान्तर पहलू-महलू गास्वामी विष्णुनामकृत भाषा वाल्मीकि रामायण में मिलता है। इस ग्रन्थ का एवमात्र उपलब्ध हस्तलेख म्युनिमिषठ सग्रहालय इलाहाबाद में सुरंगित है। इस ग्रन्थ में वाल्मीकि रामायण का संक्षिप्त रूपान्तर तीन काण्डों में किया गया है। उत्तरकाण्ड अपूर्ण है। गास्वामी विष्णुनाम विद्वान् का १५ वाँ गताङ्की के जन्म में बतमान था। इस रचना का अर्थ प्रनियाँ मित्र जान पर इसका स्वरूप निश्चित किया जा सकता। गास्वामी विष्णुनाम ने तुलसीदास जी से लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व महत्वपूर्ण रचनाएँ की हैं। हिन्दी साहित्य में इन्होंने महत् गौरवपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए।

छठे अध्याय में दाम्य भक्ति के विवास तथा ईश्वरदास की रचनाओं का अध्ययन किया गया है। स्वामी रामानन्द ने विद्वान् का १४ वाँ १५ वाँ गताङ्की में राम की दाम्य भक्ति का प्रचार किया था। इस दाम्य भक्ति का हिन्दी राम साहित्य में प्रथम गाथात्कार ईश्वरदास की रचनाओं में होता है। ईश्वरदास की रामचरित गम्बघा तीन रचनाएँ उपलब्ध हुई हैं। ये हैं—भरत विलाप अर्थात् पञ्ज और राम जन्म। ईश्वरदास का एक अन्य रचना मत्स्यवनी कथा है। रामचरित सन्धी इन रचनाओं में जिसे दाम्य भक्ति का पल्लव हुआ है उसका विपुल विवास रामचरित मातंग तथा तुलसीदास जी का अर्थ रचनाओं में मिलता है। ईश्वरदास की रचनाएँ गास्वामी तुलसीदास के पूर्व दाम्य भक्ति परंपरा में कहीं के रूप में दृष्टिगत होती हैं। ईश्वरदास ने मत्स्यवनी कथा का रचनाकाल सन् १५५८ दिया है। इस प्रकार ये विद्वान् का १६ वाँ गताङ्की के उत्तरार्द्ध में बतमान था। इनकी रचनाएँ अत्यन्त

महत्वपूर्ण है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में इन्दिरा का समुचित स्थान दिया जाना चाहिए।

मातृक अध्याय में महात्मा मूरदास द्वारा रचित रामचरित का अध्ययन किया गया है। श्रीमद्भागवत का याना का अनुसरण करते हुए मूरदास जी ने नवम स्कंध में रामचरित का वर्णन किया है। मूरदास का वर्णन भागवत के वर्णन में भिन्न एवं नितान्त मार्मिक है। भागवत में नवम स्कंध के ११ अध्यायों में रामकथा का साथ में निर्देश राम की महिमा का वर्णन करने के लिए किया गया है। किन्तु मूरदास ने रामकथा विस्तार से कही है। उन्होंने भागवत के अनिर्दिष्ट अथवा सूत्रों से सामग्री ग्रहण की है तथा मार्मिक प्रसंगात् उद्भावना में विलक्षण कुशलता का परिचय दिया है। वाल्मीकि सीता स्वयंवर केवट प्रसंग पुरुषपू प्रसंग जन्मदिनि स्तरण अगल प्रतिज्ञा सजीवनी लाने समय हनुमान का अधोध्याय में उल्लेख जोदि प्रसंगात् सरस एवं मौलिक वर्णन मूरदास ने किया है। प्रस्तुत लेखक ने राम साहित्य में इन कथा प्रसंगों का विकास विविध सन्दर्भों में सूचित किया है। मूरदास ने रामचरित का वर्णन अभेद्यतामयी शक्ति से किया है। गद्य पद्य में रामकथा का वर्णन सर्वप्रथम मूरदास में मिलता है। मूर का रामचरित वर्णन अब तक अविचलित रहा है। हिन्दी राम साहित्य में मूरदास के सर्वथा उत्कृष्ट योग का विवेचन इस परिच्छेद में संभव नहीं किया है।

आठवें अध्याय में रसिक परम्परा में निर्मित राम साहित्य का अध्ययन किया गया है। भक्ता का एक वर्ग प्राचीन काल से रसिक भाव से सानाराम की भक्ति तथा सेवा का विधान करता आ रहा है। ये भक्त अपने इष्ट का भ्रवर उपासना का ध्यान करते हैं। गान्ध्याजी तुलसीदास के समय में नाभाजन तथा उनके पूर्व अग्रजों का भक्ति-वृद्धि रसिक भाव का थी। इस सम्प्रदाय के आरम्भ में राम भक्ता का हिन्दी रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं। सर्वप्रथम स्वामी अग्रजों की रचनाएँ मिलती हैं। इनका रामभक्ति सम्बन्धी मुख्य रचनाएँ ध्यानमजरा तथा पञ्चवला प्रकाश में आये हैं। साहित्यिक शक्ति से ये अत्यन्त प्रौढ़ रचनाएँ हैं। इनमें राम के शिष्य गण-भौत्य तथा उनके भ्रवर चरित का सरस वर्णन किया गया है। इन रचनाओं का साथ में मया गा का गान है। तुलसीदास जी के परवर्ती काल में रसिक रामभक्ता ने विनाल परिमाण में राम साहित्य का रचना की है। इन भक्तों द्वारा रचित राम साहित्य अधिकांश अप्रकाशित है। पिछले दशक में गायकताओं ने रसिक भक्ता का रचनाओं का नये सिरे में महत्त्व दे दिया है। तुलसीपूर्व काल में भिन्न-नाला सामग्री तथा रसिक भक्ति पद्धति का साथ में इस परिच्छेद में उल्लेख किया गया है।

नवें अध्याय में अल्पनाथ रामकविया तथा उनकी रचनाओं के सचच में सूचनाएँ दी गयी हैं। य सूचनाएँ खाज रिपोर्ट तथा अय सूत्रों से सफल की गयी हैं। इन कविया के सम्बन्ध में अत्र सूचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं तथा उनकी रचनाएँ अप्रकाशित हैं। इनमें जन कविया का उल्लेख महत्वपूर्ण है। अनेक जन कविया की रामचरित मन्त्रघी रचनाओं की सूचना मिलती है। सूचनाएँ एत्र करन में श्री अग्रचन्द नाहटा से लेखक का बहुत महायता मिली। उन्होंने जन कविया तथा राजस्थानी में राम साहित्य सम्बन्धी सामग्री एवं सूचनाएँ प्रदान की। इस अध्याय में कतिपय अन्य हिन्दी कविया तथा हिन्दीतर प्रांतीय राम साहित्य के प्रणेताओं का भी उल्लेख किया गया है। जन में तुलसी-भूष हिन्दी राम साहित्य के अतगन आने वाली कतिपय रचनाएँ परिशिष्ट में हस्तलेखा से मकलित कर दी गयी हैं।

तुलसी-भूष राम साहित्य पर काय करने की प्रेरणा में अपने गुण हिन्दी विभाग के अध्यक्ष एवं बंग सभा के अधिष्ठाता श्रद्धय डा० गीत्यालु गुप्त से मिली थी। उनका स्नेह एवं सत्परामर्श मेरा मन्त्र रहा है। प्रस्तुत काय प्रबंध में गुरु एवं निर्णय डा० विपिनविहारी त्रिवेदा का वृथा एवं माग्यन का ही फल है। अपने इन गुरुजनों के प्रति आभार प्रकाशन अक्षम्य औपचारिकता होगी।

इस विषय पर काय करते समय श्री अग्रचन्द नाहटा डा० भगवती प्रसाद सिंह, बंगाल विश्वविद्यालय के जारियटल इन्स्टीट्यूट के नियामक प्रा० भो० ज० साठेरा, डा० बल्लेव प्रसाद मिश्र आदि विद्वानों ने परामर्श एवं सामग्री निर्णय में अनुग्रहीत किया। अथवा इनके प्रति आभार प्रकट करता है। जन में मुझे आशा ही नहीं करने पूर्ण विश्वास है कि इस प्रयास के प्रकाश में आ जाने पर अन्य सभी गुरुजनों अपना बहुमूल्य महयाग करके मुझे अनुग्रहात करेंगे। इस विश्वास के साथ यह प्रबंध प्रस्तुत किया जा रहा है।

अक्तूबर, १९६४

—अमरपाल सिंह

विषय-सूची

अध्याय—१

१७

राम-साहित्य ईसा की प्रथम सहस्राब्दी तक—संक्षिप्त विवेचन।

(क) रामचरित—उत्पत्ति एवं प्रारम्भिक रूप—वैदिक साहित्य में रामकथा का निर्माण। वाल्मीकि रामायण महाभारत, रामचरित का क्रमिक विकास बौद्ध राम-साहित्य संस्कृत साहित्य में रामकथा, जन राम साहित्य।

(ख) रामभक्ति—उत्पत्ति एवं विकास अवतारवाद रामावतार की प्रतिष्ठा/गित्य में रामकथा दक्षिण में रामभक्ति।

(ग) रामकाव्य परम्परा—विकास के साधन।

अध्याय—२

५२

अपभ्रंश में जन-कवियों द्वारा रचित राम-साहित्य स्वयम्भू—पठम चरित पुष्पदन्त—पठम चरित रङ्गू—पद्मपुराण।

अध्याय—३

८८

रामानन्द वणन—अष्टम, दशावतार वणन परम्परा—हिन्दी में दशावतार वणन और चम्बरगाई—अष्ट दसम, रामा में रामकथा।

अध्याय—४

१०४

स्वामी रामानन्द जीवन वृत्त, सम्प्रदाय और व्यक्तित्व हिन्दी रचनाएँ—समाप्ता।

अध्याय—५

१३३

आदि-काव्य का हिन्दी रूपान्तर—गास्वामी विष्णुदास स्थितिवाला गोत्र रिपाठी में गूबनाएँ शतर रचनाएँ—नाया वामीकि रामायण—विवेचन।

अध्याय—६	१५०
दास्य भक्ति का पल्लवन—ईश्वरदास रचनाकाठ खाज रिपोर्टों में सूचनाएँ रामकाव्य भरत विलाप अगस्त पत्र रामजन्म-समीक्षा	
अध्याय—७	१६८
भागवतभाक्ति रामचरित—महामा सूरदास भागवत में अवतार वर्णन सूरदास का रामावतार वर्णन सुरसागर में रामकथा के निर्देश सूर के रामचरित वर्णन का मत्याकन ।	
अध्याय—८	२००
रमिक सम्प्रदाय में रचित राम साहित्य—रमिक परम्परा—खोज रिपोर्टों में सूचनाएँ स्वामी अप्रमत्त रचनाएँ समीक्षा ।	
अध्याय—९	२२९
राम-साहित्य के अन्य प्रणता—जन कवि खाज रिपोर्टों में सूचनाएँ अन्य कवि ।	
परिनिष्ठ	२५१
परिनिष्ठ (क)	२७७
परिनिष्ठ (ख)	२८१

तुलसी-पूर्व राम-साहित्य

•

राम-साहित्य इसा की प्रथम सहस्राब्दी तक—सक्षिप्त विवेचन

(क) रामकथा का उदगम एवं क्रमिक विकास

रामकथा का उत्पत्ति श्वातु व बमवगाणी राजवग म हुई थी। इमनो रचना म वग व मृता द्वाग आम्भ म आम्भाना व रूप म हुई था। वाल्मीकि रामायण म कथा व मूलस्रोत व मम्भय म चचा है जिमम कथा आम्भ करन हुए श्वातु कहत हैं कि वदन्त मनु स लकर अर तक जिन जयगाणी राजाआ व अधिहार म समय पृथिया थी उन इश्वातु वगी महात्मा राजाआ व वग म रामायण नाम का महान आम्भान उत्पन्न हुआ।¹ मृता द्वारा जिन आम्भाना का मन्दि हुई था व अर उपन्ध न्हा है। निश्चित श्राधार व अभाव म उनका रचना का निधारित करना भी कठिन है किन्तु स्तना निदिवा है कि इन आम्भाना का उत्पत्ति ईसा की ७०० गताब्दा व पूर्व हा खुची था। राम तथा श्वातु वग व अर राजाआ व सम्बन्ध म य स्पष्ट आख्यान दाघका तक समाज म प्रचलित र्हा। जाग चर कर जब इन आम्भाना का मन्दि कर कथामूत्र म प्रथित किया गया तत्र रामायण का उत्पत्ति हुई। स्फुट आख्यान-काव्य तथा रामायण आदि रूप म अत्र उपलब्ध न्हा है। रामकथा व प्रारम्भिक स्वरूप तथा उगव प्रथित विनाम व सम्भय ज्ञान व लिए प्राचात साहित्य का अनुशीलन अनिनाय है। मत्रप्रथम कवि साहित्य म रामकथा मन्दी जा श्वातु वग व है उन पर विचार करना हागा।

यदिह साहित्य म रामकथा—कवि साहित्य म रामकथा व पात्रा व नाम आय हैं। ऋग्वेद म धनवान और प्रनापमान राजा इश्वातु का (१० ६ ८)

१—मर्षा पूर्वमिय यपामामीतृत्तना वन्धरा । प्रनापनिमुनाय नृपाणात्रय
शात्तिनाम् । यथा म मगरा नाम मागरा यत गानिनः । यद्वि पुत्रस्य्याणि
ययान्त्त पयवारयनः ।

इश्वातुनामि तया राजा वग मन्धनाम् । मन्धनप्रमाभ्यान् रामायण
मिति नाम् ॥ (वा० रा० १ १) ।

उल्लेख हुआ है। अथर्ववेद में भी इक्ष्वाकु का नाम एक बार (१० ३० ९) आया जिसमें पता चलता है कि उस समय इक्ष्वाकु वंश का रूप में प्रसिद्ध था।

दशरथ का नाम एक दान स्तुति में अथर्व राजाओं के नामों के साथ ऋग्वेद में (१ १२६ ४) आया है। इस स्थान पर कहा गया है कि राजा दशरथ के चारों ओर भूरे रंग के घाड़ एक हजार घोड़ों के दल का नतत्व कर रहे हैं। एक अनिर्दिष्ट दशरथ नाम का और कोई उल्लेख नहीं मिलता।

वदिक साहित्य में राम का नाम कई स्थानों पर आया है किन्तु इन उल्लेखों में भिन्न व्यक्ति लक्षित हुए हैं। तत्तिराय जाम्बवत में (५ ८ १२) राम नाम का उल्लेख पुत्र के रूप में हुआ है। ऋग्वेद (१० ९३ १४) में राम का नाम अथर्व राजाओं के साथ आया है जिसमें उनका राजा होने का संकेत मिलता है। एक राम मागधों के चर्चा एतरेय ब्राह्मण (७ २७ ३४) में आया है जो ब्राह्मण थे और जनमेजय के समकालीन थे। इसका अनिर्दिष्ट आचार्य के रूप में गतपथ ब्राह्मण (४ ६ १ ७) में राम औपतम्बिनि और जमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण (३ ७ ३ २) में राम तानुजातय का उल्लेख हुआ है। ये सभी उल्लेख भिन्न व्यक्तियों को संकेत करते हैं जो जाने पड़ते हैं। राम नाम वदिक साहित्य में प्रचलित था यह सूचना इन उल्लेखों से मिलती है।

जनक का उल्लेख अपभ्रंशित वदिक साहित्य में अधिक हुआ है। यह उल्लेख यज्ञादि के विवेचन के सम्बन्ध में कृष्णयज्ञवेदीय तत्तिरीय ब्राह्मण (३ १० ९) गतपथ ब्राह्मण (११ ३ १ २ ४) जमिनीय ब्राह्मण (१ १९) बह्वृषय उपनिषद् (३ १ १ २) में हुआ है। जनक और याज्ञवल्क्य समकालीन बताये गये हैं और जाम्बवतों में उनका साथ होने और उनके वातावरण का उल्लेख किया गया है। जम्बवति कथों के सम्बन्ध में गतपथ ब्राह्मण (१० ६ १ २) और छात्याय उपनिषद् (५ ११ ४) में उल्लेख आया है।

वदिक साहित्य में सर्वाधिक उल्लेख सीता का हुआ है। इनमें से एक सीता कृषि का अधिष्ठात्री देवी हैं और दूसरी सीता मूययुत्रा माता सावित्री है। साना सावित्री और माम राजा का उपाख्यान कृष्ण यज्ञवेदीय तत्तिराम ब्राह्मण (२ १) में मिलता है। इस उपाख्यान का प्रत्यक्ष सम्बन्ध रामायण की सीता से नहीं है। आगम पद्धति के अर्थ में माता का उल्लेख वदिक साहित्य में जनक स्थान पर हुआ है किन्तु इसमें व्यक्तित्व का आराधन नहीं हुआ है। कृषि का अधिष्ठात्री के रूप में सीता का उल्लेख कई बार हुआ है। सर्वप्रथम ऋग्वेद (४ ४७) में कृषि का अधिष्ठात्री माता में प्रायश्चित्त की गया है। यज्ञे माता धरता का उवरा गमि का प्रतीक और यमम देवत्व का कल्पना का गया है। अथर्ववेद (

१७) जार यजुर्वेद (४. ३ ५) में भाइसी देवी का प्रायना का गया है। उक्त अतिरिक्त गृह्यसूत्रों में माता का प्रायना विविध अवसरों के लिए जाया गया। बन्धु मातृत्व में अयाच्या मर्यु गगा यमना जादि का भा उल्लेख हुआ है।

डा० बल्क ने बन्धु साहित्य में रामकथा का अभाव प्रतिपादित करते हुए लिखा है—बन्धु रचनाओं में रामायण के एकाध पात्रों के नाम अवश्य मिलते हैं। उक्त न तो इनके पारस्परिक सम्बन्ध की कोई सूचना दी गयी है और न अन्य विषय में किसी तरह रामायण की क्यावस्तु का किंचित भी निर्देश किया गया है। जनक और सीता का बार-बार उल्लेख होने पर भी दोनों का पिता पुत्री सम्बन्ध कहा भा निर्दिष्ट नहीं हुआ है। अतः बन्धु काल में रामायण की रचना हुई थी अथवा रामकथा सम्बन्धी गाथाएँ प्रसिद्ध हो चुकी थी, इसका निर्देश ममत्त विस्तृत बन्धु साहित्य में कहा भी नहीं पाया जाता। अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम रामायण के पात्रों के नाम से मिलते हैं इससे इतना ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ये नाम प्राचीन काल में भा प्रचलित थे।^१

परम्परागत भारतीय मन इसमें भिन्न रहा है। जिन जार परम्परा के मूल श्रोत का ही मान गये हैं। इस विश्वास और भायना के आधार पर नीलकण्ठ न मत्र रामायण की रचना का थी। इस ग्रन्थ में नीलकण्ठ ने बन्धु मत्रा का एक सग्रह कर बालकाण्ड में उत्तरकाण्ड तक की रामकथा का वर्णन में प्रतिपादित किया है। रामकथा का वर्णन प्रतिपादित करने का यह प्राचीनतम प्रमाण है। बन्धु में परवर्ती साहित्य में भा कोमल जनपद, रामकथा से संबंधित नगर, नदी तथा भूषणों के वर्णन मिलते हैं जिनमें रामकथा का मुख्य ऐतिहासिक आधार मिल जाता है। वाल्मीकि रामायण के अध्ययन से ही आन्ध्रवाय के क्यावस्तु का ऐतिहासिकता में कोई मन्त्र नदी रह जाता।

वाल्मीकि रामायण—वाल्मीकि रामायण रामकथा की प्राचीनतम रचना है। प्राचीन काल से ही वाल्मीकि आन्ध्रवाय मान गये हैं और वाल्मीकि रामायण को आन्ध्रवाय कहा गया है। वाल्मीकि न सबप्रथम स्फुट जायाना को सर्वज्ञ कर क्यामूत्र में ग्रहित किया और विस्तृत महाकाव्य की रचना का।

वाल्मीकि रामायण का रचनाकाल अनिश्चित है। इस सम्बन्ध में विद्वानों में भिन्न भिन्न मत प्रचलित हैं। वाल्मीकि रामायण में ग्रन्थ के रचना-काल के

१—विद्वानों विवेचन के लिए दक्षिण—१० बुद्ध रामकथा पृ० २४ २६।

२—आन्ध्रवायमिन् त्वाय पुरा का-मातिना शास्त्रम्। (वा० रा० ६ १३१

सम्बन्ध में वाइ निर्णय नही है। जय किसी प्राचीन रचना में भी आत्मिकाव्य
क रचनाका के सम्बन्ध में उल्लेख नहीं मिलता। प्रचलित रामायण तथा जन
प्रति सं वाल्मीकि के कथानायक राम के समकालीन जन का सङ्गत मिलना है
और कथा की रचना भी उसी समय की बतायी गयी है। रचनाका के सम्बन्ध
में विद्वानों ने आनुपगिक सामग्री पर विचार किया है और अपन अपन मत निर्धारित
किये हैं।

रामायण के रचनाका के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों ने पण्डित अपन मत
किये। पश्चिम के दाना में ऋगभग एक गताब्दी पूर्व रामायण का चर्चा आरम्भ
हो गयी थी और विद्वानों का ध्यान इसके रचनाकाल तथा जय विषय का आर
गया था। इन विद्वानों ने रचनाकाल के सम्बन्ध में जो मत व्यक्त किये हैं
उनमें समय का बड़ा अंतर दिखाया जाता है। दूसरी बात यह है कि ये सभी मत
तर्कान्वित हैं। ए श्लेगल तथा जी० गारेमिया^१ ने रामायण का रचनाकाल क्रमशः
११वाँ शताब्दी ई० पू० और १२वाँ शताब्दी ई० पू० माना है। एच० याकावा
प्रचलित रामायण का रचनाकाल दूसरी शताब्दी ई० मानते हैं। एम० विटरनित्स
भी प्रायः यही समय ठीक मानते हैं। रामायण का रचनाकाल निर्धारित
करने में विद्वानों रामायण के दो रूपों की कल्पना करते हैं। एक रूप वह जिसकी
वाल्मीकि ने रचना की थी इस वाल्मीकि की प्रामाणिक रचना अथवा आदि
रामायण कहा गया है। दूसरा रूप वाल्मीकि रामायण का प्रचलित रूप है जो
लम्बी अवधि के परिवर्द्धना के अनन्तर प्राप्त हुआ है। इन दोनों रूपों का कुछ
भिन्न भिन्न समय निर्धारित करने का प्रयत्न किया गया है। ए० वी० वीथ ने
आदि रामायण की रचना चौथी शताब्दी ई० पू० में मानी है। एम० विटरनित्स
का मत है कि आदि रामायण का रचना तीसरी शताब्दी ई० पू० में हुआ है।
वल्के इस मत में सहमत हैं।^२ पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि विभिन्नता अधिक
इनके विवेचन में एक सामान्य मत निश्चित नहीं हो सका है।

१—ए श्लेगल—जर्मन जारिपेट जनक भाग १।

२—जी० गारेमिया—रामायण भाग १० भूमिका।

—एच० याकावा—राम रामायण पृ० १०।

४—एम० विटरनित्स—हिम्मा आफ इन्डियन लिटरेचर भाग १ पृ० ५१७।

५—ए० वी० वीथ—निएज आफ दि रामायण—ज रा ए सा० १९१५

वाल्मीकि रामायण के रचना काल पर विचार करते समय ग्रंथ में आय कुछ तथा तथा बहि माक्ष्या पर विचार करना चाहिए। रामायण में बुद्ध अथवा बौद्ध धर्म का उल्लेख नहीं है, अतएव इसका रचना पाचवा गताब्दी ई० पू० में हुई होगा। प्रथम गताब्दी ई० पू० में बाल्मीकि न रघुवीर की रचना की थी। बाल्मीकि का काव्य परम्परा में रचित यह प्रथम महाकाव्य है। अतएव बाल्मीकि रामायण का वर्तमान रूप प्रथम गताब्दी ई० पू० का है। 'कपना मण्डिका' में बौद्ध कवि कुमारव्यास (१०० ई०) ने जन माधारण में बाल्मीकि रामायण के पाठ का उल्लेख किया है। जनकवि त्रिमूर्ति ने महाभारत का मूल्य के ५०० वर्ष पश्चात् पठम चरित्य की रचना की थी। निश्चिन तिवियकत यह प्रथम रचना है। विमलमूर्ति बाल्मीकि रामायण से परिचित थे और उन्होंने इस बात का उल्लेख किया है कि उनक समय में समाज में ब्राह्मण रामकथा प्रचलित थी। महाकवि अश्वघोष (७८ ई०) ने अपने बुद्ध चरित में रामायण के आधार पर बद्ध प्रमगा का वर्णन किया है। महाभारत का वर्तमान रूप मन र्मा के आरम्भ का माना जाता है। महाभारत रामकथा संपूर्णतः परिचित है। उसमें बाल्मीकि और रामायण का उल्लेख हुआ है और रामकथा भी दी गयी है। रामचंद्र से सम्बन्धित स्थान महाभारत में तथ्य माने गये हैं। वन पर्व ८४।७० में गाप्रतर तीर्थ माना गया है जो आजकल गुप्तारघाट के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार वन पर्व ८५।६५ में शृंगवरपुर को तथ्य माना गया है। रामचंद्र में सर्वधित स्थानों की तीर्थों का रूप शीघ्रकाल में प्राप्त हुआ होगा। पाणिनि ने बाल्मीकि अथवा रामायण का उल्लेख महा किया है किन्तु मूला में कौटिल्या (५।१।१५) गुरुणगा (१२,१२०) कवयी (७।२) का संवेत्त मिलता है। अतः पाणिनि के समय में रामकथा के प्रचार का सबत मिलता है।

अन्त माध्य के आधार पर रामायण-कालान्तर स्थिति पर विचार किया जा सकता है। रामायण में चित्रकूट के दर्शन का दण विष्णो अर्णयाना के रूप में चित्रित किया गया है। यह स्थिति उस समय का सम्भव है जब दक्षिण में आष मस्यना का प्रवेश नही हुआ था।

विश्वामित्र के माध्य धनुष-योग में जात समय राम ने गंगा पार किया था और गंगा गण गगन प्रणय में हावत गये थे। इस प्रणय में ५०० ई० पू० में भगवत् नरत्न अत्रानगर ने पाण्डिपुत्र नगर बसाया था। रामायण में पाण्डिपुत्र का उल्लेख नहीं है। इससे जान पड़ता है कि रामायण का बगल पाण्डिपुत्र नगर का स्थापना से पूर्व का है। इसी प्रकार रामायण में राम के गंगा पार करने विद्याला नगरा में स्थान का उल्लेख मिलता है (वाल्मीकि ८।८)। विद्याला के राजा मुनि

न विद्वामित्र गृहित राम का स्वागत किया था। उग समय मिथिला जाग विनाला दो स्वतंत्र राज्य थे। आग चर कर बुद्ध क समय मदाना राज्य मित्र कर एक हो गय और बंगाल के नाम स प्रसिद्ध थे। रामायण म वर्णित न्ययि वद्ध पूव का अतएव रामायण का समय वद्ध पूव का माना जाना चाहिए। वद्ध क समय म कोसल की राजधानी श्रावस्ती था और बह्म के राजा प्रमनजित थे। रामायण म श्रावस्ती का उल्लेख नहा ह। इन तथ्या क आधार पर रामायण का रचना का १० इ पूव स पहल मानना उचित हागा। अतना निश्चित अ कि वाल्मीकि रामायण का वतमान रूप सन ईस्वी क आरम्भ क पूव अग क विस्तृत भाग म प्रचलित हा चुका था।

प्रचलित रामायण के तीन पाठ मिश्रत है—पश्चिमात्य पाठ गाण्डाय पाठ और पश्चिमोत्तरीय पाठ। इन ताना पाठा म विभिन्नता पाया जाती है। इन पाठा म प्रत्येक म ऐसे अंग मिश्रत है जो दूसर पाठा म नहा पाय जात। जाति काव्य प्रारम्भ म मौखिक रूप स प्रचलित रहा और जाग चर कर विभिन्न प्रयोग म त्रिपिद्ध किया गया। पाठभेद का यह मरय कारण रहा है। विद्वानो न पाठ भेद के कारण तत्र प्रस्तुत किया है कि वाल्मीकि न जिम जादि रामायण का रचना का था उमम कालान्तर म परिवर्द्धन आ। यह परिवर्द्धन मुख्यत वाल्मीकि उत्तरकाण्ड तथा अवतार सम्बन्धी स्थाना क रूप म अनमान किया गया है। जाति रामायण का रूप निश्चित करन क लिए सामग्रा एव आधार का अभाव है। यह द्रष्टव्य है कि पाठभेद हाते हुए भा विभिन्न सम्स्करण म क्यावस्तु म उत्पन्नताय अन्तर नहा है। पाठभेद का सम्बन्ध प्रसिप्त सामग्रा स है। कतिपय विद्वाना का मत ह कि वाल्मीकि का रचना म केवल अयोध्याकाण्ड स कर युद्धकाण्ड तक का क्या थी। युद्धकाण्ड के अन्त म प्राप्त फलश्रुति म मत क समथन म उद्धत की जाती है। कतिपय विद्वाना क अनुसार पुरुथनि स ग्रन्थ की समाप्ति का सवेत मिश्रता है। सम्पूर्ण वाल्मीकि उत्तरकाण्ड तथा एम स्थान जिन्म राम क अवतार हात का निर्माण है प्रसिप्त बनाय गय है। इन विद्वाना क अनुसार जाति काव्य आरम्भ म मौखिक रूप स प्रचलित था। कुशीन्व इनका गान करत थे। य कुशीन्व काव्यापवादा थे और उनका परम्परा म दाघकाण्ड तक जाति काव्य मौखिक रूप स प्रचलित रना। माताआ का रुचि एव जिनामा क आधार पर आग चर कर काव्य म परिवर्द्धन किया गया। वाल्मीकि और उत्तरकाण्ड का रचना अमा प्रकार हुन। अवतार सम्बन्धी म्यत्र आग चर कर अवतारकाण्ड क विभाग एव प्रचार क पश्यव्यय जाग गय। बौद्ध महाविभाषा म रामायण का विस्तार धारण ह्वार अंग परिमाण रटा गया है जा वतमान रूप का जाया

होगा। प्रसिद्ध रामायण का टा० दुस्त न विवरण किया है और यह मत व्यक्त किया है कि वात्साल्य उत्तरकाण्ड तथा अवतार मन्वजी म्यल मन्व्य प्रथम है। किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि अयोध्याकाण्ड से युद्धकाण्ड तक में रामायण का मूलरूप सुरक्षित है। इस सम्बन्ध में यह भी कहा गया है कि इस अन्वय वाक्य मिलते हैं जो राम के अमान्या प्रत्यावर्तन तथा राज्याभिषेक पर समाप्त होते हैं। आरम्भ में रामायण के अन्वयित दाहा पाठ में दक्षिणाय जाय उच्यते। काण्डान्त में उच्यते पाठ गीणाय पाठ तथा पश्चिमान्तराय पाठ में विभक्त हो गया। यही यह कहना आवश्यक है कि रामायण के स्वरूप और प्रथमा के सम्बन्ध में जो मत व्यक्त किये गये हैं वे तर्काश्रित हैं।

प्राचीन काल में रामायण के व्यापक प्रचार एवं उसका लोकप्रियता का सबूत दारामपति में भी मिलता है। सबसे प्राचीन टाका कृत का माना जाता है। महाभारत प्रसिद्ध टाका नागर्षभट्ट का तिलक टीका है। नागर्षभट्ट ने कतव का प्रमाण रूप में स्वीकार किया है। रामायण का अर्थ टाकाण्ड इस प्रकार है—
गात्रिण्य राजकृत शृंगार विरत, रामानन्ताय कृत रामायणकृत विवनायकृत यामीकि ताथय तरणि और वरत्सजकृत विवरण तिरक।

वाक्य रचना का मूल प्रेरणा के सम्बन्ध में आन्विकाव्य के आरम्भ में चचा है। तपस्या और स्वाध्याय में निरत गुरु श्रद्धा के ज्ञानिया में श्रेष्ठ और मनीषा

१—तप स्वाध्यायनिरत तपस्वा वाग्विना वर।

नाग परिपत्रच्छ वात्माविमनिपगवम।

वाचस्मिनाम्प्रत लाव गुणवाक्त्वं वायवान्।

धमजदच वृत्तज्ञच मत्प्रवाक्त्वा षट्प्रन।

चारित्र्य च का मुक्त मत्रभूतपु का जित।

विद्वान् च गमधच वक्त्रव प्रियत्तान्।

आत्मवाक्त्वा जितवाषा दुनिमान्वाज्जमूयव।

वस्य विम्यति दवाच जातगापस्य सपुग।

एतच्छिष्टाम्पह धानु पर वीनूत्त हि म।

मर्षे त्व ममर्षोमि जानुमव विष तर्म्।

धुक्त्वा धात्रिणावता यामीरर्ताणा वच।

धुक्त्वामिति धामतय प्रहृष्टा वाक्यमर्षवात्।

धक्त्वा तुम्हाचव य स्वया काञ्चिता गुणा।

मा यत्तम्य उध्या तयवध धुक्त्वावत।

म पुगव नारद स वाल्माकि न पूजा—इस समय मगर म गणवान पगनमा धमज्ञ कृतन सत्यव्रता जीर अपन बत म दन पुरुष वान है। सत्पचार म यका सब प्राणिया क कल्याण म तत्पर विद्वान सामर्थ्याली और देखन म सबस सुंदर पुरुष वान है। मन का बग म रखन वाला श्राध रहिन कान्तिमान जाइ डाह से हीन पुरुष वान है। वह वान पुरुष है जिमक रणभूमि म कुपित हो जान पर देवता भयभीत हो जाते है यह मैं जानना चाहता हू इसक लिए मर मन म बग कौतूहल है। त्रिलाकी का बतान्त जानन वाले नारद न वाल्माकि क य वचन सुनकर कता—जच्छा मुनिय आपन जो गण गिताय है उनम स बहुत स दुःख है। फिर भी हू मुन उनस यकल मनष्य को मैं बताना हू आप मुन। व क्वाकु वग म उत्पन्न हुए है और लान म राम कस नाम स विख्यात है। इसन पंचान नारद न रामचरित का मक्षप म वणन किया है। इस उल्लय म स्पष्ट है कि वाल्माकि तार प्रतिष्ठित मधुगण सम्पन्न मनष्य को अपन वाक्य का नायक बनाना चाहत व और इसा सम्पन्न म उहान नारद स जिनासा का था। जन रामायण महापुरुषचरित वाक्य सिद्ध होता है और इसका रचना गङ्गमग्न का कामना से की गयी प्रमाणित हाती है।

अनतर शौचा बध तथा धर्मात्मा ऋषि वाल्माकि क शौचा का उद्वेग सुनकर कर्णाभिभूत हो जान का उल्लेख आया है। नारद के चो जान पर वाल्माकि ऋषि अपन गिष्य भरद्वाज सहित आश्रम क निकट रमणाय तमसा तन पर स्नान क लिये गय। वहाँ स तटवर्ती सघन वन का दल लगे और टहलन लग। उम वन म हा उतान एक शौच क जाण का प्रसन्न मन स मधुर वाला वाक्य हुए और विहार करते देला। जब वाल्माकि उह ल रह य उसी समय एक दूषित विचार वाल और अकारण बरा निपाण न उनम स एक अर्थान पुरुष शौच का मार डाला। उमे रघिर स सन और धरला पर छत्रपात लेख उस उसकी भाया शौची कर्ण स्वर से विगप करने ग्या। क्याकि अभी अभी बह अपन गण मन्त्र वाड बिरसगी और अपन प्यारे पति म बिठडा थी। इस प्रकार उम निपाण के हाथा मरे हुए शौच का दख कर धर्मात्मा ऋषि वाल्माकि क मन म कर्णा जाग गया। कर्णा उत्पन्न होने क कारण और श्रान करता हुद शौचा को दरकर उठनि निपाण क कस वाय को अघम समझा और यह वचन कहा—निपाण त न काम मोहित शौच क जाड म स एक (शौच) का बध किया है। जत तुम मला क लिए प्रतिष्ठा

इत्याकु वगप्रभवा रामानाम जन भ्या ।

निजनामामवायोः सनिमान धतिमावगा । (-वा० रो० १११८) ।

प्राप्त न करा। एमा कहन क पश्चात् व विचार करन लग रि इम पन्ना क लिए गाकात मैने क्या कह डाला। उहान गिष्य स कहा—अनुष्प उ म वधा और गरु लाषवादि अमरा के वषम्य स रहित और वाच पर गाये जान याग्य यह श्लोक जा अभी मेरा गाकावस्या म उच्चरित हुआ ह वह व्यय नहा हो सकना। अनंतर बग ब्रह्मा न उपस्थित होकर कहा—आपका वह वाक्य श्राव था। मरा इच्छा स ही आपके मग ने यह वाणा प्रकट हुई है। ऋषि मत्तम, घर्मात्मा राम क चरित का जमा नारद स सुना है गान करिये। ब्रह्मा के चल जाने पर गिष्या महित वारमीकि को विस्मय हुआ। गिष्य उनक श्राव का वार वार पाठ करन लग। गाकावस्या म महर्षि का श्राव ही श्लोक म परिणत हो गया था। अनंतर वामीकि न श्रोत्रो म रामक्या निबद्ध का। अनुष्प छंद क आविष्कारक वाल्मीकि माने जात है। मम अरस युक्त तथा ऋगुगु नियमरुद्ध अनुष्प का प्रथम प्रयोग वारमाकि न श्रौतिक काव्य म किया है।

आश्विवाय के आरम्भ म वाल्माकि नारद-मवा श्रौच वध वाल्मीकि का ज्ञान तथा श्राव म उमकी परिणति क प्रथम अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। भारतीय काव्य क उत्पन्न का यह विगिष्ट स्वरूप निणायक सिद्ध हुआ। उक्त प्रसंग स गमकाव्य ही नहा समस्त सस्कृत काव्यधारा का ज्ञाना निर्दिष्ट हा गयी। आदि काव्य का महिमा देवकाव्य के रूप म नही नरकाव्य के रूप म है। नायक का चपन गुणा की विगिष्टता क आधार पर किया गया है जिमम चारित्रण मुख्य ह। वाल्माकि न नारद स पूछा था—चारित्रण च का युक्त और नारद न उत्तर दिया

१—मा निपात प्रणिष्ठा त्वमगम गास्वता समा ।

यत्शौचमियुनाशेकमवधौ काममाहितम् । (वा० रा० १ २ १५१)

२—पाश्वदाशरसमन्तशोष्य ममवित ।

गोकातस्य प्रवतो म श्रोत्रो भवतु नाचया ॥ (वहा १ २ १८) ।

३—शौच एव त्वया वडा ज्ञान काया विचारणा ।

मच्छाशौचैव ते ब्रह्मप्रवर्तये मरुन्वता ॥

रामस्य चरित शृत्वन युत त्वमपिमत्तम ।

घर्मात्मना गुणवता लौक रामस्यर्षामत ॥

वत कथय धीरम्य यथा त नारदाच्छ नम् ।

रहस्य च प्रवता च पश्वत तस्य धीमत ॥

समाशरशुमिपागोता मरुणिना ।

गान्धुव्याश्रणाशुभुष गोत श्रावमागता ॥ (वहा १ २ १ ६०) ।

था— तयक्न श्रूयता नर । नायक वा जनमघान एत अर्थात् मानस समाज म किया गया था । लोक भगल की कामना वाव्यरचना की मूत्र प्रणना थी ।

आत्िकाव्य का मुकुरस करुण है । काव्य क आरम्भ म श्रीचवध प्रमग तथा मर्षि बाल्माकि के गीक स एम काव्य का आरम्भ हाता है । इसकी परिणति सीता क पश्यी क गभ म जतघान हान क कर्ण प्रमग म हाता ॥ कर्ण रस का जविच्छिन्न धारा सस्कृत वाङ्मय म मिलता है । मर्षि बाल्माकि क गीक क लालक म परिणत हान की चर्चा कविज्ञान क कात्िका म न रघवग म का है । भवमति न कर्ण रस को उत्तर रामचरितम म मन्त्रम माना ॥ अनन्वधन न ध्वया गीक म श्राच वध जीर श्लाक क जाविभाव का उत्पन्न किया ह । समग्र समृत साहित्य इस भावधारा स प्रभावित हुआ है जार जाज भी यह काव्य क्षत्र तथा जनमानस म प्रतिष्ठित है । भारतीय वाङ्मय तथा भागनाय जन जीवन म मयाणाए जात्िकाव्य का रचना से मभव हो सका है ।

बाल्मीकि रामायण का अनुविगति मात्म्ना मन्ति कहा गया ॥ एस महा काव्य म चासीस हजार श्लोक हैं उतन हजार जिनन गायना मन क जगर है । इस महाकाव्य का उपजाव्य ग्रथ कहा गया है । एमस प्ररणा ग्रहण कर परवर्ती काल म विगाठ राम साहित्य की रचना हुई है । आदिकाव्य की आत्मा मान कर समग्र कवि समाज ने बाल्माकि का ऋण िरसा स्वाकार किया । काव्य क आरम्भ म आदिकवि की बन्दना का एक परम्परा पायी जाता है । दशम गतक म पुष्पलत और राजगवर क समवाशन कवि त्रिविक्रम भट्ट न आदिकवि का बन्दना का ॥ गास्वामा तुत्तमागस न रामचरित मानस म इसा प्रकार जात्ि

१—तामभ्यगच्छन्तितानमारा कवि कुगमाहरणाय यात ।

निपात् विद्वान्जल्पनात्य शत्रुत्वमापद्यत यस्य गान् ॥ रघवगम

१४७ ॥

२—एका रस कर्ण एव निमित्तभ्यात

भिन्न पथकपथनिवाधयने विवनात ।

जावन वृत्तान्तरगमयाविधारात

अम्मा यथा सत्तिलमव तु तत्तमग्रम ॥ उत्तररामचरितम ४७ ॥

—काव्यस्यात्मा म एवायस्तथा चात्त्रिव पुरा ।

श्रीचन्त्रविधयाय गीक शत्रुत्वमागत ॥ ध्वयालाक १ १ ॥

६—मदृषणापि निर्दोषा मगरापि सुखामला ।

नमन्तस्य कृता एन म्या रामायणा कथा ॥—त्रिविक्रम भट्ट ।

वि का ऋणि स्वारा र किया है और उनका वर्णनाकी । भाग्याय कविया
 आदिकाव्य म स्फूर्ति ग्रहण कर नाना रचनाआ म नाना प्रकार म राम चरित
 गायन किया । रामकथा के रूप म आदिकाव्य क महिमागाला उत्तम से निम्नत
 रामकाव्य परम्परा म आज भा गम साहित्य का मजन हा रहा ।

महाभारत मे रामकथा—वाल्मीकि रामायण क पञ्चान रामकथा का
 मविस्तार वर्णन महाभारत म मिश्रता है । महाभारत का वर्तमान रूप रामायण
 क बाद माना जाता है । रामकथा का वर्णन महाभारत म चार स्थान पर
 हुआ है । अर्थात् अतिरिक्त अथ अनर स्थान पर रामकथा का निर्णय किया
 गया है ।

महाभारत म द्रोण पर्व तथा शान्ति पर्व म रामकथा का वर्णन आया है ।
 प्रसंग शान्ति स्थान पर ममान हैं । द्रोण पर्व म पुत्र की मृत्यु म मजय का गान हाता
 है । उन्ने मात्तवना दन क गिण नाग म मागृ राजाआ की कथा सुनाया है ।
 राजा अपने ममय म प्रतापा थ किन्तु का पुरा हान पर उन मजका मृत्यु म गया
 काई न बचा । जन मृत्यु अनिवाय है उमक लिए पात्र व्यय है । इन राजाआ
 की कथा का पाण्ड राजापास्यान बहा गया । इस उपास्यान के अंतगत राम
 कथा का भी वर्णन किया गया है । मम आरम्भ क मीका म बनवाग स लेकर
 अयोध्या लौटन तक का कथा वर्णित है । अनन्तर राम तथा रामराय का महिमा
 को मय कर्के कथा का वर्णन किया गया है । वाल्मीकि तथा उत्तरकाण्ड के
 प्रसंग का अभाव है । इस प्रसंग का एक प्रसंग शान्ति पर्व म (१० ०० ४६
 ४५) आया है । इसम कृष्ण न यधिष्ठिर का पाण्डराजापास्यान सुनाया है ।
 इस प्रसंग म रामराय का महिमा का वर्णन किया गया है कथा का अन्त यून है ।
 रामान्वमय तथा राम क म सहस्र वष तक राज्य कर्न का उग्य किया गया
 है ।

रामकथा का वर्णन महाभारत के आरम्भक पर्व मदा का आया है ।
 एक बार म कथा भीम अनुमान गवा (१४७ ०८ २८) क रूप म कनी
 गयी है । हनेमान न बनवाग म लेकर अयोध्या लान तक की कथा म्यागृ मका
 म कथा है । इसम वाल्मीकि तथा उत्तरकाण्ड की सामग्री का निर्णय नहीं है ।
 रामकथा का मय वर्णन म पर्व म शौण्डी हरण क प्रसंग का कर्न किया गया

१—रामे मति एव कुरु रामायणं जति निरमपद ।

मरवर मुहाम मनु मय रहित रूपेण गति ॥

—रामचरित मानस—१ ० ।

२। इस रामापाख्यान कहा गया है जिनमें रामकथा का मविस्तार बणन जाया है। द्रापणा हरण व प्रमग म गाव म सनप्त यत्रिष्ठिर विचार करते हैं कि क्या मजस भी अधिक मन्भाग्य काई व्यक्ति ममार म गागा (जन्म नन मया कश्चि दपभाग्यतरा नर)। माकथ्य यत्रिष्ठिर का मात्वना न्न है और रामचरित सुना कर धय बधान है। यहा रामचरित का बणन ७०४ श्लोका म किया गया ह। उस विस्तन रामकथा व मन्त्रय म विनाना न विभिन्न मन व्यक्त किय है। कतिपय विनाना का मन है कि रामापाख्यान वाल्माकि रामायण का आधार है। एम प्रकार वाल्माकि रामायण स रामापाख्यान का प्राचान मिद्ध करन का प्रयाम किया गया ह। कुछ जय विनाना का मन २ कि रामापा यान रामायण क पूव रूप पर जाधारित है जयवा काई एमा मूलस्वात रहा हागा जिनम रामापाख्यान और रामायण दाना का स्वतत्र रूप स विकास हुआ। जय विनाना का विचार है कि रामोपाख्यान वाल्माकि रामायण का मन्धप ह। रामापाख्यान का रामायण म प्राचीनता गागा रचनाजा क लिए मूलस्वात की कल्पना अथवा रामायण क मलरूप का चर्चा पाश्चात्य विनाना न की है। इनम ई हापकिम डा० बवर ए ठव्विग डा याकाना आदि विन्त मख्य है। डा० सुकठणकर न रामोपा ख्यान म एम अनेक स्थल उद्धत किय हैं जिनम वाल्मीकि रामायण स गादि क साम्य मिन्ता है। रामापाख्यान की क्या काई विपयता त्रिए हुए नहीं है। यद्धकाण की कथा का विस्तार अधिक है इसका बणन तान सौ स अधिक श्लोका म किया गया है। एमम हुनमान गारा औपधिपवन गान सांता की अग्नि परागा जाति कथाए ग गयी हैं। राम व अयोध्या गौन तया रायाभिषय के माध रामोपाख्यान समाप्त हा जाता है। कथा क आरम्भ म रावण जम आति सन्धप म द त्रिया गया है रामायण क उत्तरकाण का गप सामग्री का जभाव ह। रावण जम के सम्बध म विथवा का तान पत्नियाँ वताया गया हैं। पुण्यात्कटा (रावण कुम्भकण का माता) मात्तिना (विभाषण का माता) और राका (खर रूपणता का माता)। रामायण म क्वसा का रावण कुम्भकण विभाषण और रूपणता का माता कहा गया है। क्षमद्र न दगावतारचरितम म पुण्यात्कटा का रावण आति का माता कहा है। य विभिन्नताए अधिक महत्वपूण नहा हैं। वस्तुत रामापाख्यान का आधार स्वतत्र नहीं है। रामापाख्यान रामायण क आधार पर हा रचित है। महाभारत म अयत्र वाल्माकि और रामायण का उल्लेख आया है। यह माय मन है कि रामापाख्यान का आधार वाल्माकाय रामायण गी है। जन य गिद्ध गता २ कि वतमान मन्भारत म रामायण का कथावस्तु जातिवाय क अनगार चन्ता रगा।

कथानम का चाना भाषा में अनवाद ४७२ ई. में हुआ था जो त्म-या निग किंग नामक चीनी तिपिटक में अलगत मिलता है।

दशरथ जातक में जनमार दशरथ वाराणसी के राजा थे। ज्येष्ठा राना में उनके तीन मन्तान थे—१। पुत्र राम पंडित और लक्ष्मण और एक पुत्रा साता देवा। प्रथम राना का मृत्यु के उपरान्त दूसरा रानी ज्येष्ठामहिषा हुई और उसके एक पुत्र था भरत कुमार। राजा ने राना को उसी अवसर पर एक बर दिया। भरत जब सात वर्ष के हुए तब राना ने भरत के लिए राज्य मागा। राजा ने राना के पत्यत्र की आज्ञा से राम पण्डित और लक्ष्मण का बुलाकर जय राज्य या वन में जाकर रहने का तथा अपना मृत्यु के उपरान्त आकर राज्य पर अधिकार प्राप्त करने के लिए कहा। राम लक्ष्मण और सीतादेवी हिमालय पर्वत चार वहां जाकर बसाकर रहने लगे। दशरथ की पुनर्जाय के कारण मृत्यु हो गया। भरत सत्ता लेकर राम की बापम बुलाने के लिए हिमालय स्थित आश्रम में गया। वहां उन्होंने राम की राजा दशरथ का मृत्यु का सूचना दी। पिता का मृत्यु सुन कर राम ने शाप नहीं किया और न व राज्य। लक्ष्मण और साता का जय पिता की मृत्यु का सूचना मिली तब वे अत्यधिक दुःखा हुए। इस पर राम ने उन्हें आश्वस्त किया और अनित्यता का धर्मोपदेश किया। उपदेश सुनकर लक्ष्मण और साता शाप रहित हो गए। राम बापम शौचन को तयार नहा हुए। उन्होंने भरत का अपनी तण पादुकाएं दी। भरत लक्ष्मण और साता वाराणसी शौच आए। पादुकाओं को सिंहासन पर रखकर राजकाय करने लगे। अयाय हान ही पादुकाएं एक दूसरे पर आघात करती थी माय हान पर व शाप रखा था। सात वर्ष पूरा हान पर राम ने शौच कर अपना बहन सीता देवी से विवाह किया और साठहजार वर्ष धर्मपूवक राज्य करने के उपरान्त स्वर्ग चले गए।

मन्त्रात्मा यद्ध ने दशरथ जातक की कथा जनवन में कही थी। उन्होंने किसी गृहस्थ का दया जिनम पिता का मृत्यु के शाप से अपना सारा कतव्य छोड़ दिया था। मन्त्रात्मा यद्ध ने कहा कि प्राचीन काठ में पण्डित राम पिता का मृत्यु पर शाप नष्ट करने थे। दशरथ का मृत्यु पर राम पण्डित ने शाप नहीं किया। उन्होंने राम के धर्म का उपाहरण देन हुए उक्त जातक कथा का मुनाया और समाधान इस प्रकार किया—उस समय गङ्गादेव दशरथ थे मन्त्रमाया राम पण्डित का माता यथाधरा माता जानते भरत और मैं राम पण्डित था।

अनामक जातरम में रामकथा के पात्रों के नाम नष्ट किए गए हैं किन्तु कथा में वनवास माताहृष्ट जगद मृत्यु वाञ्छि-सुप्राव यद्ध सन्तुष सीता की परीक्षा

आदि वृत्तान्तों के सकेत मित्रने है। अपन मामा के आनमण के भय से राम स्वयं राघव छान कर वन में चले जाते हैं। दशरथ कथानम् का विगपता यह है कि उमम मीना का जयवा विमा राजकुमारा का उत्पन्न नहा है। दशरथ की चार रानिया थी जिनसे एक एक पुत्र हुए थे। तीसरा रानी के कहन में दशरथ ने अपन दो पुत्रों का वनवास लिया था और बारह वर्ष बाद लौटने का कहा था। गेप कथा में काइ विगपता नहीं है।

बौद्ध जातकों में सुरक्षित रामकथा को कतिपय विद्वानों ने रामकथा का मूर्तरूप माना है। डा० बुल्क ने इस विषय पर उपलब्ध सामग्री का विन्लेपण करके यह मत व्यक्त किया कि दशरथ जातक का वृत्तांत ब्राह्मण रामकथा का विकृत रूप मात्र है।^१ बौद्ध साहित्य में रामकथा का जग स्वल्प है। जातक राम कथा का मूल मान बौद्ध नहा है। बौद्ध लिपि के रचना का म रामकथा सम्बन्धी आख्यान प्रचलित हो गए थे। इस आख्यान साहित्य का कुछ सामग्री का समावेश पाली भाषाओं में हो गया। बौद्ध रामकथा के सम्बन्ध में डा० बुल्के का मत समीचान जान पड़ता है और अधिकांश विद्वान इस मत में सहमत हैं।

संस्कृत साहित्य में रामकथा—वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत का रचना के बाद संस्कृत साहित्य में ब्राह्मण रामकथा पर आधारित प्रचुर परिमाण में राम-साहित्य का मूलन होता रहा। पुराण ललित साहित्य धार्मिक साहित्य मभी प्रकार का साहित्य रामचरित विषयक उत्कृष्ट रचनाओं में सर्वोच्च हुआ। पुराण साहित्य में हरिवंश तथा प्रधान महापुराणों में विष्णु तथा वायुपुराण में गुणित रामकथा वर्णित है। श्रीमद्भागवत के नवम स्कन्ध में रामचरित का वर्णन है। ब्रह्म पुराण में राक्षसवर्ण तथा भूयवर्ण वर्णन में रामचरित आया है। ये कथाएँ मूल रामकथा के अनुसार हैं। इसी प्रकार बाराह पुराण में रामकथा भी वर्णित है। अन्य पुराणों तथा उपपुराणों में भी रामकथा वर्णित है। कथावस्तु की दृष्टि में इन वर्णनों में काई विगपता नहीं है। ये मभी वर्णन आत्किवाच्य के अनुसार हैं।

पुराणों के अनिश्चित संस्कृत साहित्य में रामायणों की रचना हुई। इनमें से अधिकांश का समय ईसा की प्रथम सहस्राब्दी के बाद का जान पड़ता है। यागवाल्कि रामायण की रचना सम्भवतः आठवीं शताब्दी में हुई थी। अध्यात्म रामायणों में रामायणों में सबसे महत्वपूर्ण है कथा कि रामभक्ति के विकास में

१—विष्णु विवेका के लिए लिखित—डा० बुल्क— रामकथा पृ० ८१ १०६।

इस ग्रंथ का विशेष योग रहा है। अद्भुत रामायण और आनन्द रामायण का रचना अध्यात्म रामायण के बाद हुई। नीचकण्ठ के मत्र रामायण का उद्देश्य रामायण के वेङ्गमूलतत्व का प्रतिपादन है।

संस्कृत ललित साहित्य में भी कथानक में परिवर्तन नहीं पाया जाता। ललित साहित्य में रामचरित की काव्यात्मक अभिव्यक्ति हुई है। प्रथम गताङ्गी रमवां पूव में जब जादिकाव्य अपना वर्तमान रूप प्राप्त कर चुका था काव्यात्मक न रघुवंग की रचना की थी। रघुवंग की रचना आदिकाव्य का प्रसाद गण सम्पन्न रम गत्री में की गयी है जो आज का काल तक संस्कृत साहित्य का प्रभावित करती रही है। रघुवंग के पदवाच रामचरित मन्वधा महाकाव्य का एक शृङ्खला मिश्रता है। सतुनघ अथवा रावणवहू (मन्गाराष्टी प्राकृत) की रचना सम्भवतः ५वीं गताङ्गी में हुई थी। उसके रचयिता प्रवरसन बताया गया है। इसमें १५ सर्गों में राम रावणयुद्ध का वर्णन किया गया है। भण्डिकाव्य का रचना छठवीं गताङ्गी में हुई थी। उस महाकाव्य में २२ सर्ग हैं जिनमें युद्धकाण्ड तक की रामकथा वर्णित है। कुमारदास का महाकाव्य जानकी हरण आठवां गताङ्गी का बताया जाता है। राजाखर ने कुमारदास का काव्यात्मक परम्परा में कहा है। इस ग्रंथ के बस प्रथम पाठ में उपलब्ध है। तवी गताङ्गी में अभिनव ने ६ सर्गों में रामचरित की रचना की थी इनमें वर्तमान संस्करण युद्धकाण्ड तक रामायण की कथा वर्णित है। ग्यारहवां गताङ्गी के आरम्भ में धर्म ने ५ ८६ श्लोकों में रामायण का कथा का संपन्न रामायण मञ्जरा में प्रस्तुत किया। उहाँ दशवतारचरित की भी रचना की जिसमें अथ वतारा के माघ राम का चरित वर्णित है। उसी प्रकार रामचरित मन्वधा महाकाव्य का रचना परवर्ती काठ में भी होना रहा।

महाकाव्य के अतिरिक्त संस्कृत नाटका के रूप में रामकथा साहित्य में विकसित हुई। रामकथा मन्वधा मन्वध पञ्चम प्रतिमा और अभिषेक नाटक मिश्रित है। ये भाग रचित बताया गया है। इन दो नाटकों के पश्चात् रामचरित का वर्णन करने वाले दो महान नाटक भवभूति कृत मिलते हैं। भवभूति का समय आठवां गताङ्गी है। उहाँ के रम प्रसाद मन्वधीरचरित में रामकथा का वर्णन किया है। कण्ठरम प्रधान उत्तररामचरित में सात जका में उत्तरकाण्ड का कथा परिवर्तन के माध्यम प्रस्तुत का गया है। अनगण्यकृत उगसराषव श्रिदनागकृत कुत्साला तथा मन्वधकृत अन्वराषव में रामकथा के विभिन्न अंगों का वर्णन किया गया है। इनका गताङ्गी में राजाखर ने बाल रामायण विस्तृत नाटक का रचना का उमकर्म जका में रामाभिषेक तक का कथा वर्णित है। अनुम

नाटक अथवा महानाटक तमबा शतादी की रचना बतायी गया है। नवा गताङ्गी में गतिभद्रवृत्त आश्वयत्तूणामणि म सात अक्ष हैं जिनम पचवटा स लकर माना की अग्नि-परीक्षा तत्र की कथा वर्णित है। जयवृत्त प्रमत्तराघव तथा साम श्वरवृत्त उल्लासराघव म रामकथा का वर्णन किया गया है। इसका अतिरिक्त रामकथा के आधार पर अनन्य अय नाटक रचे गये जोर यह परम्परा आज चल्ता रही।

महाकाव्या और नाटका के अतिरिक्त कथा-साहित्य म भी रामचरित मिश्रता है। किन्तु इस प्रकार का कोई विस्तृत परम्परा नहीं पाई जाती। गुणात्थवृत्त बहलकथा का स्थान पर मामदेव ने ग्यारहवा गतादी म कथा मरिस्तागर के रूप म किया था। इस ग्रन्थ म तीन बार रामकथा वर्णित है।^१ इसका बहुत पत्र जनाचाय सघादास न पाँचवा गताङ्गी म वृहत्कथा का जन स्थान पर वसुदेव द्विदि म प्रस्तुत किया था। इस ग्रन्थ की रचना प्राकृत कथ म की गयी है। कथा जन घम म प्रभावित है किन्तु कथानक वाल्मीकि रामायण स भिन्न नहीं है। वसुदेवद्विदि म बदाचित पहला बार मीता के मदादरी की पुत्री हान का उल्लेख है।

जन राम-साहित्य—बाइ साहित्य की भांति जन साहित्य म भी रामकथा मिश्रता है। जनाचार्यों द्वारा रचित राम-साहित्य अत्यन्त विस्तृत है। जन घम म रामकथा के पात्रा के महत्प्रपूण स्थान दिया गया है। उनकी गणना जन घम के त्रिगण्डि गलाका पुराण म की गयी है। ये त्रिगण्डि गलाका पुराण २४ तीयकर् १२ अक्षवर्ती ९ बल्लव ९ वामुदेव तथा ० प्रतिवामुदेव हैं। जिन प्रकार मन्वृत्त साहित्य म महापुराण के चरित चरितम तथा पुराणा म वर्णित हैं उमी प्रकार इन त्रिगण्डि गलाका पुराण के चरित जन महापुराणा तथा पुराणा म वर्णित है। इन द्वाध्य चरित वाल पुराण का वर्णन पहले त्रिगण्डि लक्षण महापुराण म मिश्रता है। इस महापुराण के दो भाग हैं जिनमन वृत्त आत्पुराण (नवी गताङ्गी) जोर गणभद्र वृत्त उत्तरपुराण (८१७ द्रो)।

जन मायता के अनन्तर प्रत्येक बल्ल म ये महापुराण हाने हैं। इनम मे राम (पद्य) अथवा और रावण प्रमग आठव बल्ल वामुदेव तद्वथा प्रतिवामुदेव हान हैं। ये गमराजान हान हैं। बल्लव (बल्लभद्र) और वामुदेव (नारायण) किमा राजा की सिभिन्न रानिया के पुत्र हान है। प्रतिवामुदेव मन्व वामुदेव का

१—कथा मरिस्तागर—नवम अक्ष प्रथम तरग १२ अक्ष ५ अक्ष जोर १८ अक्ष ३ तरग।

विराघ करता है। वामुदेव अपन भाए प्रणव व माथ हा यद्ध करते हैं जीर प्रति वामुदेव का बध करत ह। वय करने व कारण उह नरक जाना पता । वरुदेव अपन भाए की मर्यु व कारण गानाकु होकर जन दीगा त है जीर माक्ष प्राप्त करते हैं। रामकथा व य सभा पात्र जनमतावम्बा मान गये है।

जन राम साहित्य की कुछ अपना विंगपताण है। हमक जनमार राधम जीर वानर मनप्य थे। य विद्यापरवग के थ। उह कामरूपतय जावागगामिना विद्याए मिद्ध थी। रामचरित मम्बधा जमम्भव वत्तान्ता को मम्भेव रूप म चिनिन करन का प्रयाम जन राम साहित्य की एक अय विंगपता है। हमम वत्तान्ता का तरसगत रूप म परिवर्तित कर चिनिन किया गया है। हमम जात हाता है कि जन राम साहित्य का रचना वाल्मीकि रामायण व वतमान रूप ग्रहण कर तैन व पन्चात हुई। जन रामकथा सम्वृत प्राकृत अपभ्रंग तथा जय भाषाभा म मिन्ता ह।

जन साहित्य म रामकथा की १ परम्पराए मिन्ता है। श्वताम्बर मम्प्र दाय म विमन्मूरि की रामकथा प्रचलित है जीर लिंगम्बर मम्प्रताय म विमल मूरि और गणभन्गाचाय दाता का रामकथाभा का प्रचार है।

विमन्मूरि न रामकथा का जन रूप प्रन्तुत किया। उहान प्राकृत म पउम चरिय की रचना का। उहान गिया है कि म उम रामकथा अथवा पद्यचरित का कहता हू जा आचार्यों की परम्परा म चला जा रहा है और नामावला निरुद्ध था। विमन्मूरि व पूर्व जन परम्परा म सम्भवत रामचरित नामावला क रूप म हागा जयात उमम कथा के प्रवान प्रवान पात्रा क उनक माता पिताजा क नाम ही हाग। वह पल्लवित कथा क रूप म न हागा और उमा का विमन्मूरि न विमन्त चरित क रूप म रचना का हागा। विमन्मूरि न अपना रचना का समय गिया । हमक जनमार पउम चरिय का रचना वार निगण भवत ५ अथवा विक्रमा सबत ६ म हुई था। हमका सम्वृत रूपांतर रविपणाचाय

१—पउम चरिय—जन प्रमारक सभा भावनगर तारा प्रसागिन
नामावन्थि निवद्ध आयरिय परंपरागय मन्व।

वाठामि पउमचरिय जहाणपुजि ममासण। १८।

—नायूगम प्रमा—जन साहित्य जीर गिन्याम प २८।

—पचव वाममया टुममाण तीमवरम मजता।

वार मिद्धिमवगण तवा निवद्ध म चरिय। १ । पउम चरिय।

न पञ्चरत्न क नाम म ६६० ई० म किया। हिन्दी लगीयाग म पञ्चरत्न का अनुवाद शैलतगम न म० १८१८ म किया था।

विमलमूर्ति की कथा के अनन्तर राजा मणिय (शणिय) मगवार क प्रधान गिव्य गायम (गौतम) म रामकथा का यथावत्प जानन का जिगुमा करता है और गौतम उम रामचरित मुनात हैं। ग्रय का जारम्भ विद्याधर गव क वणन म हाता है जिमम राममा और वानरा का उत्पत्ति आ गया है। इमा क अनन्तर रावण चरित का वणन है। रावण कुम्भरुण चद्रनया आर विभाषण य राजा रत्नश्या और कवमा का चार सन्तान थ। रत्नश्या न जय पट्ट पत्ल अपन मुपुत्र रावण का दया तत्र उमक ग म उमकी माता न उत्तम हार पटना गया था जिमम वाक क दम मित्र शिवाया न थ। एम कारण पिता न उमका नाम दगातन रया। एम यम वर्ण जाति कया म कवा नही बल्कि राजा मान गय है। वर्ण क विरुद्ध अभियान म हनुमान न रावण का महायता का था और चद्रनया का पुत्रा अनगनुमुमा म विवाह किया था। गरदूपण विद्याधर का का राजकुमार था रावण का बहन चद्रनया स उमका विवाह हुआ था। गरदूपण और चद्रनया का पुत्र गबूक और पुत्रा अनगनुमुमा थी। रावण एक धमभाज जन मनावरुमा क रूप म चित्रित किया गया है। उमन जन मन्त्रि का निमाण कराया था और मगुवति वाक दना पर रोक्त ग्यामा था।

पउम चरिय क अनुमार राजा शग्य की चार रानिया थी—कौणवा मुमिद्रा कथया और गुप्रभा। इनम प्रमग राम लम्भण भगत और गनुध्न चार पुत्र हुए। राजा जनक और रानी विरुह म पुत्री मीता और एक पुत्र मामरुत् उत्पन्न हुआ। राम बनवाग मउषा कथा का अग वाल्मीकीय कथा म भिन्न है। बनवाग का म राम आर लम्भण जनक राजाआ म युद्ध करत हैं और उन पर विजय प्राप्त करने है। मानाहरण का कारण यह बताया गया है कि मूपहाम गग का मिद्धि क लिए तप करत हुए गबूक का लम्भण त बध किया था। समा पार मुन कर रावण का आया और माता का शर कर भागवन हा गया। उम समय लम्भण जगत म थ और राम कुटी म। रावण न अवकाचना विद्या स यह जात लिया कि लम्भण न राम का बन्तन क लिए मित्रान का मजन बताया है। रावण

१—गद्य चरित—मार्तिरचन्द्र जन धर्ममाण शम्बर गग प्रजापति।

शिलास्यपि ममानस्य ममतास्य अनुससयस्य।

त्रिभास्वर धधमान यपमिद्ध चरित पपमुनरिनिबद्धम्।१८५।

न मिहनाट किया और राम के लक्ष्मण व पाम प्रस्थान करण पर उसने सीता का हरण किया। सुग्रीव का वत्तात भा वाल्मीकीय क्या स भिन्न है। रामायण व यद्धकाण्ट की घटनाआ म भी परिवर्तन किया गया है। समद्र एक राजा था जिमसे नीठ ने यद्ध किया था। लक्ष्मण व शक्ति गगन पर चिक्विला गणमघ की क्या विचारया न की थी जिमके माय लक्ष्मण न विवाह किया। रावण का वध लक्ष्मण न किया। राम और लक्ष्मण ६ वष तक ग्वा म रह। अयाध्या गैर कर राम और लक्ष्मण राज्य करन गग। राम क आठ हजार और लक्ष्मण क तेरह हजार रानिया थी। सीता निवामन और साता परीथा वाल्माकाय रामायण के अनमार है। परीक्षा म सफ्ट हा कर सीता न जन घम का दीथा ला और व स्वग गया। राम और लक्ष्मण का प्रम परखन क लिए दा स्वगवासी देवताआ न लक्ष्मण को यह विश्वास तिलाया कि राम की मत्य हा गया है। म पर गाक क कारण लक्ष्मण की मत्यु हो जाता ह। और रावण-वध क कारण व नरक जात है। लक्ष्मण का अतयष्टि करके राम विरक्त हो जाते हैं और लक्षा के उपरान्त माघन करक मोक्ष प्राप्न करत हैं।

जन रामकथा का दूसरा रूप पहले पहल गणभन्नाचाध के उत्तर पुराण म मिलता है। गुणभद्र जिनसन स्वामा के गिष्य थे और कर्णाटक प्रांत के रत्ने वा थे। जिनसन न आदिपुराण का रचना का था। गणभन् ने अपन गर क आदिपुराण के अन्तिम १६२ लाक रच कर उस पूरा किया और उत्तरपुराण का रचना का। उत्तरपुराण क अन्तगत ६७वें तथा ६८व पव म १११७ श्लोका म रामकथा वर्णित है। इम क्या म सीता का रावण का पुत्री माना गया है। उत्तरपुराण का रचना-का ८९७ ई है। गुणभन् विमलमूरि और सघनाम का रचनाआ म अवश्य परिचिन रह हनि। उनके गर जिनसन न आदिपुराण म सूचित किया है कि उहाने अपनी रचना कवि परमन्वर का गद्यकथा (कवि परमन्वर निगन्तिगद्यकथामानक पुराचरितम्) क आधार पर का है। कवि परमन्वर का वृत्ति अब जग्राप्य है। अपन गर क समान गणभन् न भा कथाचित कवि और परमन्वर का रचना क आधार पर रामकथा लिखा हा। सम्भवत पउम चरिय और उत्तरपुराण का रामकथा की दा धाराए जग्य जलग स्वतत्र रूप म निर्मित हुइ और व ही आग प्रवाहित हाता हुइ हम तक आया। एन दा धाराआ म गर-परम्परा भन् भा हा सकता है। एक परम्परा ने एक धारा का अपनाया और दूसरा न दूसरा का।

गुणभद्र का गमकया व अनुमान करके वागणमा व राजा था। उनका मुलाकात व गम म राम व कया मे लम्पण शर आग चर कर जय करके गजधानी मावन म स्थापित करत हैं तय किमा अय राणा व गम म (कम्पाम्बित न्या) भरत आर गुरुधन उत्पन्न हुए। रावण विद्यावर वग व पुत्रस्य का पुत्र था। उमक मन्त्रारा व गम म माता उत्पन्न हुई। यानिपिया न सूचना दा कि पुत्रा रावण का नाग कर्गा। एक मजूपा म गय कर रावण उस भारीच तारा मिथिया म गवा दता है। तय वा नाग म उत्पन्न कर मजूपा मिथी ह जीर जनक व पाम ल जाया जाता । मजूपा म जनक वास्त्रिका का दयत हैं और उगका नाम माता रवन हैं। जनक अपन यत का रक्षा व लिए राम और लम्पण का उगत हैं। यत समाप्त हान पर राम आर माता का विवाह हाता ह। लम्पण का भा विवाह हाता है। इमक वाट दाता वारागमा म रहत गयत है। कस्या व ह्य ग वनवाग का प्रमग इम कथा म नगी ह। नारत म रावण न माता व मात्य का वणन मुता। वारागमा व निवृत् चित्ररू म वास्त्रिका म राम और साता व रिहार व समय मारीच वनक मूग का रूप धारण कर जाता है। मग व पाठ राम व जान पर रावण न राम का रूप धर कर साता का हरण किया। हनुमान न राम का महायत्ना की व तका गय जीर माता का मातरना त कर ली। कया म राम का आठ हजार और लम्पण की मातृह हजार रातिमा बनाया गया हैं। तारापवाह स माता निवासन का चचा नहीं है। लम्पण का एव अमाध्य राग न मृत्यु हुए आर व नरक गय। राम न लम्पण व पुत्र पश्यामुत्तर का राय पत् आर माता व वरिष्ठ पुत्र अजितगण का युवराज पत् द कर जन धम म दागा ल्य आर मक्ति प्राप्त बा। सीता न भा दाता ल्य जीर स्वग प्राप्त किया।

विमन्त्रुर्गि जीर गुणभद्र दाता का परम्पराराध म राम साहित्य का निमाग हुआ। तन परम्पराराध व अनगत जन आचार्यों का अग्रतग रचनाभा पर आम विचार किया जायगा।

(स) रामभक्ति उत्पत्ति और विकास

राम साहित्य का अनुपादन करने म जान हाता है कि रामचरित का आरम्भ म ही अन्वीय साहित्यिता प्राप्त हुई। ततमानत पर राम व आर्या चरित का तता स्थापक प्रभाव पया कि लम्पणारी तय म व मयाग पुग्धानम मान जान ल्य। राम व चरित का वान जास्त्रिकाल म किया गया है व राम मनुष्य

थे इक्ष्वाकुवश म उत्पन्न जादा गुणा स विभूषित राजा थ। राम न स्वयं वाल्मीकि रामायण म अपन को मनुष्य कहा है। रामचरित का प्रचार वार चरित के रूप म हुआ। ब्रह्मा न वाल्मीकि स इसी वीरचरित का वणन करन क लिए कहा था। आरम्भ म रामपूजा वारपूजा क रूप म प्रचलित था। इमका प्रमाण गीता म श्रावृष्ण के इम कथन स मिलना ह कि गस्त्र धारण करन बाठा म मैं राम हू। अवतारवात् क विक्रम के साथ राजभावना स राम को मथाना पुरपातम स धिष्ण तथा परब्रह्म के पत् पर प्रतिष्ठित क्रिया जार राम की वारपूजा अवतारपूजा क रूप म परिवर्तित हुई। परवर्ती कात् म रामभक्ति का निगम अवतार भावना स सथद्ध ह जतएव अवतारवात् पर किंचित विचार कर लना समीचीन होगा।

अवतारवाद—अवतारवाद का मूलपात वल्कि साहित्य म हुआ था। ब्राह्मण तथा आरष्यक साहित्य म एमका उल्लेख मिलना है। आरम्भ म प्रजापति का महत्व अधिक था। गनपय ब्राह्मण म प्रजापति क तान अवतार का उल्लेख हुआ ह। य अवतार ह—मत्स्य (१८११) कूर्म (७५११) तथ वाराह (१४१२११)। प्रजापति क वाराह अवतार का क्या तत्तिराय ब्राह्मण (११३६) तत्तिरायसहिता (७१५१) तथा तत्तिराय आरष्यक (११८) म है। तत्तिरीय आरष्यक (१०३) म प्रजापति क कम अवतार का उल्लेख है। गनपय की क्या क जनमार जम्प्लावन म जब समग्र समार नष्ट हा गया तथ केवत् एक मत्स्य बच रहा। पून सूचना पान स मन ने सत्ति के बीज बचा कर एक नोदा म रख उम एक मत्स्य म बाध कर अपना तथा बाजा का रक्षा का। जत् घटन पर उतान घन क्रिया जिमक पत्स्वरूप सत्ति का पुन प्रवर्तन हुआ। मत्स्य प्रजापति का रूप था। जय क्याआ म कम ना रूप धारण करव आरम्भ म प्रजापति न प्रजा का सत्ति की था जार वाराह क रूप म पश्चा का जठ क उपर उगाया था।

१—आत्मान मानय मय राम आरयात्मजम।

मात्त यत्च यत्चाह भगवागतं ब्रवानु म॥

—वा रा० यद्वाराण १० ११॥

२—यत् कथय वाग्म्य ध्यान आरणात्त नम।

रहस्य च प्रकाश च यत्बत तस्य धामन ॥

—वा० रा वात्वाण २ ॥

—राम गम्भनामहम्। गीता—१ १॥

वामन जार नमिः अवतार त्रिणु क अवतार आरम्भ म कह गय है। गनपय ब्राह्मण (१०५१) तत्तिगाय ब्राह्मण ((१३१७) एतस्य ब्राह्मण (६२७) तथा तत्तिगाय मन्त्रिा (०१ १) म वामन अवतार का कथा है। ऋक् (१ ००) तथा गनपय (१० १) का वामनावतार का कथा का मूल्यान माना जाता है। तत्तिराय आरष्यक (परिनिष् १० १६) म नमिह अवतार का कथा जाया है। वामनावतार की कथा क जनगार विष्णु न वामन रूप धारण कर तया क राजा त्रि ग ताता ताता का जान गिया।

निहाय-पुगण यग म अवतारवा का विपु प्रचार हुआ। महाभारत म प्रजापति क मन्व्य अवतार (आरष्यक १८५ ८८) का कथा मित्रा है। नागधनाय उपाख्यान (महाभारत १० ६७) तथा हरिविण पुगण (१ ८१) म विण क वामन अवतार का उल्लेख है। नमिह अवतार का कथा नागधनाय उपाख्यान (१० ०६ ७ ७ ६) तथा हरिविण पुगण (१ ४१) म मित्रा है। पशुपुगम क अवतार हान का उल्लेख नागधनाय उपाख्यान (१० २६ ७३) तथा हरिविण पुगण (१ ८१ ११०) म मित्रा है।

विष्णु आरम्भ म मां ता मान जात थ। याम्ब क आमार र्मिया म व्याप्त हात क कारण जयवा मधार का र्मिया म व्याप्त कर्न क कारण मूय का विण कहा जाता है। विण का मन्व धार धार बन्ता गया आर पुगण यग म त्रनाश्रा म क जयनम मान जान ग्य। ब्रह्मस्वरूप नारायण स नवा अभिप्रता ना प्रतिपात्ति का गया। त्रिण पुगण (१ ८ ८) म मन्व्य कूम वागह का प्रजापति ग मन्व्य माना गया है। नागधनाय उपाख्यान (१० २६ ७३ १० ७ ६) तथा हरिविण पुगण (१ ८१) म वागह का मन्व्य त्रिणु म माना गया है। मन्व्य कूम आर वागह क मन्व्य म पयव पुगणा का रचना हुई त्रिणु का अवतार रहा गया है। विष्णु पुगण म नृगिह (१ १६) का कथा जाया है आर पशुपुगम (१ १६) का विष्णु का अवतार कथा गया है।

प्राचान्तम गात्रिय म अवतारवा का जा स्वरूप मित्रा है उगम जनीविकता का नय मन्वापि क है। अवतार का कथा अत्राविकता विगिष् पगप्रम अभि कायवगाति म गवस्त है। विनु नाम अवतार का पूजा का वर्ण

१—यस्य यत्र त्रिपिता नृपति तन्निष्ठाभवति। विष्णुविगत वा ध्येनात्तया। याम्ब निगन्त १०। १०।

निर्णय नहीं है। कृष्णावतार के साथ अवतारवाद के विकास के समय नये युग का समावेश हुआ। इस युग में अवतारवाद में भक्ति-तत्त्व का समावेश प्रारम्भ हुआ। भक्ति-तत्त्व के समावेश से अवतारवाद के स्वरूप में प्रयोग परिवर्तन हुआ गया और उनके जादू-चरित्र का प्रतिष्ठा सम्भव हो सकी। इस मणिकान्त योग का समग्र भारतीय चेतना तथा जनजातों पर व्यापक प्रभाव पड़ा और भक्ति-तत्त्व सम्बन्धित अवतारवाद का विकास और विस्तार गतात्मिका तक निरन्तर होता रहा।

अवतारवाद का यह विकास भारत में श्राद्ध धर्म के उत्थान के साथ संबद्ध माना जाता है। विद्वानों का मत है कि प्राचीन यज्ञ प्रधान धार्मिक व्यवस्था तथा ऋषि-वर्ण का विपुलता का प्रतिक्रिया के रूप में सरल एवं मातृजनानुसृत धार्मिक व्यवस्था का जन्म हुआ। उसी धर्म में बौद्ध धर्म तथा भागवत धर्म का उत्थान माना जाता है। भागवत धर्म मातृवत् जाति में प्रचलित था। कृष्ण भागवत के इष्ट देव थे। भागवत धर्म की यह विशेषता थी कि इसमें ब्रह्म-निर्णय का स्थान नहीं मिला था। यहाँ कारण यह कि कालान्तर में ब्राह्मण धर्म और भागवत धर्म का जपन अधिक निकट पाकर ब्राह्मणों ने भागवतों के इष्टदेव वासुदेव कृष्ण का विष्णु का अवतार मान लिया और दोनों धर्मों का धार-धीर सम्बन्ध हो गया। वासुदेव कृष्ण और विष्णु का अभिन्नता का धर्म सम्भवतः ईसा पूर्व तीसरा शताब्दी से आरम्भ हुआ। ब्राह्मण धर्म और भागवत धर्म के सम्बन्ध में अवतारवाद का अत्यधिक प्रसार हुआ। विष्णु अवतारवाद का भावना के बद्ध बन गये और उनके स्थान सर्वोपरि माना गया। अन्य अवतार विष्णु से अभिन्न माने गये।

भागवत धर्म—कृष्णावतार के साथ अवतारवाद में भक्ति-तत्त्व का समावेश हुआ। भक्ति का उत्थानस्यक्त बत है। उस बलत्वे उपाध्याय ने बत का स्तुतिया में जनगणमूचक भक्ति का अस्तित्व सिद्ध किया है। बत में जो भक्ति बानरूप में बतमान था वह भागवत धर्म में पञ्चविध और विकसित हुई। भक्ति के विकास का यह प्रथम यग लगभग १० सत्सय वय का माना गया है। इन्हीं हजार वय के पूर्व में सातवता के उत्थान से पहले १०० का प्रथम महत्त्वात्ता के पूर्वार्थ में गुप्त नरणा के समय तक इस भक्ति का विकास होता रहा। मयुरा के निकटवर्ती प्रथम में सात्वत नानि का निवास था जिसमें भागवत धर्म का विकास हुआ। कृष्ण

१—१००० वर्ष पूर्व—अर्थात् १००० वर्ष पूर्व ।

२—१००० वर्ष पूर्व—उपाध्याय—भागवत धर्म १६३ ।

इसी सात्वत जाति में उत्पन्न हुए थे। इस जाति के लोग गूरुमन मण्डल में हट कर पश्चिम समुद्र तट पर भी बसे और विन्धु तथा दक्षिण की ओर गये। सात्वत जाति के सम्प्रदाय के कारण दक्षिण में आगे चल कर वण्णव धम का विकास हुआ मका। पाणिनि (६०० ई० पू०) के वामुदेवाजनाम्न्या वुन (४३।९८) सूत्र से उनके समय में भागवत सम्प्रदाय के विकास की सूचना मिलती है। पतञ्जलि (वि० पू० १।१।१) ने भी भागवत नामक धर्म धम का उल्लेख किया है जिसमें पात हाना है कि भागवत धम इस समय सर्वमान्य था और अथ धम के लिए अपने धम की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए अपने माथ भागवत धर्म का प्रयोग करते थे। इस नगर (ई० पू० २००) के गिलाख से पता चलता है कि गुगवर्गी राजा भागभद्र की राजसभा में यथा दूत हैन्द्रियाडोरम अपने का भागवत कहना था और उसने वामुदेव की प्रतिष्ठा में गण्ड स्तम्भ का निर्माण कराया था। मयुरा के महत्क्षत्रप सादाग (ई० पू० ८०-ई० पू० ५७) के ममराजान एक गिलाख से मयुरा में जन्म स्थान में एक मन्दिर के निर्माण का भी सूचना मिली है। गुप्त नरेशों के नाम के साथ परम भागवत धर्म का प्रयोग होता था। भागवत धम सात्वत धम एकात्मिक धम तथा पाचरात्र धम के नाम में भी जाना जाता है।

रामायण की प्रतिष्ठा—भागवत धम तथा ब्राह्मण धम के सम्बन्ध में वण्णव धम का विकास हुआ। इसमें ब्राह्मण का विष्णु से अभिन्न माना गया और भक्ति भावना उठी और कर्मिता हुआ गया। अथ अवतार का कालान्तर में विष्णु से अभिन्न माना जा रहा। इनमें दानरवि राम मन्त्रे अधिक महत्वपूर्ण थे। राम का जन्म चरित्र समाज में प्रसिद्ध था। आत्मिक धर्म के प्रचार के माथ राम चरित्र का प्रचार भी बढ़ता गया। राम के चरित्र में आत्म तत्व सन्निहित हान के कारण लोक में उसका प्रतिष्ठा हुई और राम अवतार के रूप में पूज्य हुए। राम के अवतार की भावना के उत्पन्न हुई इस सम्बन्ध में ब्राह्मण निषारण करना कठिन है। अवतार का भावना के माथ ही रामभक्ति का उत्पत्ति भी माना जाना चाहिए। यह समय प्रथम गताला का पूर्व के पन्थान नहीं हो सकता। बाल्माकि रामायण में राम के अवतार हान का उल्लेख है। रावण धर्म के उपरान्त देवतागण अवतार के रूप में उनका स्तुति करने है। बाल्माकि रामायण में जिन स्थान पर रामायण का उल्लेख हुआ है उन्हें दाम्पत्य के त प्रसिप्त माना है। बाल्माकि रामायण में रामभक्ति का भी स्पष्ट उल्लेख है। उत्तरकाण्ड में स्वयंसेवा के समय हनुमान ने राम से तान कर माथ धर्म—राम रक्षा में अनन्य भक्ति रामन्या प्रचलित रहने तक आयु का प्राप्ति तथा

नित्य रामकथा श्रवण।' 'मक अतिरिक्त विभाषण व कारण म जान पर प्रपत्ति गम्भीर राम क वाक्य का मन्त्र भक्ति म है। भक्ति क जागृत म यह वाक्य वाज रूप म ग्रहात हुआ है। वात्मावि रामायण क पचात महाभाग्य म रामाय तार का वणन क म्यत्र पर जाया है। प्राचीन पुराण हर्षिव्य वाय मन्त्र ब्रह्माण्ड विष्ण तथा भागवत पुराणा म अवतारा का जहा चचा आया है वहा रामा वतार का भी उल्लेख हुआ है।

पुराणा क अतिरिक्त प्राचीन काव्या म रामावतार का वणन हुआ है। भास दृत् अभिषेक नाटक म राम का विष्ण का शीर सीता का श्रीमी का अवतार ब्रह्मा गया है। प्रथम गताया इन्दी पूव म काव्यम न रघवण म राम का वणन विष्ण तथा परब्रह्म क रूप म किया है। कालिदास क ममथ म रामभक्ति का प्रचार का चका था और राम स सप्रथिन स्थान तीर्थ मान जान जग थ। मघन म रामगिरि के वणन स यह स्पष्ट है। कवि कुमारदाम दृत् जानका हरण तथा हनमन्नाटक म राम क

१—स्तुति म परमा राजस्त्वयि तिष्ठतु नित्यम् ।

भक्तिच नियता वार भावा नायन गच्छतु ॥ वा रा उ वा ४ १५

२—मन्त्र प्रप्राय तवास्मानिच याचत ।

जभय सवेभ्रतम्या त्नाम्यन्त व्रत मम ॥ वा रा य वा १८ ३३

—अथ दाशरथिर्वीरा रामा नाम मन्त्रः ।

विष्णमानप्यरूपण चकार वसधामिमाम (महाभारत जा प १४०
२२)

रामायण पुण्य भारते भरतपभ ।

जाती चान्त ध मध्य च हरि मवद्र गायत । वहा स्वगाराहण प्र १८ ६

सादी तु ममनप्राप्त अनाया तपरम्य च ।

रामा त्पगन्धिभक्त्वा भविष्यामिज्जयत्यति ॥ वरा गान्ति पव १२ ६८

४—मा भगवता श्रीमा जानाति जननामजाम ।

सा भवनमनप्राप्ता मानया ननमास्थिता । अभिषेक नाटक ॥

५—अथात्मना गणगण गणन पन् विमानत विगाहमान ।

रत्नाकर बाण मिय म ताया रामामिद्याना हृग्गित्यवाच ॥ (रघवण १ ११)

—मन्त्र जनवतनयास्नानपुण्यात्तप

स्नित्यत्तायात्तप वमनि रामगियोऽमथ ॥ पूरमध १॥

आत्मन्त्र त्रिंशत्तम तगमात्तय गत ।

वद पुमा रघवतिपत्तित मन्त्राम ॥ पूर मध १२॥

जन्तारा रूप का वर्णन है। माघ जाति कवियां म यह परम्परा तथा जा मन्त्रा है जा परवर्तीनाल म सम्बन्ध तथा जाधुनिन भाषाजा क कविया म चन्ता रहा।

गिरमे रामकथा—राम भक्ति क प्रचार तथा राम सम्प्रदाय स्थग काताथ रूप म मायना का मूनादा जा चुकी है। राम की पूजा क प्रचार क साथ राम मन्त्रि तथा उनका मूर्तिया के निमाण का भा प्रचार हुआ। पाणिनि का अष्टाध्यायी क एक मूत्र म कुत्र राम तथा कगव के विग्रह का वर्णन है। इम मूत्र म नगरिय राम रतात्पय है म सम्प्रदाय म वि इन एकमत न्ता है। पुराणा म राम मूर्तिया का स्पष्ट वर्णन मिलता है। शिणु धर्मात्तर पुराण (चाथी गनात्ति) म राम मूर्तिया क निर्माण क नियम लिख गय है। वराहमिस्त्रि (प चवा गतात्ति) न वर्णन महिता म राम मूर्तिया का वर्णन किया। मत्स्यपुराण तथा अग्निपुराण म राम क विग्रह का वर्णन है। गुप्त का म रामापागता का व्यापक प्रचार था। चन्द्रगुप्त (त्रितीय) का पुत्रा और वाकाटक राजमहिषा प्रभावता गुप्त भगवत रामगिरि ग्यामिनका उपासिता थी। गुप्त मघात्ता म एन नाम रामगुप्त का जिगल रामााम क पुत्र नान की मूचना मिलता है। गुप्तराजान एव मूर्ति भा प्राप्त हुई है त्रिगम नरण म आय त्रिभीषण का राम राजतिक्क कर रहे हैं।

गुप्तरा म रामकथा का जन्म भारतीय गित्य म आया था म क पयाप्त प्रमाण है। गामा जिठ म बनवा क कटार म दमग क विणु मन्त्रि म रामायण क दाय अन्तित किया गय है। म मन्त्रि रा निमाण रा म्मा का छठी गतात्ता है। मन्त्रि की चौकी तथा म्म्भा पर रामयण क पट्ट दाय अन्तित है। म दाय म्म प्रकार है—वामानि जा म्म अन्तियाडार बन-भामन अन्त्रि मुनि क जात्रय म राम गुपगारा की दुगति दण्क वन म राम गातात्तरण राम और न्ममान क्च्यमूक पर राम भान मुषीन रिप्पिया म राम वालि-मुष्राव युद्ध गाता का गात्र मनुवत्र जातरवात्तरा म गाता और मूत्रमजापनी। म प्रकार यही रामर्चाग्र्य क रिप्पिया म्मा का विग्रह जन्म आ है। इतरा का क्काग मन्त्रि अन्त्रि प्रसिद्ध म गता

—प्रमाण धारादिगमनगवानाम—रत्नाध्याया १।१० ६

—त्रयी हिस्ट्री आफ यण्डर मन्त्र—प० १७६

१—वाराण साहनी क्काग आप नि म्मजियम आप आरियागजा एव गाताय—पृ० १०

६—भागावतय लिपि—कन्ठे जार म्माग क म्मयण म्मयया म्म—मदिया नरण मूना अन्त्रि म्मय प० ८ ६

निमाण काल जाटवा गतात् माना गया है। मन्दिर के प्राण म पीराणिक रूप्य म बुछ रूप्य रामायण र भा है। रामकथा सम्बन्ध रूप्य म प्रकार हैं—गगावतरण रावण का तप गिरा का जाहूति रावण राग कलाग उगान का रूप्य मानाहरण गालि-मघोव यद्ध जीर वात्सि-वध। माराष्ट्र म प्रभासपाटन क निक्त् वन्दार नामक स्थान म एक प्राचीन वागन् मन्दिर म जिमका निर्माण काल गान्ता जाटवा गतात् माना गया म। रूप्य मन्दिर म धनुधर राम का भव्य मूर्ति है। इमा प्रकार गामलाजी के प्राचीन मन्दिर म शपट्टिकाभा पर रामकथा रूप्य का अश्विन हुआ है। एक पट्टिका म सज्जताल वध का रूप्य ह जाइ दूमरा म दगरथ-वक्या कनक मग माराच का वध रेखा क भातर माता जीर उमक राहर रावण पचवटा म तथा साताहरण क रूप्य अकित है। इस गुजगत म रामकथा का सबसे प्राचीन नात चिन्ण बताया गया ह। पुगतात्विक खोजा क साथ गिल्प म रामकथा मग्धा नवीन सामग्रा उपलब्ध हाता जा रही हैं।

सप्रहालय म मुख्यतः राजस्थान क सप्रहात्या म गिल्प म अकित रामकथा सम्प्रदा प्रचर सामग्रा मिता ह। रूप्य सम्बन्ध म खोज का अपेक्षा ह। जयपुर रामनिवामाद्यात सप्रहालय म एक प्रस्तर गिला है जिस पर रावण द्वारा कलाग उठाने का रूप्य अकित किया गया है। जोधपुर सप्रहालय म एक द्वार स्तम्भ है जिम पर धनुधर शिभुज राम की प्रतिमा है। क्वीर म नीलकण्ठ महादेव का एक मन्दिर है जिमका निर्माण दमवी गतात् समझा जाता है। इस मन्दिर की छत के नीचे रामकथा क रूप्य उत्कीर्ण हैं। रूप्य रूप्य प्रकार हैं—हनमान का पवन उठाना हनमान पवन किसी को दे रह है क्त् खानर ख्त है सुग्रीव गालि युद्ध जगय क पाव म राम वालि पर राम का गरसधात आर कनकमग। किराहू म मन्दिरा म सामश्वर देवाग्य के गभगूह म रामकथा के रूप्य उत्कीर्ण है जो इस प्रकार हैं—वात्सि-सपाव यद्ध सनुयध जीर जगाववाटिका म सीता। धौलपुर क निक्त् वाल्मीकि गुफा तथा एर प्राचीन दुग का प्रचार स गिगए प्राप्त हुई ह जिन पर रामकथा उत्काण ह। भारताय गिल्प म रामकथा सम्बन्ध प्रभूत सामग्रा प्राचीन मन्दिरा अवगाता तथा मप्रहात्या म मिता ह। रूप्य सम्बन्ध म खोज का आवश्यकता है। रूप्य परम्परा का एक क्त् हम मन्थकागीत इनिहाम म राम-मीय मिक्ता म मिलना म जिह मन्त्राट जक्वर न चगाया था। इन मिक्ता पर एक जीर राम-माता का चित्र अकित है जाइ दूमरी आर मिक्ता का प्रचरन वात्। रूप्य प्रमाणा

१—क्या रत्नक जगत् राजस्थाना क गिगत्या म रामकथा।

—१० मग्धा प्रयाग मि—गामभक्ति म गिग मग्धाय—१० १११ १२।

स यह स्पष्ट है कि वेग व विभिन्न भागों में रामोपनिषद् का प्राचीनका सही व्यापक प्रचार था।

दक्षिण में रामभक्ति आलवार तथा वण्णव आचार्य—रामभक्ति के त्रिमिक विकास का सुशृंगला इतिहास सबसे प्रथम दक्षिण में मिलता है। ईसा की प्रथम सहस्राब्दी के उत्तरार्द्ध में दक्षिण में वण्णव सन्ता तथा वण्णव आचार्यों ने भक्ति का प्रचार किया। यह क्रम आगे चला रहा। वण्णव सन्ता का आलवार अर्थात् भगवन् भक्ति रस में लीन व्यक्ति कहा जाता है। इन सन्तों में भक्ति का प्रचार जन साधारण में किया। जातार्यों ने भक्ति का गाम्भीर्यमय रूप प्रस्तुत किया और भक्ति को गाम्भीर्य पीठ पर प्रतिष्ठित किया। भाव प्रवण एवं गाम्भीर्य मर्त्या-युक्त इस भक्ति का विकास दक्षिण में पान्त सौ से अधिक वर्षों तक चला रहा और इन समाज के उद्भूत वंश भाग का प्रभावित किया।

आलवार सन्तों की भक्ति की सूत्रा बन्दे हुए डा० दीनान्यास गुप्त ने लिखा है— आलवार भक्त सामाजिक विषयों का अनित्य कहते थे। इनका विचार था कि भक्ति के माध्यम से प्रपत्तिपूर्ण आत्ममग्नता द्वारा समाज के आवागमन का मुक्ति तथा विष्णु भगवान का सम्पत्ति मिश्रण है। व वल विष्णु की उपासक एतानिक धर्म का मानने वाले थे। व विष्णु का वामुदर नारायण भगवद पुरुष आदिनामासे पुकारते थे। उनके मतानुसार भगवान विष्णु निरर्थक अन्त और अल्प हैं। व सत विन और आनन्द स्वरूप हैं। और जीवा पर कृपा कर अवतार भी लेते हैं। परन्तु अवतार लेने पर भी उनका अन्त अन्त और गतन मत्ता ज्यो की त्या रहती है। वे मूर्तरूप में भी अवतार लेते हैं। राम और कृष्ण उन्ही के रूप हैं। कृष्ण की आनन्द प्रीति का रूप व व विष्णु जीवा का जानने दान देता है। गार्पिया के माप गाला द्वारा व पूणव्रत की अनुभूति कराता है। आलवार भक्त विष्णु तथा उनके अवतार कृष्ण और राम की भक्ति वात्मल्य रास्य तथा ताताभाव में करते थे जिन भावों पर उन्होंने अनेक गीत लिखे हैं। उनके विचारानुसार भगवन् भक्ता की सेवा भी भगवान का मया का अंग है। भक्ति के अन्तगत प्रपत्ति को उन्होंने बड़ा मया किया था। उनका विचार था कि विष्णु भगवान की कृपा उनके प्रति प्रेम और आनन्द मग्नता में मिश्रित है। सबसे बड़ी बात यह धर्म की मत्ता थी कि आलवारों का धर्म मनी जाति और मत्ता धर्मों के मनुष्यों के लिए मनुष्य हुआ था।^१

१—डा० दीनान्यास गुप्त—अष्टांग और वंश मग्नताय भाग १ पृ० ३८।

निर्माण काल जाठवा गतात्मा माना गया है। मन्दिर के प्रागण में पौराणिक स्था म युद्धस्थ रामायण के भा है। रामकथा सम्प्रदाय का स्था स्था प्रसार है—गंगावतरण रावण का तप विनाश का विरा का आहूति रावण द्वारा कर्ण उठान का स्था साताहरण वालि मग्रीव यद्ध जीर वाशिष्ठध। माराष्ट्र में प्रभागपालन के निकट कर्णधार नामक स्थान में एक प्राचीन वाराह मन्दिर है जिसका निर्माण का काल गतना जाठवा गतात्मा माना गया है। इस मन्दिर में धनधर राम का भव्य मूर्ति है। इसी प्रकार गामलाजी के प्राचीन मन्दिर में भी पट्टिकाओं पर रामकथा के दृश्य का आंगन हुआ है। एक पट्टिका में सप्तताल वध का स्था है और दूसरी में दशरथ-वकया कनक मग मारीच का वध रत्ना के भानर माना जीर उमके ग्राह्य रावण पचवटा में तथा साताहरण के दृश्य अंकित है। इस गुजरात में रामकथा का मत्त प्राचा नात चित्रण बताया गया है। पुगतात्विक राजा के साथ गित्य में रामकथा मत्त नवीन सामग्री उपस्थित हाता जा रहा है।

सग्रहालया में मत्थत राजस्थान के सग्रहालया में गित्य में अंकित रामकथा सम्प्रदाय प्रचर सामग्री मिलता है। इन सम्बन्ध में खाज का जोषा है। जयपुर रामनिवामाद्यान सग्रहालय में एक प्रस्तर गिला है जिस पर रावण द्वारा कर्ण उठाने का दृश्य अंकित किया गया है। जोधपुर सग्रहालय में एक द्वार स्तम्भ है जिस पर धनधर त्रिभुज राम की प्रतिमा है। केकी में नीलकण्ठ महादेव का एक मन्दिर है जिसका निर्माण दमवा गतात्मा समझा जाता है। इस मन्दिर का छत के नाथ रामकथा के दृश्य उत्थाण हैं। दृश्य इस प्रकार है—हनमान का पवन उठाना हनमान पवन कित्ती को दे रहे हैं वह वानर गण है मग्राव-वाशिष्ठ यद्ध जन्म के पश्चात् में राम वालि पर राम का परगपान और कनकमग। किराड के मन्दिरों में साम्बर देवालय के मगगा में रामकथा के दृश्य उत्थाण हैं जो इस प्रकार हैं—वाशिष्ठ-सुग्राव यद्ध सतुयध और जगन्नाथिका में सीता। धौठपुर के निकट बाल्माकि गफा तथा एन प्राचीन दुम का प्रचार में गित्य प्राप्त हुई है जिन पर रामकथा उत्थाण है। भारताय गित्य में रामकथा सम्बन्ध प्रभूत सामग्री प्राचीन मन्दिरों अजमेरा तथा सग्रहालया में मिलता है। इनके सम्बन्ध में खाज का आवश्यक्ता है। गंगा परम्परा का एक कथा हम मध्यकागत इतिहास में राम-माय भिक्षा में मिलता है जिसे मग्रा अजमेर न बताया था। इन भिक्षा पर एक और राम-माता का चित्र अंकित है और दूसरी और भिक्षा का प्रचरण का। इन प्रमाणा

१—का रत्नक अग्रवा गतात्मान के गित्य में रामकथा।

—गंगा परम्परा प्रमा मित—रामभक्ति में रचित मग्राय—१११ १२।

स यह स्पष्ट है कि देग के विभिन्न भागों में रामायणनामा का प्राचीनकाल से ही व्यापक प्रचार था।

दक्षिण में रामभक्ति आलवार तथा वण्णव आचार्य—रामभक्ति के प्रथम विकास का सुश्रुत इतिहास सर्वप्रथम दक्षिण में मिलता है। ईसा की प्रथम सहस्राब्दी के उत्तरार्द्ध में दक्षिण में वण्णव मन्ता तथा वण्णव आचार्यों ने भक्ति का प्रचार किया। यह क्रम आगे चलता रहा। वण्णव सन्तों का आलवार अर्थात् भगवत भक्ति रस में लीन व्यक्ति कहा जाता है। इन सन्तों ने भक्ति का प्रचार जन साधारण में किया। जात्रार्यों ने भक्ति का शास्त्रमन्मत रूप प्रस्तुत किया और भक्ति का शास्त्राय पीठ पर प्रतिष्ठित किया। भाग्य प्रवण एवं शास्त्रीय भर्षाणा युक्त इस भक्ति का विकास दक्षिण में पाँच सौ से अधिक वर्षों तक होता रहा और इसमें समाज के बहुत बड़े भाग का प्रभावित किया।

आलवार सन्तों की भक्ति की चर्चा करते हुए डा. दीनयालु गुप्त ने लिखा है—'आलवार भक्त सामाजिक विषयों का अनित्य कहते थे। इनका विचार था कि भक्ति के साधन और प्रपत्तिपूर्ण आत्मसमर्पण द्वारा समाज के आवागमन से मुक्ति तथा विष्णु भगवान का सम्मिलित मिलता है। वे केवल विष्णु के ही उपासक एकात्मिक धर्म का मानने वाले थे। वे विष्णु को वासुदेव नारायण भगवद पुरुष आदिनामा से पुकारते थे। उनके मतानुसार भगवान विष्णु नित्य अनन्त और अव्यय है। वे सतत चित और जानद स्वरूप है। और जीवा पर कृपा कर अवतार भी लेते हैं। परन्तु अवतार लेने पर भी उनकी अनन्त, अनादि और सतत सत्ता ज्यों की त्यों रहती है। वे मूर्तरूप में भी अवतार लेते हैं। राम और कृष्ण उन्हीं के रूप हैं। कृष्ण का जानद आत्मिक रूप में वह विष्णु जीवा को आनन्द दान देता है। गांधार्य के साथ लीलाया द्वारा वह पूणब्रह्म की अनुभूति कराता है। आलवार भक्त विष्णु तथा उनके अवतार कृष्ण और राम की भक्ति वाल्म्येय तस्य तथा का ताभाव से करते थे जिन भावों पर उन्होंने अनेक गीत लिखे हैं। उनके विचारानुसार भगवत भक्ता का सेवा भी भगवान का सेवा का जग है। भक्ति के अंतर्गत प्रपत्ति को उन्होंने बड़ा स्थान दिया था। उनका विश्वास था कि विष्णु भगवान की कृपा उनके प्रति प्रेम और अनन्य समर्पण में मिलती है। सबसे बड़ी बात यह धर्म की यह थी कि आलवारों का यह धर्म सभी जातियों और सभी वर्णों के मनुष्यों के लिए समान हुआ था।'

जात्यर सात अनव हृष्ट कितु उमम गार्य प्रमय है। एतत् तमिः नाम य
ह—योग्य आचार भूततात्वार पयात्वार निम्मत्तिम जात्वार नम्मात्वार
(परावृत्त मति) परि जात्वार जात्वा (रगनायका) तात्वार त्तिपात्ति (विश्र
नारायण) निरूप्यत तिममगवात्वार। जात्वारा व मन्वृत नाम य है—मरा
योगिन भूत यागिन महत् यागिन भक्तिसार गृह्य विष्णु चित्त गारा भक्त
पत्न्य यागवाहन परजा (नात्म)। एतत् अनिखित मपर क्वि जाग कुत्तार
जात्वार हृष्ट। एत जात्वार मना का समय सामायन पाचवा गताती
स दमवा गतात्वा तत्र मना जाता है। मय म एत भक्तिरम भिक्त मना
ने भगवान की शीला का गान मघर पलावटा भविष्य। तमिल भाषा म निरुद्ध
एतकी रचनाआ का मग्रह नालायिर प्रप्रथम (चतु महम्प्र पत्) जत्यन पवित्र
माना जाता है। एत पत्वा म भगवान विष्णु तथा उनक जवतारा व प्रति
भक्ति और जात्म ममपण की भावना पाया जाता है। इन मन्ना न विष्णु
के अवतार कृष्ण को प्रमयता शी है कितु राम का उच्य गारम्भ व
जात्वार मन्ना व पत्वा म जाया है और परवर्ती जात्वारा का रचनाआ
म निरतरमिगता है। एतम पाचव आचार गठकाप धे जिह नम्मात्वार ना
बहा जाता है। इनकी महप्रगति म राम व प्रति आत्मममपण की भावना गवस पृष्ट
ध्वनत है— दगरथस्य सत त विना जय गरग वनामि। एतान गमभक्ति का
स्तुति भावा है। नवा गतात्वा के पूर्वार्द्ध म कुछ गार्य आत्वार हृष्ट। एतका रचना
म प्री रामभक्ति मिगता है। य वार्य एत व राजा व। एतक मन्वत् म प्रगिद्ध
है कि य गत्व भक्ति म निमय रहते धे। एक वार य रामायण की कथा गुन रहे धे।
प्रमयथा राम-वर्त्तपणयद्ध। व्याम न ज्यात्वा ग्याक पत्वा— चतुत्वा मन्व्याणि
राशगा भीमकमणाम एत्त्वं रामा धर्मात्मा कथ यद्ध वरिष्यति। तथा म
निमय कुत्त गार्य न तरत जपन सनापति का राम की महाषक व गिग रा म्मा
म यद्ध वरन का जात्वा त्तिवा। व्याम न राजा का जात्वागन त्तिवा कि राम
न निमय मात्र म राशम मना मगार वर त्तिवा तत्र कुत्त गार्य का गानि
मिग। एतका चत्वा नाभात्वा म त भा नस्तनाम व रूप म का है। कुत्त गार्य

१—मह्यगानि १६।८

—नस्तमात्—पद्य ८८

नस्तनाम एत मय प्रवर मातागार वान। मार मार क्वि श्वय वाजि
गवर् म नाना। नरगिग का जात्वात्वा म त्तिनावृग माग्या।
वत् मया ममय राम विष्णु नन छाया।

विरक्त हो गये और राजवाय जा कर श्रीराम में भगवान् रगनाथ का भजन करत था। उनकी रचना मधुसूदनाय वणवा का प्रिय स्तुति रही है। कुलधारा व अधिवाय पद वृष्ण में मगधित है किन्तु उनका रचनाए रामावतार व सम्बन्ध में भा है। इनकी रचनाओं में कोमल रामभक्ति जल्यत हृदयस्पर्शी है। कुलधारा रामायण को वेण व ममान पूज्य मानते थे।

जालवार मता व अनन्तर शशिण में जाचार्यों का आविभाव हुआ। इन मन्त्रतन अचार्यों ने विष्णु भक्ति का प्रचार किया। जाचार्यों ने जालवारा की भक्ति और वगत प्रतिपान्ति तान का समन्वय किया। तमिऴ वऴ और मन्त्रत वऴ का अध्ययन कर उहान गेना में मामजन्म स्थापित किया। य लाग उभय वऴता वऴ जात थे। उहान मायावाद का लणन करऴ भक्तिवाद की प्रतिपऴा की। इनमें अद्याचार्य रगनाथ मुनि (८४४-९२४ ई०) हुए। य गऴकापाचार्य की परम्परा में थे। गऴकाप मधुर कवि, परावुऴ मुनि नाथमुनि। उहाने जाऴवारा के तमिऴ वऴ का पुनऴद्वार किया और धारगम के मन्दिर में भगवान् व सामने गायन की व्यवस्था की। अनन्तर पुडरीकाक्ष राममिऴ तथा यामुनाचार्य (आलवऴार) वऴणव जाचार्य हुए। यामुनाचार्य ने सरम स्तुनिया की—जिनमें आत्म समपण की उत्कऴ भावना मिऴता है रचना का जो आलऴार स्तान के नाम से प्रसिद्ध है। यामुनाचार्य के बाद जाचार्य श्री रामानुजाचार्य हुए (११७-११३७ ई०)। उहाने विणिऴाद्वत मत प्रति पान्ति किया। उनक वऴ थ लऴमानारायण। रामानज ने पाडित्यपूण वऴा की रचना कर वऴणव धम को पुऴट गऴस्थीय पीठ पर जासीन किया। सी परम्परा में आगे चलकर राषवानऴ और रामानद हुए जिहान इग मत का उत्तर भारत में प्रचार किया। रामानज ने स्वयं रामभक्ति व सम्बन्ध में विशेष नऴी ऴिया है किन्तु उहान श्री भाष्य में विभवा अर्थात् अवतारा में गम तथा वृष्ण का विगप उल्लग्य किया है। रामानुज सम्प्रऴाय में पहले पहऴ रामपूजा का गऴस्थीय निऴपण किया गया और वऴणव महिऴाआ तथा उपनिऴऴा का निर्माण किया गया। इन सम्प्रऴाय में राम व प्रति दास्य भक्ति का प्रतिपादन करने वाला निम्नऴिगित वऴणव सन्तिाओं का उल्लग्य मिऴता है—अगम्य गऴिता कऴिराषव बहुऴराषव और रामवाय महिऴा। रामभक्ति सम्बन्धी तान उपनिऴऴा रामपूव

१—वऴनुत्यमिऴ गऴशान श्री रामायण परम्।

काऴ गऴिऴ तऴभऴतऴा भगवान् कुऴगऴर। प्रपऴामत, प० २७८

२—श्री भाष्य—२२४२

तापनाय रामात्तरतापनीय तथा रामरहस्यापनिषत्—मुराँतन है। इनमें राम का परब्रह्म से अभिन्न माना गया है। इनके अनिरिक्त रामापासना सम्बन्धी ग्रन्थों की भी रचना हुई जिसका उल्लेख मिलता है और कुछ रचनाएँ मुराँतन भी हैं। भगवत गीता के जनकपरण पर रचित रामगीता ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है। इनमें राम के परब्रह्मत्व का प्रतिपादन है। इन रचनाओं का काल निश्चित करना सम्भव नहीं है क्योंकि इनका अभी सम्बन्ध अध्ययन नहीं हो सका। बृष्णव जाचार्यों के प्रयास से दक्षिण में भक्ति का आधार पुष्ट हो गया और भक्ति मार्ग का अभूतपूर्व बल मिला। जाग बल पर दक्षिण देश से ही भक्ति का प्रचार उत्तर भारत में हुआ जहाँ उसका मतत्व रामानन्द ने किया। कतिपय विद्वानों ने रामकथा पर बृष्णकथा के प्रभाव का चर्चा का है और रामिक साधना पर प्रकाश डाला है। हम सम्बन्ध में आद्याचार्य स्वामी अग्रनाथ के सम्बन्ध में जाग चर्चा की जायगी।

(ग) रामकथा परम्परा विकास के सोपान

भारतीय परम्परा में वेद अपौरुषेय कह गये हैं। वैदिक साहित्य में समग्र ज्ञान के निहित ज्ञान का मायना अज्ञान का उन्मूलन से चली आ रहा है। हमारे अनुसार प्राचीन काल से वेदों में रामकथा के अस्तित्व का उल्लेख भारतीय साहित्य में होता रहा है। वैदिक साहित्य में रामकथा के पात्रों के नाम अवश्य मिलते हैं। किन्तु उनके परस्पर सम्बन्ध अथवा रामकथा से उनके सम्बन्ध का निर्णय नहीं मिलता। अस्तु आधुनिक साधकगणों ने वैदिक साहित्य में रामकथा का अभाव गिद्ध किया है।

रामकथा सम्बन्धी साहित्य की रचना सर्वप्रथम शंकराचार्य के सूताश्रम आश्रमों काव्य के रूप में हुई थी। आश्रमों काव्य ब्रह्मसूत्रों की परम्परा में चलते रहे। इन सूत्रों आश्रमों काव्यों को लेकर चारमीक ने सर्व प्रथम प्रचलित काव्य की रचना की। यह श्रान्तिवाक्य रामकथा सम्बन्धी मूल ग्रन्थ है। हम सम्बन्ध परबन्धों राम साहित्य का आधार माना गया है। वास्तविक रामयण में भी ऋषियों ने हम अर्थ कथिना का आधार ग्रन्थ कहा है। हम आश्रमों का सूचना हम अष्टम

१—१० भक्तवत्सलाय मित्र—राम साहित्य में रामिक सम्प्रदाय।

—रामचन्द्र बरामन्त्रे मनन मयवाप्ति। आश्रममित्रमाश्रम मनिता मप्रनाति
नम। पर वरिनामाधार ममाप्त च यथाप्रथम। अभिगतमिन् गान गवगतेषु
पाविने। —दा० ग० १ ६१-६ २३

पुराण म भा मिलती है। वाल्मीकि रामायण का काव्य इतिहास पुराण तथा ममस्त सन्निधावाका मूल स्रोत कहा गया है। रामायण की उत्पत्ति का उल्लेख करते हुए यह पुराण सूचना देता है कि ब्रह्मा ने सरस्वती को कविया क मुख म कविता गक्ति वनन का वरदान दिया था। त्रैलोक्य के अवसर पर सरस्वती ने महर्षि वाल्मीकि के मुख म प्रवण किया। परम्पर्युक्त रचना की उत्पत्ति हुई। ब्रह्मा ने वाल्मीकि को रामायण की रचना क लिए प्रेरित करत हुए कहा कि रामचरित का निमाण हा जाने पर तब क अथ कवि काव्य रचना म उनका अनुसरण करेगे। रामायण के जाति काव्य तथा परवर्ती राम साहित्य का आधार ग्रन्थ हान के सम्बन्ध म जा परम्परागत मायना चली आ रहा है वह मक्या सत्य एव साधक है। वाल्मीकि म जा रामकाव्य परम्परा निम्नत हुए उमका परवर्ती कविया न अनुसरण किया और रामचरित का गान कर अपना वाणी को धर्य किया। परम्परा म वात का साक्षात् कि जाति काय का व्यापक प्रचार हुआ। कुशीलवा द्वारा रामायण क प्रचार की चर्चा जाति काव्य म ही है। उमका लाकप्रियता जिनोन्नि वन्ती गयी।

रामायण क पदचात महाभागत म जा परवर्ती रचना है रामकथा का वणन है। इसके अतिरिक्त हरिवंश पुराण म यह उल्लेख मिलता है कि उमका म रामकथा क आधार पर रचित नाटका का अभिनय होता था। यह रामकथा का लाकप्रियता का चोतक है।

प्राचीन काल म रामकथा का लाकप्रियता का अत्यन्त बौद्ध ने उम अपनाया। बौद्ध-साहित्य म राम साधिमत्व मान जाते है और रामकथा जातका म मिश्रता है। बौद्ध ने रामकथा का विष्णु म प्रचार किया था। अजान्तर का म बौद्ध साहित्य म रामकथा का उल्लेख नहा मिश्रता।

बौद्ध की अपे ता जनिया म रामकथा का अधिर प्रचार हुआ। जैत धर्माचार्या न सिधु राम साहित्य का रचना की। इसर अन्तगत रामकथा क पात्र जन महा पुण्य क मय है। जन राम साहित्य की परम्परा ईसवी मन् क आरम्भ म उपर्युक्त

१--रामायण भगवाव्याभाषी धारमीकिना कृतम्। तामूठ मवकाव्यानामिति हागपुराणया। २८। महितानाच गवांमा म रामायण मतम।

बहदमपुराण अन्वय २

२--इत त्वया भगवाव्ये भाव्यर्थे रामचरितम्।

रावप्यनुचरिष्यति कवयाय मद्रुतय।

बहदमपुराण- १/०।

१--रामायण भगवाव्यमुद्दिश्य नाटक कृतम् ॥ हरिवंश विष्णुपत्र ६ ॥

होती है। रामकथा सम्बन्धी रचनाएँ सस्मृत प्राकृत उपभ्रंग तथा जाधुनिक भारतीय भाषाओं में मिलती हैं। इससे रामकथा का व्यापकता एवं लोकप्रियता का परिचय मिलता है। जन साहित्य में रामकथा का परम्परा स्वरूप में आधिकारिक रूप से आधुनिक काल तक चला आया है। इस परम्परा पर आज विचार किया जायगा।

आधिकारिक रूप से रामकथा परम्परा आरम्भ होने से पूर्व सस्मृत धार्मिक साहित्य, जैन साहित्य तथा अवान्तरकालीन साहित्य में हुआ। सस्मृत साहित्य के स्वर्णयुग में रामकथा साहित्य विंगण रूप में समृद्ध हुआ। महाकाव्य नाटक तथा साम्प्रदायिक रामायणों की रचना की गयी। यह परम्परा आधुनिक काल तक चला आई है। विभिन्न आधुनिक भाषाओं में साहित्य का आरम्भ प्रायः रामकथा विषयक महाकाव्य से हुआ है। यह उल्लेखनीय है।

रामकथा का लोकप्रियता इसी से जाका जा सकती है कि विश्वास में भी इसका व्यापक प्रचार हुआ। ५० ई० तक रामकथा का प्रचार दक्षिण पूर्व एशिया के अनेक देशों तथा मध्य एशिया के देशों में हुआ चुका था। चम्पा और कम्बोज में रामायण का अत्यधिक प्रचार था उसे धर्मग्रन्थ माना जाता था और मन्दिरों में उसके पाठ का व्यवस्था की गयी थी। मलय देश तथा जावा में राम साहित्य का रचना हुई। तमिली गीताओं का रामायण कवित्व जावा में मिलता है। 'रामायण' में रामकवित्व तथा कम्बोजियों में रामकवि की रचना हुई। रामकथा सम्बन्धी नाटक आज भी इन्डोनेशिया, चम्पा तथा ब्रह्मदेश में लोकप्रिय है। ९ वाँ गीताओं के त्रिचतवार तथा खोताना रामायण भी उपलब्ध है।

इसका मूल का प्रथम महाकाव्य काल तक रामकथा समग्र भारत तथा विश्वास में अतिप्रिय लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी थी। इस साहित्य में रामकथा की विश्विजय कहा गया है। रामकथा को लेकर विभिन्न गीताओं में विपुल साहित्य का रचना का गढ़। यह विंगण एवं सम्पन्न साहित्य हिन्दी रामभक्त कवियों के सामने था। आधिकारिक रूप से रामकथा प्रस्तुत की थी वह आत्म बधा थी। परवर्ती काल में उस कथावस्तु में विंगण परिवर्तन जयरा परिवर्तन नहीं किया गया जार न समकालीन अवस्था की था। कथन धार्मिक भावनाओं का सुस्पष्ट एवं समझाने के लिए कल्पित परिवर्तन किया गया किन्तु कथावस्तु का मूल रूप अलग बना रहा। जन आचार्यों ने अपने मिथ्याता के अन्तर्गत रामकथा का वर्णन किया है। इन आचार्यों ने उपभ्रंग काल में तथा उनसे पूर्व हिन्दी में रामसाहित्य का मजबूत किया। ब्राह्मण रामकथा दासकाल तक सस्मृत साहित्य में अपने मूल रूप में चला रहा। जनतन्त्रवादी प्रतिष्ठा तथा

भक्ति के उन्मूलन के साथ क्या म भक्ति भवना की तुष्टि के उद्देश्य से सामान्य परिवर्तन किये गए। य परिवर्तन भक्तिकालीन रचनाओं में दृष्टे जा सकते हैं। वृष्णभक्ति का प्रभाव भी राम साहित्य पर पडा जोर रसिक परम्परा के अतगत राम साहित्य का निमाण हुआ। हिन्दू राम साहित्य में यह तत्व परिलक्षित होते हैं। इनका विवचन अगले अध्याय में किया जायगा।

अध्याय २

अपभ्रंश में जैन कवियों द्वारा रचित राम साहित्य

भाषा शास्त्रियों ने मध्यकालीन भारतीय जायभाषा व उत्तरकालीन विक्रम का अपभ्रंग का मजा दा है जोर उमका समय साहित्यिक प्राकृत व पश्चात् १० ई स १००० ई तक माना है। किन्तु अपभ्रंग म ५ इ व ळगभग रचित ग्रंथ उपलब्ध नन् है। अपभ्रंग म दस समय जा साहित्य उपलब्ध है उमका समय मातवा गताली से आरम्भ हाता है। इमा की प्रथम महसूलाली के बाद भी अपभ्रंग म रचनाए हाता रही। अपभ्रंग का समृद्ध साहित्य युग रमा की आरम्भ गताली म ळर तरहवा चौहवा गताली तक है। रम अवधि म अपभ्रंग म विस्तृत साहित्य का रचना हुई। स्वयंभू पुष्पन्त घनपाठ धाहित धव नयनन्ती वनवामर रङ्घू अल्ल रहमान विद्यापति आदि प्रतिभागागा कवियाने उत्कृष्ट रचनाए का और अपभ्रंग साहित्य को समृद्ध किया।

अपभ्रंग की पूर्वकालीन अवस्था म अपभ्रंग और प्राकृत म कुछ का तन माय-माय रचनाए गता रहा। अनन्तर साहित्य रचना म अपभ्रंग का स्वतंत्र रूप म प्रयाग हाता रन् जोर उत्तरकालीन अवस्था म अपभ्रंग जोर जायनिक प्रान्तीय भाषाजा म वइ गतालीया तक समानान्तर रचनाए हाता रहा। वतमान प्रालीय आय भाषाजा का विक्रम अपभ्रंग म हए। वजभाषा गतावाग गजगता गजम्यानी जोर पञ्जाब का विक्रम गौरमना अपभ्रंग म माना जाता है। भाजपुरा अममिया रगता और उरिया का विक्रम माग म अपभ्रंग तथा पूर्वी ळिग अवदा का विसाग अरमागपा म हुआ। अपभ्रंग व साहित्यिक रूप धारण कर रन पर रन भाषाजा का विक्रम तकागल प्रचरित वाळिया मळा। जायनिक प्रान्तीय भाषाजा का आरम्भ वाळ १ ळ व आमपास माना गया है। य भाषाण अपन जाळिकाल म विभिन्न अपभ्रंगा म प्रभावित ळ।

१—विष्णुमन लिखितिक मर्वे जाप ळिया—ग १ १

—ग मनातिरुमार चळी ररा आयन ळळ ळिया—ग ७

—ग ळिवग वाळळ-अपभ्रंग साहित्य—ग ८-१७

हिन्दी साहित्य व आन्विकाल मे बनमान अपभ्रंग साहित्य प्राणवान उत्कृष्ट साहित्य व रूप मे हमारे सामने अस्ता ह। हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तिया उमक विकास का गिनाआ का समयन क लिए उम साहित्य का अध्ययन आवश्यक ह। अपभ्रंग साहित्य का हिन्दी का प्राणघारा बना गया है जा मकवा उचित है। मम्भन प्राकृत साहित्य की परम्पराए अपभ्रंश मे हाता हुद हिन्दी साहित्य मे आया है। तन्वक जतिगिकन लगभग पाच सा वगों मे मनद्व युग मे अपभ्रंग साहित्य का अपना स्वतंत्र परम्पराए विकसित हुद। जा हिन्दी साहित्य का रिकथ व रूप मे उपरर हुद। अपभ्रंग साहित्य की गौरवमयी साहित्य परम्परा व विन्यपण मे हिन्दी की परवर्ती साहित्यिक प्रवृत्तिया एव विकास धाराजा का समुचित जाकलन एउ मूल्यावन मम्भन हो मकगा उनक पूर्वापर मन्वध का निरूपण किया जा सकगा तथा उनक त्रमिक विकास की रूपरेखा निर्धारित की जा सकगी।

पिछल सा दशका मे पर्याप्त अपभ्रंग साहित्य प्रकाश मे आया है। अपभ्रंग साहित्य का सुरक्षा का श्रेय जन भणारा का है। जब भी बहुत मे ग्रथ इन ग्रथा गागा मे वर्णित पद हुए हैं। अपभ्रंग मे विद्वाना क अभिप्राचि प्रती हुई तन्वक भविष्य मे नय ग्रथा के प्रकाश मे आन की पूरी सम्भावना है।

अपभ्रंग साहित्य का निर्माण बीड जन तथा जय कविया एव विनाना द्वारा हुआ। इसका जयिकाण धार्मिक साहित्य है। हिन्दी व विनाना का जारम्भ मे यह धारणा थी कि अपभ्रंग साहित्य का अधिकाण धार्मिक हान क कारण वह गद साहित्य का काठि मे नहा आता। जाचाय गुकल न अपना मन व्यक्त करते हुए लिखा है— आदिकाल (सवन १०५० मे सवन १२७२) की म्भ दीष परम्परा क दीष प्रथम डड सीष क भातरता रचना की किमा विनय प्रवृत्ति का निरचय नहा हाता है—धम नीति शृगार वीर मव प्रकार की रचनाए दाहा मे मिलता है। इस जतिदिष्ट प्रवृत्ति क उपरान्त जय स मुम्भनाना की चनाइया का आरम्भ हाता है तव स हम हिन्दी साहित्य की प्रवृत्ति एव विनय रूप मे वचना हुई पात है। म्भी प्रकार मिड साहित्य का चचा करत हुए व जाग लिखत है— उनका रचनाआ का जावन की म्वाभाविक सरणिया अनुभूतिया जीर दगाआ स का मन्ध नहीं है। व साम्प्रदायिक गिना माय हैं। अन गुड साहित्य की काठि मे नहा जा सकता। उन रचनाआ का परम्परा का हम काव्य या साहित्य का काठि घारा नहीं कह सकन। जन धम मम्भनी रचनाआ का चर्चा छा अउ हम सामान्य साहित्य की जा कुड सामग्री मिलता है उनका उल्लख अनक सप्रहृत्ता।

और रचयिताओं के त्रम से करत है। जब सतान देवक पूव बहुत धान् अपभ्रंग साहित्य उपलब्ध था। किन्तु जाचाय गुवल क त्रम मानिकार अभिमत का प्रभाव यह हुआ कि जना और बौद्ध द्वारा रचित अपभ्रंग साहित्य धार्मिक साहित्य मान लिया गया और उम हिन्दू साहित्य म स्थान न मित्र सका। इधर अपभ्रंग का रचनाआ क प्रकाश म आ जान स विद्वाना का ध्यान इम साहित्य की ओर पुन आकृष्ट हुआ है। अधिकांश अपभ्रंग साहित्य का मत्र प्ररणा निम्नमट्ट धार्मिक है किन्तु इस साहित्य के अतगत रचनाए उल्लृष्ट काव्यरूपा म निबद्ध मिलना है। व साहित्य म सबधा विवेचनीय ह। त्रम प्रकार अपभ्रंग साहित्य क सम्बन्ध म अब तक की हमारा धारणा म परिवतन अनिवाय है। अपभ्रंग साहित्य न बवल हिन्दू साहित्य के अतगत विवेचनीय ह वरन अत्यन्त मूल्यवान भी त्र। वास्तव म अपभ्रंग साहित्य महान साहित्य है। स्वयभू पुष्पदेवत धवल धनपाठ धाहिल एमचद्र जम महाकविया एव विद्वाना न जिम साहित्य का पापण किया क साहित्य स्वत महिमागागा ह। इस महान साहित्य का अनुगायन हिन्दू साहित्य क अयेनाआ क लिए अनिवाय है। हिन्दू साहित्य के जात्रिकाल म बनमान इस साहित्य के उचित मूल्याकन का अपधा है। साहित्य क इतिहास म उस उचित स्थान लिया जाना चाहिए और उमकी उचित प्रतिष्ठा हानी चाहिए।

देव के विभिन्न भागा म बौद्ध जन तथा अय कविया एव विद्वाना न अपभ्रंग साहित्य का निर्माण किया। बौद्ध द्वारा रचित अपभ्रंग साहित्य क अतगत मिद्धा की रचनाए आता है। इन सिद्धा का धत्र उत्तर तथा पूव भारत था। मिद्धा का रचनाए दाहो तथा पन्ना म मिन्ता है। इन रचनाआ का सग्रह दाहा काय बौद्ध गान और दाहा चयापन् आत्रि ग्रयो म किया गया है। मिद्धा का ममय ८वा स बारहवा गताब्दी तक माना गया है। मिद्ध साहित्य की रचना पूर्वी अपभ्रंग म मुक्तक-काव्य क रूप म हुई है। इनम कुछ रचनाओ म मिद्धाना का प्रतिपादन किया गया है। अय रचनाआ म कमकाण्ठ तथा रुद्रिया का लण्ण किया गया है। रहस्यवान् महत्रमाग बाह्याचार और रत्रियो का विराध ग म महिमा आत्रि विषया का मभावैण इस साहित्य म किया गया है। मिद्ध साहित्य म राम चरित विषयक सामग्री का अभाव है।

अय कविया का रचनाआ म विद्यापति का कानिन्ता और अट्ट रहमान का गन्ध रामक' उपलब्ध त्र। य लौकिक काव्य है इनका मूत्र प्ररणा धार्मिक नहा है। विद्यापति का ममय सवन १४१७ स सवन १५०५ तक माना गया है। कानिन्ता का रचना उहाने महाराज कानि मिह क नाम पर का थी। त्रमका रचना सवन १५६१-६२ किन्मा बनाया गया है। ग्रथ म राजा क चरित का

वर्णन चार पल्लवा में किया गया है। कवि अद्भुतमान जयदा अद्भुत रहमान की रचना सत्तम रामक एक खण्डकाव्य है। इसमें २०३ पद हैं जो तीन प्रश्नमा में विभक्त हैं। इस काव्य में लौकिक प्रेम भावना का अभिव्यक्ति मिलती है। इसमें एक विरहिणा एक पथिक द्वारा अपना प्रवासा प्रियतम का मत्तम भजती है। रचना का समय अनिश्चित है। इसका रचनाकाल ११वाँ और १६वाँ शताब्दी के बीच माना गया है। जनतर कवियों का रचनाओं में अपभ्रंश में रामचरित मगधका रचना का सूचना अभी तक नहीं मिली है। अपभ्रंश में जनतर वाद तथा अन्य कवियों का रचनाओं का परिमाण स्वल्प है। अपभ्रंश का अधिकांश उपभ्रंश साहित्य जन आचार्यों द्वारा रचित है। इसी साहित्य में रामचरित मगधका काव्य भी मिलता है जिन पर प्रभुत्वं परिच्छिन्न में विचार किया जायगा।

जन आचार्यों ने अपभ्रंश में विपुल साहित्य का रचना का है। इनका काव्यक्षेत्र पश्चिम भारत किन्तु गुजरात राजस्थान तथा दक्षिण के प्रदेशों में फैला है। जन आचार्य निम्पह विरक्त पुष्प थे। साहित्य रचना का इनका उद्देश्य धार्मिक था। ये समाज में मदाचार तथा जन धार्मिक मिथ्याता के प्रचार के लिए प्रयत्न करते थे। किन्तु मिथ्याता का भाँति इसमें खण्डनात्मक प्रवृत्ति उग्र नहीं थी। ये आचार्य अन्य मतवाद के प्रति सहिष्णु थे और मदाचार के प्रचार से जन माधारण की आध्यात्मिक उत्थिति के लिए प्रयत्नशील थे। ब्राह्मण धर्मग्रन्थों का साहित्य का अद्भुत अच्छा ज्ञान था जो इनकी रचनाओं में स्पष्ट है। जन आचार्यों ने सस्कृत एवं प्राकृत में भी उत्कृष्ट रचनाएँ की हैं। जन आचार्यों ने श्रावका के अनुराध पर अपनी रचनाएँ की हैं। इनके अपभ्रंश में रचना करने का यह मुख्य कारण था। श्रावक अधिकांश प्रचलित भाषा में परिचित होते थे। अपभ्रंश ग्रन्थों में श्रावका का परिचय इन कवियों ने किया है। कुछ आचार्यों को श्रावकाओं की प्राप्ति का आर उन्हीं अपने आश्रयदाताओं के अनुराध पर रचनाएँ की हैं। किन्तु इन सभी ग्रन्थों के विषय धार्मिक है किन्ती आश्रयदाता का कानि का वर्णन इन कवियों ने नहीं किया है। आश्रयदाताओं श्रावका तथा जमाधारण का मगल नामना में धार्मिक विषयों पर इन ग्रन्थों का रचनाएँ की गई हैं।

जन आचार्यों द्वारा रचित अपभ्रंश साहित्य में विषय चार काव्य रूपों का दृष्टि से विविधता पायी जाती है। इस साहित्य में महापुराण पुराण चरित काव्य तथा अन्य रूपों काव्य राम ग्रन्थ उपन्यासत्मक ग्रन्थ स्तोत्र आदि उपलब्ध है। महापुराणों का रचना विपुल काव्य ग्रन्थों के रूप में हुई है। इनमें जन धर्म के ६२ महापुराणों के चरित का वर्णन मिलता है। इन्हें त्रिगुणिका नाम का पुष्प चरित अथवा त्रिगुणिका महापुराण गुणाचार भी कहा गया है। पुराणों में रामकथा और

महाभारत कथा का अन्तर्पत्र पुराण और अश्विनी पुराण रच गये। चाँ म जन तीर्थकर जबवा किगी मन्नापुष्ट का चरित वर्णित हाता है। जमह पामणाह चरिउ णमिणाह चरिउ जाति चरिउ प्रथ त्वा काति क ह पुणे व अनिरिक्त धार्मिक पुरयो के चरित क जाधार पर भा प्रथ जसे पत्रमिग चरिउ सुमण चरिउ जादि। तथाग्रथा क रूप म कथा पटवमोपत्ता भविमयत्त कहा जाति प्रथ मित्र है। रूपक बान्य क रूप म पराजय और राम ग्रथा के रूप म रेवतगिरि राम जम्बूस्वामी राम समर जाति प्रथ मित्र है। पथ्वाराज रामो के भी अपभ्रग रूप की कपना कुठ वि ने का । उपेण ग्रथा की मन्वा अधिक है। इनम समार का निम्मा गहम्बोचिन कतव्य बराग्य आदि विषय वर्णित है। पाट्टु टाहा बराग्य आति प्रथ इम काति क है। इम प्रकार धार्मिक भावना म जातप्रात विविध विम्वत साहित्य की रचना जन आचार्यों न अपभ्रग म का ह।

अपभ्रग साहित्य म रामकथा गम्बधी मन्त्वपूण ग्रथा का प्रणय किया गया ह। जन जन रामकथा विषयक जितन ग्रथ मित्र हैं व मभा ज आचार्यों द्वारा रचित हैं। जन मतामन्विद्या न रामकथा को अपनाया। फल विम्वत जन राम साहित्य का निमाण हुआ। जन ग्रथागारा म सुरति रहन क कारण य ग्रथ जाज भा उपलब्ध हैं। जन वर्षों म टुण गावकाय क फलस्वरूप एन रचनाआ पर विषय प्रकाण पत्ता है और जाग भा नये ग्रथा के प्रकाण म आन का जाग । जन ग्रथा क अनिरिक्त अपभ्रग म कथाचिन राम कथा विषयक जय ग्रथा का निर्माण आ हागा विन्नु रक्षा की उपग्रकन व्यवस्था न होत क कारण व नष्ट ह। गये हगे।

अपभ्रग म जन आचार्यों द्वारा रचित जन तक तान ग्रथ उपग्रकन ए है। प्रथकार तथा रचनाआ क नाम एम प्रकार हैं—

१ स्वयभ	—	पउम चरिउ
२ पुष्पन्त	—	पउम चरिउ
रत्न	—	पत्र पुराण

(३) स्वयभू-पउम चरिउ

अपभ्रग म मन्नाराव्य क रचयिताआ म स्वयभ का नाम मवम पृहउ ज है। इनका पउम चरिउ अपभ्रग का मवप्रथम महाकाव्य है। स्वयभ न ज रचना विम्वगुरि का परम्परा म का ह। जिन प्रकार विम्वगुरि का चरिउ प्राकन का प्रथम मन्नाराव्य है त्वा प्रकार स्वयभू का पउम चरिउ ज

राम चरित विषयक प्रथम महाकाव्य है। स्वयंभू साहित्य रचना में रविपणा का यह संप्रभावित हुए हैं। राम चरित सम्बन्ध अपभ्रंश का इस प्रथम विनिष्कृत रचना पर किंचित विस्तार में विचार करना उचित होगा।

स्वयंभू का गणना राम के महान कवियों में की जा सकती है। उनका रचना श्रवण प्रीति एवं प्राज्ञ है। इनका प्राज्ञ रचना भाषा का जातिगत स्थिति में सम्भव नहीं प्रतीत होता। एसा जान पड़ता है कि अपभ्रंश की वाच्य परम्परा पहले से उत्पन्न थी और स्वयंभू का रचनाओं में उसका विना उल्लेख हुआ। स्वयंभू ने अपना रचना में अपने पूर्व के भ्रंश अनुसृत जाति कवियों का उल्लेख किया है किन्तु इनकी रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं।

महाकवि स्वयंभू का तान रचनाएँ मिश्रित हैं—पउम चरित रिट्ठणमि चरित और स्वयंभू छन्द। इनमें से पउम चरित में कवि ने राम चरित का वर्णन किया है। रिट्ठणमि चरित (हरिवंश पुराण) का विषय वृष्ण कथा है। स्वयंभू छन्द में प्राकृत और अपभ्रंश कवियों के छन्द स्थित गये हैं और उन पर विचार किया गया है। स्वयंभू की तान जय रचनाओं की भी सूचना मिली है—सुदय चरित पचमा चरित और स्वयंभू व्याकरण। किन्तु ये रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं।

स्वयंभू के सम्बन्ध में अधिक सूचना उपलब्ध नहीं है। पउम चरित में कवि ने अपने पिता का नाम मातृ देव और माता का नाम पद्मिनी बताया है। उनका पुत्र का नाम त्रिभुवन था। श्री नाथूराम प्रसी के अनुमान है कि अपनी रधि के अनुसार स्वयंभू की वृत्तियाँ नयी सधियाँ जानकर त्रिभुवन ने उन्हें पूरा किया था। पउम चरित का भूमिका में स्वयंभू ने लिखा है कि उनका शरीर दुःख पतन था उनकी नाक चपटा थी तथा दाँत विरल थे। उनकी पत्नियाँ—अमताम्बा और आश्रित्याम्बा। वे विदुषा थी और महाकवि की साहित्य साधना में सहायिका थी। पउम चरित के विद्याधर काण्ड और जयाध्या काण्ड के अंत की पुणिकाओं में इन पत्नियों का उल्लेख है। स्वयंभू किम प्रयोग के रहने वाले थे इसका निश्चित सूचना नहीं मिलती है। अतः साध्य के आधार पर इसे कर्णाटक प्रांत का निवास कहा गया है किन्तु यह निश्चित नहीं है। स्वयंभू ने पउम चरित की रचना घनजय के आश्रय में और रिट्ठणमि चरित की रचना घनजय के आश्रय में की थी। उनका पुत्र त्रिभुवन त्रिदया के आश्रय में था। कतिपय विद्वानों का मत है कि आश्रयताता कर्णाचल देश का था। अनुमानतः कवि का पारिवारिक जीवन सुखी और गण्य था।

स्वयंभू एक विद्वान कवि थे जोर इनके जीवनका उ म हा गाथा यग फल गया था। कविराज चन्द्रवर्ती छत्ता चामणि उनके विरत थे। त्रिभवन न इन उपाधिया स कवि को सम्वाधित किया है। छत्ता-अल्लार नाम्ने व्याकरण काव्य शास्त्र आदि क य पूण जाना थे। अपना रचना म उहने जात्म विनय निवर्तन किया ह। परवर्ती कविया न स्वयंभू का महान कवि क रूप म उरग्य किया है। स्वयंभू क समय क सम्बन्ध म कोई उल्लेख नहीं मिन्ता। पउम चरित म कवि न रविपण (६७७ ई०) का उल्लेख किया ह। रिग्णमि चरित म उहने जिनमन का उरग्य किया है जिनका समय ७८२ इ ह। जिनमन सम्भवत स्वयंभू स कुछ पहल हाथ थे। पुष्पलत (९५ ई) न स्वयंभू का उल्लेख किया ह। स्वयंभू जनमानन जाठवा गनात्ता म वतमान थे।

वाल्मीकि रामायण की रचना क पचात प्रतिभागाला कविया न प्रबन्ध काव्या की रचना कर ससृृत साहित्य का समृद्ध किया। उनके विषया ना चयन अधिकांश आत्िकाव्य तथा महाभारत का क्याआ स किया गया। ससृृत म प्रबन्ध काव्या की विस्तृत परम्परा मिलती है। त्रमग इन रचनाआ का स्वरूप भा साहित्य शास्त्रिया द्वारा निर्धारित हो गया था। इनम नायक क जीवन के विविध पभा का निरन्तर प्राकृतिक दन्या का वणन मया प्रात का सुषोण्य चरान्य नती वन पवत आदि क वणन हात थे। कथानक छत्ता जाति क सम्बन्ध म भी परम्परा वन गयी थी। ससृृत काव्या का परम्परा प्राकृत म भी चरती रही। प्राकृत ग्रथा म ससृृत क मग क स्थान पर आन्वाम का प्रयाग हुआ है। इन काव्या की रचना की परम्परा अपभ्रंग म भा मिन्ता । अपभ्रंग क प्रबन्ध काव्या म मग क स्थान पर आन्वाम जोर सधि का प्रयाग मिन्ता । ससृृत जोर प्राकृत क काव्या म विषय सत्रथा विविधता मिलता है। अपभ्रंग साहित्य म समान धार्मिक प्ररणा क कारण विषयगत एकरूपता उल्लिखत हाता है जो काव्य क विनाग एव काव्याविन वातावरण का मलि म बाधक जान पत्ता है। त्रिनु प्रबन्ध काव्या का परम्परा अविच्छिन्न रूप स चरती रहा। त्रमी परम्परा क अतगत जाग चलकर गाम्बामा तुलमात्ताम न रामचरित का रचना का था।

स्वयंभू लाकभापा क कवि थे ठाक उमा प्रकार जम गाम्बामी तुलमीत्तास लगभग आठ गतर पचात लाकप्रचलित भापा क समय कवि हुए। स्वयंभू जोर गाम्बामा तुलमात्ताम का दानिक माननाए भिन्न था फिर भा काव्य रचना म जाना मन्त्रविषा म समानताए भा मिन्ताया दता है। जाना न लाकभापा म रचना का। अपन अपन पम का परम्परा का दाना कविया न रचनाआ म गमावण किया जोर जाना न लाकमगड का वादना म काव्य का मजन किया। गाम्बामा तुलमा

दास सम्भवत स्वयभू का रचना से परिचित थे। दासा रचनाओं में मधुवन-गत साम्य भी मिलता है। पउम चरित के विवेचन से इस ग्रंथ का महत्व स्पष्ट हो जायगा।

पउम चरित का सम्पादन २१० हरिवल्लभ चूनागल मायाणा ने किया है। ग्रंथ का एक हस्तलिख आसुर जन शास्त्र मन्थार जयपुर में सुरक्षित है। इस महाकाव्य में पाँच काण्ड हैं—विद्याधर काण्ड अथाय्या कांड, सुंदर कांड, युद्ध काण्ड और उत्तर काण्ड। पहला काण्ड में २० दूसरे में २२, तीसरे में १४ चौथे में २१ और पाँचवें काण्ड में १ मधियाँ हैं। सम्पूर्ण ग्रंथ में कुल १० मधियाँ हैं जिनमें ८३ स्वयभू का और ७ त्रिभुवन स्वयभू का है। मधियों की समाप्ति पर जास्वास आगे पद्य गद्या का प्रयोग हुआ है। कही कही सग (सग) गद्य भी आया है। मधियाँ के अन्त में कवि ने अपने नाम का उल्लेख किया है। पउम चरित की रचना विमलमूरि और रविपण की परम्परा में हुई है। स्वयभू ने ग्रंथ का रचड़ा छन्दबद्ध रचना कहा है।

ग्रंथ के आरम्भ में कवि ने अपभ्रंश का बतना की है—

णमह णव-कमल-कोमल मणहर वर-वहल वाति साहिल्ल।
उसहसस पाय कमल स-सुगसुर वल्लिय मिरमा ॥
ढोहर समास णाउ मह दल अथ वसहस्यत्रिय।
बुह महुपर पीउ रस सयम्भु कध्वुप्पल जयऊ।

नवकमल की भाँति कामल, मनोहर और उत्तम धनवाँति से नामित गुरासुर वन्ति श्री अपभ्रंश जिन के चरण कमल को मैं गिरमा नमस्कार करता हूँ। स्वयभू वृत्त काव्यात्पल जयगीत है। तीसरे मध्यांके मूणल है गद्य कमल दण्ड हैं। अथरूपी केसर से यह गुवांमिन है आर वधजन तथा अमर दसना मपान करत है।

कवि आगे कहता है कि गुरु परमपत्नी को नमस्कार करने में जाय ग्रंथ का दत्तकर रामकथा आरम्भ करता हूँ। हमके पञ्चात् चारीस परम जिना की बतना कर कवि ने कहा है कि रामायण काव्य के माध्यम से मैं अपने आपको प्रगट अथवा अभिव्यक्त करता हूँ—

स्य चउराग रि परमजिण पगवपिणु भावें ।
पुण जप्पाणउ पायणमि रामायण काव ॥

स्वयम् न रामकथा वा तुज्जना न्ना स का ॥

यद्धमाणा मुञ्जुह्व विणिग्गय । रामकहा णं एं कमागय ॥१॥
जस्वर वाग जगह मणाहर । सुजउकार उं मच्छाण ॥२॥
दीह समाम पवाहावकिय । मकरय पायय पुत्तिणाक्किय ॥३॥
त्तीभापा उभय त्तुजउ । कवि-दुक्कर घण म् मिलायउ ॥४॥
अरु-वहल कल्लाल णिटिठय । आगामय ममत्तुं परिणिय ॥५॥
एं रामकह-मरि साहता । गणहर उवहिं त्तिं वहन्ता ॥६॥
पउं एंभूई जायरिए । पुण घम्मण गणाक्करिए ॥७॥
पुण यहव समाराएण । त्तिहरण जणतरवाए ॥८॥
पुण रविमणायरिय-पमाण । वड्डिए जवगाहिय वड्डिए ॥९॥
पउमिणि जगणि गव मभूण । माण्यएव एव जगराए ॥१०॥
ज-जणएण पहर गनें । उरर णाम पविरण एत ॥११॥

णिम्मं पुण्ण विवित्त वह कितण जाण्पण ।

जण ममाणिजणएण विर त्ति विण्णइ ॥१२॥ (१२)

कवि कहता है—यह रामकथा रूपा मरिगा वधमान मन्वावार क मग कुहर स निम्मत हावर त्रम म प्रवाहित जाता है चडा जा रती है । वाक्य विद्याम म यह मनाहर है और मुञ्जु अकार आर छं रूपा मल्पा म परिपूण ॥ दाघ ममाम म यह अकित है तथा मञ्जुत और प्राहुत पुत्तिना म अञ्जुत है । रूपा भाषा रूपा मक न उवल क है । कवित्त विण्ण घन गं निजण है । जनक अयण्णा तरण म यह तरणित है और जाण्वाग रूपा तायों म यह प्रतिष्ठित ॥ रामकथा रूपा प्राहित म मरिगा वा मरम पट्ट गणरर र्वा न र्वा । जाचाय मानम गणाञ्जुत घर्माचाय आर भट्टाण्क कीतिपर न घमण म र्वा । जनतर आचाय रविरण क प्रमां म स्वयं न स्वमति क जनमा इमना जवगाहन रिया । निमल पुण्ण म पवित्र रामकथा क मय्यक नान स म्यि र्वाति बन्नी है । पत्तिमनी मता क मभ म मभूत स्वयम् उम पवित्र रामकथा वा कानन जारम्भ करता है ।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामकथा का सगर जीर मरिता के रूप में वणन किया है। मानस मालवाण व आरम्भ में ३६४१ दोहा तक बबिता मरिता का गागागा वणन किया गया जो स्वयम्भू के वणन के मूल्य में द्रष्टव्य हैं।

स्वयम्भू ने आत्म विनय निवेदन किया है। पत्निता में प्रियती करके हुए कवि कहता है कि मुझमें क्या दूसरा कुछ नहीं है। मैं व्याकरण नहीं जानता और न मैं महाकाव्य और नाट्य लक्षण दगा है। पिंगल शास्त्र का मैं विस्तार समझा है और न भामह और दंडी के अलंकारों को समझा है। कवि ने परम्परा के अनुसार गजन वृजन स्तुति की है। जाति काव्य में प्रचारम्भ में प्रथम नहीं मिलते किन्तु पर्यन्त काया में इस प्रकार की परम्परा मिलती है। गोस्वामी तुलसीदास ने इस परम्परा के अनुसार मानस में मगलाचरण आत्मविनय निवेदन मज्जन वृजन स्तुति आदि की है।

१—रामचरित मानस—मालवाण—

मुनि मुन्दर सवाँ वर विरचे बुद्धि विचारि।

नहिं गहि पावन मुभग मर घाँ मनोहर चारि ॥३६॥

मूल प्रवृत्त मुभग सोपाना। ग्यान नयन निरप्यत मनमाना ॥
 रघुपति मन्त्रिमा अगुन जवाधा। वरनन सोँ परवारि जगाधा ॥
 रामगाय जम मन्त्रि सुधामन। उपमा बावि विगान मनोरम ॥
 पुरान मघन चार चीपाई। जुगति मजु मनि साप मुनि ॥
 मौरग मुन्दर गहा। मोइ बहुरम कमठ वृठ मोनि ॥
 अरथ अनूप सुभाव सुपामा। साइ पराग मकर सुधामा ॥
 मुष्टत पज मजुल अरि माग। ग्यान विराग विचार मराला ॥
 घनि अवरव ववित गुन जाती। मीन मनोहर त बहु मोती ॥
 अरथ धरम कामान्वि चारी। कहन ग्यान विग्यान विचारा ॥
 नवरम जप तप जाग विरागा। त मव चलचर चार तगगा ॥

गान्धामा जी ने रामकथा रूपा मरिता का विणन वणन किया है—

चरो मुभग रविता गगिता मा। राम विमल जम जल भगिता मा ॥

गरजू नाम मुगम मूला। राक व मनि मजु वूरा ॥

नरी पुनीत मुगागि गि नि। वमिन्त विन त मू निवगिनि ॥त्यानि ॥

जब रामकथाका म ब्राह्मण रामकथा के प्रति दावा उठा कर जनघम के अनुकूल कथा कहने की परम्परा मित्रिणी है। इस परम्परा के अनुसार पठम चरित्र म कथा का आरम्भ कथाका म होता है—

परमसर पर मामणहि सुबर्ट विवरेरी।

वह जिण मामण कम धिय वह राहव-वेरी ॥१॥

जगे जेएहि त्वक्खित्तणहि। उप्पाइउ भत्तिउ भत्तएहि ॥१॥

जइ कुम्भ धरियउ धरणि वीर। ता कुम्भु पडतउ कण गीइ ॥२॥

जए रामहे तिहुअण उवरमाइ। सो रावणु कहि तिय जेवि जाए ॥३॥

अण्णु वि खरदूगण समरे देव। पट्ट जुज्जइ मुत्तइ मिच्च केव ॥४॥

विह तियमइ कारण कविवरेण। घाइज्जइ बालि महोपरण ॥५॥

विह बाणर गिरिवर उव्वहत्ति। बघवि मपरहए ममत्तरनि ॥६॥

विह रावण देह मट्ट वीम हत्थे। अमराहिव भुव कचण ममत्थु ॥७॥

वरिसइ मुअइ विह कुम्भयण्ण। महिसा कोत्तिहि मिण घाए अण्णु ॥८॥

जें परिममित दक्खयण परणारीहि ममणु।

सो मत्तारि जणणि सम विह विहासणु ॥९॥ (१-१०)

राजा शणिक न गीतम गणघर म पूछा—हे परमेस्वर दूमरा के सम्प्रदाय म रामकथा उत्पत्ती सुनी जाता है। जतएव जिन नामन म रामकथा कगी है उम कहिय। मगार म मगधगीर लागे न भ्रातियो उत्पन्न कर ली है। व कहत है विघर्नी का बच्छप धारण करता है परन्तु गिरन कच्छप का कौन धारण करता है। राम के उत्तर म तीना राज व्याप्त है ता रावण माता को हर कर्ता गया। स्त्री के लिए मुषाव न भाई का कम मारा। दानरा न पवत कम उगाया और ममत्त धर उम कम पाए किया। रावण के क्या दम मुग्य जार बीम हाथ थे। क्या वर कालाव का घोषन म ममत्त था। क्या कुम्भकण ६ महीन मोता था और पराडा भमा का भाजन उम कम पत्ता था। विभायण न पर म्था के अभिजायी रावण का वध कराया ता जतन माता मत्त मत्तारी का कम ग्रहण कर लिया। राजा शणिक का जन कथाका का मन कर गीतम गणघर जन रामकथा का यणन करत है।

जयम विद्याधर बाण म ऋषभ जिन जम जिन निक्कमण वातरवण उत्पत्ति रावण घग्नि आत्ति वग्नि है। रावण का चरित विम्पार स वग्नि है। श्रयाध्या कच्छ म राम घग्नि प्रारम्भ हाता है और राम माता विवाह म कर मीता-हरण

तक की कथा ली गयी है। मुत्तर काण्ड में मीता की खोज तथा राम का सना लेकर लया पहुँचना वर्णित है। इसी प्रकार यद्ध काण्ड तथा उत्तर काण्ड में राम रावण यद्ध तथा उत्तर चरित वर्णित है।

पउम चरित में घटनाओं और पात्रों का बहुलता मिलती है। विद्याधर काण्ड में ऋषभ जिन का जन्म तथा उनका चरित्र भरत बाहुबलि चरित जानि वर्णन करने के पश्चात् राक्षस और वानर बग की उत्पत्ति का गया है। नवी संधि में रावण चरित का विस्तार से वर्णन किया गया है। मालि क पुत्र रत्नाश्रव और बकसा क रावण भानवण, चंद्रनय ज र रिभीषण उत्तर हुए। बाणक रावण ने तोयन्वाहा का हाग जिमम मणिया म जणे हुए नी मुख य पहना। रावण न जत्र शर पत्ता तव उमम उमवे एव मग व नी मव प्रतिविम्बित दिवार्था पड। इस कारण रावण दमानन प्रसिद्ध हुआ जम मिह पचानन क नाम म प्रसिद्ध है—

पक्केपिणु ताइ ऋणणद्र थिर-तारइ तग्गइ लायण।

ते दह्मह दहमिह जणेग विउ पचाणणु जम पमिद्धि गउ।।

अंतर विद्या मिद्धि चंद्रहाम खडग की मिद्धि, व रावण जीं यम पर विजय रावण-बाण युद्ध में रावण की पराजय महसूसकरण के साथ रावण का युद्ध इद्र का पराजय आदि रावण चरित में संबंधित अनक प्रसंगा का वर्णन किया गया है। कलाग परत पर जाकर रावण क विमान पुष्पक की गति तक जान तथा रावण क बगग उगन का प्रसंग वात्माकि रामायण क उत्तरकाण्ड में आया है। इस प्रसंग का काव्यमय वर्णन स्वयंभू न किंचित परिवर्तन के साथ किया है। रावण क पवत उठा तन पर बगस पर कालाहल हान लगा। टूटी हुई मणिमय चट्टानों का पत्थर ऐसे मारूम हुए मानो गिरिस्था गिरा का बन्धुन ही टूट गया था। घाटण्ड्र न पवत का दशाया ता रावण उमक नाक कच्छप की भाँति डेर हा गया और चिंगा उठा जिमम दमा गिगाण भयातुर हो उठा। रावण का रानिया जिनक ऐगवन क कुम्भस्य क ममान स्तन थ जपन कयूर हार नूपुर और पवण बाक हाथ मनवनाकर और कयती हिंकार हाहा गत करन ग्या। उवा भुक्तिया विभ्रम जीर चिंगा म कुचिन हा रती थी। वात्माकि रामायण में स्वयं गकर न पवत का अग्रे से आया था। मन्वात्रि शमा न भा इस प्रसंग

१- वात्माकि रामायण उत्तरकाण्ड—पाण्ड्य मग।

२- पउम चरित विद्याधर काण्ड—तर्हवी मधि।

का आगतार चरित म वणन किया है जिसमें पवत उगान पर डधर ग्पर भागती विद्याधर मुदरिया व काचीग्व स कनाम व मखरित हान का उत्पन्न है जा वाल्मीकि कथा व जनकूल है।

विद्याधर काण की चौहवी सधि म रावण मन्सखिरण युद्ध का वणन । वाल्मीकि रामायण म रावण मन्स्राजन यद्ध उत्तरकाण म २ वें मग म वर्णन है। नमदा तत् पर रावण गकर की पूजा करता है। पूजा म विघ्न त्व उम महस्राजन के जडावहार का सूचना प्राप्त होती है। रावण महस्राजन युद्ध म रावण गकी बनाया जाता है। स्वयभू का प्रमग वणन प्राय ममान है। जिन भनत रावण नमदा तत् पर जिन की पूजा करता है। पूजा म विघ्न देख महस्रखिरण व माध उमका यद्ध होता है जिसम वह मन्सखिरण का पराजित कर त्ना है। इस प्रमग म स्वयभू न महस्रखिरण का जलप्रीटा का गिण वणन किया है—

सगीर तरतह उम्मालतहु मुह कमट्टु वेइ पवाइय।

आयइ मरमइ किय तामग्मइ णरवत्त भति उप्पाइय ॥१॥

ज्वरापक जत्कीर करतहु । घण-पाणाति पहर मत्तनहु ॥१॥

कति मि कत्त-कुदुज्ज-नारहि । धवल्लिजल तुटतेहि हारेहि ॥२॥

कहि मि रमितणउराह रमानति । कहि मि फरिउकुण्ठहि फरतेहि ॥ ॥

कहि मिम रम-नम्बोलागत्तउ । कहि मि वउत्त कायम्बरि मत्तउ ॥४॥

कहि मि फट्टिह कपूरहि कामिउ । कतिमि मुरट्टि मिगमय-वामागिउ ॥५॥

कहि मिविउ मणि रयणु-जित्थिउ । कति मि धाअ-कज्ज मवलिउउ ।६॥

कति मिक्कल-कुकुम पिजरियउ । कति मि मत्थ चत्थ रम भरियउ ॥७॥

कति मि जवगट्ट मण कम्बिउ । कति मि भमग्ग रिछातिहि चुम्बिउ ॥८॥

विट्ठम मग्गय चत्थात्त— मय चामियग्ग त्तर मघाणति ।

उत्त वणत्त-उत्त पावत्त णत्थत्त गुक्खणु घण रिउत्त-वत्तायति ॥ ॥

(१६६)

मात्तवर अधिपति मन्सखिरण नमत्ता म अपनी रानिया व माध जग्री करता है। तत् म प्राण करता त्त क्रिया राना उमागित मय का त्थ कर मन्सखिरण का यह भ्रम हुआ कि यह मरम मय कमत्त है जयदा रवतकमात्त जत्त का मत्त बीछात्त एक दूमर पर उछात्त त्थ व प्राण करत त्थ। जत्त कत्ता पर चत्त और कुत्त क पूजा का भानि ताम जोर कत्तात्त हारा म घवत्त हा रत्ता था। कत्ता गहन नपुग म गत्ताममान हा उगा कत्ता म्खरित कुण्ठत्ता स प्रकागित ना कत्ता म्ग्म ताम्ग्ग् म रक्खिम जोर वत्तुत्त एक मत्थिग म मन त्ता उगा था। कत्ता कपूर म गुवात्तित ना कत्ता कत्तुग्ग म मग्गभित था। नमत्ता का जत्त कर्त्ता मणिगत्ता।

म उ-वल कहा घुटे काजल मे सबलिन, कहा बुकुम म पिजगिन कहा मय्य
चन्म म भग्ति हा रहा था। कहा यय कम् स कवुगिन कहा भ्रमरा म चुम्बित
हा रहा था। त्रिद्रुम मरकत द्रवनील, मणिया और स्वर्णहार समूह म विविध वण
रजित नमरा नी का जल ऐगा गामायमान था जस इद्रधनुष मध विद्युत और
बलाका म आकाश-तल गगरजित हा रहा हा।

स्वयम्भू क जलनाडा वणन का अत्यधिक स्थिति हुई। कवि न स्वय जन्मीना
वणन क मन्व-ध म कहा —

जल-कीलाए मयम्भू चउमुएव र गागह कहाण।

भइ (भट्ट) च मच्छव अज्ज वि कइणा ण पावति ॥

ज्यात जन्माणा म स्वयम्भू का प्राग्रह रथा म चतुनज को और मत्स्यवणन म
भट्ट का आज भी कविगण नहा पात। जन्मीना वणन का परपरा हरिवंश पुगण
तथा कतिपय अय मस्कृत काव्या म भा मिलता ह।

अगरहवी उन्नीसवा मधि म अजना-यवनजय स हनुमान क जम तथा
उनक चरित का वणन है। हनुमान वानर वण क हैं तथा रावण के महायक है।
वर्णन के माय युद्ध म उहनि रावण की ओर म भाग गिया तथा अनुपम वारता
प्रस्तुत की। रावण न हनुमान का लका म मत्कार किया तथा मुग्धीव का पुत्री
पकजरागा और गर की पुता अनगकुमुमा स उनका विवाह हुआ। सत्सुत हाकर
हनमान तथा रावण के अय महायक अपन नगरा को गैर गय।

अयाध्याकाण म रामचरित का वणन प्राग्भ हाता है। आरम्भ म ककया
या वरलान दगरथ क पुत्रा का जम जन्म क मीना पुत्री और भासण पुत्र का
जम प्रमग वर्णित ह। राम मीना विवाह स्वयवर म धनुषभग क उपरात होता
है—मर राजाआ के पराजित हान पर वग्भद्र और वामुन्व (राम-लक्ष्मण)
मीना क स्वयवर मण्य म पहुँचे। उन्होंने ममुन्वत और वखावन धनुष हाथ म
कर मामूनी धनुषा का भाति उन पर गरी चडा दी तब स्वयं न पूरा की वषा
का। राम और माता का विवाह हा गया। जो राजा स्वयवर म आय थ क उगाग
होकर अपन अपन नगर चर गय। तिन-वार-नभत्र गिन और लन क याग्य प्रता
का कर ज्यानिपिया न भविष्यवाणा की कि इम कया (माता) क कारण
यदून म राममा का विनाग हागा। (२ १२)।

दगरथ के मन म विरक्ति उत्पन्नहाता है वे राम का राय दन का निश्चय
करत हैं। ककया क वरलान भांगल पर मत्यनिष्ठ दगरथ राम को वनवाग द
न्त हैं। राम क माध माता और लक्ष्मण वनगमन क लिए प्रस्तुत हात हैं। राम
क चर जान म अयाध्या धीनीन हा जाती है। राम याथा करत हुए पारियात

ग पहुँचे जहाँ गभीरा नाम का महानदी मिली। नग नव राम न सना का गीत दिया। नग पार करन क लिए राम न जल म प्रवण किया साना उनक वाय हाथ पर चर गयी। थोडा तर म वे नदी पार कर गय। राम क चर जान पर अयोध्यावासिया ने विलाप किया। राजा दशरथ ने जन तीक्षा ले गी। भरत राम का मनान के लिए गय और छठ दिन उनके पास पहुँचे। सरावर क निकल लतागह म भरत न राम लक्ष्मण और सीता का नवा। भरत दाड कर राम क चरणा म गिर पड। भरत न कहा—

धनु देव म जाहि पवासहा। हाहि तरडड दसरह-वमहा॥

हउ सतहण मिच्च तउ व वि। शकवण मनि मीय महुएवि॥

जिह णकवतहि चउ इउ जम सुर-लोण।

तिह तुडु भुजहि रज्जु परिमिउ वधव लोए॥ २४८॥

—नव आप ठहरिए प्रवाम का मन जाइय अथवा दशरथ वग का नाग हा जायगा। मैं और गजुधन आपके सबक हैं लक्ष्मण मंत्री और माता महात्मा। आप वचना म धिर उमा प्रकार राय का भाग करें जम नभत्रा महित चर और सुरणाक म धिरा इद्र राज्य करता है।

राम न भरत को भुजाओ म भर लिया और हृत्य म लगाया। राम न कहा— भरत माता पिता क तुम्हा सब सबक हो। नना विनय तुम्ह छात्र कर और किमम हो मक्ता है। राम न ककया स कहा—मैं पिता क वचना का पाठन करुगा। मुन राय म काई काम नहा। पिता न जो वचन तुम्ह तीन बार लिया उस मैं तुम्ह मी बार नता हू। राम न भरत क मिर पर रात्र पट्ट बांध लिया। भरत ओर गजधन न धवल मनि क पाम जाकर प्रतिज्ञा ला कि व राम क वन स गीतन पर राय स निवृत्त ग जायग। अनंतर भरत अयात्या लोठ आय। स्वयभू क वणन म क्या राम लक्ष्मण अथवा भरत क गगा पार करन निपाठ म भेंट अथवा प्रयाग का वणन नहा आया है। चरण पादुका क प्रमग का भा अभाव है। भरत क गीतन पर राम लक्ष्मण और माता क माय तापम वन का आर चर गय।

राम जनक रागा और नगरा का पार करन दुए दण्ड वन म पत्रेचन है। लक्ष्मण न वगम्यता म मूषणम तडग प्राप्त किया और सर-वन्तवा क पुत्र गजुधर का वध किया। वन्तवा का कामामन्ति तथा विष्णुवरण की कथा अनन्तर दा गया है। सर क माघ युद्ध म लक्ष्मण विजयी गत है। रावण दण्ड वन आता है। व माता क रूप पर आमकत हा जाना है। उमन अयातना विद्या का आसाहन किया। अयातनी विद्या न उम बनाया कि लक्ष्मण का

मिहनाट (गुप्त मकेन) मुन कर राम सीता को छा कर जा मवन है। लामण दूषण व माथ युद्ध कर ग थ। अवलोकनी विद्या न जाकर मिहनाट किया। राम न ममझा कि लामण ने मिहनाट किया व क्वाचित व सवट म प म ग ह। राम सीता का छे कर घनुप हाथ म ले लक्ष्मण व पास गये जहाँ उहान ग्मण का युद्ध करते दखा। लामण न कहा कि मैं सिहनाद नहीं किया। तोना जब तब आश्रम का लाने तब तब रावण सीता का हरण कर चुका था। आश्रम मूना था। रावण जटायु जार विद्याधर को पराजित कर सीता का लका ल गया और नदन वन म रख लिया। राम न माता का खाजत हुए मरणाभ्र जटायु का त्या जीर उसे जिन गामन व सारभूत आठ मूल गुण दिय। राम उमत्त की भांति सीता का वन म खाजन लग—

णिद्धणु लक्ष्मण-वज्जियउ अणु विव-वमणहि मुत्तउ।
 राहुउ ममइ भुअणु जिह वण हा हा सोय भणत्तउ ॥८॥
 हिण्णो भम मत्परण। वण-वय पुच्छिय हलहरण ॥१॥
 यण यण वयारहि बाइ म। व वहि मि ण्ठिठ जद वत्त पद ॥२॥
 वणुएम भणपिणु सच्चत्तउ। तावगाए वण गइडु मित्तउ ॥३॥
 ह कुजुर कामिणि-गइ-गमण। व वहि मि ण्ठिठ जद मिगणयण ॥४॥
 णिय पडिरवण वयारियउ। जाणइ सीयए हवकारियउ ॥५॥
 वत्थइ दिट्ठइ इत्थीवर। जाणत्त घण णयणइ दीहरइ ॥६॥
 वत्थइ अमोय-तर हलियउ। जाणद घण-वाहा-हालियउ ॥७॥
 वणु मयलु गवत्तवि सयल महि। पलत्त पचावउ तामगहि ॥८॥
 तजि परादउ णिय भवणु जहि अच्छिउ आसि त्यत्यउ।

चाव मिग्ग्मुह मुक्क-वध वल पत्ति म इभु व मणत्त ॥९॥ (३९ १२)

राम न वनवा स पूछा कि यदि तुमने मरी माता का त्याहा हा ता बताआ। गज स पूछा—मरी प्रिया की भांति मुत्तर गति वाल क्या तुमने मरी सीता का त्याहा है। राम कमला का दय सीता व विनाल नयन भगाक वृक्ष को ख माना व हिलत हाथ ममम लते थ। चारा आर खाज कर अपन लनागह म जाकर राम अचार हाकर गिर प।

राम सीता की खाज करने हुए सिद्धिधा पहुँचत हैं। वही नगर व राजा बालि व अनुज मुषीव का जवास्तविक मुषाव (महस्रगति) ग युद्ध हाता ह। मुषीव का मूगया व गिए गया जान मायावी महस्रगति मुषीव व रूप म नगर म

१—गिए—रामचरित मानम—अरण्यवाण्ट, २ ३०।

छटिमन गमुमाए बहु भाता। पूछन चल लता तथ पाती। इत्यादि।

प्रवेश कर गया। सीता का स्वरूप एक जमा था उस कारण युद्ध में वास्तविक मुग्रीब की पहिचान नहीं हो सकता थी। मुग्रीब राम का शरण गया। राम ने यद्ध में महत्वगति का परास्त कर मुग्रीब का राज्य लिया। मुग्रीब ने माता की आज्ञा के लिए वानर दल भेजे। हनुमान माता का खोज करने के लिए उठा पहुँच। उक्त में उनका जागाया विद्या तथा उक्त मुन्दरा में भेष हुआ। हनुमान ने नन्दन वन में राम के वियोग से पातित कृपागा सीता को ढूँढा। हनुमान ने राम का अगूँठा गिरा लिया जिसे साता ने सह्य उठा लिया। परिचय हो जाने पर हनुमान ने सीता से प्रस्ताव किया कि वे राम के पास चले। सीता ने कहा— कुत्सव के लिए यह ठाक नहीं अपने कुलधर जाना हो तो भी पति के बिना जाना ठीक नहीं। निगाचर रावण का वन हान पर जय जयकार के साथ अपने जनपद जाऊँगा। यह मेरा चूनामणि लो इस पहचान के रूप में राम का अर्पित कर दना। सीता ने राम के प्रति मन्त्र कहा—

अण वि जातिर्वै वि गण घणउ मन्मउ अक्यु महु तणउ ।
 वउ तुज्ज विओए जणय-मुय थिय गह विसमण कह वि मअ ॥१॥
 ज्ञाण मयक गह गन्-भानिय व । ज्ञीण सुरिण रिद्धि तव रहिय व ॥२॥
 ज्ञाण कुण्ठे मज्ज वामाणिव । वीणा वउ मह सुकइ-मुवाणि व ॥ ॥
 धाण विवायर-मणें रति व । धाण कु-जणवण जिणवर भति व ॥४॥
 धाण भुभिक्वें अत्य मपनि व । ज्ञाण वत्तगण वत्तमति व ॥५॥
 ज्ञाण चरित विहूणहा किति व । ज्ञीण कु-कुट्टर कुलवटु णिति व ॥६॥
 अण्यु वि मरह उम-पमासहा । वल्लय्ये जय-लिटि णिवामणा ॥७॥
 रणे तुज्जार-वन्नि विणिवारणा । तहा सन्मउ णहि कुमारणा ॥८॥
 वच पान्णपि उक्खण । जण्ण माय ह्यन्ति अक्खण ॥ ॥
 णउ ष्वेणउ णउ णवेणउ णउ राम वन्नि वियागण ।

परमारव्वउ उक्खण म - भु अज अण्यतुण्णरण' ॥१०॥ (१० १३)

माता ने हनुमान से कहा कि राम से कह देना कि माता तुम्हारे वियोग में रम भर रही है। रावण के चूनामणि का भौति दाण हो गया है। अण्ण म ना मन्त्र कह देना कि तुम्हारे बिना माता-पिता रावण के वन तुम्हारा भुजाभा में रावण का वध होगा। हनुमान ने नन्दन वन उजागल उक्त का विध्वंस किया और राम के पास गौतम माता का मन्त्र लिया। मन्त्र पाकर राम ने रावण

१— रामचरित मानस—मन्त्र का— ३।

चूनामणि तारि तव मण्ड हण्य ममन पवनमुन ह्यउ । इत्यादि ।

क विरुद्ध अभियान किया। मना न लका की आर प्रमथान किया। गुम गनुन हए। भाग म मनु और ममुद्र न प्रतिरात्र किया किनु व पराजिन हुए। राम सना महिन हम गप पहुच और लका का घेर लिया। जन क्या म मनुप्रथ व प्रमग का जभाव है। इम क्या म मनु और ममुद्र विद्याघर बह गय है जा राम का प्रतिरात्र करत हैं आर घद म नल और नीउ द्वारा बाँध गिय जात ह। यद बाण और उत्तर बाण म जन घमानुकूल राम रावण युद्ध बनाति जा गम का उत्तर चरित वर्णित है। रावण का वध लामण करत हैं। लवा स लामण का मत्यु का समाचार सुन कर राम गान् व्याकुल हा दाशा लत हैं।

जन कविया का एक विगपना यह है कि व क्या प्रमगा का वणन करत हुए लोकिव जावन क अनुभूत तथ्या का नहा भूत हैं। इमा प्रम म प्राचान क्याआ का वणन करत समय जन कविया न ममाज क मममामयिर सजाव चित्र प्रस्तुत किय हैं। इमस उनका अपन समय का न्यिनिया के प्रति जागरूक हाता तथा ममाज क प्रति उनके यथायवाणी श्रुतिकण का पना चरता है। पउम चरित म इम प्रकार क अनक स्यर मिलत हैं। भरत का अयोध्या लर कर राम आग धानक वन म चल गय। वहाँ म भीला की बस्ता म गय। इम वस्ती का वणन कवि न इम प्रकार किया है—

अणु वि धोवन्तर विहरनई। वणु घाणककहें पुणु सपत्त हू ॥१॥

जहि जणवउ मय मत्य गियत्यउ। वरहिण पिच्छ-ममाहिय-हृत्यउ ॥२॥

क मूल-बहु-वणक भुजउ । सिरें-बढ माल बढ गलें गुजउ ॥ ॥

जहि जुवदउ छह जायच विवाहउ। मयवरि रय वलयकिय-वाहउ ॥४॥

मयवरि-कुम्भु वरपिणु उकवटु। लवि विमाण मुमटु धवटु जटु ॥५॥

मात्तिय चाउल-गणावइयउ । सुम्भिय-वयणउ मयण भयउ ॥६॥

त तहउ वणु भिल्लहु करउ। हरि-बउएवहि विउ विवरगउ ॥७॥

त म-वि घरवा-अर्पाहि हरिसिय-देहिहि।

छाइय लक्वण राम चद्र-मूर जिम महहि ॥८॥ २४ १२ ॥

—उम बस्ता क गग मृगचम और वबल स अपना गरार के हुए थ व अपन हाथ मागपता स मजाय थ। क मूर उनका भाजन था मिर पर क का माग और गउ म गुजावग था। यवनिया का वाग्पन म विवाह हाता था। उनक हाथ म हाथीन की चूटिया थी। व हाथिया क कुम्भस्य क जागग म गथीन क मृग म चाव कू रहा था। कामातजिन हा व गाध्र मूह चूम लती था। राम ने उग बस्ती म निवाग किया। इगी प्रकार मगध दग का वणन करत हुए कवि न किया ह—

अवहृत्यवि रलयण निरवममु । पहिलउ गिरु वणमि मगहत्सु ॥१॥
 जहि पक्क-बलम बमत्रिणिमिण्ण । जलहन्त तरणि थर व विमण्ण ॥२॥
 जहि सुय-पतिउ सुपरिच्छिंयाउ । ण वणमिरि मरगय वण्ठियाउ ॥३॥
 जहि उच्छ-वणइ पवणाह्यात् । बम्पति व पालण भय-गयात् ॥४४॥
 जहि णत्तवणइ मणाहरात् । णच्चति व चउ-पल्लव-वराइ ॥५॥
 जहि फात्तिम-वयणइ दात्तिमाइ । णजति तात् ण कइ महात् ॥६॥
 जहि मह्यर पतिउ सुत्तराउ । कयइ कसर रय धूमराउ ॥७॥
 जहि दक्खा मण्ठव पग्गिल्लि । पुणुपथिय रम-मल्लिइ पियलि ॥८॥ १ ४॥

--मगध देग जहाँ पक्क धान की गोभा तारुण्य न पाने बाग विघ्न बढ़ा के समान लिखायी देता थी। वहाँ शुक पत्नियाँ ऐसी जान पत्नी थी जिन वन लक्ष्मी के गले में मरकत मणि की माला हा। पवन के वस से ईश के स्तन हिल रहे थे मानो वे पीन के भय से कांप रहे हा। नन्दन वन के पत्त छिठ रहे थे जस नय म इमिन्त कर रहे हा। रात्र अनार के मुख कपिया के मुख की भांति लिखाया देते थ। मारा का पत्नियाँ कनका का रजकण से धूमरित हा रही था और दाग के अतागूह पधिका का स्मरुपा जग पिला रहे थ।

महाकाव्य के लक्षण पदम चरित म मिश्रित है। जावन के विविध पभा के लिखान के अनिरिक्त प्रावृत्तिक दग्धा के वणन प्रात मध्या सूर्योत्थ आदि के सजाव चित्र क्रतु वणन जाति म महाकाव्य म जनक स्थला पर मिश्रित है। त्रिभ्याचल के आग ताप्ता नन्दी पार कर उदमण और मीना के माय राम एक महावत की छाया म वरत है। वरुन का मघा का प्रमार हाता ह और कवि पावम का वणन करता है। राम साता और रामण जम हा वर के नाच बठ वम जासाग म मधजाल मुक्कवि के काय का भांति प्रमार करन ग्या। जासाग म मघ उमा प्रकार फलन ग्या जम यद्वनमि म मना फरता है जताना म अत्रकार फरता ह बहुज म बडि फरता है पाण्डि म पाप और धमिष्ठ म घम फरता ह। जस चद्रमा का जहाई फरता है घनगान का चिन्ता फरती है कुशीन की कानि और नगात् का गत् फरता है। जम सूद का किरण फरता है वन म दासानल फरता है वम का मधजाल फला। जान फरता है नि यगाभा पावम राजा मघ महावत्र पर वर फर घनप नय म ग यीम पर चर्च वरुन के गिण मद्रद हा।

१—राम चरित—

मात्त मन्त्रायण गार्गी तत्रैव मत्ते परिच्छिप्य जावेति।

पठम चरित म प्रकृति का विणन मनोरम वणन मिलता है। निर्विघा नगर की आर जात हुए माग म गोतावरी नटा मिली। कवि न उत्तुग तरग यस्त गजन करना हुई गोतावरा का वणन किया है—

घावन्नरें मच्छुत्यन्त रन्ति । गाला णइ निटठ ममुञ्चहति ॥२॥
 सुमुनर घार घुररररन्ति । करि मयरडडाहिय कुड्डुहति ॥२॥
 ग्णिनीर-मण्ण मण्णलित नेति । दन्तुग्य रन्थि कुड्डुहुरन्ति ॥४॥
 कालाडल्लान्हि उञ्चहति । उग्घाम घाम धवपवधवन्ति ॥५॥
 पण्णिलण-वलण-सल्लयल्ललति । सल्लयल्लिय-वञ्चव-वञ्चव दति ॥६॥
 ममि सव कुञ्च धवलोज्जरण । कारण-डडविय डम्बरेण ॥७॥
 पणावलि वकिय वलयालकिय ण मट्टि-कुलवहुअह तणिय ।

जलणिहि भत्तारहा मातिय-हारहा वाह पमारिय दाहिणिय ॥८॥ (२१३)

—गोतावरी फन समूह स आविण उञ्चगिन तरगावग क उग्घाप सहित वञ्चव करता ग्रह रही था। कारडव क उञ्चपन और जलजन्तुआ क आला न स सुगाभिन, वलय (जावत और चूड़ी) म जकिन वह धरता की कुञ्चपुत्रा जान पन्ती थी जा अपने प्रिय समुद्र के आगे मुन्ताहार लिए हाथ पन्ग रही था। स्वयम्भू का वणन उत्तर रामचरित म भवभूति के गोतावरी वणन का स्मरण दिग्गता है।

रवा का अलङ्कृत वणन कवि न जपन प्रिय (ममन्) का आर जाता हुई एक वाला क रूप म किया ह।

पमरइ सु-वइह वञ्चु जिह मह जाणु गयणगण तावहि ॥

पमरइ मह विहु गयणगणें । पसरइ जम सण्णु समरणणें ॥१॥

पसरइ जम तिमि, अण्णाग । पसरइ जम बुद्धि बहु जाणहा ॥२॥

पमरइ जम पाउ पाविट्टहा । पमरइ जम घम्मु घम्मिट्टहा ॥२॥

पमरइ जेम जाणह भमवाट्टा । पमरइ जम कित्ति जगणाहहीं ॥४॥

पसरइ जम चिन्त घण-हाणहा । पमरइ जम कित्ति सुबुलाणहा ॥५॥

पमरइ जम मइ मुर तूरहा । पमरइ जम रानि णह मूरहा ॥६॥

पमरइ जम त्वगि वणनरें । पमरइ जह जाणु निह अम्बर ॥७॥

तडि डनयडडि पन्इ घणु गज्ज । जाणु रामहा सरणु पव-जइ ॥८॥

अमर महाघणु गहिय व । मट्ट-मट्ट चडवि जस-सुद्धउ ।

उत्पणि गिम्म णराहिवत्ता पाउम राउ णा मण्णद्धउ ॥९॥ २८१ ।

गम्मयाए मयरहरहा जन्तिए । पाण पमाहणु लउ मुरन्तिए ॥१॥
 धवधवेति ज जठ-पपारा । त जि पाण उतर वतारा ॥२॥
 पुलिण जाण व वि मच्छायइ । गाण ज उठणाण जायण ॥ ॥
 ज जलु खलइ वल उल्लोलइ । रसणा-दामु त जि ण घाल ॥४॥
 ज आवत्त ममुट्टिय चगा । त जि पाण तण तिवाण तरणा ॥५॥
 ज जल हत्थि कुम्भ साहिल्ला । ते जि पाण थण अधुम्मिल्ला ॥६॥
 जो णिणार णियर अलोउइ । पावइ सा ज हाण रवाण ॥७॥
 ज जलयर रण रगिउ पाणिउ । त जि पाइ तम्बाण ममाणिउ ॥८॥
 मत्त हत्थि मय मण्डिउ ज जल । त जि पाण किउ अकिरिह क जठु ॥९॥
 जाउ तरगिणिउ अवर ओहुउ । ताउ जि भगराउ ण भउहुउ ॥१॥
 जाउ भमर-पतिउ अल्लीणउ । केगावलिउ ताउ ण णिणउ ॥११॥
 मण जतिण मण दरमनिए माहसर-लग पणव ।

माण्पाणउ ण जर लाणउ तहु महसकिरण गहावहु ॥१२॥ (१४)

—रवा की कलकठ करती जल धाराए नूपुरा की धकार क ममान था । वातियुक्त बूज उमके दुबूल थे गण करता जल उसकी करधनी की ध्वनि व्यक्त करता था । जठ क आवत त्रिवलि तरण थ जलहस्तिया के कुम्भस्थण उसके पुत्र स्तन थ फन समूह उमका हार तथा हाधिया क मण स आविठ जण उमका काजल था । तरगावण चिणण तथा भ्रमरावली उस वाला क कणकणप थ । मण मुन्तरा रवा का णव माहवर अधिपति सहसकिरण जीर लकाधिपति रावण दाना माहित हुए ।

अयोध्या से राम क वन जाने हुए माग म कविन गभारा नना का एक महा नना क रूप म वणन किया है । गभारा भयानक जण जन्तुआस भरीहुँ जीर वण वेग म फनयक्त जठ प्रवाह म गह रहा था । इम प्रकार क कतिपय वणन परम्पराभक्त जान पणन हैं । वन गमन क माग क वणन म जनमानहाना है कि स्वपभू का अयोध्या क निकटवर्ती प्रण म घनिष्ठ परिचय नना था जयया व म प्रण का प्रयणणों की भाति स्वानमन वणन अवश्य करत ।

निगा का वणन कवि न वध क रूप म किया न । रावण णव वन म पणव क विष्ण रवा क जनराण म एक स्थान पर ठहर गया । टाण उमा समय मूसान्त हा गया—

जयवणा उवहु पण ताम । जण्पाण पासु णिमिअण्यणाव ॥ ॥

वर्ण-गाण वध मामन-वाह । णक्वत कुमुम मह-गणा ॥६॥

किनिद चचरिय णववाग । मणव मणव वणवयम ॥७॥

बहुलजण समहृत् निलय-नार । जाण्हा ग्वालिय हार माग् ॥८॥
 ण वचवि णिटि न्वायरागु । णिमि - बहु अल्लण णिमायगामु ॥९॥
 विण्णि वि दुष्माग् महावेदं मुरउ म इ भुजन्ताइ ।
 मा णियरु वहि मि णिएमउ' णाइ म-मवई सुताद ॥१०॥

(१३१०)

—मूय गत्रिस्था अथा क आश्रम म जाना चाह रहा था। निगास्या
 वधु चद्रमा का यात्र म वत्ता। चमकन ताग् उमके वम्प य नशत्र र्प्या पुण्या
 म उमकी वणा गुयी दुइ थी, उमका कनालन्त कृत्तिना म चर्चित था। गुप-
 वहम्पति इमव वणफूग् थ उमकी आया म अत्रकाग् का अजन लगा था। गण्य
 उमका तिलक था और जुहाग् उमका हार था।

एसा प्रकार प्रभानवणन म स्वयमू न उत्यगिरि पर उगत हूण मूय का चित्रण
 किया है। विमठ विहान म बल मूर्धापि एसा लगना था माना कोमग् विग्णा
 म तैका मगल-बलण रण णिया गया है। वसन्त का वणन कवि न राजा क रूप
 म किया है। यह वणन परपरा मुक्त है—

डाग् तारण वारें पर्हर । पत्तु वसन्तु वमत मिरा-हर ॥१॥
 सरग् वामहर्गहि रव रउग् । आवासिग् मद्गुरि-अन्नेउर ॥२॥
 काइल कामिणाउ उजाणहि । सुय-मामन ल्याहर-थाणहि ॥ ॥
 पवय छत दण् सर णियग्हि । मिहि-भाहुलउ महाहर मिहर्गहि ॥४॥
 कुगुमा-भजरि धय माहाग्हि । वणा गण्णवाल बयारहि ॥ ॥
 वाणर मालिय माहा-वर्हि । मग्धर मत्तवाल मयग्हि ॥६॥
 मज-नाल वग्गाव सहि । भजा अहिणव-फउ मट्णामहि ॥७॥
 एम पदग् विग्हि विद्वनउ । गयव-वम्महि अन्ताग्नउ ॥८॥

पक्खवि एतहा रिद्धि वमन्ता मद्गुक्कु-मुरामव मन्ता ।

पम्मय-वाला मम्मल माग् ण मग् मग्गाणहा रत्ता ॥९॥ (१८०)

—राजा वमन न वगतथा क गह म प्र ण किया। उद्यान म वाक्वि
 कामिना था मरावरा म वमठ छत्रग् थ आन्न मजरिया पनाकाए था। लहरो
 के गग् मधुर ताग् थ। कामत्वे म आन्तलित्ति विरहा का दग्ध वरता हुआ वगा
 था पद्दुवा ।

विध्य पवन का वणन करत हूण कवि न उम पूष्या का गौत्य बना है।
 विध्याचग् णियरा मयकन था उग पर वांग तथा अय वणा क जगल थ।
 महानल त बहु सतण तथा मय क ममान मजल था। विध्य पवन यादा का
 भीनि दण गन्ति (घाव और जगल) णियाया ग्ता था—

धोवतर महिहर मुअण मिरि । मिरिवाउ रामइ विजइरि ॥१॥
 हृणिणपहु रागिपट वणगपटु । पिहुलमइ णिण्यहु पाणपटु ॥२॥
 मुरवा व सना सवगहइ । विमका ध्व ग मग मइत ॥३॥
 मयगा ध्व महाणव इन्द्रतणु । जउ व सवारि म व सवणु ॥४॥

(२७ २)

दणव वन का वगन स्वयभू व विगामिना स्त्री क रूप म किया है—
 लिठ महाइ पाइ विलागिगि । गिरिवर-धणहर सिहर-यगामिणि ॥१॥
 पचाणण णं णिपर विचारिय । दीहर मर गयण विण्णारिय ॥२॥
 कदर णि मख जहर विट्टमिय । तरवर रोमावठि उट्टमिय ॥३॥
 चण्ण जग गघ विविक्किय । इत्ताव कुकुम चचिक्किय ॥४॥
 जहवइ वि वटुणा वित्थारें । ण णच्च गय-मय मचार ॥५॥
 उज्जर मरवाफणिय मठें । वरहिण थिर मुपरिण्ठिय उठें ॥६॥
 मअगितिय उरगीय वमारें । जहिव पउव वर सवारें ॥७॥
 साहारालि समुत्थिय कउयठ । णाइ पइ मणि-मुत्थय मगल ॥८॥
 नहा अब्भनरें अमर मणोहर णयण कक्कि खउ एकु लयाहर ।
 तहि रं करे विधियइ मउठं जाग जगविणु जेम मणि ॥९॥

(४१)

—दणवकाव्या का चरित्रों मिहा क नया म विनीय थी माना जन्मी क स्तन विम्बन हा गय हा। सरावर उमक नत्र जीर घाटा उमका मख था। बट व तावग रूपा राम राजि म जन्वुत था। गजा क पत्तमचार क रूप म अन्वा नत्य कर रहा था। एमा जान पन्ना था कि दणवकाव्या मनि सुव्रतनाय का मगउ पाठ कर रहा हा। स्वयभू क वणना म विध्य-भद्र नमरा ताप्ता गाएवरा आनि नत्या का विम्बन वणन मिन्ना है। हमम कवि क हम प्रण म परिचिन हान का अनमान गता है।

स्वयभू मन्वृत प्राहुत काव्य-परम्परा म परिचिन एव प्रभावित थ। उनर वणन वा-माकि काठिगम तथा परवती मन्वृत मगाकविया का स्मरण लिगत हैं। जन्नाण वगत गग जीर आठिकाव्य क पत्रासर वणन गग म साम्य मिन्ना है। माना क रूप वणन (प च ३८३) जीर काठिगम क गातुत (२१०) क वणन म गगणन साम्य ल्य है। हम प्रकार क अनर म्यर म्भ जा महन है। जन्ना क लिग पवनत्रय का विगण (प च० ११२) विनमावगायम म उवगा क लिग पुमरा क विगण का स्मरण लिगत है। वणना म स्वयभू का निगण गति का आभाग गता है। कर्ण-कर्णिय

वणन परम्परामुक्त है। धानर द्वीप व वणन म भट्टिकाव्य का प्रभाव स्पष्ट है—

जहि जलइ णाहि विणु पकएहि । पकयइ णाहि विणु छपएहि ॥४॥

जहि वगद णाहि विणु अम्बएहि । अम्बा वि णाहि विणु गाच्छएहि ॥५॥

गाच्छा वि णाहि विणु कान्तेहि । कोइलउ णाहि विणु कयलहि ॥६॥

जहि णलइ णाहि विणु तम्बरहि । तम्बर वि णाहि विणु ल्यहरहि ॥७॥

ल्यहरइ णाहि णिकु सुमियइ । जहि महयर विणु ण भमिय ॥८॥

माहुउ णउविणु वाणरहि णउ वाणर जाह ण बुक्कारा ।

ता णियन्तउ तहि ज थिउ विजालउ मिक्किण्ट-कुमारो ॥९॥ (६६)

—धानर द्वीप म पानी कमला के बिना नहा था कमल भौरा क बिना नहा था। आम मजरिया क बिना नहा था, मजरिया ऐमी न था जिनम कलकूब नहा। तस्वर ऐम न था जालानर नहा लनाधर फूल रहित न था फूल एस न थे जिनम भौर नहा। वक्ष का गाथाए एसा न था जिन पर बन्दर नहा जोर बन्दर एस न था जिनम बुक्कार ध्वनि नहा। इसी प्रकार वाणभट्ट जोर भवभूति का वणन गला की छाया भी पउम चरित म लिखायी दता है। मसूत प्राकृत काव्य परम्परा म अपभ्रंश क प्रथम रामकाव्य पउम चरित का रचना हुई थी उमका मूल प्रेरणा अवश्य भिन्न है।

पउम चरित म जन सम्प्रदाय क अनुकूल रामकथा का वणन किया गया है। उसम अगर वार करण जोर गात रम मुख्य है। धान स्थान पर जन धम क अनुसार मगार की नन्दरता जीवन की क्षणभंगुरता वराग्य जन सिद्धान्त का प्रतिपादन आदि प्रसंग मिलत है। सानाहरण क पश्चात राम समार के भिव्यात्व पर विचार करत है (प० च० ३९-११)। राम कहते हैं कि ससार म सुख नहा है दुःख जमाम है जावन जल बिन्दु क स्थान अस्थिर है। घर परिजन वधुवापव माना पिता हितपी-स्वजन पुत्र-बलत्र सहोत्तर य सब सम्बन्ध निस्तार हैं। वक्ष पर पति या क वाग के समान इनम कोई स्थायित्व नहा है। पउम चरित म वणना म धार्मिक भावना का गहरा रम मिलता है। कथा का पयवमान जन धर्मानुकूल किया गया है।

१—भट्टिकाव्यम्—

न तज्जल धन गुचाग पक्क न पक्क तत्तु यल्लान पटपत्तम ।

त पत्तपोगौ त जगुज य कळ न गुजित तम जहार यमन ॥

पउम चरित म स्वयंभू न साहित्यिक अपभ्रंश का प्रयोग किया ॥ अन्त स्थान पर जनमरणनात्मक गीता का प्रयोग मित्ता ॥ गीता का याज्ञना प्रयोग जोर भावा के अन्तकाल की गया ह। जल्कारा का स्वाभाविक प्रयोग इस महाकाव्य म मिलता है। महाकाव्य के अनुकूल गीता का विविधता पउम चरित म पाई जाता है। स्वयंभू का रामचरित विषयक कृति पउम चरित का स्थान देना के उत्कृष्ट महाकाव्या के बीच ह यह अप्रसिद्ध रूप न कहा जा सकता ॥

(ख) पुष्पदन्त महापुराण

महाकाव्य पुष्पदन्त न महापुराण म रामकथा का वर्णन किया ह। पुष्प दन्त काश्यप गाथा ब्राह्मण ५। एक पिता का नाम कश्यप भट्ट तथा माता का नाम मुग्धा देवी था। मायसट म राणवत् राजा कृष्णराज तनाय अथवा बंठम राज के मंत्री भरत और नन्द के जात्रम मय रह थे। पुष्पदन्त न भरत के जात्रम म रह कर महापुराण अथवा मिटि महापुरिम गणालकार की रचना का था। नन्द के जात्रम म उद्धान णाय कुमार चरित और जमहर चरित की रचना की। मायसट अब मैत्राबाद म मल्वा के नाम से प्रसिद्ध है।

पुष्पदन्त का एक नाम यण्ड भी था। वे घनगीत तथा दुग्ल गरीर के थे। अपन कवित्व का उन्हें जयमान था। उत्तर पुराण के अन्त म उन्तान जयना परिचय एक प्रकार किया है। मिद्धि विलासिनी के मनाहर दूत मग्यान्ना के गहार म मभूत निधना और घनिया का एक दलित म दण्डन बाण मार जाया के जनारण मित्र गण्ड मलित म बना आ है काव्य-स्थान जिनका कश्यप पुत्र काश्यप गाथा मरम्बता विनामा मून पत्र हूण बना जोर त्व कुटियात्रा म रत्न बाण कलि के प्रवृत्त पाप पत्नी म रहित मरवाण पुत्रकश्यपदान नदिया बापि कात्रा और मरावरा म स्नान करन बाण पुरान बन्ध और बल्लभ पहिनन बाण घटि घमस्तिन एक कुद्रना के मन्थान म दूर रत्न बाण पणित-मणित मरण का प्रतिष्ठा करन बाण मायसट नगर म रहन बाण मन म जन्म देव का ध्यान करन बाण श्री मध्यमत्रा द्वारा सम्मानित अपन काव्य प्रशंस के ठागा का पुष्कित करन बाण जोर पापस्या काव्य का द्वितान घा नाग ॥ एम अभिमान मर पुष्पदन्त न यह काव्य जिन-कमला म हाय जाण एक भक्तिपूर्वक शायन सब गार का शायन म्हा त्रगमा का बनाया।

पुण्यदेव रचित महापुराण, आदि पुराण और उत्तर पुराण खण्डों में विभक्त आदि पुराण में प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव तथा प्रथम ब्रह्मवर्ती भरत का चरित वर्णित है। उत्तर पुराण में गण २२ तीर्थकर तथा उनके समय के महापुराणों का चरित वर्णित है। उत्तर पुराण की ६९वां अध्याय से लेकर ७० अध्याय तक की ११ अध्यायों में रामकथा वर्णित है जो जन मनावलम्बी इस पद्यमय चरित जयवा पद्य पुराण कहते हैं। इसी खण्ड में हरिवंश पुराण (कृष्ण कथा) का भी सम्मिश्रित किया गया है। महापुराण में कुल १०२ अध्याय हैं। इस ग्रंथ की रचना में कवि को लगभग ६ वर्ष लगे थे। कवि ने मन्त्रा भरत की प्रेरणा से ग्रंथ का आरम्भ ०५९२० में किया था और ९६ ई० में इसे समाप्त किया। पुण्यदेव का समय विद्वानों में ईसा के दसवां शताब्दी माना है।

कथावस्तु—पुण्यदेव ने रामकथा का वर्णन गुणभद्राचार्य के परम्परा के अनुसार किया है। ११ अध्यायों में वर्णित रामकथा इस प्रकार है—राम और लक्ष्मण अपने पूर्व जन्म में राजा प्रजापति और उसके मंत्री के पुत्र थे और उनका नाम चन्द्रवृक्ष और विजय था। युवावस्था में उन्होंने श्रीदेव नामक व्यापारी का स्त्री कुम्भरदत्ता का अपहरण किया। राजा का उमका सूचना मिली तो उमने मन्त्रा का आश्रय दिया कि वह उन्हें जंगल में ले जाकर मार दे। मन्त्री उन्हें जंगल में ले गया लेकिन उन्हें मारा नहीं। उमने उन्हें महावृक्ष नाम के जन्मस्थान से मिलाया। साधु ने मन्त्री से कहा कि यही तो तीमरे जन्म में बलदेव और वासुदेव हुए। तब परमेश्वर दत्ता जन्मस्थान से माधु हो गए और तप करने लगे। मृत्यु के बाद वे मणिचूड़ जी मुण्डवृक्ष स्वता हुए। अगले जन्म में वे सुमला और ककथा रात्रिया से उत्पन्न हुए पुत्र हानर जन्म। मुण्डवृक्ष सुमला के गर्भ से राम और मणिचूड़ ककथा के गर्भ से लक्ष्मण हुए। राम का वर्ण स्वतः और लक्ष्मण का श्याम था।

मीना विद्याधर रावण और मन्त्रादेव का पुत्री थी। इस भविष्यवाणी के कारण कि मीना अपने पिता पर विपत्ति लायगी उसे एक भ्रूण में रख कर मृत में रखवा दिया गया। एक विमान ने उसे मृत चञ्चल रूप में उठे पाया और जन्म के पाम ले जाया। जन्म के उम पुत्री के रूप में स्थापित किया। राम में मीना का विवाह हुआ। नारद ने एक बार रावण से कहा कि राम ने मीना से विवाह किया वह सुन्दरी रावण के साथ थी। यह सुन कर रावण मीना पर आक्रमण करने लगा। रावण ने चन्द्रमुखा (गुणगंगा) का माता का मन जानने के लिए भोजन किन्तु उमने मीना का अन्तिम पाया। इसने पतित रावण विमान में बैठ कर एक स्थान में गया और जहाँ राम और मीना विद्यार कर रहे थे। उसने

माराच म स्वर्ण मग वन कर सीता का मन अभान ब गिा कहा। राम जब स्वर्ण मग क पाठ गय तब रावण साता का अपहरण कर उका लाया। राम न माता का ग्राज की कितु कुछ पता न चला। दगरथ न उसी अवसर पर स्वप्न ग्या कि रावण माता का हर ले गया है। राम जब सीता की खोज करन के बारे म विचार कर रह थ उम समय मुग्रीव और हनुमन राम क पाम सहायता क गिा जायें। हनुमन न प्रतिज्ञा की कि व सीता का ममाचार लावणे। हनुमन उका गय। मक्षिका का रूप धर कर व रावण क महल म गय। और साता का ग्राज की। अत म उन्हनि सीता को वाटिका म पाया जहाँ रावण प्रम स्वाकार करन क लिए उनम बह रह्ता था। सीता ने रावण का आर नहा ग्या। मन्त्री वहाँ जाया साता का अपना पुत्रा क रूप म पहिचाना और आश्वस्त किया। उमके चर जान क वा हनुमन सीता ने मिः रामदून हान का विवाम गिया और मन्त्र मुनाया। हनुमन राम क पाम लौ और सीता का ममाचार गिया। रावण क विरुद्ध अभियान करन म पूव राम न हनुमन का दून बनाकर यर जानन क लिए कि कय रावण गानि म माता का गीग ग्या भेजा किन्तु रावण न दून का अपमान किया। वाटि का बध अभ्रमण न किया और राय मुग्रीव को सोपा। राम और अभ्रमण न गिव्य अभ्रमण का प्राणि क लिए तप किया। रावण का भार् विभाषण रावण क दुःखवहार क कारण राम की ओर आ गया। राम और रावण का यद्ध हुआ जिसम अभ्रमण न रावण का मारा। रावण की मत्य क वा विभीषण का राम न लका क मिगामन पर गिया। अभ्रमण उमके पन्वान अपचक्रवर्ती ग। मय क उपरान्त अभ्रमण रावण बध क कारण नरक गय। भार् का मत्य म गायधमन राम न विरक्त हाकर भिष जावन बिनाया और मोक्ष प्राप्त किया।

रामकथा पुष्पत न आत्म विनय म आरम्भ की है। कवि कहता है कि मर पाम रामकथिन रचना क गिा मामग्रा नग है और मर पूव महाभाचाय स्वयम आनि महाकविद्या न रामकथा मन्वधा अपना रचनाए का है।

कथा का आरम्भ रामकथा मन्वधा गका म गता है। राजा अणिक गौतम

१—या गः वद—रामायणम् भूमिका माणिक चन्द्र जन प्रथमागः।

—रामायणं न एवम वि अग्यि मः। किर कवण लाह चिरवइहि म२।

कःगःउ मयन मःगःगिः। मा मयनमःगःगिः पःगिःरिः।

कःमः कःगःि मुःगः जहि। मुःकःनग मःमःउ काइ ताहि।

म एवम न रि मःगः मःगिः। विःगिःगः पःमुःगःउ मःगिःपः।

मःइ छः प लःव मय भाविःपः। अःपःउ अणि हाःमःउ पाविःपः।

स कहते हैं कि रामकथा के सम्प्रसारण में भरत, लक्ष्मण, राम, लव, कुश, हनुमान, रावण, कर्म, धर्म, अज्ञान, रावण ने आयु में प्रकाश किया था। रावण मनुष्य नहीं होकर राक्षस बन गया। उसका दोष और भी बड़ा था और रावण का उद्वेग अपने मिर में चला था। रावण राम के वाण से कर्म मारा गया और लक्ष्मण की लम्बा भुजाएँ कमा था। सुग्रीव आदि बानर कर्म थे। और विभीषण चिरजावा किम प्रकार है। बुम्भकण ६ माम कर्म माला था। और १००० महिष रावण उमकी क्षुधा तपन हानी थी। वामाकि और व्यास के वचना से रचित होकर जय लोग बुमाग के रूप में गिर पडे। अतएव हे गान्धर्व पद्य चरित का यथाथ रूप बणन करिये। इस पदचात गौतम रामकथा सुनाते हैं।

महापुराण का कथानक अति विस्तृत है। ६२ महापुराण के चरित के अन्त में रामचरित का भी समावेश किया गया है। महाकाव्याचिन सरस एवं सुन्दर बणन इस ग्रंथ में अनेक स्थल पर पाये हैं। राम कथा के अतगत आय कतिपय स्थल द्रष्टव्य हैं। मीना हरण के बाद राम विरह-व्याकुल होकर मीना का प्राण बरतते हैं। माता के वियोग में गतल जल राम की विय के समान और हरि चरित जग का जन्म वाग् बन जाता है। वन में मीना को खोजते हुए राम का बणन पुष्पन्त न किया है। पुष्पन्त के बणन और राम्बामी तुलनात्मक है इस प्रसंग के बणन में साम्य है।'

वन्द्यवद जइ वि ण पम्भमि । घिन्ठलें तं वि बव्वु करमि ।

महुं चमउ भडारी विउमगह । आयणहुं रूवइगयव ।

सुक्कपयामियमणि मणि दहमुहुं वि चमवव ।।

रामधम्मगुणगहिं अमहुं पिमुण वहिं तुवव ।।६९ ।।

१—वम्माववामवयणिहिं णडिउ । जणणु बुम्भण्णव्वि पडिउ ।।

गात्तम पौमचरितु सुवणि पविनु पयामि ।

जिह मिद्धत्यमुण्ण णिट्ठउ तिह महुं भामि ।।६९ ।।

२—गायलु विमु विमु व ण मनि जणद । हरियणु मिहियुं अणु छणद ।

णण्णि वि मूगह मयणत्तु वड । मयणावयणिं घित्तं रूह डह ।

पिय रिणुं जलदद निहिं व जण । चमगणिं तामु महाउ धण्ड ।

मं गयत्तं चहरिं वि भुववमं वव्वु वाम वव्वावउ ।

विणुं मायद भावद रावव णात्तु णात्तपामउ । ७ ।

३—जलिं घरिं गामि गामि पुरिं घरिं घरिं निरिवत्तणिवगण ।।

जायह वहिं मिं परिणं जं जणद वटुग्गमपववण ।।

जठतरवा सधि म राम रावण यद्ध म वीर रम का सुन्दर परिपाक हुआ ह। छन्द और गद्य-योजना प्रमग व अनुकूल की गई ह। इस प्रकार व वणन परवर्ती रामराध्या म तथा वीरगाथा काल के काव्या म यद्ध वणन क प्रमग म मिश्र है। साता हरण क पश्चात कवि ने मध्या का सजीव वणन किया ह। महा काव्य क अनुकूल मधिया म विभिन्न छन्द क प्रयोग किया गय है। पुष्पस्त की भाषा स्वाभाविक तथा जनभाषा म प्रयक्त वाक्यावली स युक्त चरती हुई सरल एवं प्रभावशाली है। पुष्पदन्त अपभ्रंग क सर्वोत्कृष्ट कवि कहे जा सकते हैं।

(ग) रघु पद्मपुराण

अपभ्रंग म रामचरित का वणन करने वाला तामरे जन कवि रघू हैं। इनका समय विजय का १५वां शताब्दी का उत्तरार्द्ध है। इन्होंने पद्मपुराण (चतुर्भद्र पुराण) का रचना की था।

महाकवि रघू की रचनाओं क सबसे म सूचनाएँ पिटठे दो शकों म उपलब्ध हुई हैं और रघू साहित्य का विस्तृत अध्ययन भा प्रस्तुत किया गया है।

अवियाणित जगि का काल कामु पमिय किवर दममु वि विगामु।
 मइ काणणि रहवन् विमाण पुठ वणि मिगइ अयाणमाण।
 र म हम मा मगमण पइ विट्टी कत्यइ विउत्तरमण।
 चणउ विम्मवन् मिक्विआ मि म चणनु जि खल कि गआ मि।
 र कुजर तु कुभत्यला ण मह महिआ धणत्यगा।
 मारिकवठ इइयउ एउ का मण वन् कहि विण पया।
 मारय कहि मठु जणयधीय णयणहि उवजाविय प मि गीय।
 अवि परिणिसगणिद्धनचार विमि मरहृत्तयवणार।
 ण विमाणि वन्हि तणिय वत्त र णागीव धणरामयत्त।
 ए वनि विण भणु कहि मि अवि वरट कहि णचि भाउ अवि।
 र वार ण वरि जणमाण ज विणउ पइ मइ वि पमाण।

विण विरत्त माणउ दामरि अवि अत्र जि मुचहि।

धाममजावमतावर मह दूअउ तु वचि ॥ ७ ८।

रम रम म राध्यामा तुलसीनाम का वणन श्लोक—

ह मग मग ह मधकर खनी। तुम्ह रया माना मग नयनी। रयाति।

शरणावसान— ।

रङ्गू अपने समय क मूख्य जनादाय थ। व दव, शास्त्र, गुरु के भक्त थ तथा क्षणभंगर ससार स विरक्त थ। पुराण तथा इतिहास क विगिण्ड अम्हामी तथा रचयिता थ। रङ्गू प्रतिष्ठाकाय नी थ उहा अपन समय म अनक जन मतिया की प्रतिष्ठा करात्। सवन १४९७ म उन्हाण आग्निाय की एक विगाल मूर्ति की प्रतिष्ठा ग्वालियर क तारागीत तामरवाता गायक दूगर सिंह क राज्यकाल म करा थी।

महाकवि का नाम रङ्गू था। कुछ रचनाओ म उनका नाम मिहमन भी मिलता है किन्तु उनका प्रसिद्ध नाम रङ्गू ही है। मिहमन कलाचित ऊपर नाम रहा होगा। प्रसन्निया म उपस्थ उन्हा म नात हाता है कि रङ्गू-सङ्गृह्य थ। व सपति ताराय के पौत्र तथा साह हरिसिंह क पुत्र थ। इनकी माता का नाम विजयश्री था। ममञ्जिन चरित प्रथ की प्रगति म निम्नलिखित उल्लेख है—

दवराय मघाहिव षडणु हरिसिंह वृन्धण कुञ्जाणणु।

पामावइ-कुल कमल विवायर-मा वि सुणुण्ट एत्थु जसायम।

जस्त धरिज रङ्गू बह जायउ दव मत्थ गरु पय अणुरायउ।

रङ्गू अपन माता पिता क तताय पुत्र थ। अय दा वत् भाइया का नाम बाहौल तथा माहणासिंह था। रङ्गू की पत्नी का नाम सावित्री था। रवि क पुत्र उन्परराज का भा उल्लेख मिलता है जा सवगुण सपत्न था। रङ्गू पद्मावता पुराल जति क थ। प्रथ प्रगन्निया स जान हाता है कि इनक जा रथदाता जनक थ और कलाचिनय क स्थाना पर रह भी थ। किन्तु प्रथा म उन्हाण ग्वालियर का विगणवणन दिया है। इनका विवाह-स्थान जवरा साधनाम्बल ग्वालियर मानना उचित जान पता है। अपनी गुरु परपरा म कवि नगणकार्ति यण कार्ति श्रीपालब्रह्म कमलगीति तथा कुमारमन पाच भट्टारका का निर्देश दिया ह। ग्वालियर क कमलमिह सपत्नी कवि क वाग्मिथ्र व जिनके गिण्ड करि न मम्पनगुणणिहाण बन्ध प्रथ की रचना की थी। इन्हा कमलमिह ने ग्वालियर दुग म आग्निाय का मति की प्रतिष्ठा कराया था प्रतिष्ठा काय रङ्गू न किया था। कवि क अय भक्ता म एक हरसी साह थ जिनक गिण्ड उन्हाने बलहू चरित (पद्य पुगण) का रचना का था।

प्रगन्निया म रङ्गू न ग्वालियर क समकालीन राजा दूगरसिंह और उनक पुत्र कार्तिसिंह का उल्लेख किया है। दूगरसिंह क पिता का नाम गणग था, कन्हे

डूगरसिंह की रानी थी। डूगरसिंह का गायकाव्य भवत १४८१ से १५१० तक माना गया है। कीर्तिसिंह का राज्यकाव्य भवत १५१० से भवत १५६६ तक माना गया है। इन राजाओं के राज्यकाव्य में रङ्गू ने अपनी रचनाएँ की थीं। सम्मतगणनिहाणकाल नामक रचना का समय सवत १४९२ विश्वमी कवि ने रिया है। अथ रचना मुजाम्म चरित का समाप्ति काव्य सवत १४९६ रिया है। मुजोमल चरित में कवि ने अपने तीन पूर्व रचित ग्रंथ गणनिहाण चरित पासणाह चरित तथा बल्हू चरित का उल्लेख किया है। इस प्रकार रङ्गू का स्थितिनाल विप्रम का १५वाँ गाना की का उत्तराद्ध तथा १६वाँ गाना का पूर्वार्ध माना जाना चाहिए।

महाकवि रङ्गू ने अपभ्रंश में सबसे अधिक रचनाएँ की हैं। वे राजाराम जन क जनमार रङ्गू के तीस ग्रंथ की सूचना अद्य तक मिला है। इनमें से ५ रचनाएँ उपलब्ध हैं। इनका एक रङ्गू रचना द्वारा भावना रिया में है। एक अथ ग्रंथ बह्मिद्ध चक्रपूजा ससृत का जोर सवाय पचागिरा प्राटन का ग्रंथ है। अथ रचनाएँ अपभ्रंश में हैं। अपभ्रंश में रचनाओं का प्रगस्तिया तथा मथिया में ससृत का प्रयास हुआ है जिसमें बात होता है कि कवि का ससृत तथा अपभ्रंश भाषा पर जाड़ा अधिकार था।

रामचरित का वर्णन रङ्गू ने पद्यपुराण (पद्य चरित बल्हू चरित) में किया है। यह ग्रंथ अपभ्रंशित है। रङ्गू का द्वा द्विर्भावित प्रतियाँ आमर गास्त्र भन्तर में है। एक प्राचान प्रति श्री पत्राकाव्य अपभ्रंश रिया का पाठ सुरगित है। प परमान्त जन गास्त्री न प्रस्तुत रङ्गू का सूचना दो कि पद्यपुराण का नानर न रिया पद्यानवाट किया था किन्तु यह ग्रंथ दान का नाना मिट गया। पद्यपुराण ग्रंथ २६५ बल्हू तथा १२ मथिया में समाप्त हुआ है। ग्रंथ की रचना सवत १४९६ के पूर्व की चका था। रङ्गू ने पद्यपुराण का रचना रविपणावाय का परपग में का है। प्रथम मथि में प्रगमित तथा रियाय में रावण का र्निर्वाण्य का वर्णन है। ततार गोय में पवनतय विवाय चतुय मथि में रामराम माता विवाय रङ्गूय का वराय्य भरत का राय तथा राम वनगमन प्रमग वर्णित है। मातारङ्ग का वर्णन पवनवा मथि में तथा माता का गाव हाय अनमान के ररा वान तथा माता का मथि इन का वर्णन रङ्गू मथि में किया गया है। माताय मथि में राम रावण-वद्ध माता मायन अथान्या के रिया प्राशवदन जायवा मथि में रवणाहुग क्रम राम-रङ्गूय के राय वद्ध तथा रङ्गिभन्त नवा मथि में माता का र्निर्वाणया तथा स्वयागारण ररा मथि में राम भवति वर्णन जोर गया रङ्गू में राम के निवर्ण का वर्णन है। रङ्गूय मथि में रङ्गूय के माय रङ्गू सवत हा जाना है।

पद्मपुराण में कवि ने गोविन्दगिरि (गोपाचलगढ़) जीर राजा डूंगरेद्र के राज्यकाल का निर्माण किया है—

गोविन्दगिरि नामे गढ पहाण । ण विट्ठिणाणिम्मिउ रयण णाणु ।

अ उच्च धवल न हिमगिरिद्रु । जहि जम्म समिह्द मणि सुरिद्रु ।

तहि डगरेद्रु पामण राउ । जिरिण सिरिणि सन्निघाउ । (प० पु० १२)

पद्मपुराण का आरम्भ ब्रह्मनाम होता है। अनन्तर आश्रमदाता हरसी साह द्वारा कवि सं प्रथम रचना के लिए अनुराग का वर्णन है—

भा रइय पत्थि गुण णिहाणु । पामावइ वरवम पहाण ।

सिरिपा वम्ह जाचरिथिसीस । मह वयणु सुणणि भा रगिरीग ।

साढ निमित्त णमिहु पुराणु । विरयउ ज वजण विहियमाणु ।

तह राम चरिणु वि महु भणहि । लक्षण ममउ इव मणि मुणहि ।

मह साणुराउ तह भित्त ण । विण्णणि मज्ज अवहारित्तण ।

महु णाम तिहहि चण्ठो विमाणु । इय वयणु सुद्धणिय चित्ति ठाणु ।

(बलभद्र पुराण १४) ।

रइधू कवि अपनी जन्ममथता प्रकट करते हैं किन्तु शायक हरसा गाहु उह काव्य रचना के लिए प्रेरित और उत्साहित करता है (ब० पु० १५) । शक्य पश्चात् परम्परागत जम्बूद्वीप मगध नाम राजगृह गजाश्रमिक जाति का वर्णन है। आरम्भ में राजा श्रमिक रामकथा के संशय में शक्य करता है (ब० पु० १८) । राजाका के उत्तर में गौतम जन भतानुकूल रामकथा का वर्णन करते हैं।

रामचरित के भाषिक स्थला के गोविन्द चित्र कवि ने प्रस्तुत किया है। तथा कथावस्तु का निवाह सफ्यता के साथ किया है। रावण के पराश्रम का वर्णन निताय गंधि में ३३ श्लोकों में किया गया है तथा हनुमान चरित तत्ताय संधि में २ श्लोकों में प्रस्तुत किया गया है। चतुर्थ गंधि में रामचरित का वर्णन आरम्भ होता है। राम जन्म राम सीता विवाह तथा दशरथ धराय्य का मूर्त्त वर्णन चतुर्थ गंधि में प्राप्त होता है। भरत के शाय्याभिषेक वर्णन में भीमवृत्त प्रतिभा नाटक के शाय्याभिषेक का छाया दृष्टिगत होती है। गंध्य वनागमन से भरत का दुर तथा पुरवासिया का विवाह हृदयनाक है। राम के वन चले जान पर भरत ने हा राम सार हा माता सीता हा लक्ष्मण के कर विवाह किया। यह कवि ने भरत के उज्ज्वल चरित्र का चित्रण किया है। वनवाम के समय सीता के विवाह में राम भतनागूय हा वधा एव एणुपरिया से

साता के सप्रथम म पूछन हैं। यह प्रसंग रामचरित ग्रथा म परंपरागत रूप स मिलता है। रावण को समय स पूर्ण बनाया गया है। वह मन्त्रोपास कहता है कि मैंन गुरु के समक्ष निरम ग्रहण किया है कि अनिच्छा वागीश्वरी के साथ मैं बलात्कार न करुगा। सीता के माथ उसन इस नियम के कारण बलात्कार नहा किया। रावण क चरित के इस उ-व-प-प का वणन कवि ने रावण मन्त्रोदरी सवाद म इस प्रकार किया है—

त मुणिवि पयपइ राउ तासु । मन्त्रियउ अवग्गहु मुणित पासु ।
जा तिय ण वि बउइ मय देहु । तहि समउ बब्बउ णाहिणहु ।
लिभारिणि वज्जमि स्वसारि । किए अस्वमि तुअवार वार ।
महु पाण जठ उक्वहि मुहं । तं जाइ मनावहि वीण सहि ।

(व० पु ६५) ।

पद्म पुराण के मार्मिक स्थान म विभिन्न रमा का सुन्दर परिपाक हुआ है। रामवनगमन माता का गोक दगरथ प्रत्या तथा राम क वनवाम पर भरत का विहाय लका म साता का निवास आदि जनक करण प्रसंगो म कवि का मन रमा है। राम रावण युद्ध क प्रसंग म तुमुल सग्राम का सजीव वणन हुआ है। कवि रङ्गु न रामचरित का सर्वांगण एव वाव्याचिन चित्रण इस ग्रथ म किया है।

रङ्गु अपभ्रंश के समय कवि थ। इनका कृतियो का विषय अचिन्त्य विषयगत ऊहापाह पूववर्ती एव समकालीन साहित्यिक धार्मिक दार्शनिक एव राजनीतिक परिस्थितिया का विस्तृत जानकारी आदि स उननी बहुमखी प्रतिभा का सहज हा परिचय मिता जाता है। गकार्तिया एव मन्त्रोपास का दस कर ता एमा भान हाता है कि वह जनता का सच्चा प्रतिनिधि कवि स जिनन समाज क हृदय का घञ्जन का पहचान कर उनका ममन्त ममन्त्याना का सर्वांगपूर्ण निदान

१—भा चपय चपय वणगरि । त्रिगा पं कि जण बिनहरि ।

ह वर अमाय महु माउ फ ति । जं त्रिगा ता मन्त्रा वहाति ।

र मन्त्रमन्त्रि तुं कहहि वन । अह क यिउ पं मन्त्रि । अपन ।

कि णागार पं कहिमिन्त्रि । कि उत्तमन्त्रि णरण मिट्ट ।

र म हम मन्त्राणि मुद्धि । माहु कहहि पंने विमन् वद्धि ।

जा हम विचह मुक्व मास्य । मा म्मु कह विम परहु पासु ।

र चक्कवि कहि माय गं । अहमिन्त्रि कि दुग्गण घाहु ।

पं माए माहिउ वणि मन् । पुण जनु जनु कहि विम्म मइ ।

विहम गव ताटा हा । हुं आउ जा माया मन् । (व पु० ६२) ।

उपस्थित किया है।^१ रङ्गू साहित्य इतिहास एव जन धर्म की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

रङ्गू के समय में आधुनिक भाषाएँ अपना साहित्यिक रूप ग्रहण कर चुकी थी। अपभ्रंश के गान्धी कविया न विस्तृत राम साहित्य की रचना की है, इसकी चर्चा मक्षप में की जा चुकी है। इन रचनाओं का सम्यक अध्ययन अभी नहीं हो पाया है और हिन्दी साहित्य में उन्हें जो स्थान मिलना चाहिए वह अभी तक नहीं मिल सका है। इस ओर हिन्दी के विद्वानों के ध्यान देने की अपेक्षा है। अपभ्रंश की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ तथा उनके वाक्यरूपों का पल्लवन परवर्ती हिन्दी साहित्य में हुआ। इस दृष्टि से भी अपभ्रंश साहित्य के परिशीलन की अपेक्षा है। रामकथा के लिए दाहा-चौपाई की पद्धति आगे चल कर बहुत लोकप्रिय हुई और इसका सर्वोत्कृष्ट विकास गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस में हुआ। अपभ्रंश साहित्य में कवक घटा पद्धति अपनाई गई है। स्वयंभू के पउम चरित की चर्चा करते हुए राहुत साकृत्यायन ने यह मत व्यक्त किया था कि गोस्वामी तुलसीदास स्वयंभू की रचना से परिचित एवं प्रभावित थे। आचार्य गुकल ने भी परवर्ती साहित्य पर अपभ्रंश के प्रभाव का उल्लेख किया है।^२ तुलसी पूर्व हिन्दी राम साहित्य के विविध पन्ना के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन परंपराएँ सस्त्रुत प्राकृत रचनाओं में उन्मूलित होकर अपभ्रंश सहाती हुई हिन्दी साहित्य में आई है।

१ - १० राजाराम जन—रङ्गू साहित्य का आशाचरितात्मक परिशीलन (शोध प्रबंध) पृ० ३९—गवतमन् प्राकृत रिमच एन्स्टीट्यूट मुजफ्फरपुर बिहार।

२—राहुत साकृत्यायन—हिन्दी वाक्य धारा—पृ० ५२।

—आचार्य गुकल—हिन्दी साहित्य का इतिहास—पृ० ७।

अध्याय ३

दशावतार वणन—अथ दसम

महाकवि चन्द्ररत्नाई जीर उनकी रचना पथ्वीराज रामो कथाचिन्तित्ति गीहिदा म सबसे अधिक विवाङ्मन्त हैं। चन्द्ररत्नाई तिन्ती के जितिम चौगन राजा पथ्वीराज के सभाकवि थे। पथ्वीराज और चन्द्ररत्नाई की मम वालीनता रामो स म्पत् तथा परम्परा न प्रसिद्ध है। मन ११९२ ई म पथ्या राज जीर मोट्टम्म गोरी के तराइन युद्ध का समय निश्चिन है। अतएव चन्द्ररत्नाई का समय १२वीं शताब्दी ईसा का उत्तरार्द्ध मानना उचित होगा।

पथ्वीराज रामो के वणना म अनतिहासिक तत्व पाय जाते हैं। पथ्वीराज के समकालीन कवि जयानकथारा रचित पथ्वीराज विजय म शिवा वृत्त प्राय शतिका म म्मन्त है। एम कारण अनेक विज्ञान पथ्वीराज रामो को अगुद्ध एव १८वां शताब्दी तक की कृति मानते हैं। जीर कुठ गोगा ने चण क अस्तित्व तन म अविज्ञान प्रकृ किया है। कनिपय विज्ञाना का मन है कि चण ने अपनी मृण कृति की रचना अपभ्रंश म का थी जीर उमम परवर्ती काठ म परिवर्द्धन शता रहा। प्रशिप्त मामश्री क कारण मूण रचना विवृत्त गी गयी जीर उमका कथवर अयधिक बण गया। ग्रय म अनतिहासिक तत्वा क समागण का भी यण कारण है। रामो का वतमान रूप अयन विवाङ्मन्त है। शिन्तु अविज्ञान विज्ञान अब यह मानते ग्य है कि चण की मृण कृति के अण रामो क विभिन्न मस्करणा म वतमान है यद्यपि एके मात्र निराश्रता अण भा म्नाध्य गात्र काय बना श्रा है। रामो क वणन मन्थम ग्य जीर श्वनम श्पात्तरा क वनाशिक अध्ययन क आधार पर प्रशिप्त मामश्री का पथक कर तथा प्राचान अण का मन्थन कर रामो का मन्कृति क निरुप पन्चन का प्रयास किया गया है। पाण निर्माण के काय म रामो क विज्ञान म्प्रति मन्थन है।

चन्द्ररत्नाई न रामकथा का वणन श्पावतार वणन क अतणन किया ग। दशावतार वणन क आकार म भिन्ना पाण जाता ग। रामो क एम अण क मणय में डा विभिन्न विज्ञान विवृत्ता न यण मन व्यस्त किया है कि श्पावतार वणन रामो क श्पावतार म्प्रकरण म सिन्ता ह। अण यह मन्थनान्य का प्राचान अण

३। इस वणन क अन्तगत रामकथा, प्रस्तुत परिच्छेद का विषय है जिसका विवचन नागरी प्रचारिणी मभा द्वारा प्रकाशित सम्स्करण क जाचार पर किया गया है।^१

दशावतार वणन परम्परा—अवतार वणन का प्रसंग इतिहास-गुणना म मामाथ रूप स मिश्रता है। विभिन्न श्रष्टिया क अवतारा का वर्गीकरण और उनका गणनाए विभिन्न कागे म का गया है। इन गणनाओं म दशावतार की गणना मवाधिक प्रसिद्ध है। अवतारा की गणना म मामाथनया विभिन्नता पाया जाना ह। इतिहास तथा भक्ता क माथना मन्वधी भेद क्वाचित् समर कारण रह हगि। दशावतार गणना महाभारत क गान्धिपव म मिश्रती है। इस गणना म नामक्रम सम प्रकार है—हम कम बराह नमिन् वामन राम दशरथिगम मात्वत तथा कर्क। सम गणना म हमावतार का स्थान प्रथम है मात्वत का अथ कृष्ण म ह और सम ऋद्ध की गणना न्ग की गयी ह। निम्नाक सम्प्रदाय दशावतार पर प्रतिष्ठित है अथया हमावतार अप्रसिद्ध है। यह गणना क्वाचित् बुद्ध क अवतार मान जाग क पूव की ह। दशावतार का एक गणना मत्स्य पुराण (चौथा गताग) म मिश्रता है। सम अनुसार अवतारा क नाम य हैं—नागायण नमिन् वामन दत्ताथय माथना जामशय्य राम वश्याम बुद्ध और कर्क (७७।२ ४०४१)। यह सूचाजय सूचिया म बहुत भिन्न है। भागवत म अवतारा का एक गणना म २० और दूसरा म २१ अवतार का उल्लेख है। सम पहू मन्तुमार आदि चनुसन का गणना ना गया है। जयप्र अवतार का मय्या २७ बताया गया है। चनुय गताग क विग (१।१ अध्याय) जाग मात्वशय्य (४७ अध्याय) पुराणा म ब्रह्मा गग मृष्टि गणन म अवतारा म बराह अवतार की गणना पहू का गया है। हरिवंश म अवतारा का वणन क्वा म्थना पर किया गया ह किन्तु प्रत्येक सूची भिन्न है।

समा की छोटी गतागो तक मन्तमा ऋद्ध विग क अवतार स्वाकार कर निय गय थ। मत्स्य म कर्क नह दशावतार का गणना आन्ना गतागो तक प्रचलित

१—गुध्वाराज रामा नागरी प्रचारिणी मभा १९०४।

२—हम कमन्ध मय्यन्त प्राशुभावाश्रितानमा।

वराणा नरगिहन्त वामना राम एव च।

रामा दशरथिचर मात्वत वाचिर्व च।

हो गयी थी।^१ अग्नि पुराण का काठ जाठवा गतात्नी माना गया है जोर प्राय यही समय बराह पुराण का भी है। ये पुराण कम समय में लिखे हैं। दगावनार प्रथम इस प्रकार हैं—भक्त्य कूम बराह नमिह वामन परमराम राम कृष्ण बुद्ध और कल्कि। ईसा की आठवीं गतात्नी तक यह क्रम सर्वमान्य हो गया था। इस काल की मूर्तियां भी यही अवतार जित्त मिलते हैं। इन अवतारों के पूजा विधान की भी व्यवस्था कम समय ही चुरी थी।

पुराण साहित्य के अनिश्चित काव्य साहित्य में अवतारों का स्तुतिपाँ मिलनी है। सप्तमगतक में माघ के गिणुपाठकष में नारद ने प्रथम संग में तथा भाग्य पितामह ने चतुर्थ संग में विभिन्न अवतारों के रूप में श्रीकृष्ण की स्तुति की है। दगावनार वणन की निश्चित तिथियुक्त प्रथम विनिष्ट रचना ११वां गतात्नी में मिलती है। नाना रूप विष्णु की स्तुति के लिए महाकवि क्षमेत् ने अपनी अन्तिमकृति भक्तिव्यक्तदगावनारमरम पूजा प्रथम दगावनारचरितम का रचना १ ६६ ई. में की थी। इस ग्रंथ में अवतारों का क्रम भक्त्य कम बराह पुष्पहरि वामन जामरुष्य कानुत्स्य वरुहन्ता मुगनमुनि तथा कर्त्ति दिया गया है। क्षमेत् की रचना दगावनार वणन की परंपरा तथा रामकथा के विकास की दृष्टि से जत्यन्त महत्वपूर्ण है।

महाकवि क्षमेत् गारंग संग जयना कमीर के निवामी थे। उनका ज्ञान काल कमारक संग राजाजा जनन (१ २८ १ ६३ ई.) तथा कलग (१ ६ १०८९) के राज्यकाल के अन्तगत व्यतीत हुआ। क्षमेत् ने विनायक साहित्य की रचना की। इनका कविता का नाम व्यामनाम था। उहाँने महाभारत का मूर्तिरूप भारत मजरा तथा गणार्थ्य बहलिया कृत का मस्तुत रूपान्तर बहलिया मजरा में प्रस्तुत दिया था। रामकथा मन्त्रया इनकी दो विनिष्ट रचनाएँ हैं। वास्माकि रामायण के परिभाषातराय पाठ का म १५ कृतान रामायण मजरा में किया था। कम ५३८६ गतात्नी में जाय मरा रचनाकाल १ ३७ ई. है।

१—आर० सा हाजरा—मुगतिव रवात्तम—का १९४०।

२—माघ—गिणुपाठकष—प्रथम जोर चतुर्थ संग।

—क्षमेत्—दगावनारचरितम—

द्वे पादपदायात त्रिनवनभवनस्तम्भूत म यामा
नायध्नायाम्य भक्त्या प्रवर्ति पृथ म्बगमागैःशक्यैः।
मन्स्य कर्मो वरात् पृथपरिपुर्वामना जामरुष्य
कानुत्स्य कमन्ना म च मुगनमनि कर्त्ति नामा च विष्णु। १ ।

इनकी दूसरी विगिप्त रचना दगावतार चरितम है। इस रचना में रामकथा नवीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत की गयी है। इस पर किंचित विचार कर लेना उचित होगा।

दगावतार चरितम के आरम्भ में एक-एक श्लोक में दगावतार स्तुति, तत्पश्चात् अवतारा की कथा पृथक् अध्यायो में दी गया है। रामावतार की कथा का वणन २९४ श्लोका में किया गया है। श्लोक परिमाण की दृष्टि से कृष्णकथा के उपरान्त इस ग्रन्थ में रामावतार की महिमा स्पष्ट है। आरम्भ की दगावतार स्तुति में राम की स्तुति इस प्रकार दी गया है—

नौमि राम रिपोश्चत्र य वाचननिम गर ।

होमानव गिम्हारमिव ववन्नवन पुन ॥

रामावतार वणन में कथा का गवण के दृष्टिकोण से वणन किया गया है। कथाक्रम वाल्मीकीय कथा से भिन्न है तथा कथा के कुछ अंग भी नवीनता लिए हुए हैं। कथा का आरम्भ रावण जन्म रावण की वर प्राप्ति तथा उसके चरित वणन में होता है। रावण आदि का जन्म पुण्यात्कृता तथा पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा में होता बताया गया है। रावण और उसके भाइया ने घोर तपस्या की। गकर का आराधना करत हुए रावण ने अपन मिर हीम न्ये जोर ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया। कुम्भकण ने विपरीत वाक्य से एक दिन जागन तथा अक्षीण निद्रा का वर पाया। धममति विभीषण को अमरत्व का वरदान मिला। रावण ने

१—वही—अत्रातर मात्क मटवताना वाविगाल क्षणत्वाचरणाम ।

पुण्यात्कृता नाम वभूव कथा तारण्यत्पेपि विवाहहीना ॥

मा भग्धास्वै मणि भवल्पा त्रिगसरम्यापवन चरन्ती ।

अपने भाई कुबेर को जीतकर पुष्पक विमान ले लिया। शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर रावण निर्दोष होकर समारम विचरण करने लगा। एक यात्रा में रावण न घनलात्मज नन्कूबर की पत्नी रम्भा के साथ बलात्कार किया। इस पर नन्कूबर ने शाप दिया कि न चाहते बागी स्त्रियों के साथ बलात्कार करने से रावण का मृत्यु हो जायगी—

दष्टवामिभूतता नन्कूबरस्ता त्वा कुवत्त च निशाचरस्य।

अशामकानारनिमगमात् तस्यास्तु दुर्जीवितमित्यवाच। ७ ३२।

यात्रा में ठीकने समय रावण ने कठाम पर्वत को अपना विद्यालय भुजाजा में उठा लिया। गणाध्या और गृह्य विद्याघर सुन्दरिया के इधर उधर भागने से उनकी करघनिया बज उठी और कलाम गन्धायमान हो उठा। शत्रु रावण के वीराचित काय में प्रसन्न हुए। रावण ने अपना एक यात्रा में वेदवता को रखा उसे स्पष्ट किया किन्तु नन्कूबर के शाप के भय से उसके साथ बलात्कार नहीं किया। स्पष्ट में अपमानित शत्रु मर जाय राक्षसा के नाश के लिए ही यह विचार कराए वेदवता ने अपना शरार त्याग दिया। एक अन्य यात्रा में रावण उसी रमणीय प्रद्वय में पुन गया और वन अम्भत मरोवर का त्रिमय दिव्य कमल चित्तेह्य ध। रावण मरोवर के तट पर निर्वाण की स्थापना कर शर का आराधना करने लगा। मरोवर में कमल शर उमन निर्वाण पर अर्पित किया। मरोवर के मध्य में रावण ने एक ज्योतिष कमल रखा। उसकी राचनचरित्रा पर उमन पर क्या का रखा। कमल उमन शर को अर्पित किया और क्या का शर मन्त्रा का रखा। मन्त्रा का शर में एक बार शर ने उमन का क्या का रखा ता क्या कि यह चपत्तिय रावण का अभिशाप भविष्य रखा। शर पर मन्त्रा ने उमन एक स्वणमन्त्रा में रमन्त्रा समस्त पार धरता में मन्त्रा रखा। यथा क्या राजा जनक का प्राप्ति रखा। शर व स्वण का शर यथा मन्त्रा में चर रखा। जनक ने उमन पुत्रा के रूप में प्रणय किया और रमन्त्रा नाम माना रखा। माता के पदजा शर का क्या मन्त्रप्रथम रमन्त्रा के शापकार चरित्र में मन्त्रा रखा। मन्त्र पन्चाने रावण शृणगा म शृणगा

वर प्रदानथ त्रिपि यथाच विभाषणा धमर्त्ति मन्त्रा।

नन्कूबर तुष्टन निमग्ने नान म सामानमन्त्रवमव॥ ७ ।

१—शर मन्त्रा टरिन्त्र म पार शर विद्याय म्पत्तिरारिष्टम।

मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा चरागमनरामिमी॥

व विस्फीकरण त्वरद्रूपण वध का वतात मुनता है। (१०५ १३०)। इसी के साथ रामायण की कथावस्तु का आरम्भ होता है। रूपणया समूचना पाकर रावण भारीच के पाम जाता है और उससे राम जम म ळकर नवाम तक का रामचरित तथा विष्णु के अवतार लेने की कथा मुनता है। भारीच की सहायता म रावण सीता का हरण करता है। (१३१-१५१)। सुनेतु नामक गुप्तचर म रावण पुन भारीच वध स सुग्रीव मन्त्री वास्विक वानरा का सीतावपण हनमान का समद्र लघन अगोक वास्विका विनाग आदि का वतात मुनता है। (१५२ १९४)। सुवतु और विभीषण दोना रावण मे माना को गैठान का जारान करत है। पदचात विभीषण राम की ळरण म चला जाता है। एव अथ गुप्तचर म रावण विभीषण जभिषक संतुनय राम क त्रिनूट पर आगमन का वतात मुनता है। (२०७ २१३)। प्रतिहारपति रावण को नागपाग द्वारा राम ळरण वधन बुम्भकण जागरण जादि वृतात मुनाता है। (२१८ २२५)। जनतर राम रावण युद्ध सीता का अग्नि परीक्षा विभाषण का राज्याभिषक जशष्या गैठना उत्तर काण्ड की कथा तथा स्वगारोहण आदि प्रसंग का दशमद्र न का मात्तीय रामकथा व अनुमार वणन किया ह। दशमेद्र न दशमवतारा का ळिण व अवतार के रूप म चित्रित किया है। राम गगार का ळाग समाप्त कर विष्णुधाम को चले गय—

म प्रथम्वम्याम्बर चम्ब्यमाता विधायजूजा कमगोपचार ।
 ह्नास्य विष्णाग्नि मध्यजात समादध मूर्धि विधातुमजम् ॥
 तस्यातर वाचनवर्णिकस्य विचिनरत्नावत्पलवम्य ।
 मन्वियपन्नस्य ळाग कया तद्भातिःनामिव जात लम्भीम ॥
 आदाय कया कमः नियाय तच्चद्रचूडस्य किराटवौली ।
 प्रीति वह्निस्मयगभगुर्वी ळवदवर स्वा नगरा जगाम ॥
 मन्त्रारी तद्विनियन्ताय तत्र तनापिता कतिपयपुत्रिका ताम ।
 अनय लावण्यवती विलास्य कयामभूत्सियनिचरेव ॥
 क्वाचिबुभगगुह्नीत कया ता नारत्नाभत्य मुनिजगत् ।
 पत्युम्नय चपत्रद्रयस्य कया भविष्यत्वभिगायभूमि ॥
 ळत्यनच्छाद्य महर्हिगत्पट गुणमजूपाधता कुमारीम् ।
 मन्त्रारी भूमिनावगाग तत्याज रत्नावर पार तीर्ण ॥
 काठ प्रयात जननेन राजा यनागन हैमहृत्न वृष्टे ।
 लथ्या गमुद्धदु मुग्धी मुता सा मीतति नाम्ना भुवन प्रमिडा ॥ ७ १०४ ॥

अथ स भगवान्विष्णु कृत्वा जगत्त्रिरपप्लव
 दगामुख भय हृत्वा ह्य प्रत्स्त्रिदगत्रिय ।
 पवनतनय घत्वा धीरोत्तम स विभीषण
 भुवन भवन कीर्तिस्तम्भ जगाम सुधाम्बुधिम् ।

क्षमद्र के उपरान्त दगावतार चरित का वणन द्वादश गतक म जयदेव के अमर काव्य गीत गाविन्द म मिलता है। जयदेव बगाल क राजा लक्ष्मण सेन (११७९-१२०५ ई) क मभाववि थ। श्रीकृष्ण चरित का कामल वाग-पतावली म वणन करने वा इम काव्य के प्रथम प्रबंध म कवि न विभिन्न अवतारा क रूप म श्रीकृष्ण की स्तुति की है। केव का 'व्यविधरूप' मीन स एकर कल्कि तक एक-एक श्लोक म वर्णित है। रामावतार का वणन राम तारा रावण वध को लक्ष्य करके लिया गया है। जयदेव न दगावतारा का एतन्न वणन भी किया है— (मीन रूप से) कटा का उद्धार करने वा (कच्छप रूप स) जगत को धारण करने वा (वाराह रूप म) भूलोक का उत्थान वा (नर्मिह रूप से) हिरण्य वणिषु दत्त के नाश (वामन रूप स) वरि को छलन वा (परशुराम रूप स) क्षत्रिया का नाश करने वा (राम के रूप म) पीतम्ब्य रावण का जीतन वा (जतराम रूप म) हल्धर (बद्ध रूप म) करशापी आर (वज्रि रूप स) मण्डल का नाश करने वा एम प्रकार दगावतार रूप धारण करने वा कृष्ण आपका नमस्कार है।

प्राकृत पद्यम का समय विधाना न १४वा गताली माना है। इम प्रथ म दगावतार वणन का एव छ म्मिन्ता है जिमम एम व्रम स दगावतारा की स्तुति

१—जयदेव—गीत गाविन्द—

वितरमि त्स्त्रि रण त्स्त्रिपति वमनायम् ।

दगामय मौत्रिवि रमगायन । कवधन रधपति रूप जय

जगतीग हरे। १-७।

२—वहा—

वपनद्वान्त जगत्रिवन्त भुगायमद्विभन्त ।

दगायगयन वरि छगान शकषय कुवन ।

पीतम्ब्य व्रत हठ कयन कायन्वमातनन ।

मण्डलान्त दगावतार कृष्णानुम्य नम ।

की गयी है।' इस छंद में कहा गया है—जिहोंने वद धारण किया पीठपर पथ्वी तत्र धारण किया, दाता पर पथ्वी म्यापित का गजु के वक्षम्यलको विष्णु किया छल स (मानव या वामन) गराग धारण कर गजु का बाघा तथा उसके राय का अपहरण किया क्षत्रिय कुल का मनप्त किया त्गामुवा (रावण के दम मुवा) का काटा कम तथा कगी का विनाग किया (बुद्धावतार) म कृष्णा प्रकट की (तथा कल्कि रूप में) म्लच्छा का विन्लित किया ध नारायण तुम्ह वर । प्राकृत पगलम में वामन परगुराम राम वृष्ण अवतारा का पयक पयक वणन भी आया है। राम स्तुति सम्बन्धा छन्द में कहा गया है—जिन्होंने पिता का आणा का सिर पर किया जा राज्य छान्कर भाई और पत्नी के साथ वन गये जिन्होंने विराध को मारा और कद्रव का हनन किया जिहें हनुमानमिल जिन्हान वालि का वध किया तथा सुग्राव को निष्कृत्क राज्य दिया और समुद्र प्राँषकर रावण का नाग किया व गधव तुम्ह निभय (अभय) प्रदान कर । रामगीत गावित् में वाल्मीकि कथा के अनुसार रामचरित वर्णित है। यह ग्रन्थ भक्तिभावना से जानप्रात है। इनके रचयिता जयन्ध के गये हैं। ग्रन्थ के आरम्भ में दगावतार वणन आया है जिसमें त्गमा अवतारा का स्तुति पयक श्लोकों में कहा गया है। राम का स्तुति रावण विजता के रूप में की गया है।

१—प्राकृत पगलम—वणवत २०७।

जिण वज धरिज्ज महिज्ज जिण पिन्ठिठहि दतहि ठाउ धरा।
रिउवच्छ विज्जार ठण तणु धार वनिज्ज मत्त मुग्ज्वहरा।
कुल वत्तिय तण त्गमय वण्य कमिअ कमि विणाम वरा।
वरणा पजल मउह विज्ज मा उ णराअण तुम्ह वरा।

२—प्राकृत पगलम—वणवत २११—

वण्ह उमि सिर जिणि जिज्जिअ।
सजिअ रज्ज वणन चर निणु।
साज्ज सुदारि मगहि णगिअ।
मार विराध वणध तहा हणु।
मारुइ मिलिअ वालि विहटिअ।
रज्ज सुगावह जिज्ज अवण्व।
वधि समइ विणागिअ रावण।
स तुह राहव दिज्जउ निव्वह।

—रामगीत गावित्—यैकटवर प्रस—

अवतार कथा की परम्परा भारतीय वाङ्मय में प्राचीनकाल से मिलती है। अवतारकथा की युक्ति में हरिस्तुति करने की परम्परा मञ्चुत प्राचीन साहित्य में मिलती है। हिन्दी साहित्य में भी आयी। इसका प्रथम साक्षात्कार तत्कालीन सामाजिक आन्दोलनों के सर्वप्रथम प्रतिनिधि एवं महान् महाकाव्य पद्मराज रामा के उत्तरकाल में मिलता है। चौदहवाँ शताब्दी ईसा के आरम्भ में मिथिला के कवि गणेशदास ज्योतिरीश्वर ठाकुर के 'वणरत्नाकर' में दशावतार वणन मिलता है। ग्रन्थ के अन्त में चौदहवें दशावतार वणन के अन्तर्गत इसी नाम अवतार की सूची दी गयी है। वणरत्नाकर मिथिली साहित्य की प्रथम उपलब्ध रचना है। इस रचयिता ज्योतिरीश्वर ठाकुर का समय सन् १२९१ के आसपास है। वणरत्नाकर की रचना मध्य ग्रन्थ के रूप में की गई है। इसमें स्पष्ट है कि इस ग्रन्थ में निहित दशावतार वणन परम्परा उस समय तक ही हो गयी थी। रामायण के मान काण्ड की उत्पत्ति भाग्य ग्रन्थ में आती है। इस परम्परा में जाग भा रचनाएँ मिलती हैं। अन्वरदास (सं १९९२) ने हरिश्चन्द्र की रचना की जिसमें अन्वर तथा अवतार की स्तुति की गयी है। भाषादास लखनऊवासी (सं १६८०) ने रामरामा की रचना की। नरहरिदास चारण ने सन् १७०० के आसपास अवतार की कथा के रूप में अवतार चरित की रचना की थी। इस परम्परा में जाचाय भिमाराम ने अपने ग्रन्थ शृंगार निघण्टु (सन् १८७३) में दशावतार की रचना की है।

विन्ति मूजन गभावन जिन रावण म।

रघुपुत्र वसन्ति जय तप राम हर। १७।

१—दशावतार परिचय—

अवतारव्यापनरी भक्तिया भगवता म।

ना व्यामगम शमन् कृन्त मग्ना स्तुतिम। ११।

—वणरत्नाकर—रायचरु लखनऊवासी रामायण १६०।

अथ दशावतार वणना—मध्य काल में ही मिथिली भाषा में पर्याय नाम दशावतार मन्त्र की रचना हुई।—पृ ८।

—वण—अथ रावणन शक्तिराज अश्वमेधादि अश्वमेधादि मुन्त्रकाण्डे वणरत्नाकरे नरकाण्डे एव सन्त।—पृ ९।

—वणरत्नाकर—मन्त्र के रूप में कथा का सूत्र मन्त्र का रूप

का रूप है व गणेश गणेशा नवविणय इ

बावत इ मन्त्र के नाम हैं अथवा गणेश

बाह्य इ विन जाति विनि छन्दनाम म।

पशुपतिराज रासा व दूसरे प्रस्ताव का गायक जय प्रस्तावा की भक्ति महा काव्य की कथावस्तु में मद्रद न होकर अथ दशम लिप्यत है। समय व अस्तु म पुष्पिका म गिया है—ति श्री कवि च विरचित प्रथागत गम क दगावतार वर्णन नाम त्नाय प्रस्ताव नपूणम। अय प्रस्ताव म दगावतार वर्णन व करण मका नाम जय मगम' रगा गया है। आरम्भ म हरिस्तुति दगावतार नामकरण मक्षय म दगावतार स्तुति जनतर अवतारा का तथा का पथक पथक वर्णन मक्षय धमद्र की वर्णन पद्धति व अनुसार है। जहा दगावतार कथाका व वर्णन म पौराणिक सर्गि का अनुसरण किया गया है।

त्नाय प्रस्ताव का गायक पशुपतिराज व चरित्र म नहा है। ग० त्रिपत्त न गिया है—महाराज पशुपतिराज की गथा म म प्रस्ताव का कोइ विषय मध्य न न हान के कारण मीन कथा दशका वाग म जान का जनमान किया था। वम इस मू म परिचित और प्रक्षय न मयुक्त प्रस्ताव या च का रचना न मानन का काइ कारण नहा है। महाकाव्य का रचना विधि दगाव जय मयम का पूवा पर प्रस्तावा म मद्रद किया गया है। प्रथम प्रस्ताव म वल जा उगता पला व मम्बा आया है। कविपत्नी न एक रात्रि म तिलीवर पशुपतिराज का चरित्र सुनने की इच्छा व्यक्त की। पत्नी पूछता गया और कवि कथा सुनाता गया। फिर पला ने पूछा कि तानव मानव तथा राजा की कानि म क्या लाभ है। च न विविध चरित्र के उत्तरण कर कहा कि हरि भक्ति व विना मक्ति नहा। म पर पत्नी न कहा कि ममस्त विद्याका वजाता उम चित्रणहार का तू चित्रण कर चौहान का कानि गान म क्या लाभ। च कता न कि मरे मन म साव है कि मैं चौहान का पूव क्रण चवाता हू। पत्नी न कहा कि राजा का क्रण चुवान हाता है कवी गायि का मरण क्या नही करत। च न कहा कि कमगमन मव्यापा है। पला न कहा कि यदि एसा है ता हरि चरित्र का वर्णन करा चिगम मक्ति प्राप्त हा—

राम हव दगागि वग वान्हव महाग्या वम
वोष हव व काह्या जिन गावन प्रवाम है।
कानि का हथ राप र हिदू पति पाति न
मक्ष हनि मा र गति दाग ताका दाम ह॥

१—ग विपिन विहारी विवनी—

—रामा म रामकथा—भयिलारण गुण अभिनन्दन ग्रथ—पृ० ६७३।

—चदवरदाई और उगवा काव्य—पृ० ११४।

अग जग हरि रूप रस विविध विवेक वरन।

मुकति ममप्यन कन रम जुग निनि जाग सरन। १७८२।

रम पर चंद न पला स ध्यानपूर्वक हरिचरित मुनेने को कहा—

कह्या भामि मा कन इम जो पूउ तत माहि।

कान घरा रसना सरस। त्रिनि त्रिवाऊ ताहि। १७८२।

यहा पर प्रथम प्रस्ताव समाप्त हो जाता है और अगले प्रस्ताव में कवि हरि चरित वणन के उपरान्त त्रितीय प्रस्ताव में जनम पुन चौगुन के ऋण की चर्चा करता है और इस प्रकार दशावतार वणन को पथ्वाराज की कथा से सज्ज कर देता है—

राम किमन कित्ता सरस गहत जग पुन वार।

छच्छ जाव कवि चर की मिर चन्आना भार। २१५।

मिर चहुआना भार राम गला छिग गाथ्य।

मनव सनत मनत कया मुसुव न जाइय।

वाउमास रिषराज किमन दीपायन धारिय।

मानच्छ मर मति मर तन पुन भार चन्आन मिर।

ज कह्यो मर्य मति मुसुव करि सहरि चित्त चित्यो मुधिर।

२—१८६।

रामकथा जनन—जय तमम म मुक छत गम्या ५८६ है। प्रस्ताव का आरम्भक छत हरिरूप का मंगलाचरण है। दूसरे छत में दशावतार नाम स्मरण किया गया है। अनंतर तामर छत में व छत तक अस्तांग का म रूप म स्तुति का गया है। मन्थायतार का कथा / म १ छत कम १ म १६१ छत वग १६२ म १ छत नगिह १६० म २१ छत वामन २१४ म २ छत पराराम २१ म ६ छत राम २६४ म ०१ छत कृष्ण २ म ५६४ छत वद ६ म ७ छत तथा कवि कथा १७१ म ५८४ छत तक वर्णित है। अनिम / १ ६ छत उपगार क रूप म स्थि गय है। आरम्भ में कवि ने हरिरूप का मंगलाचरण म कहा है कि मैं हरि का उम रूप का नमस्कार करता हूँ जिनका प्रसाद सिंग मंगल निरन्तर जागधना करत है—

मा प्रसा मा मर त्रि भजन म्पाय म्य ह्य।

सिन्नि निन्नि कमर मन्त्र मर जगगनि वाग वर।

मा मा किंय मान नवरमर वाहा मिर ग्रम्भय।

जथा अष्टपुत्र चर न म्भिन ज प्र ह्ये ह्यय ॥१॥

अनन्तर कवि दगावतार नाम स्मरण करता है—

मच्छ कच्छ वाराह प्रनम्मिय नारसिंघ वामन फरमम्मिय ।

मुअ दमरत्य हलधर नम्मिय बुद्ध कलक नमो दह नम्मिय ॥२॥

नाम स्मरण के पश्चात् कवि न दस अवतारा की संक्षेप में स्तुति की है।

इस स्तुति में १८वें छंद—

हरे राम ग्यान । सुराम सुरान । रघुवार राय । दयादेह काय ।

स १०वें छंद—

प्रसून विमान । चड वेगियान । अयोध्या मपत्त । नमो राम भक्त ।

तब राम की स्तुति की गयी है। इन तेरह छंदों में रामचरित संक्षेप में लिया गया है। स्तुतियाँ के पश्चात् ब्रह्मा अवतारा की कथा ऋमानुसार कहने हैं।

रामावतार का वणन वाल्मीकीय रामकथा के अनुसार किया गया है। यद्ध काण्ड की कथा विस्तार से कही गयी है जा कवि की वारवृत्ति का परिचायक है और वीररमपूण महाकाव्य रासा का व छिन अंग है। शेष रामचरित्र अत्यंत संक्षेप में वर्णित है। कथा का आरम्भ परशुराम के क्षत्रिया के महार के उल्लेख से हाता है।

परशुराम न क्षत्रिय राजाआ का सहार कर पथ्वी ब्राह्मणा का जपित कर दी। अयोध्या नगर में राजा दशरथ के गृह में श्रीराम अवतार तथा लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न का जन्म प्रथम तीन छन्दा में वर्णित है—

परसराम छतिपति हते । छति जप्पी निज वस ।

रघुवसी दसरत्य घर । था रघुपति अवतस । २६४ ।

रघुवमन रापिस रमन । भयो राम अवतार ।

वद भ्रात दसरत्य सतन । नयर अजुघ्यासार । २६५ ।

इसके पश्चात् तारकावध तथा राम वनवास की कथा एक छंद में कहकर—

तहनि नाम तारिका । ग्यान हरि परमीराम ।

वरि सती धानुप्य । किय सब मुम्भह काम ।

कविन्ध वर मागि । राम वन भरथ सुराज ।

तब दमरथ दुप कान । भयो घर काज अकाज ।

दमरथ्यपा पगस उभय । पचवत्ता दधा कुटिय ।

बहि चत् छत् परवध वरि । तब कब जिहि विधि जुन्यि । २६७ ।

कवि न अगत् छत् में मयाव । राक्षसा शूषण्या का जिसके नय जगाग्मय नाय यत्र नय ताण तथा गरार बाला था वणन कर साना हरण तथा साना

की खाज के लिए हनुमान व जाने का उल्लेख किया है। हनुमान ने उस पत्थर को साता का गोज की। उपवन का सहार किया अश्वकुमार का मारा और पाण म प्रसर स्वर्णपुरी का का दहन किया। राम ने वानर मना व माय का व लिए प्रस्थान किया। मनु वाना गया जीर मना पाण जता। उस का घर लिया गया। वार भाग टाकर यदु म जन्म के लिए उन्मात्त हुए।

यदु आरम्भ हो गया। बाण छत्रन को यदु भूमि म शक्ति धारा बहन गया। राम राय म भर कर काठ के समान लियाया दन डग। घट कट कर

१—सूपाया रापना । रह बन मकर टागी।
 रूप नप्यचप घुम । रग श्रयन तन काशी।
 नाक वन नप निष्य । जाइ परायन दपिये।
 दारि टारि धरि टारि । राम मर अपिम नपिये।
 र्गि मान नात रावन गया । भया चित्त रापिम हन्त।
 कहि पवन पूत हूतह चरिये । मुग मुनाज मा मरन।२६८।

—यो एक हनगा । भमन रुधि मता पाय।
 घन उपवन मधरिय । घर मन राम टुपिये।
 धाय चया प्राकार । मन जदह दन भपिये।
 जय कुमारन हनिन । शीरि र्गजित दपिये।
 नपि पाम राम म प्रथया । कहि मुमरन जवर धरी।
 लमाय पुल्ल का जरिये । वनक पक वित्री परी। ६९।
 जन्म जन्मि रप्यम छरिये । धरिय वग विपरान।
 मनौ जक कमनि दग्म । मुनि रावत मन मान।२७०।

—उत्तरि मम अयाह । धाह न घर धरिये।
 चरि मन रपवग । नार नामन मु मरिये।
 र्गि एक ग धरि । परि म्भावन धरिये।
 र्गजान अनि मरि । चरन जपन रपिये।
 र्गि मार धार परि वरन । मार मार चरन मय।
 चर चरि मन लपमन मर । नर निनात मु मानये। ७१।
 मधन नात वरयो । धरयो नर उर धार।
 र्गि नर म्भ नाग तरि । नु जग उठार। १।

गिरने लग और रथ चक्काचूर हो गये। इन्द्रजित मधनाद युद्धभूमि में आया। लक्ष्मण से उमका युद्ध आरम्भ हुआ। मेघनाद ने अस्त्र शस्त्रा से प्रहार किया। देवा के भक्त मधनाद ने तुमुल युद्ध किया। चण्ड द्वारा युद्ध का जोड़पूण वणन दृश्य है—

वपु नपत पुष्परिय । विनन विन नाट पुरगिय ।
 गनन गनन गय नग । छान छक्किय उठरगिय ।
 सनन साक भित्तरिय । पनन घर धार पलक्किय ।
 गिगन टक्क डित्तरिन । भनन भूभार भलक्किय ।
 धरना धरीय वनर रपिय । परिय पाति माहून प्रवल ।
 असुरान गजिलका नधह । इन्द्र जाति जीतित अनुल । २८२ ।
 किरि मज्जिय रघुवम । हनुगन वाट उडागिय ।
 मग्न छारि मरजाद । द्वातातममुधि पाइय ।
 मग्न नाम रथ जय्य । मग्न वा गुघ जाप ।
 अपिमन हनु सुधाव । लक्कपति भापन थाप ।
 जाह्नि रथ्य अप्पन अवर । धरर पत्ति द्वारह धरिय ।
 छर छरिय वान उक्कि छरिय । भरिय पन अभरन भरिय । २८४ ।

लक्ष्मण ने त्रिशूल वाणा का वषा की। जाकाग वाणा से जाच्छास्त्रि हा गया। रावण भयभात ही उठ। सप्त सागरा का गावन बाण वाणा का लक्ष्मण ने मघान किया और मेघनाद का वध किया। त्वतात्रा ने पुष्प वष्टि का। रावण का जपार

१—ठुट वान २८। घटा जादि भद्। भिर वान भान । करत वपान । २७६ ।
 धर म गाम । किर वानरात । वका थान थान । जकी जाग मान । २७७ ।
 बहै रत धारा । छर भद् भारा । फिकारत पनन । डवारत डक्क । २७८ ।
 भय राम राम । मनी काठ तास । धरा भग वज्ज । पर रथ्य भज्ज । २७९ ।
 भिर प्रात पाण । मता राम मार । दुई इन्द्रजात । भए दव भीत । २८० ।
 कर रूप वाण । मय नाम सार । । । २८१ ।

२—धरनि धार धरि धरनि । भिग्न रथ्यजिन मरभर ।
 मुनि वान रनि भान । पगिय मागरन पलक्कण ।
 जगि वान माह्निय । पयिय रनिमन पथारिय ।
 परि पण म नामन । मर माह्निय सुधारिय ।
 गाजि इन्द्र भए करि इण रव । गया रण गाथा प्रह्या ।
 रघुवम मन वानन पर्या । मार प्रह्य माह्निन ग्या । २८२ ।

हुल हुआ । मघनाद की मृत्यु के उपरांत कुम्भकण रणभूमि में आया । रावण का भार् कुम्भकण आघ वर तक निगा के वग में रहता था पशुआ का भक्षण कर उसकी क्षुधापूर्ति हाती थी उसका शरीर काला था और आकार पवन सत्त था । काल रूप कुम्भकण यद्धभूमि में आया । क्षुधित वशवानर की भाँति कुम्भकण वानर सेना पर टूट पड़ा । वह वानरा को पकड़ कर भक्षण करने लगा । रक्त की धार का पान करता हुआ कुम्भकण रणभूमि में अग्रसर हुआ । राम ने कुम्भकण का वध कर राक्षसा का सहार किया । लका में जस्थिमाम का काच फल गया ।

१—घरनि तरनि आकाम । वास रथ सासन रक्किय ।

दमन अबलगि वान । घरनि बट मापन घुक्किय ।

बुकिय वत्त बित वार । सार जारह चौमानिय ।

मत्र जप्प सब मूठ । करन वान्न अनन्टिटय ।

रथ च्यारि चत्र फिरि चक्क चव । वान वष्टि लक्षमन वनिय ।

वरि वक्क मक्क असरानि डर । बहर वत्त ता न्नि वनिय । १२८५।

माइर मन सापनह । वान त्तिनी ता हत्थ ।

गन अबगन मधियहि । वत्थी तिन जावन सत्थ ।

कुमुम वष्टि मुरवान । भयी रावन तन भारा ।

मक्कल साक्क रापिमन । हनू जव त्क प्रजारा ।

जजया मत्त जागिन जपिय । मत्तेरि वानी रत्त ।

लट्टिमन्न राम माता मुत्तिय । तन्नि लक्क लग्गी कुन्नि । १२८६।

२—यमि निगा अधवरप । घाम अरर घर घञ्जिय ।

गोन गञ्जि मूर मज्ज । पघा वनचर वन पुञ्जिय ।

गौर मण्य वपुम्प्याम । गिरन ममनप्य जकारिय ।

कालघाम नामाए । तार तारन तप धारिय ।

मरि कुट्ट मत्त मगन वम । मूर वत्त मघन मपिय ।

वरि घम नाम नामन तपिय । अक्क जाति वान्न भरिय । १३।

भरन काट्ट चञ्जि मध्य । घाम घामन जत्त छनिय ।

मत्त जत्त भयनात्त । मनत्त अवत्त चत्त वनिय ।

तिण्य तप्य जनधार । पात्त रमना चक्क पात्त ।

करन काट्ट वत्त । घर जत्त मिर नात्त ।

त्तनिय लक्क जमनान मिर । तन्न भारव भरन गञ्जिय ।

वरि वत्त टक्क फिरि वत्त । गिरन गन त्पिमन भनिय । ८।

राशमिया छाता कूट-कट करन करन लगा । अन्तन गम आर निगाचर राज
 रावण म भीषण युद्ध लि गयो । रणभूमि म रावण विपशिया का सहाय करन लगा
 वानर मना राशमा म मद्राम करन लगी । वाण चलन लग, मुण्ड कट कर गिरने
 लग । राम न रावण पर वाणा का वर्षा की । इम प्रत्यकारा युद्ध म वीम भुजा
 वाग गिर गया । राशम दहन करन लग । ऋषि आर देवता प्रसन्न हो उठे ।
 रावण का मृत्यु पर राम न विभीषण का राज का राज लिया । सीता को
 लकर राम न लम्पण क साथ मागर बन्ना का शौर मानद प्रस्थान किया ।
 उनक उपर स्वताआ न पुष्प बध्ति का । राम रावण युद्ध का वचन कवि
 न विभगा भुजगा छटा म किया है । रामावतार कया क जतिम छट म कवि

१—गन गित्तो कुम्भनत्र । पर्या भूषा वमत्र ।

घर वत्र धक धाह । दत कटिपद्ध वत्र ।

पप म प पत्रकगिय । नही लर तिखिदार ।

मापि सरिन गनदार । पानि उ पिय अपार ।

माहत मित्त वत्र मघट । गिरत धार उपर परयो ।

रधुवम नाम रावन करयो । करन पत्रिठ दाहन धरयो । २८९।

परत भ्रात धर धरनि । पत्रम अठठह रमि पालन ।

जनु वि मह मानर । आनि प्रथ्य जर तारन ।

परिभष्यत रषियमन । कुइव चासन मुप नामन ।

कर मुपिठट (मम लिग) वमघ । भरत भुप इषिय भामन ।

करि लक वक पवन पलन । पत्रन राम हृत्यो दुनिय ।

घर धरन नारि वनन वमन । कूटि-कूटि दामन छनिय । २९०।

२—चव चूर करण अत्र परण रापिम मदा पाण ।

रय रत्र अनन वान नपण रथ्य रूण वारण ।

नह दम रूण पूग हण विरलन वण घायण ।

रिपि त्व इपण रापिम रण वीम भुजण दाहण । २९१।

परि गवन मण भीषण सण काज करण रामण ।

रत्रि वाण मण हाठक हण पूण अत्रण मान्हण ।

ल सात वण लपिमन मण मागर वण आनण । २९६।

×

×

×

किय पठ पत्र वण मुष्य चार । महाबाहु बाह वल वण धार ।

हनुमान हत्य मत्स सुवत्य । धर पिण्य सौन लटा वार मष्य ।

कहता है कि दुष्ट रावण ने जनक सुता का हरण कर नाच बम किया। निगाचरा का विनाश हुआ और लका भस्मसात हुई। राम ने दशरथ का वध किया। चण इस प्रकार चरित करन बाऊ राम की कीर्ति का गान करता है—

जनक मुता हरि दुष्ट। हरी लका तन दावन।
 नाव जगत जगि छरन। हरन रिपु ग्रहन म रावन।
 हरन रिद्ध नव निद्ध। मिद्धि हर सागर मिद्धिय।
 हरन पुन चञ्जित। हरन भीषन ग्रह चिद्धिय।
 तिन हरिय सीत नन इह करिय। भरिय पन पञ्चर नपन।
 गण जारि उक दगरध हनि। राम किनि चण चवन।३ १।

इस का रामचरित्र वणन वाग्माकि रामायण का रामरथा व अनुसार है। यद्धराण की कथा हमारा मंग्य वण्य विषय है। जब दमम के अनिगिकन रासा व मयागिगा पूवजम प्रस्ताव—४१ म रामरथा का वान जाया है। हम प्रस्ताव म मजधाया जसरा तथा मुनन ऋषि व वानागप म दशरथ वणन आया है जिमना उद्दय नागर का महिमा निराकार स अधिक मिद्ध करता है। हम वणन का भाषा जग्गाटत परवर्ती जान पन्ती है। वणन हम प्रकार है—

बने ब्रह्म जगतार दस। घरे भगत तिन काज।
 म्य म्य अनि तत्य दति। चणमना रति गज।१६५।
 मण-बच्छ धाराह। जण नरमिहृष सिय।
 वामन वति छति दान। राम उति छान तिय।
 चणपना मन्त्रयी। उभय बन्धव चणयय।
 तयागण प्रम बद्ध। रह धरि ध्यान निगयय।
 बति जन कणका जवतगति। मय घम गणन मरत।
 बरि मरम रात गगारम। मरत ना ब्रह्म जग।१६६।

हम इस वान प्रस्तावना का मरत उा (१३० ८६) म वणन किया गया है। हम प्रस्ताव म हम न रामरथा वणन किया है। जिमना वध विषय हमारा का कथावस्तु है।

घनवान मय जर बग काग। धर गनि धाव वर पाति तारा।
 चूम मर मौ मर विन्नी विन्त। धर धार घररा वरण प्रान।
 शिन कण कण धर धर धार। मिय बाय मिय कुमर गन।
 रत रावन कण अणव कात्र। बना धरिध धर धान तिन रात्र रात्र।२०१।

रामा व मभा-सम्करण क अनिरिक्त लन का राम एगिपाटिव साम्राज्य म सग्रहीत बनल टाड की १६९० विजय मवन का प्रति म जयन्मम का नाम म मक्या नाम द्वितीय पद है। इमम ३८५ छ ह तथा दशावतार स्तुति तद वणन मभा-सम्करण क अनुमार है। रामा व मध्यम सस्करण (माहिय सन्धान राजन्धान विद्यापाठ उद्यपुर) म अद्यन्मम का नाम दशावतार कथा ह। मम कु १०० छ हैं तथा गमक्या का वणन १७ छ म किया गया है। इम सस्करण ममयागिता पूव जम ममय ४१ म ऊपर मभा-सम्करण म उद्धृत छ १४५ ४६ न्ये गय है। रामा व मध्य सस्करण क प्रथम म दशावतार का कथा दा गया है। लघुम सस्करण म दशावतार प्रमा न २ ।

दशावतार क जनन गमक्या क वणन क अनिरिक्त रामा म यत्र नत्र गम कथा विरयक निरोग मित्र ह। तामर प्रस्ताव म किला कथा म भक्तिता क सम्बन्ध म यह वणन आया है—

परि ध्याम क मुनि अन्तरात् । भवित्य वात मटा न जाय ।

रघुनाथ हाथ मलाक श्व । त वनक मग गग पछव ।

मागत्र अप्य आयी छरत् । हुइ हानहार माता हरत् ॥ २ ।

इम प्रचार क वणन अय स्थग परतकाला युग क प्रतिनिधि इम महानाय म मिलने हैं जिनम रामायण कथा का निरोग है। इमम उक्त युग म रामक्या क समुचित प्रचार का दानत हाता है। इमकी पुष्टि कमार कवि जयानन के उक्त कथन म ना हा जाता है जिनम रामा गाथा क नायक पञ्चाराज क कण्ठ म दशावताराभरण धारण करन का उक्त किया गया ह। वारहवा-तरहवा दाना म भारताय समाज म रामक्या एक रामभक्ति क प्रचार का चचा म्दामा रामानन् क सम्बन्ध म का जायगा। चम्बरगार्द क रामचरित वणन क पञ्चान प्राय एक गतायी क उपरान्त गम-साहित्य और रामभक्ति का प्रचार युग विभूति स्वामा रामानन् म उपलब्ध हाता है।

१—ग० विपिन विहारी त्रिवेदी पञ्चाराज रामा एक समाशा प० ८ ८६ ।

२—जयानन-पञ्चाराज महानायम्—

दशावताराभरण कण्ठ रक्षापनाहितम् ।

अनपराधमात्मानम गमतस्य रक्षितुम् । २ ४३ ।

अध्याय ४ स्वामी रामानन्द

स्वामी रामानन्द के जीवन-काल के सम्बन्ध में निश्चित सामग्री उपलब्ध नहीं है। इस कारण इस सम्बन्ध में निष्णातमक रूप से कुछ कहना कठिन है। विद्वानों ने जानपसिद्ध सामग्री के आधार पर अपने मन स्थिर किये हैं किन्तु उनमें मतभेद अस्ति है। स्वामी रामानन्द का जीवन-काल विजयनगर की चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अथवा विजयनगर की चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक लगभग दो सौ वर्षों के अन्तर्गत माना गया है। वास्तव में मध्ययुग के अन्त में महान् नृपति के आविर्भाव तथा जीवन के सम्बन्ध में अभाव में शान्त-भाव की आवश्यकता है। वर्तमान स्थिति में विभिन्न मतों की समाप्ति के एक सामान्यतः विश्वसनीय एवं त्वरित मन निश्चित करना समाधान होगा।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने स्वामी रामानन्द का समय विजयनगर की चौदहवीं शताब्दी के अन्त और १६वीं शताब्दी के तृतीय चरण के अन्त माना है। आचार्य रामचन्द्र ने अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है— बरगिरी की परम्परा में रामानन्द जी का मानिकपुर के गाँव तकरी पार के माय वाट विवाह हुआ माना जाता है। यहाँ गाँव तकरी शिला के वाटगाह मन्दिरे की ओर समय मध्य। कुछ लोगों का मत है कि वे मन्दिरे की ओर (गुरु) थे और उन्हीं के कहने से उनमें बड़ी मात्रा का अन्तर्गत बाध कर गया में डबाया था। अन्त के निष्पद्यमन्तमन भाइय श्रमण का उत्पन्न इस प्रकार किया है—साह मन्दिरे ने जो मन्दिरे बरगिरी जगति पर जाते। गाँव तकरी और बरगिरी का सम्बन्ध प्रसिद्ध है। इसमें सिद्ध होता है कि रामानन्द जी शिला के वाटगाह मन्दिरे की ओर मन्दिरे में वर्तमान थे। मन्दिरे की मन्दिरे १५६६ में मन्दिरे १५७६ तक मन्दिरे पर गये। अन्त मन्दिरे ८ वर्षों के बाद विन्दिरे के अन्त चार मन्दिरे का अन्त और चार अन्त का अन्त रामानन्द जी का वर्तमान हुआ मन्दिरे है।

बजार क ममान मन भगत भा गमान जा क गिप्या म प्रमिद्ध हैं। य मन भगत बाधवग नरग क नाइ ध और उनका सेवा किया करत य। यकीन बाधवग नरग ध द्रमका पना भक्तमाल राम रमिकावग म रावानरग महाराज गधुगन गिह नदिया है— बाधवग पूरव जा गाया मन नाक नापिन तह जाया। तह का राजाराम बधला वरयो जहि बजार का चला। कर मग तिनका सबका मुकुर लिवाव ते लगाई। रीवा राज्य के इतिहास म राजाराम या रामचद्र का समय मवन १६११ स सवत १६४८ तक माना जाता है। रामान जा सदाया लन क उपरान ही सन पक्क भगत हुए हाग। पक्क भक्त हा जान पर ही उनक गिए भगवान क नाई का रूप धरन वाला बात प्रमिद्ध हूद हागा। उक्त चमरकार क समय क राजमवा म य। अत राजा रामचद्र म अधिक-म अधिक ताम वप पहा यनि उहान दाया गी ता मवन १५७ या मवन १५८० तक रामान जा का खनमान रहना ठहरता है। इस दाया म स्यु रूप म उनका समय विक्रम का पना क चतुय आर माहवा गना क तताय चरण क भातर माना जा सकता है। श्री रामाचन पडति म रामान जा न अपना पूरा गु परम्परा ग है। उनक अनुसार रामानाचाय जा रामान जा स चौह पाटा ऊपर य। रामानुजाचाय जा का परराव वाम मवन ११०४ म हुआ। जब यनि चौह पाटिया क लिए हम तान सौ वप रखें ता रामान जा का समय प्राप्त बहा आता है जा ऊपर लिया गया है। रामान जा का और काई वन जान नहा।

आचाय गुकठ ने जिन तप्या क आधार पर अपना मत निवारित किया है उहा तप्या क आधार पर पणित बलव उपाध्याय न स्वामा रामान जा का समय १४१० ई० स १५१० ई तक माना है। उपाध्याय जान बहा है—स्वामा जा की आयु सौ वप क ऊपर मानी जाता है। एन ममन्त घटनाआ क तारतम्य म हम इमा निष्प पण पडुचन है कि स्वामा रामान जा का आविर्भाव का १५वा गना (१४१० ई म १५१० ई०) है। इस प्रामाण्य पर अगत्म्य मतिना क भविष्यात्तर खण म स्वामा जा का आविर्भाव का मभवत् १५६ विशमा लिया गया है वह प्रामाणिक बन्नापि नही हा सकता। क्याकि ऊपर निष्प घटनाआ का मल इस समय म ठीक नग बन्ता। स्वामी जा क जावन चरित मभवद घटनाआ तथा गिप्या क का क वारण इनना आचाय-का पत्रह्वे गतक (१६१० ई०) क मध्यभाग क पाछा मिड हाता है।

आचार्य गुप्त का मन निर्विघ्न नहा है। कदार और मिश्रण का मन कालीन मानन के लिये कोई निश्चित आधार नगन। मन्त्र एतिहासिक आधार के अभाव में जनश्रुति का प्रमाण वाटि में नहा गया नगन। २। रामप्रसाद त्रिपाठी तथा इतिहास के अन्य विद्वाना न कदार और मिश्रण का मन्त्रागतता स्वाकार नहा का है। ३। त्रिपाठी के अनकार कदार का समय चाण्डवा गतागी के उत्तरराट तथा पद्विवा गतागी के पुवाट्ट में माना जाना चाहिए। ४। इसी प्रकार राजा राम वध का समय का सन ना कटाचित प्रमिद्ध मन भगत में भित्त रहा हा। राम रसिनावग म स्थि ग्य वन भक्ति भावना से अधिक प्रभासित ह। ५। मन्त्र म एतिहासिक प्रमाण का अग्या है। एक से अधिक मन ना के हान वी सूचना प रानारायण पाण्ड्य नगन। राममिश्रण का वत नि र्गोनगी कहा जा गनता। आचार्य गुप्त के मन का तामग आधार रामाचन पद्धति मग दया गर परम्परा है। ६। रामाचन पद्धति स्नामा जा का रचना है किन्तु मक अनत अग्य मन्त्रणा म दा गया गर परम्परा म भन् र्गित होता ह। यह द्रष्टव्य है कि रामाचन न स्वामी रामानन् का रामानन् मन्त्रणा म पाचवा आचार्य माना है। इन स्थिति म रामाचन पद्धति के वतमान सचरण के जावार पर अतिम रूप में मन निमित्त करना यति मगत न गगा। रामानन् जा के प्रया के अधिक प्राचीन हस्तग्य अग्य हान पर ग कु गन जा गनता। स्वामी रामानन् का समय निश्चित करना के लिए आचार्य गुप्त और प बन्धव उपाध्याय ने जिन तय्या पर प्रिचार किया है व तथ्य नि शान रूप में प्रामाणिक नग वन जा गनते।

स्वामी रामानन् का जावन वाट्ट ही फुट्ट न पन्धवा गतागी माना है। उगान नामन्त्र (१६ १६ २) का रामानन् म पुवर्ती गता स्नाकार चिन्ता ह और चिन्ता २— उनक (स्वामी रामानन् के) राजा गिण्य पीता का जम १६६ २ म गथा या अरुकि मन्त्र गिण्य कदार मन्भव १६६ २ म १ १ २ तक आवित ग। ए मन्त्र है कि कदार रामानन् के अन्तिम गिण्य नग थ। अन्तव म दन्त गता न करे पति म ए अतमान करे कि रामानन् मन्त्र १६ २ म १६३ २ तक जावन ग। म अतमान म जाग या पाट १ व का गता हा गनता है— जिन समय अधिक का न। १। २। ३।

१— चिन्ता १ २ प० ११।

— चिन्ता मन्त्र परिगिट प० ६।

— २। म फुट्ट मन अन्त्र गान आरु कि चिन्ता म चिन्तव आरु चिन्ता ५ ।

फकुहर के मत को एच० एच० विलसन^१ मेकालिफ^२ एफ० ई०^३ जाति विद्वाना ने स्वाकार किया है। किंतु डा० फकुहर ने स्वामी रामानन्द के समय के सम्बन्ध में अनुमान किया है। उनके अनुमान के लिए कोई सबूत जाधार नहीं है। अतएव इसे प्रामाणिक नहीं स्वाकार किया जा सकता।

सम्प्रदाय में स्वामी जी की जन्म तिथि विप्रम सम्बत १३५६ माघ कृष्ण सप्तमी, गुम्वार को मानी जाती है। यह तिथि सम्प्रदाय के माय ग्रन्थ जगत्स्य संहिता के भद्रिष्योत्तर खण्ड में दी गयी है। इसका अनुसार कलि के ४४०० वर्ष बानने पर सवत १,५६ विप्रमी में स्वामी रामानन्द का जाविभाव हुआ। जगत्स्य संहिता में दा गया इन तिथि का मानियर विन्डियम्स भण्णारकर 'डा० बथवाल' का रामकुमार वमा प० परपुराम चतुर्वेदी भक्तमाल के टीकाकार सीताराम गण हपका जाति विद्वाना ने स्वीकार किया है। स्वामी रामानन्द की यह सबसे प्राधान जन्म तिथि है। डा० बथवाल ने भक्तमाल में दा गया गुरु परम्परा का माना है। भक्तमाल के अनुसार रामानुजाचार्य के चार दवाचाथ ह्योनन राघवान तथा

१—एसेज आन टि रिलीजन आफ हिंदूज भाग १ प० ४७।

२—दि मिल रिलाजन भाग ६ प० १०।

३—हिस्ट्री आफ हिन्दी लिटरेचर प० २।

४—जगत्स्य संहिता—

स्व नमो वद वेद यमिते वर्षे गते कलौ।

कालिंदी जाह्वासगे गोभित देवपूजित।

तीय राजे महापुण्य प्रयागे तीय उत्तम।

माघ कृष्ण सप्तम्या गुभधम प्रवत्तन।

मप्तण्ड गते सूर्ये सिद्धियागयुजि प्रभु।

नशत्रे त्वष्ट्र दवत्ये युम्भलग्न गुभग्रह।

जाविभतो महायोगी द्विनाय इव भास्कर।

—रामानन्द इतिग्याता लोकोद्धरणकारण।—म० प० राम नारायण दाम।

५—ब्रह्मनिर्म एड हिंदूइम प० १४१।

६—वृष्णविम दाविम एण्ड माइनर सक्म भण्णारकर।

७—हिन्दी काव्य में निगुण सम्प्रदाय प० ४१।

८—हिन्दी साहित्य का जालो इतिहास प० ३००।

९—उत्तरा भारत की सन्त परम्परा प० २००।

१०—भक्तमाल रूपकला प० २८८।

रामानन्द जाचाय हुए। रामानुजाचाय का पुण्यतिथि सवत ११०४ म माना जाता ह। रामानुजाचाय और स्वामी रामानन्द के बीच लगभग डस सौ वर्षों का उचित मानकर डा बंधवाल न सवत १ ५६ म स्वामी रामानन्द का जन्मतिथि स्वाकार का। महाराष्ट्र के दो सत त्रिगचन और नामदेव स्वामी रामानन्द के पूर्ववर्ती मान जात हैं। त्रिलाचन का जन्म विजयम सवत १३२४ म तथा नामदेव का जावन का म सवत १३२६ १४ ७ माना जाता है। स्वामी रामानन्द का सम्प्रदाय म माय निधि स्वीकार करने स इन सब तथ्या का सगनि बढ जाती है। सम्प्रदाय म माय निधि सवत १३५६ सामायत विवमनाय मानी जानी चाहिए। इतना अवश्य है कि इम सम्बन्ध म और खोज करनी हागा जिमस परम्परा जीर अनमान के अतिरिक्त मुक्त आधार पर स्वामी जा की जन्मतिथि के सम्बन्ध म निश्चित निणय किया जा सक।

स्वामी रामानन्द जा का पुण्य तिथि भा अनिश्चित है। डा प्रियसतन स्वामी जा का जन्मतिथि विजय सवत १ ५६ स्वाकार का है किन्तु पुण्यतिथि के सम्बन्ध म व निश्चित मन व्यक्त न कर सके। डा प्रियसतन लिखा है— जहाँ हम प्राय निश्चित रूप स मान सत है कि रामानन्द का जन्म १२९९ ई० म हुआ था वहा इनकी मृत्यु तिथि कुछ अस्पष्ट है। लाक परम्परा है कि स्वामी रामानन्द की मृत्यु सवत १४६७ (१४१ ई) म हुई। इमसे उनका जीवन काल १११ वष निकलता है जा सम्भव नहा जान पता। स्वामी रामानन्द चौदहवा गताली इस्वी के अधिकतम सवतमान थ। एमी प्रकार का श्रावणकाल न अगत्य सहिता म दा गयी तिथि सवत १३५६ का स्वामी जा का जन्मतिथि माना है। सवत १४९१ ९२ म उनका दहावमान का अनुमान करत हुए उहान लिखा है— एम तेज-यज्ञ पूणयागवर मन्त्राचारा ब्रह्मनिष्ठ महात्मा का अवस्था सवा सौ वष का भा हा सकनी है और इन् सौ वष का भी। कवार एगम पापा जाति के आविभाव-का के विचार करत हुए यन् अनुमान लगाया जा सकता है कि स्वामी रामानन्द सवत १६९१ ९० तक जाविन थ। यदि हम उनका अवस्था १ वष का मान ले ना हम मरणा म उनका समय सवत १ ५६ म १६९१ ९० तक स्वाकार कर सकत है। डॉ बंधवाल न स्वामी जा का मृत्यु तिथि सवत १६ ७ विजयमा माना है। स्वामी

१—गनमानक्यापाय्या आफ रिगजिन एड एथिकम भाग १०।

—रामानन्द का हिला रचनाए ५० ४ ।

—हिला काव्य म निगण सम्प्रदाय ५० ६२।

रामानन्द का यही मूल नियम अगम्य संहिता मन्त्र गया है। इस नियम के स्वीकार करने में स्वामी रामानन्द का जीवन काठ १११ वर्ष का उद्गम है। स्वामी रामानन्द के द्वारा हीन का सत्य भक्तमाल में भाषित है। भाषाणम न विवादे कि स्वामी जा न बहुत वाक् मक् पराध धारण कर प्रगत जना का पार किया। रीति नरन गधराज मिने न भास्वामी रामानन्द के गायु हान का उल्लेख किया है। अतएव स्वामी रामानन्द को मृत्यु नियम मक्त्त १४६७ विक्रमा माना जा सकता है। किन्तु यह स्पष्ट है कि स्वामी रामानन्द का जन्म और मृत्यु नियमों मध्यकात्क अय मन्ता का भाति अनिदिवन है। इस सम्बन्ध में निम्नोक्त निष्पत्ति के विना वाक् की अपेक्षा है।

स्वामी रामानन्द के जीवन के सम्बन्ध में हमारा जानबूझा अत्यन्त अल्प है। कतिपय पारचात्य विद्वानों ने स्वाकार किया है कि स्वामी रामानन्द दक्षिणायन मवाल्कि के जनमारा व प्राज्ञान य और उनका जन्म मसूर म मलकांग नामक स्थान में हुआ था। १० फरवरी न भा आरम्भ में यह मन व्यक्त किया था कि दक्षिण के तमिऴ प्रान्त में रामानन्द मप्रणय म रामीनामना का विकास हुआ और रामानन्द उत्तर भारत में आकर राममन्त्र तथा रामायणना का प्रचार किया। वे अपने साथ अध्यात्म रामायण तथा अगत्य मनाऴण मवाऴ ग्रन्थ लाये। यह मफतुऴ न रामानन्द के गुरु गधवानन्द को दक्षिणात्य माना। १० प्रियसन न लिखा है कि स्वामी रामानन्द के दक्षिणात्य होने का मायता कवल माराणय विद्वाना में मित्ना है।

१—अगम्य संहिता सम्पादक प० रामानारायण राम—

रामानन्दविरचनवत्परमवरयवारांग दुपम्यधराम्—(१६७ वि०)

त्यक्त्वायाधवमानस मुनि ततोवापान्तियावु जदलम ॥

पममागवत विमुक्तिपत्रक विषम्यज्ञावयव ॥

रामानन्द मुनिवृत्तममममन् साकतलाक परम ॥

२—भक्तमाल रामरमिकावली—

वप मन्तगत औ तन गगथा। परमारथ अजि आर न मान्या।

तामु प्रभाव विस्ति चद्रु पाहा। भरत त्वण का जगन्त नाहा ॥

१—नि मित गिलाजत भाग ६ प० १००।

४—जन्म आरम्भ रामानन्द के विद्वानों लिखकर आक इत्यादि पृ० २६, नि हिम्माकर पाजागन आक रामानन्द १९२२।

५—२० आर० ए० एम० प० ६९।

रामानन्द आशय हुआ। रामानुजाचार्य का पुण्यतिथि मवत ११०६ म माना जाता है। रामानुजाचार्य जीर स्वामी रामानन्द क बाब लगनग २३ गो वर्षों का उचित मानकर द्वा० वर्षवात् न मवत् १ ६ म स्वामी रामानन्द की जन्मतिथि स्वाकार की है। महाराष्ट्र क दा सन्त त्रिगयन और नामस्व स्वामा रामानन्द क पूर्ववर्ती मान जात है। त्रिगयन का जन्म विश्वम मवत १ २६ म तथा नामस्व का जावन कात् मवत १ २६ १४०७ माना जाता है। स्वामा रामानन्द का सम्प्रदाय म माय तिथि स्वाकार करन म इत मयतप्या का मगनि वत् जाता है। सम्प्रदाय म माय तिथि मवत १ ५६ मामायत विश्वमनीय माना जाना चाहिय। श्रुता जवय है कि म्मम्बघ म जीर स्वाज करनी गगा जिमम परम्परा और जनमान क अनिगिका म्म आधार पर स्वामा जा का जन्मतिथि क म्मम्बघ म निश्चित निणय किया जा मव।

स्वामा रामानन्द जा का पुष्य तिथि ना अनिश्चित है। १।० प्रियमन न स्वामा जा का जन्मतिथि विश्वम मवत १ ५६ स्वामा का है किन्तु पुष्यतिथि क म्मम्बघ म व निश्चित मन व्यक्त नहा कर मव। डा प्रियमन न शिवा है—जहा म्मम्बघ निश्चित रूप म मान मन्त है कि रामानन्द का जन्म १२९९ २० म हुआ था वहाँ तककी मत्यु तिथि कुछ जम्पट है। लाक परम्परा है कि स्वामा रामानन्द की मत्यु मवत १४६७ (१४१ ई) म म्मम्बघ। इसम उनका जावन कात् १११ वष निकन्ता है जा म्मम्बघ नहा जान पन्ता। स्वामा रामानन्द चौहवा गताला इन्वी क अधिकाग मवतमान थ। म्मी प्रवार डा ऋष्यगल न जगत्स्य संहिता म दो गया तिथि मवत १३५६ का स्वामा जा की जन्मतिथि माना है। सवत १४९१ ९२ म उनक दहावमान का अनुमान करत हुए उन्नि शिवा है—एम तज-मज पूणयागकर म्मम्बघारा श्रहानिष्ठ महात्मा का जवस्था मवा मौ वष की भा हा मकती है जीर डत् सौ वष का भी। कवार रत्नम पापा आत्ति क जाविभाव-कात् का विचार करत हुए यह अनुमान गगाया जा सकता है कि स्वामा रामानन्द सवत १४०१ ९० तक जीवित थ। यदि हम उनका अवस्था १ ५ ५६ वष का मान ले ता हम सरलता म उनका ममय मवत १ ५६ म १४९१ ९२ तक स्वाकार कर मकत है। डा यथवात् न स्वामा जा का मत्यु तिथि मवत १६६७ विश्वमा माना है। स्वामा

१—गनमात्रवापात्रिया आफ रिगजत एड एथिकम भाग १ ।

२—रामानन्द की हिला रचनाए प ४ ।

—हिला बाव्य म निगण सम्प्रदाय प ६२।

रामानन्द का यह मृत्यु तिथि अगत्य महिमा मदा गया है।' इम तिथि क स्वाकार कर रन स स्वामा रामानन्द का जावन काल १११ वष का ठहरता है। स्वामा रामानन्द क षाया नु हान का माथ्य भक्तमाल म भा मिलता है। नाभागमन लिखा ह कि स्वामा जा न वत्न काल तक गरार धारण कर प्रणन जना का पार किया। रावा नरग रघुराज मिह न भा स्वामा रामानन्द क षाया नु होने का उल्लख किया है।' अतएव स्वामा रामानन्द का मृत्यु तिथि सवत १४६७ विक्रमा माता जा सकती है। किनु यह स्पष्ट है कि स्वामी रामानन्द का जम और मृत्यु तिथिया मध्यका क अय मन्ता का भाति अनिश्चन है इम सम्बन्ध म निणयात्मक निष्पप क लिए खाज का अपन्या है।

स्वामा रामानन्द क जावन क सम्बन्ध म हमारा जानकारा अत्यन्त अल्प । कतिपय पाश्चात्य विद्वाना न स्वीकार किया है कि स्वामा रामानन्द दक्षिणात्य थ। मवाकिफ' क अनुमार व ब्राह्मण थ और उनका जम ममूर म मलकाण नामक म्यान म हुआ था। '१ फतुहर न भा आरम्भ म यह मत व्यक्त किया था कि दक्षिण क तमिल प्रान्त म रामावत सप्रथम म रामोपामता का विकास हुआ और रामा न उत्तर भाग म आकर राममत्र तथा रामापामता का प्रचार किया। व जपन माय अध्यात्म रामायण तथा अगत्य-मताण मवाण प्रथम भा लय। बाद म फतुहर न रामानन्द क गुरु राघवानन्द को दक्षिणात्य माना। '१० ग्रियमन न लिखा है कि स्वामी रामानन्द क तातिगात्य हान का मायता बवड मारापाय विद्वाना म मिता है।

१—अगत्य महिमा सम्पाक प० रामनारायण दाम—

श्राम विप्रमवत्परवरमवाराने दुपस्यवराम—(१४६७ वि०)

त्यस्वामाप्रमामर मुनि तायायातियाव ब्रवाम॥

धमभागवन विमक्तिपत्रक विषम्यजावपुव।

रामानन्द मुनिवस्ममममन साकतत्राक परम॥

२—भक्तमाल रामरमिकायण—

वष मन्तगत लौ तन राग्या । परमारय (जि और न भाख्या ।

तासु प्रभाव विन्ति चहु पाग । भरत खण्ड का जानन नाहा ॥

—ति गिय रिजाजत भाग ६ प० १००।

४—एन आउट गान आफ रि रिजीजत लिटरचर आफ इडिया प० ८

रि रिगारिक पाजागन आद रामानन्द १०२२।

५—जे० आर० ए एम० प० ८३।

श्रिया क विधान जावाय हजाराप्रमादि अथा भा स्वामा रामानन्द का श्रियागत मानन जान पस्त है। अथवा क नाम पर एत उक्ति प्रसिद्ध है। स्वामा रामानन्द का श्रियागत मानन का मायना नय । जायार जात पत्ता है। किन्तु उन उक्ति पर यह अर्थ स्पष्ट न। निरानता कि श्रियागत म अथवा भक्ति का अन्त नागत म प्रसार करन बा। स्वामा रामानन्दस्य श्रिया कथ। भा । १००० उक्त्या वाग उक्ति रामानन्दभाषण म श्रियन भक्ति शीर श्रिया क सम्प्रदाय पर श्रियागत पत्ता है। अथ जायार पर स्वामा रामानन्द का श्रियागत म कहा जा सक्ता।

साम्प्रदायिक मायना यह है कि स्वामा रामानन्द का जन्म प्रयाग म हुआ था। अगत्य मन्त्रिता म उल्लेख है कि स्वामा रामानन्द का जन्म प्रयाग म वायदुत्त ब्राह्मण परिवार म हुआ। अगत्य मन्त्रिता कहा मत का इ यथाशक्त श्रियमन व परमराम चतुर्वेदी रूपरत्न श्रिया विद्याना न स्वाकार विद्या। भविष्य पुराण म उक्त न रामानन्द का जन्म श्रिया म किन्तु उन विद्याना न स्वाकार नहा विद्या। अगत्य मन्त्रिता क अनुसार स्वामा रामानन्द क पिता पुत्र नन्दन थ शर नका माता मयाग्य देवा। अन्त नाम शारा श्रियत प्रमग पारिजात म रामानन्द का माता का नाम मया देवा दिया गया। प्रमग पारिजात का विद्याना न प्रामाणिक रचना स्वाकार विद्या। निवृत्ती है कि रामानन्द का श्रिया पूर्व नाम रामदत्त था। भक्तमाल क टीकाकार रूपरत्न जान यह मत यत किया है। अथवा पूर्वनाम रामभारता का उल्लेख। किन्तु प्राय माय मत यह है कि स्वामा रामानन्द का नाम आरम्भ म था रामानन्द था और वृष्णव नाम सत्कार क उपरांत भगवत सचक नाम जान क कारण उमम काइ पारवतन नहा हुआ।

अगत्य मन्त्रिता आदि मन्त्रा माभ्या स यह सिद्ध है कि रामानन्द क श्रिया गुरु स्वामी राघवानन्द था। स्वामा रामानन्द न स्वयं न रामानन्द

१—श्रिया साहित्य का भूमिका ३ ८७।

२—भक्ता श्रिया उपाय श्रिया रामानन्द।

परमश्रिया श्रिया न श्रिया नववृत्त।

—श्रिया श्रिया मां वां कथाय गता।

वचितामिन्मयाग्य श्रिया जाणता गता। ४८।

मान्य। अध्याय १।

पद्धति मगुं परम्परा दत्ते—ए राघवानंद का अपना गुण कहा है। अगस्त्य मन्त्रिण के अंतर्गत रामानंद न राघवानंद से सम्पन्न मात्र प्राप्त किया था। भक्तमात्र म नामात्मान न राघवानंद का रामानंद जो का मन्त्र दत्ताया है। अगस्त्य मन्त्रिण के अंतर्गत दत्ता त्रय का अवस्थ हान पर रामानंद जो स्वामी राघवानंद का पाप मय किया यमन करन लग जा साम्राज्य म पागलत पाकर उनम शिक्षा प्राप्त था। सम्प्रदाय म यत्र मत माय है। भविष्य पुराण म उक्त है कि मन्त्रिण सत्त्विक हान पर रामानंद स्वामी राघवानंद के पास गया था। एक विद्वान्ना यह भी है कि स्वामी रामानंद पहले सिमा गव स्यामी के शिष्य थे। एक दिन उनकी स्वामी राघवानंद से भेट हुई जिहान उह उनकी आमत मत्यु का सूचना वा जीर अपनी तरफ म लेकर बचामा भा। यह भा कहा जाता है कि गव स्यामी न स्वयं रामानंद का राघवानंद के पास भज दिया था। राघवानंद जा न उह समाधि म स्थित कर लिया नार इस प्रकार उनकी मत्यु टूट गयी। राम विद्वान्ना का का प्रमाणित आधार नही मिलता। स्वामी राघवानंद के सम्प्रदाय म काइ शिष्यिन सूचना नही मिलता। १० वषदा न कुटुम्बमय पूर्व उनके एक ग्रन्थ

१—रामानंद युवाभ्यालनिधिं श्वा राघवानन्दनम ।

श्रीमन्त भनिपुत्रं च हृद्ययानन्दं त्रियानन्दकम् ।

धामत मुनिरडराजनयनं तत्र मुनिं शिष्यम्—

एव शिष्यतनापानं जनकजा रामं मया मया । १० २ ।

२—आचार्य शिष्यायकतं बन्धुदातं पारगम् ।

श्री सम्प्रदाय श्रेष्ठं च तनाडारपदं सत् ११५।

विज्ञाय राघवानन्दं लब्ध्वा तस्मात् पटक्षरम् ।

रहस्यनयवाक्याथ तात्पयाथ च मन्त्रम ।

आचार्य लक्षणानि शिष्या य भाविष्यन्ति ११६॥

३—श्रीरामानुजायपद्धतिं प्रताप अर्चनि जमत ह्य विस्तरया ।

दवाचारानि म महामहिमा हृद्ययानन्दं ।

तस्य राघवानन्दं भयं भक्तन का मानया ।

पत्रावगम्य पथिवा बरायमि पागा स्थाइ ।

चारि वरनं श्रमं स्वयं वा भक्तिं तदा ।

नितां रामानन्दं प्रगच्छं विवमया दपु धरयो ।

श्री रामानुजपद्धतिं प्रताप अर्चनि जमत ह्य विस्तरया ।

—भक्तमात्र रूपक २५ प ८११

मिथ्यात पचमात्रा का पता नगाया था। यह ग्रन्थ अत्र प्रकाशित हुआ है। भाषा की दृष्टि से यह मामा-य-ल-य-क की रचना जान पड़ती है। हरभक्ति मिथ्याता ग्रन्थ में जगद रचयिता अनन्त स्वामी कह गये हैं। राघवानन्द का रामानुजकुलम्भव और उत्तर में आकर राममन्त्र का प्रचार करने वाला कहा गया है। १। फरुहर का यह जनमान सम्भवतः मरये है कि रामानन्द का सम्बन्ध दक्षिण की रामोत्तमानता से था किन्तु रामापामना का उत्तर में लाने वाले रामानन्द नया व्यक्ति उनका गुरु राघवानन्द थे। प० बल्लभ उपाध्याय ने इसका समर्थन करते हुए लिखा है—शक्ति भारत से लाकर उत्तर भारत में विष्णु भक्ति के प्रधान प्रचारक स्वामी रामानन्द जी माने जाते हैं परन्तु मरी दृष्टि में यह गौरव उनके गुरु स्वामी राघवानन्द का ही देना सबसे उचित है। राघवानन्द जो न दक्षिण तथा उत्तर भारत के भक्ति आन्दोलन के संयोजक व्यक्ति हैं। मध्यकालीन धार्मिक आन्दोलन के इतिहास का परिचय स्वामी राघवानन्द जी के परिचय के बिना कदापि पूरा नहीं हो सकता। यह रामानुज जी के सम्प्रदाय के महारत्ना तथा योगविद्या में पारंगत पंडित माने जाते थे। उनकी जीवनी अभी तक अधकाररूप में ही है। हम इतना ही जानते हैं कि यह काशी के पचमगा घाट पर निवास करते थे और यही उत्तमान रामानन्द स्वामी का अपना मन्त्र गिष्य बनाया था। स्वामी रामानन्द के गिरनार पर्वत पर तपस्या करने तथा अन्तिया के ज्यातिमठ में ब्रह्मचारी रहकर अध्ययन करने के सम्बन्ध में न किस्कोती मित्रता है किन्तु एक ही वाई प्रामाणिक आधार नहीं है।

एक सम्बन्धपूर्ण विद्वन्मता राघवानन्द और रामानन्द में मतभेद के सम्बन्ध में है। रामानन्दाचार्य ने भक्ति के क्षेत्र में उदारमन्य प्रकट किया था और प्रपत्ति का माग करने के लिए खाते लिया था। किन्तु सम्प्रदाय में जात पान का भेद चला जाता था और स्वामी राघवानन्द भी इस मानते थे। स्वामी रामानन्द का भक्ति के क्षेत्र में भेदभाव अभाव था। गिष्य को अधिक उत्तार देकर स्वामी राघवानन्द ने उह अन्त सम्प्रदाय चरण का अनन्त दे ददा। रामानन्द ने समाजाति के गंगा की दीक्षा दी। कुछ गंगा के अनुसार तायाटन के बाद गन्त पर रामानन्द का अपना नाय भाजन कराने में गुरुभाइया को आपत्ति हुई क्योंकि उनका विचार था कि याना के समय छुआछूत सम्बन्धी मर्यादा का रामानन्द जान पालन न किया होगा। इस सम्भवतः राघवानन्द ने भी स्वान्तर

१—द्वय श्रीराघवाचार्य रामानुजकुलम्भव ।

याम्यादुत्तरमागत्य राममन्त्रप्रचारकम् । हरिभक्तिसिधुवलामत चौयातरम् ।

२—द्वय प्रसाद उपाध्याय भागवत सम्प्रदाय प २४४ ४५ ।

किया और गिष्य का प्रतिभांगाली जान कर उह अलग सम्प्रदाय चलान की अनुमति
 थी। डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भा गुरु गिष्य मतभेद का उल्लेख किया —
 रामानन्द के गुरु का नाम राघवानन्द था। किन्ता अनुग्रामन सम्प्रदाय विषय पर
 गुरु म मतभेद ही जान कर कारण उहान म त्याग लिया और उत्तर भारत का जा
 कर आय। मठ मामूला सम्प्रदाय न था। तना प्रती सम्पत्ति का जा मह
 ही त्याग सकता था उसकी स्वतंत्र चिन्ता किन्ता का अन्त्य सहज ही लगाया जा
 सकता है। मच पूछा जाय तो मध्य युग का समग्र स्वाधीन चिन्ता के गुरु रामानन्द
 ही थे।^१ गुरु से मतभेद की इस किंवदन्ती क सत्रय म अभा तक काइ विद्वन्मनाय
 सामग्रा नही मिल सकी है। स्वामी रामानन्द न तायाटन तथा सम्प्रदाय मगटन
 क उद्देश्य स दश म विभिन्न स्थाना का यात्रा का हागा और इन सम्बन्ध म उहान
 तत्कालीन परिस्थितिया पर विचार किया हागा। इन यात्राया का याग उनका
 दृष्टिकोण उगार बनाने म अवश्य है। जगन्मय सहिता म रामानन्द की यात्राया
 का उल्लेख किया गया है।^२ भविष्य पुराण म अथाध्याय म मुसलमान का
 हिन्दुता का स्वामी रामानन्द द्वारा फिर स वल्लभ बनाय जान का उल्लेख है।^३

१—हिन्दी साहित्य का भूमिका प० ४७।

२—गिष्यार्त्ताभि श्रीमानधनरत्नमित्रिम।

सूर्योत्पत्तिमित्य यथा विष्णु प्रनापवान।

विराजमानस्मनन पयटनवनामिमाम।

द्वारवान्पि तीर्थेषु तत्र तत्र जगत्गम्।

विष्णो जित्वरोवा श्रुतिम्मन्त्रिममत्सियत्।

विपरीतान्बन्धाकुवन गिष्याचनानय।

पडक्षर मन्त्रराजन्नेभ्यश्चापत्तिमुनि।

मन्त्राथश्रावयन्त्रित्य मन्त्रनस्नरुषामित।

जाममुद्र चतुर्भिः विचरन् धमन्त्यर।

वत्ता व वदृषा ऋक रामाभिरलमुतमम्।

—अगम्य सहिता पृ० ५३६ ६।

३—भविष्य पुराण अध्याय २१।

मच्छास्त वणवाचामन् रामानन्द प्रभावन।

मयागित्वात्त त यथा अथाध्याया वभूविरे।

वत्त च तुलसी माता जिह्वा राममयी कृता।

भात्त त्रिभूत्त चिन्त च चत खनत्तगभवत्।

प्रायः सभी माय्या में मिद्ध ३ कि स्वामी रामानन्द का वचन कागा में पचगंगाघाट पर था। यह मन्त्र आज भी अवगण रूप में बतमान है। मगलमाता का नामन मन्त्र का ध्वस्त कर दिया गया था। मन्त्र कारण यहाँ का प्राचीन नामग्री सुरक्षित नहीं रह सका।

नाभादास जी ने भक्तमात्र में स्वामी रामानन्द का प्रथम प्रसंग लिख्य किया है जोर इनमें सम्बंध में विवरण भी प्रस्तुत किया है। नाभादास जी ने अतः रामानन्द के ये लिख्य व—जनानन्द का नाम सुवानन्द सुरसुरानन्द पद्मावता नरहरिणन्द पापा भवानन्द राम घना सन जीर सुरसुरा। ये नाम जगत्स्य सहिता आदि मन्त्रदायक प्रामाणिक श्रुति में भी मिलते हैं। भक्तमात्र में प्रस्तुत विवरण को नहीं विद्वानों ने प्रामाणिक माना है। पिछले कुछ वर्षों में की गयी खाजक आधार पर फिर इन लिख्य का एक समय में बतमान हुआ तथा स्वामी रामानन्द का लिख्य हान पर शक प्रकट की गया है। भक्तमात्रानन्दों का प्रश्न कबीर सन घना पापा आर रामस के सम्बंध में उत्पन्न हुआ है। इन सम्बंध में सत साहित्य के विद्वानों पर रामानन्द चारोंपटों ने अपना मत व्यक्त किया है। उन्होंने लिखा है—कबीर सन घना पापा आर रामस इन पाँच व्यक्तियों में से कदाचित् किसी ने भी स्पष्ट रूप से रामानन्द का अपना गुरु स्वीकार नहीं किया है और जाम से सभा ने उनका नाम तक नहीं लिया है। वन से कम पीपा जी ने अपने का कबीर साहब द्वारा तथा घना ने रामानन्द कबीर साहब रामस तथा मेन नाम की कथाओं द्वारा प्रभावित शैली स्वीकार किया है। सम्भव है कि उक्त सभी सत एक ही समय जीर एक ही साथ एसी स्थिति में बतमान भी न रहें होंगे जिसे उनका स्वामी रामानन्द का लिख्य आर आपस में गुरुभावना सिद्ध किया जा सके। मन्त्र यग के महात्माओं का रचनाओं के प्रामाणिक संस्करण संपादन करने का काम अभी शेष है। जब तक इन महात्माओं का

१—श्री रामानन्द रघनाथ ज्या दुतिय संतु जगतनर किया।

जनानन्द कबीर सुवा सुरसुरा पद्मावति नरहरि।

पीपा भवानन्द राम घना सन सुरसुर का धरहरि।

श्री लिख्य प्रथिय एक त एक जागर।

विमगद साधार सर्वानन्द देया के जागर।

दहुन का बाय धारि के प्रणत जनन को पार लिया।

श्री रामानन्द रघनाथ या दुतिय सन जगतनर किया।—भक्तमात्र ६।

—उत्तरा भारत का सत परम्परा १ २२४।

वृत्तियां क प्रामाणिक सम्करण उपर्युक्त नही हान जार उनके बारे म और जान
 कारा नही हाता तत्र तत्र इस सम्बन्ध म कुछ निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता ।
 परम्परा जबश्य इनके रामानन्द स्वामी क गिष्य हान क पक्ष म है जार यह परम्परा
 प्राचीन ह यह हम देख चुके ह । इन महात्माओं न भूल है स्पष्ट गता म रामानन्द
 का अपना गुरु न घापित किया हा किन्तु उनकी रचनाओं म स्वामी रामानन्द
 क मिथ्यात्त उनका उत्तर दृष्टिकाण स्पष्टत दृष्टिगोचर होता है । डॉ० राम
 कुमार वर्मा न इस सम्प्रदाय म अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया ह— यद्यपि सत्त
 सम्प्रदाय नाथ सम्प्रदाय के विकास की एक स्वतंत्र कड़ी है और योग का अभ्यास
 ही उसकी साधना का अंग बन गया था तथापि इस युग म भक्ति की जा धारा
 उत्तर भारत म लहरा उठी थी वह सत्त सम्प्रदाय की साधना का अंग बन कर
 रही । यही नही भक्ति का महत्व दत्तना क गया था कि योग की कष्टसाध्य
 क्रियाएँ सामान्य क लिए साधना क अतगत रह गयी थी । एकमात्र भक्ति और
 उसके अतगत प्रेम की विश्वासमयी अनुभूति ही साधना की प्रमुख मायता बन
 गया था । रामानन्द क प्रभाव स राम जार उनकी भक्ति का प्रभाव इतना अधिक
 था कि सत्त सम्प्रदाय म भी राम और उनका भक्ति का रूप स्वीकार किया गया ।
 यह बात दूसरा ह कि राम का नाम ही सत्त सम्प्रदाय म माय हुआ राम का
 यकित्व नना । तत्कालीन परिस्थितिया का चर्चा करत हुए डॉ० वर्मा न
 लिया है— परम्पराओं क उचित सचयन तथा परिस्थितिया की प्रेरणा म धर्म
 एसा रूप खोज रहा था कि वह कब आचार्यों का वाणी म भीमित न रहकर
 जन-जावन की व्यावहारिकता म उतर सके और एसा रूप ग्रहण कर कि वह जय
 धर्मो क प्रसार म समानान्तर बहत हुए जनता रूप सुरक्षित रख सके । वह रूप
 महज जार स्वाभाविक हा तथा अपना विचारधारा म मत्स्य स दतना प्रखर हा
 कि विविध ढंग आर विचार वाल व्यक्ति अधिक स अधिक सख्या म उस स्वीकार
 कर सके जार उस अपने जीवन का अंग बना ले । स्वामी रामानन्द न एसा
 परिस्थितियाँ उत्पन्न करन म धर्म का बहुत बनी मुविधा द दी । उहान प्रमुख
 रूप म धारत गिष्य बनाय—अनन्तानन्द कनार मुखा मुरमुरा पद्मवति
 नरहरि पापा भवानन्द राम, घना सन मुरमुर का घरहरि । (भक्तमाल) ।
 इन गिष्या स कनार पापा राम घना जार मन सन्त जार कवि जाना एसा म
 प्रसिद्ध ह—इतम कनार जषणी थ । अधिकांश गिष्य समाज क निम्नवर्ग म स
 थ । अधिकांश गिष्या का साम्राज्य गान नहीं क बराबर या किन्तु जा जावर क
 अनुभव नार गषयां म जाकिन हा उठे थ । य धर्म का एसा रूप सक्ते थ जिनम
 समाज क निम्न स निम्न स्तर क आग विश्वास प्रवण बन सकते थ जार जन

गीतान्त म धम के मूल्यांकन की प्रतिष्ठा कर मजत थे। एक बात और भी थी कि स्वामी रामानन्द जी की धार्मिक दृष्टि में जिन उपायों से कि जिनके अर्थ गिण्या का स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाए जाने का पूरा हट्ट न था था। यह आवश्यकता थी कि उपाय गिण्या मातागणामना में ही विद्यमान रहे। गिण्या के लिए यथावश्यक था कि धर्म के वास्तविक मूल्यों का हस्तगत कर के और भक्ति का मूल्य जन भूति प्राप्त कर के। रामानन्द ने जिन गिण्या का भक्ति में प्रतिष्ठा किया व अपना विचार निष्ठा में स्वतंत्र थे। परम्परा और यग के प्रभाव का उन्मूलन व सगुण और विगण उपासना के सन्निवेश पर मजत थे। यह अवश्य स्पष्ट है कि प्रमाण उनका गुणाव निगणोपासना का और हाता जा गया था। तब वद्वार के अतिरिक्त सन घना पाप और रदाम विगण प्रसिद्ध थे। गिण्या के अर्थ का विद्वान परम्परा तथा नाभासम के भाष्य पर स्वामी रामानन्द के प्रमाण द्वारा गिण्या की सूचा का स्वाकार करत है। मध्य यग के महाभाष्या के अर्थ का के सम्बन्ध में निश्चिन्त मामग्री का अभाव है। जब तक पूणत विगणताय प्रमाण न मिल जाय तब तक सुनिश्चित स चला जा रहा परम्परागत माया का ही स्वीकार करना उचित होगा। अतएव नाभादाम न द्वारा भक्तभाष्य में ही गया स्वामी रामानन्द के गिण्या का सूचा का प्रामाणिक माना जाता चाहिए।

सम्प्रदाय और चरित्र—वर्णन सम्प्रदाय के आचार्य रामानन्द आचार्य न दक्षिण के भक्ति आन्दोलन का गाम्नाय आधार प्रदान किया और विष्णु का उपासना का प्रचार किया। जवनारा म उद्वेग लेखानारायण को अपना उष्टव स्वाकार किया। इसमें साथ साथ अन्य अवतारों की उपासना भी भक्त लोग श्रद्धालुओं के लिए करत थे। कृष्ण की उपासना का भी प्रचार हुआ था। जन साय रण में रामोपासना का प्रचार करने वाले आचार्य हुए स्वामी रामानन्द। रामानन्द सम्प्रदाय के साधुओं का वरागी कहा जाता है। इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत तपसा गान्ध के साथ जवन को अवमूलन भी कहते हैं। रामानन्दी साधुओं का मुक्त मग्य है। स्वामी रामानन्द के वाक्य उनके गिण्या में विभिन्न स्थानों में सम्प्रदाय का प्रचार किया। काशी में पचगंगा घाट में रह कर उनका गिण्या अन्तर्गत न सम्प्रदाय का प्रचार किया। अन्तर्गत की गिण्या परम्परा राजस्थान तथा गुजरात में बहुत फला और अनेक साधु-मता न इन प्रथा में गमांगना का प्रचार किया।

स्वामी रामानन्द के महान व्यक्तित्व के सम्बन्ध में नाभादास का पामाणिक माध्य उपलब्ध है। नाभादास जानते हैं कि प्रयाग पुरातन राम का नाभादास का व्यापक करण वास्तविकता है। और कहा कि उन्होंने श्री राम का नाभादास प्राणिया के उद्धार के लिए दूसरा मनु (भक्ति) तैयार कर लिया। स्वामी रामानन्द के अनेक प्रतिभागाला लोक व्यापक करण वास्तविकता गिप्य व जा दगाया भक्ति के मन्त्र थे। स्वामी रामानन्द लक्षणाएँ तब जावित रहे और उन्होंने भक्तवत्तना का उद्धार किया। नाभादास जानते हैं स्वामी रामानन्द के गिप्या का जा भूची दा है उमसे रामानन्द के उत्तर दृष्टिवाण का परिचय मिलता है। उन्होंने मभा जाति के लोया को अपना गिप्य बनाया और राममत्र की दाया दी। समाज के विभिन्न वर्गों में ग्रहण इन मयावा गिप्या न अपन समय में भक्ति का व्यापक प्रचार किया। भक्ति-मत्र में पदार्थित लागा के ममान परिवार की प्रतिष्ठा हो गयी और इस प्रकार उनके व्यापक का माग प्रगस्त हो गया। म्रिया के लिए भक्ति का माग खुल गया। पदावना और मुग्धुगी रामानन्द का दा प्रमुख गिप्याएँ थे। मच्छ हण हिन्दुना का उन्होंने पुन वणव बनाया। मध्य युग में तब हिन्दू धर्म मकाणताशा से वाविल हो रहा था उम समय अत्रचना स्वामी रामानन्द न धर्म म्प लागा की पुन वणव बना कर ग्रहण किया। उमसे स्वामी रामानन्द के महान आत्मवत्त उनका दत्ता एव दूरदर्शिता का परिचय मिलता है।

स्वामी रामानन्द समृत के पन्ति गाम्प्रतान मम्पत्र महात्मा थे। उन्होंने अपने गुरु स्वामी राधवानन्द से गिदा प्राप्त की थी गारना का अनुगीलन किया था और समस्त भारताय पानरागि का आत्ममान दिया था। उन्होंने अपने समय के समाज का सूक्ष्म अध्ययन किया था। दूर दूर तक यात्राएँ की थी और तत्वागत गामार्जित परिस्थितिया तथा समस्याया का मगर्भाति ममना था। युग की आर प्यताशा को ध्यान में म्मकर इन दूरदर्शी म्हात्मा न समाज की समस्याया के मम्बध में व्यरस्थापना और प्राणिया के बल्याण का माग निवाण। स्वामी रामानन्द मय्य-यग का समग्र स्वाधीन चिन्ता के गुरु थे। उनका दृष्टि योग अत्यन्त उत्तर था। मध्य-यग में भारताय समाज में गिधितना जा गया थी तथा उम विजयपन्त म्मगम का सामना करना पया। स्वामी रामानन्द ने समाज का गवत्तन वास्तविकता जानि पानि के वचना का गिधिल कर लिया और भक्ति के रूप में नवल जीवना गक्ति का मन्त्र कर भारताय समाज का गतिगाल बनाया गया मात्र उम प्रगति के माग पर अग्रसर किया। स्वामी राधवानन्द न चारि करण आश्रम मवनी का भक्ति दगाई था। भक्ति के प्रचार का यह म्ह

नीय काय स्वामी रामानन्द द्वारा विनाश रूप में सम्पन्न हुआ। स्वामी रामानन्द का प्रेरणा में प्रेरित भक्ति भागीरथी में अभिप्रेत था किन्तु स्वामी रामानन्द ने भी प्रेरित किया। भक्ति का मार्ग समस्त लिए उन्मुक्त हो गया। समस्त समाज और सबके सुख का ही प्रयत्न करने वाली यह अवस्था जो स्वामी रामानन्द द्वारा रचित कहा जाता है रामानन्द विज्ञान ही गयी जानि पानि पूछे नहिं का हरि का भज गो हरि का हाई। स्वामी रामानन्द ने उपनिषद् पद्धति का स्वागत भी स्वीकार की। रामानन्द का उद्देश्य रामानन्द का उद्देश्य रामानन्द का उद्देश्य उपयुक्त ममता और दया का साथ रामानन्द का प्रचार किया। स्वामी रामानन्द का व्यक्तित्व का सम्प्रदाय का नाम रहने का समकालीन फरीद मौलाना रणो दुर्लभ न तद्वशीर तुक फकरा म चचा की है और उह तेज पज और पूण यागवर बताया है।

स्वामी रामानन्द को अपने मतवाद का प्रचार जो साधारण में करना जमान था। रामानन्द स्वयंमन्त्र के पण्डित थे किन्तु उन्मान भाषा का सम्बन्ध में उन्मान दृष्टिकोण अपनाया और रामानन्द हिन्दू का माध्यम से भक्ति का प्रचार किया। हिन्दी भाषा के प्रचार का श्रेय स्वामी रामानन्द को है। प्राचा का नाम मन्त्रवाद और गालम बुद्ध ने अपने मत का प्रचार रामानन्द में किया था। स्वामी रामानन्द ने इसी प्रकार भक्ति जागृत्वन का प्रचार के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग किया। जागृत्वन का नाम भाषा में अतिथीय भक्ति मीथ्य सम्पन्न भक्ति साहित्य की रचना है। हिन्दी का माध्यम अपनाते रामानन्द सम्प्रदाय का सत जनसाधारण का हृदय अपनी जागृत्वन कर रहे और रामानन्द का प्रचार उत्तर भारत के कान काने में कर रहे। प वक्तव्य उपाध्याय ने किया है—

हिन्दी का घम भाषा मानने से रामानन्द की वणवा ने जनसाधारण तक ही अपने उपनिषद् को नही पचाया प्रयत्न उस भारतवर्ष का गवभौम तथा मानजनिक भाषा भी बनाया। रामानन्द की वणवा रामानन्द यात्रा का प्रयोग में ममत्र भाग में घूमते थे। जहाँ जहाँ वे जाते थे वही अपने भजना तथा उपनिषद् का प्रचार किया। भाषा का प्रचार करते थे। मन्त्रवाद तो यह है कि वणवा की उपासना बिना बिना परिश्रम के हिन्दी भाषा मन्त्रवाद का धार्मिक शक्ति तथा जागृत्वन को माध्यम मानने से धार्मिक जगत में गवत्र ममभावने प्राप्त तथा मन्त्रवाद है। स्वामी रामानन्द का विषय ममत्र न हिन्दी का अपनाया। उन्मान प्रेरणा पाकर जि

१—कल्याण सताक।

२—ग वक्तव्य उपाध्याय भागवत सम्प्रदाय प २८ ८६।

भक्तों ने अपने अनुभूत मत्स्य को वाष्पावद्ध किया प्रायः उन मन्त्रों ने शिवाभाषा का प्रयोग किया। परस्वरूप मध्ययुगान् प्रगतिगाम् चिन्तनधारा का ध्रष्टतम विमूर्ति हिन्दाभाषा का मित्र सका।^१ स्वामी रामानन्द के नाम से कुछ हिन्दा रचनाएँ मिलती हैं। उन पर अत्र विचार किया जायगा।

हिन्दी रचनाएँ—स्वामी रामानन्द के नाम पर प्रचलित ग्रन्थों में वष्णवमतात्र भास्कर और श्री रामाचन पद्धति इनका मन्वृत ग्रन्थों को विद्वानों ने उनका प्रामाणिक रचना स्वीकार किया है। उन ग्रन्थों में स्वामी रामानन्द ने अपने दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। वष्णवमतात्र भास्कर में उन्होंने अपने गिष्य सुरसुरानन्द के दस प्रश्नों के उत्तर दिये हैं। प्रश्नों के विषय हैं—नव जाप्य मन्त्र इच्छस्वरूप मुक्ति-साधन उत्तम धर्म वष्णवा के भेद निवाम स्वान तथा काश्चिद् और माण के साधन। श्री रामाचन पद्धति में उन्होंने भगवान् राम तथा गुरु महिष पूजाचार्यों का स्मरण करने हुए श्री रामचन्द्र की पूजा विधि का वर्णन किया है। काव्यगुण युक्त अलिप्त सस्त्रुत में निरुद्ध इनका ग्रन्थों में स्वामी रामानन्द के मन का स्पष्ट स्वरूप मित्त जाता है।

स्वामी रामानन्द तत्त्वतः विगिष्टान्तवात् ५। उन्होंने तत्त्ववात् रामानुजाचार्य से ग्रहण किया किन्तु उपासना पद्धति अपनी विधि रचा। रामानन्द सम्प्रदाय रामानुज सम्प्रदाय के अन्तर्गत माना भी जाता था। इधर कुछ वर्षों में उन स्वतंत्र सम्प्रदाय सिद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है। स्वामी रामानन्द ने राम का हा व्रह्म माना है। वे उहाँ के सुगाम्बुन का स्मरण करते हैं। रामचन्द्र धामान अर्घ्य गरण्य है विधि भद्र-यागिजन-वदित है। वे राम गुणरहित मसार के हेतु सग्नः हैं।^२ विष्णु ने राम के रूप में अन्तार किया था। बलात्कृत मन्त्र विस्तार करने वाले दार्शनिक राम थे। रामानन्द सात्त्विकमहिम्ना दार्शनिक राम का गन्त स्मरण करते हैं। अकिञ्चन व्यक्ति भी उनका गरण म जाकर उनकी कृपा प्राप्त कर सकता है। उनका कृपा प्राप्ति में किमा प्रसारण वचन उहाँ से ब्रह्म गन्तु लिए सुम्भ है। अनुज पापों और मातामहिम्ना गाम्बुन की सेवा करने प्राणिया का करना चाहिए।^३

स्वामी रामानन्द ने रामभक्ति का व्यापक प्रचार किया। भक्ति का उन्होंने माण के रूप में माना और उन अर्थविक्रम मन्त्र प्रयोग किया। उनका

१—श्री वष्णु नारायण श्रीवासन्वद रामानन्द सम्प्रदाय पृ० ८८६।

२—वष्णवमतात्र भास्कर पृ० १०८।

—वहा पृ० ८९।

अनुसार पर गहनारो से मगूट होकर बलान श्रम का जर्तनग धारण का भक्ति करनी चाहिए। स्वामी रामानन्द न जिम भक्ति का उपरग श्रिया वह महर्षिया श्रया प्रवर्तित भागना द्वारा निर्दिष्ट भक्ति है। उहारा भागश्रानमाश्रित नवना भक्ति का उपरग श्रिया है। भगवान का शरण म जाना प्रपति श्रमना मगूट जग है। भगवान का श्रया प्राप्त करन म उनका शरण म जान क मभा जश्रियाग है। इमम विभी प्रकार का बधन नही श्रियाकश्रयाप का जाबश्रयता नहा है। स्वामी रामानन्द न दास्य भक्ति पर विशेष यत्र दिया। उहाने भक्ति का सर्वोत्कृष्ट तत्व माना है और यत्र स्पष्ट कर श्रिया है कि इमके अश्रिकारी प्राणा मान है।

स्वामी रामानन्द क नाम पर मितन बाग श्रिणी रचनाए अत्यन विवाश्र प्रशन है। शारम्भ म स्वामी रामानन्द की रचनाआ का विद्वाना का पना नहा था विद्वानै ने रामानन्द के श्रिसी श्रय की सूचना नहा दी। फरहर न जनमान श्रिया है कि रामानन्द अध्यात्म रामायण और जगस्य-सुतीश्रण सवाश्र अपन साय दश्रण स श्रय थे। मकाश्रिक का आश्रिश्रय म सग्रहात एक पत्र रामानन्द का मितन था जिस उहान रामानन्द कृत माना था। डॉ प्रियसन का स्वामी रामानन्द क कुछ पद मिते थे उहोने हनुमान-स्तुति का एक पत्र नागरी प्रचारिणी मभा पत्रिका म प्रकाशित भी कराया था। इम प्रकार हम दक्ते है कि श्रिणी माश्रिय क पाश्चात्य विद्वानो को रामानन्द की श्रिणी रचनाआ का कुछ पना नना था।

श्रिणी माश्रिय के भारतीय विद्वाना को भा शारम्भ म स्वामी रामानन्द क श्रया क सम्बन्ध मे सूचना प्राय नना थी। मिश्रबन्ध विनाद म रामरक्षा आर श्रान तिश्रक दो रचनाओ का उल्लेख है। य नागरी प्रचारिणी मभा का मोज मे मिली था। डॉ यामसुन्दर दास न अपन लेख—रामावत सम्प्रदाय—म हनुमान स्तुति सम्बन्धी रामानन्द का पत्र प्रकाशित कराया था। श्रम पत्र का डा प्रियसन न उनके पास भेजा था।

१—सर्वे प्रपतरधिकारिणामना शक्रा जक्रा जपि नित्य रगिण ।

नाश्रयन तत्रकुत्र बन्ध नो न चापिदाश्र नहि श्रद्धितापिवा ।

—बल्लभमताज भास्कर प० १७ ।

—श्रामानन्दभगवत सप्तम स्कन्ध ५ ।

२—एव एव विद्वान रिदाजस सक्रम आफ श्रिहूज प० ५७ ।

—ज आर ए एम श्रिकारिकश्रयाजीवन आफ रामानन्द प १८५ ९२ ।

६—श प्रियसन मानन वनाश्रयश्रय श्रिटरेचर आफ श्रिहुस्तान प० ७ ।

५—नागरी प्रचारिणा पत्रिका भाग ४ प २२७ ।

पिठर तीन दगावा म स्वामी रामानन्द क सम्बन्ध म जध्ययन का कुछ जतिक गति मिला है। आचार्य रामचन्द्र गुप्त न स्वामी रामानन्द क नाम स मिलन वाग्रथ्या की सबप्रथम ममाणा की। आचार्य गुप्त न रामरक्षा याग चित्तामणि तथा कुछ पत्र का उल्लेख किया किन्तु उहान तनमान-स्तुति मन्वधा पत्र का छोट कर गप का स्वामी जा की रचना स्वीकार नहा किया। डॉ० रामकुमार वर्मा न रामरक्षा का उल्लेख करत ए उस अप्रामाणिक माना।^१ डॉ० बधवा न उपरान्त रचनाजा के अतिरिक्त सिद्धांत पटल का उल्लेख किया था और इन रचनाजा का स्वामी जी की ही वृत्तिया माना। प० बल्लभ उपाध्याय न स्वामी रामानन्द क नाम स मित्र तान नयी रचनाजा का सूचना दा। य हैं—राममत्र याग ग्रंथ राम अष्टक और नान लीग। इसी प्रकार डॉ० माताप्रसाद गप्त न रामानन्द आत्म की सूचना दी।^२ इधर स्वामी रामानन्द तथा उनक सम्प्रदाय क मन्वध म डॉ० बदरा नारायण श्रीवास्तव न जध्ययन प्रस्तुत किया है।^३ उहान स्वामी रामानन्द क नाम स मिलन वागी रचनाजा पर विस्तारपूर्वक विचार किया है तथा उनकी प्रामाणिकता क सम्बन्ध म अपना मत व्यक्त किया है। मबत २०१२ म नागरा प्रचारिणी मभा स रामानन्द का हिन्दी रचनाए नामा ग्रंथ प्रकाशित किया गया। इस ग्रंथ म १० बधवाल गारा नाग साना म मवलिन रचनाए रक्खा गया है। कुछ रचनाए सभा मप्रहाय तथा पठित उदयशकर गायत्री क सग्रह स मवलिन का गया ह। इस प्रकार रामानन्द के नाम स मिलनवाला रचनाजा का यह प्रथम सग्रह है। इन सब ग्रंथा म स्वामी रामानन्द क नाम स अत्र तक मित्री रचनाएँ इस प्रकार हैं—

- १ रामरक्षा २ याग चित्तामणि चान तिलक ४ सिद्धान्त पत्र
- ५ ज्ञानगीता ६ जात्मवाच ७ मानसा सदा ८ भगति याग ग्रंथ
- ९ वशात विचार १० रामानन्द आत्म ११ रामअष्टक
- १२ राममत्र जाग ग्रंथ तथा १२ पत्र।

१—आचार्य गुप्त हिन्दी माहित्य का इतिहास प ११ १० ।

२—ग रामकुमार वर्मा हिन्दी माहित्य का आन्विकनात्मक इतिहास।

—ग बधवाल हिन्दी काय म निगण सम्प्रदाय प० २० ।

४—ग बल्लभ उपाध्याय भागत स सम्प्रदाय प० २७० २८४।

५—ग माताप्रसाद गप्त हिन्दी पुस्तक माहित्य प० २४१।

६—ग० बदरी नारायण श्रीवास्तव रामानन्द सम्प्रदाय प० ९९ १५४।

इस रचनाओं का सम्बन्ध म प्रियमान भिन्न विषय प्रकृत विना है। जहाँ तक प्रियमानों का अप्रामाणिक माना है। स्वामी रामानन्द का नाम म प्रियमानों रचनाओं का सम्बन्ध म वल माता प्रियाना है। जहाँ तक मन्नाय भाग्य और धारामाचन पदों का प्राण है। इन म म पुत्र रचनाओं सम्बन्ध की गणना प्रिय म ही प्रकृत है। इन रचनाओं का सम्बन्ध म नाच सभ्य म विचार किया जायगा।

१ रामरक्षा—यह २६ छन्दों को एक छन्दों-मा रचना है। सम्भवत रामरक्षा का बहुत प्रचार रना है। इसका जनक प्रियाना का नामा प्रचारिणा सभा की खाज म प्रियाना या जिनका उल्लेख सभा की खाज रिपोर्टों म किया गया है।^१ इसका आरम्भ म निरजन और गुरु का वचना की गई है। गुरु भाग म पाठ तथा पाठ द्वारा पाठ प्राप्ति का वचन है। रचना स्तत्र के रूप म पाठ का प्रियाना निर्मित जान पता है। डॉ० बंधुवाल का अनुमान—रामरक्षा का मन्त्र की रचना और बहुत प्रामाणिक जान पता है। आचार्य गुकठ न शान्त पूवक का स्तत्र रामरक्षा का अप्रामाणिक माना है।^२ का मानाप्रमाण गुप्त न रामरक्षा का स्वामी रामानन्द कृत नहीं माना है।^३ इसका कर्तृ और कर्मा का नाम भी जाना है। इस रामानन्द का रचना नहीं कहा जा सकता। डॉ० राम कुमार वमा और नागरी प्रचारिणी सभा की खाज रिपोर्टों के सम्पादन मिश्र बंधु और श्री हीराचन्द्र जन ने भी इस रामानन्द कृत नहीं माना है। रामरक्षा स्तत्र को जनविश्व रूप से स्वामी रामानन्द कृत नहीं कहा जा सकता अधिकांश विद्वानों का यही मत है।

२ योग चिन्तामणि—यह २३ छन्दों का रचना है। डॉ० बंधुवाल का अनुमान यह अध्यात्म ग्रन्थ है जिसका ताना भाग का समष्टि हुई है। आचार्य गुरु न इसकी कुछ पंक्तियाँ विकृत करके र भाग काया (गुरु) चला न जाना जाति उद्धत किया है और इस रचना कारणानन्द कृत नहीं माना है। इस रचना का भाग त्रिपय पाठ है। इसके छन्दों का एक पंक्ति यह है— कह रामानन्द सतगुरु त्या करि मित्रिया मत्य का गुरु सुन भाइ। इससे यह स्पष्ट है कि यह स्वामी रामानन्द का रचना नहीं है।

१—रामानन्द की हिन्या रचनाएँ प १७ ३२।

२—आचार्य गुरु हिन्या साहित्य का इतिहास प० १०२।

—हिन्या साहित्य चिन्ताय रण प ३ ५।

४—श्री रामकुमार वमा हिन्या साहित्य का आचार्य इतिहास प० ४८१।

५—खाज रिपोर्ट १९ ११ और १९१७ १९।

३ ज्ञान तिलक—यह ७४ छन्दों का रचना है। इसका उल्लेख राज गिरि १९१७ १० में किया गया है। इसका विषय याग है। यह स्वामी रामानन्द द्वारा बवार के प्रजापति के रूप में लिखा गया है। यह रचना स्वामी रामानन्द द्वारा नहीं है। इसका एक छन्द प्रचार है—जबरावर माहि बकमल्या बरम दाम बवार। गुरु रामानन्द के बदन पर मत्क कर मरीर। स्वामी जा तुम मनगुरु हम दासा । पूरे एक मयद का नव। करा कृपा कहा गम्ब। इसी प्रकार के चार भी स्थान पर रचना में मिलते हैं। इसमें स्पष्ट है कि स्वामी रामानन्द ने जन्म बलि विद्या और न इस लिखा है।

४ सिद्धांत पत्र—मिदाल पत्र तामा गायत्री का एक प्रमुख ग्रन्थ कहा जाता है और उसके लेख स्वामी रामानन्द प्रचार्य हैं। स्वामी रामानन्द के प्रसिद्ध कृष्णलाल पर्यहारा तथा उनके पिछे काष्ठास का परंपरा में याग का प्रथम रामानन्द सम्प्रदाय में हुआ। इन में तामा का पिछे ममुत्थाय का एक अलग गायत्री म्याग्नि का गयी जिन तपसा गात्रा कहा जाता है। इसमें याग माय का प्रमाण अधिक है। सिद्धांत पत्र की रचना जल्द निम्नवाटि का है। जिन माय में स्वामी रामानन्द का रचना नहीं सिद्ध होता। इसमें रामानन्द को बार बार गुरु स्वामी गति जादरमूचक गायत्री में मन्त्राधित किया गया है।

५ ज्ञानगाला—यह १२ छन्दों का रचना है। इसका विषय ज्ञान और बराह है। ज्ञानगाला सभा-संग्रह में सुरक्षित है। इसका एक प्रति श्री जय गुरु गायत्री के संग्रह में मिलता है। इसका भाषा पंजाबी पुत्र लिखे हुए मन्त्रा की भाषा जना है। जय तक और प्रमाण न मिले जाय इस अनिश्चित रूप में स्वामी रामानन्द की रचना नहीं कहा जा सकता।

६ आत्मवाच—आत्मवाच गद्य में है। यह रचना रामानन्द तीर अवि नामा की गोष्ठा के रूप में लिखा गयी है। भाषा का दृष्टि में यह बहुत परकी रचना जाना पता है।

७ मानसो सेवा—मानसा सेवा १ छन्दों का छन्द रचना है। मन्त्र

१—ज्ञानगीता के अन्तिम दो छन्द—

हे हरि तिन कृप रावारा चित्त गिरा मिरजणद्वारा।

मकर म हरि बह उवारा। निगलित मिमरा नाम मुगगा ॥१॥

नाम निबंवा मकर याग। रटा अपर घट हाय उराग।

रामानन्द ये बहै ममुताई। हरि मिमरायी जमगाय न जाद ॥१॥

ब्रह्म की भया विम प्रकार का नायक का रचना विषय है। रचना का कारण है जोर इस नामा रामानन्द कृत माना जा सकता है।

८ भगति नाम प्रथम—राम १८ का रचना है। राम निगमकार निरजन पूज प्रथम का भक्ति का विधि रचना का है। अन्तिम छन्द म रामानन्द का सम्बन्ध बना गया है जिगम जान पता है कि यह स्वामी रामानन्द का रचना नया है। —राह भगति अन्तिम है विरक्त पाठ भया। नाम दृष्टा न पाइय क रामानन्द मुह दब। १४।

९ वेदांत विचार—राम प्रथम की कवय मूचना मिली है। लम्बण किता अयाध्याय पुस्तकाय की सूचा म रामका उक्त रामानन्द क नाम स है। किन्तु रचना बड़ा उपलब्ध नहीं है।

१ रामानन्द जादव—रामानन्द प्रगाद गण न रामका मूचना हिंदा पुस्तक गाहित्य म रामानन्द क नाम स है। रचना प्रशासन अहमदाबाद स हुआ था। किन्तु जब यह उपलब्ध नहीं है। नाम म जान पता है कि उसम रामानन्द क उपलब्ध मग्रात हाग।

११ राम अष्टक—जाठ छन्द की यह रचना नागरा प्रचारिणी सभा क हस्तगत सख्या ९५१ त्रिपिका सवन १८६७ म संग्रहित है। इसम राम की स्तुति की गयी है। प्रत्यक्ष छन्द क अन्त म श्री राम जा पुरन ब्रह्म है आता है। राम रचना म रामका दहन रावण मारीच वध विभीषण का राजनित्य आदि रामचरित क रचना का सक्त है। यह अष्टक पाठ के लिए रचित जान पता है। यह कथाचित स्वामी रामानन्द कृत माना जा सकता है। किन्तु इसका जोर प्राचीन प्रतिय मित्र जाय तथा रामानन्द कृत हान क सम्बन्ध म निश्चित रूप स कुछ कहा जा सकता है।

१—मानसी सवा क अन्तिम दा छन्द—

जग पापाण भरम की सवा भू भटक नहीं मरना।

गनगर मर जगत बताइ तत्र भवसागर निरना ॥१२॥

बाहर भयम कब नहीं जाऊ अन्तर सवा जागा।

रामानन्द गगा निरभ आणा पारब्रह्म त्रिव जगौ ॥१३॥

—राम अष्टक क कुछ छन्द—

जवधपुरा निषधाम कहा नावट सरजू गग है।

दसरथ नदन अमुर गजन शाराम जीव पुरन ब्रह्म है ॥१॥

मय मीना भ्रात रामन धनुषधारी श्रीराम हैं।

१० राममंत्र योग प्रथ—यह आद्यभाषा पुस्तकालय मन्वालयन का बानी सम्प्रदाय है। स्वामी रामानन्द ८७० प० २ लिखित मन्वत १८७७ विन्दा। प्रस्तुत ग्रन्थ न केन जायनाया पुस्तकालय व मन्वत मन्वा है। रामानन्द का मन्मा का नाम है। जलिन उन्म स्वामी रामानन्द आर कवा का दाना भा का गवा है। यन् रचना रामानन्द कृत नया है। उ० दयवा न भा नम रामानन्द कृत नया माना था। जलिन उन्म मन्वा किये लय जलिन का रचना हाना मिड हा गता है।

१ पद्य—पद—स्वामी रामानन्द का नाम मन्व तक् कु उ पन् जि है। मन्म पन्म एक पन्म उ० प्रियमन का मिन्म था। जिनम स्वामी रामानन्द नहनमान का स्तुति की है। मन्म पन्म का मन्मि ग० राममुन्म राम क पाम नना जा नागरा प्रचारिणा पत्रिका (भाग ४) प ३ म प्रकाशित किया गया। आचार्य गन्म न मन्म पन्म का प्रामाणिक माना है। मन्म स्तुति का उ० प्रियमन ग० राममुन्म राम ग० दयवा ग० रामकुमार बमा जालि मभा विन्ना न रामानन्द उन्म माना है। मन्म प्रचार भा बगगा मन्मलय तथा नन मायन्म म पाया जाता है। किमा प्राचान हम्मन्म म प्रस्तुत मन्म का मन्म पन्म का सूचना नया मिन्म सका। मन्म विषय स्वामी रामानन्द का प्रामाणिक रचनाया म मन्म है। इम पन्म का स्वामी रामानन्द का रचना मानना उचित होगा।

चारकुट तपराक कहिय आराम जीव पुरन ब्रह्म है।०।
 ब्रह्मा विन्म महम नाग्न काणि अठामा दवना।
 इगान्त मनवाणि गावहा आराम जा पुरन ब्रह्म है।७।
 राम अस्तक कन्त नामु त्ति मय राक भाग छान।
 रामानन्द अवतार अवतु आराम जा पुरन ब्रह्म है।८।

१—राम मंत्र योग प्रथ—

जग पाया तूना मिगवा ऐमा घुनि म मुगति ममावा।१०।
 राम मन्म एमा विधि पाज जा वाइ पाज राम।
 मन्म क पन्म त रामानन्द जा हम पाया विमराम।२।
 रामानन्द कवा का मैं बन्धारा जाव।
 अगम अगाचर मम नहा त्ता बमाया गाव।२१।

२—हनुमान स्तुति—

आर्गि नात्र हनुमान लता का। दुष्ट दलन रघुनाथ का की॥
 जाय बन्म गन्म महि काय। राम भाग जाक मिमा न चाप॥

स्वामी रामानन्द का एक पत्र आदिग्रन्थ (मन्त्र १६ १) में मद्र ल ३।
 यत्र पत्र राणी नागरी प्रचारिणी मन्त्रा म गुरात्त मन्त्र १६ क एक स्तम्भ
 त्रिपिण्ड मन्त्रगा म भा ३ (नाम नगल जग पत्र मन्त्रा १ ८) तथा मन्त्रा
 मद्रहाय म गुरात्त एक जय स्तम्भ (मन्त्रा १६ ० त्रिपिका मन्त्र १३३१)
 म स्वामी रामानन्द क नाम म रिया गया ३। एम पत्र म वाय गया का व्यय
 वनाया गया है और जनम्य ब्रह्म का उपासना पर र्ण रिया गया ३। इम पत्र का
 भक्तार्थिक ने स्वामी रामानन्द कृत माना ३। यत्र म टा बधवाठ तथा कुट
 जय विद्याना न भी इम रामानन्द कृत माना। ग्रन्थ मात्र म मद्र ल ३। कारण
 कुट विद्याना न यह मत यन्त्र किंवा कि र्णम परिवर्तन वन्त्र कम हुए हाग और
 र्णमका मद्रह भा उच्च कोटि क भक्त का हान क कारण हा किया गया हागा। आदि
 ग्रन्थ का समय मन्त्र १६६१ ३ जा स्वामी रामानन्द की मत्व क र्णभग २० वष
 वाद पन्ता है। र्णम र्णवा जवधि म एक हा नाम क रचयिनाजा का अभिन्नमान

अजना सुत महा वन्दायक । माघ सन्त पर मदा मन्त्रायक ॥
 वाए भुजा सब जसुर सधारी । दन्ति भुजा नव मन उवारी ॥
 छिम्न धरनि म मडि परवा । पडि पता जमकातर तारया ॥
 आनि मजीवन प्राण उवारयो । महा सबन क भुजा उपारया ॥
 गाए पर कपि सुमिरा ताहा । हाह दयाठ दहु जम माहा ॥
 लका काट समुन्दर खाइ । जात पवन सुत वार न गाई ॥
 एक प्रजारि जसुर सज मारया । राजा राम जिनक काज सजारया ॥
 घटा ताल चालरा बाज । जगभग जानि अवधपुर छाज ॥
 जा हनमान जि का जारनि गाव । बसि बकुल परमपत्र पाव ॥
 एक विधम किया रघराइ । रामानन्द (स्वामी) जारता गाइ ॥
 मुर नर मुनि मद्र करहा आरता । ज ज ज हनमान लाठ का ॥

१—कहा जाय हा धरि लगा रग । भरा चिन्त न चन्त मन भयो अपग ॥
 तहा जाय तहा जन्त पमान । पूरि रट हरि मद्र समान ।
 वन्त मन्त मद्र मल जाइ । उहा जाय हरि र्ण न र्ण ॥
 एक वार मन भाया उमग । बसि चावा चन्त चारि ग ॥
 पूजन चाण ठा र्ण । सा व्रत वनाया पर जण म्ण ॥
 मनगु म बन्धारा तार । मक विल भ्रम जारे मार ॥
 रामानन्द र्णम एक ब्रह्म मर क एक मद्र वान् कानि र्णम् ॥२॥

२—मन्त्रार्थिक त्रि मित्त र्णिजन खण ६ प १ ५ ।

लिया जाना अमम्भव नहा। पर म निगण तब का वणन हानि क कारण यह जनमान किया गया कि कथाचिन्त इम पद क रचयिता स्वामी रामानन्द म भिन्न कर्त्त और नामाग्या मन्त रामानन्द रह हाय। ताचाय गवत् न इम पद का गमान् कृत् नहा माना ह। इम उद्धरण म स्पष्ट है कि ग्रथ माहव म उद्धृत नामा पद ना वणव भक्त रामानन्द क नही है और किसा गमान् क हा ता हा भक्त है। डा० वल्लरा नारायण श्रीवास्तव न भा आचाय गवत् क मत म महमति प्रकट की ह। आचाय गवत् का मत उचित जान पन्ता है।

रामानन्द के नाम सदा पर ता दया क पिण्य रज्जुप्रयामन अपन मन्वगा ग्रथ म दिय है। इत पदा का विषय नाम और बराम्य है। मन्वगा म सप्रहृत पहल पद म विषय मुव का निस्मारता वर्णित है और दूसर म स्वामी क सग रहकर सबक भक्त द्वारा अमन पान की चर्चा है। यह दाना पर भा आचि ग्रथ म सप्रहृत पर का काटि म रख जान चाहिण।

डा० बधवाल का रामानन्द क नाम सदा पद सवत १८५० क लिख एक ग्रह म प्रहृत म मिथ। इनम म महज मन्त म चिन्ति वमन वाला पर पुराहित हरि

१—आचाय गवत् हिता साहित्य का इतिहास प० ११।

२—डा० वल्लरा नारायण श्रीवास्तव रामानन्द सम्प्रदाय प० १८०।

३—हरि जिन जन्म वना पाया रे।

कहा भया अति मान ब्याइ घामद अवमति माया रे।

अति उत्तम तर दगि मन्वापी मरल कुमुम मूजा सया रे॥

मार्त्त पर पुत्र कलत्र विष सप अति मान धुनि धुनि राया रे।

मुमिग्न भजन माय की मगति अनगि मन मन्त न घाया रे॥

रामानन्द रतन जन्म पामे थापति पद वाह न जाया रे॥३॥

महज मन्त्र मन्त तन तात्ता। भगवन्त मगता एक विर धात्ता॥

मुक्ति मन्त्र जाप जपात्त। या मवग स्वामी मग रह्यात्त॥

अमत्त मवानिदि अत्त न पादत्त। पावन प्राण क्त्त अवात्ता॥

रामानन्द मित्रि मग रह्येत्त। जत्र गग रम तत्र लग पोवग॥४॥

४—नाम ना बरु र मयाग मर राम का नाव अचारा॥५॥

गत् चाग गत् पात्त। गत् माहि रही लपटात्त॥

गत् रती गत् भाटा चर्त्त। पाठ दुप पाव सात्त॥

गुरनानर राजा द्यात्त। नाना विधि क मय र्त्तत्त॥

ममा मुत्र वषा मय हात्त। ताया च मूत्त साई॥

नारायण जी के सं० १७४२ वं मप्रह म भी है। ज० बधराज ने यह आशान्त विषयक पत्र कटा है। पात-नारायण के इन पत्रों का स्वामी रामानन्द कृत ज्ञान सन्धि है।

ज० बधराज के जनमाल तिथि में रामानन्द का जन्म म कम एकात्र रचना और हाना चाहिए। उनका नाम के साथ एत जयान्त का जन्म सम्बन्ध है—

ज्ञानि पानि पूछ नहिं काइ। हरिना भज मा हरि का हाइ।

उपरोक्त रचनाओं में म विना म भा यह नया पाया जाता है। कुछ और मन्त्रों का रचनाओं में इससे छाप मिलता है। दादू के गिष्य बधना न रहा है— हरि का भज सा हरि का हाइ। नाच ऊच जतरनी काइ। (बखना का वाणा प १५६ ११९)। इस प्रकार मन्त्रों के भक्ति पद्धति में लिखा है— हरि का भज म हरि का कोइ। हरि का ऊच नाच नहिं काइ। परन्तु जन ममदाय का स्मृति में उपरोक्त जयान्त रामानन्द के साथ म घनिष्ठता के साथ संबद्ध है कि यह रामानन्द के जनितरिक्त और विना की हाना सदा। जतएव कम स कम वह रचना जिसमें यह जयान्ती पाता है जभा मिलन का गय है। म रचना के मय में जभा व विनी मूत्र स सूचना नहा मिल सका है।

स्मृति—रामानन्द के नाम से मिली हिन्दी रचनाओं का प्रामाणिकता विचार प्रस्त है। इनके सम्बन्ध में मय्य कठिनाइ यह है कि उनका वर्णन पय और निम्न स्वामी रामानन्द के ज्ञान सिद्धान्त और साम्प्रदायिक मन के विरुद्ध पन्ता है। स्वामी रामानन्द के ज्ञानमन्त्र बधना म भास्वर और श्रीरामानन्द पद्धति उपर्युक्त है और इन्हें सभी विद्वानों ने प्रामाणिक माना है। बधना म भास्वर में स्वामी रामानन्द ने अपने गिष्य सुरमरानन्द के प्रश्नों का उत्तर देने हुए दार्शनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। उन्होंने रामानन्द के विगिष्टान्त मन का समयन किया है किन्तु अपनी भक्ति पद्धति विशेष रखी है। रामानुज सम्प्रदाय में स्वामी नारायण परमाराध्य हैं और रामानन्द सम्प्रदाय में साताराम। उन्होंने रामानुज का

मैं मरा ग्यान नसाव । तान आत्य समाधि न पाव ॥

रामानन्द गुर गनि गाव । तान भिन्न भिन्न समझाव ॥५॥

सहज मत्तमें चिति बसत । अरहिं अमहिं जिनि जाय अत ॥

न तहा इच्छना ओ जहार । न तहा नामि न बालि तार ॥

न तहा ब्रह्मा स्वा विसत । न तहा सोमास वम बरन ॥

न तना तस माया म । रामानन्द स्वामी रम अपड ॥६॥

१—रामानन्द की हिन्दी रचनाएँ प ३ ।

अपक्षा कमवाण्ड को कम महत्व दिया। रामानन्द सम्प्रदाय ने भक्ति का मास्य का मन्व्य साधन माना और प्रपत्ति का अत्यधिक महत्व दिया। प्राणा का अपन आपका भगवान की तरफ से सबका छात्र बना प्रपत्ति है। स्वामी रामानन्द रामभक्ति के प्रथम आचार्य थे। उन्होंने भागवतानुमानित भक्ति का प्रचार किया है। बष्णवमताने भास्कर से स्वामी रामानन्द ने ललित पदावली में भगवान् राम के एक वायाणकारा मन्व्य अत्रतार रूप की कल्पना की है। राम मत्र राज का व आजीवन प्रचार करते रहे। श्री रामाचन पद्धति गुड्ड कमवाण्ड का ग्रन्थ है जिसमें राम के उक्त अवतारों रूप का उपासना का विधान विधान प्रस्तुत किया गया है। स्वामी रामानन्द ने प्राणिमात्र का प्रपत्ति का अधिस्तान माना। सभी वर्गों के लोगों को बिना किना भेदभाव के राममत्र की दाना दी और लम्बे भक्ति का ज्यस्कर बताया।

इन ग्रन्थों में उन्होंने भगवान् राम के सगुण रूप का उत्कृष्ट वर्णन किया है। श्रीरामाचन पद्धति में श्री बष्णवों के कम निवाम स्थल काक्षय भगवतपूजनमत्र दक्षावतार का महत्व ज्ञान के मन्व्य में निरूपण किया गया है। इन ग्रन्थों का भाषा प्राजल एवं प्रसात्सगुण सम्पन्न है। बष्णवमताने भास्कर आर श्रीरामाचन पद्धति से स्पष्ट है कि स्वामी रामानन्द सगुणरामापासक महात्मा थे। वस्तुतः ए विव म भगवान् का कर्ण की भावना करने वाले विगुद्ध बष्णव भक्ति माग के अनुयायी थे घट के भीतर होने वाले याग मार्गों नए। रामानन्द सम्प्रदाय भी उन्हें विगुद्ध बष्णव मन्व्य मानता चला आ रहा है।

रामानन्द के नाम से मिला हिल्ली रचनाओं में भगवान् राम का सगुण रूप नहा मिलता। उनका विषय निगुण ब्रह्म ज्ञान और वराग्य है। सस्कृत और सिन्हा रचनाओं में इस विराय का समाधान करने का प्रयत्न कुछ विद्वानों ने किया है। ११० वयबाल ने लिखा है— रामानुज नवान सिद्धान्त के नवात्माह के साथ यग सम्पन्न हान के कारण अतिवाय वातावरण के साथ उत्तर भारत में आय थे। उनका कर्ण ने अधिकांश का उनके मन्व्य नत किया। बहुत से प्रसिद्ध स्थानों के लोग उनके अनुयायी हो गये। किन्तु उनके वाच रहने का व नहा आय थे। उनके दक्षिण क्षेत्र जान पर व फिर अपने पूर्व भावा विचारों और पद्धतियों में मन्व्य हो गये। राधका नए बाहर से रामानुज सम्प्रदाय में हान हुए भा वस्तुतः इन्हा मागी-नाया के उत्तराधि वारा हैं और उनके पायी हुई सामग्री का उत्पत्ति रामानन्द का लिया। जिन समय रामानुज ने अपने बष्णव मत का प्रचार उत्तर भारत में किया उस समय व

का जनता मिद्धा जीर यागिया का जानी श्रद्धाजति ममपित रर रती था। यत्र तत्र याग का सिद्धिया की धूम था बान्धव म न सग ता कर्गिया म याग साधना का प्रचार चाराजार था। १ टा० उधवा क मत म स्वामा रामान क स्वय ह्मराग भावना मे प्रभावित था। प० बन्धव उपाध्याय के अनुगार एक हा रामा रामान जा ने जनता का र्चि तथा दंग काल की परिस्थिति दग्धर का प्रकार का गिशा र्चने का साधनीय काय किया। निगण सम्प्रदाय क प्रवतक बन्दीरवास क गुरु हान के कारण यह वान अनमान मिद्ध हाना क नि उनका गिशा म याग साधना तथा निगण भक्ति का ना वान जनयमव वतमान था। सच ता यही जान पत्ता है कि स्वामा जा सगण भक्ति धारा जीर निगण भक्ति धारा—उभय भक्ति धाराआ क बन्धु विद्दु है जिनम एक जार ता गुन्मानम जादि रामभक्ता क द्वारा सगुण भक्ति का प्रचार भारत भूमि म हुआ तथा दूसरा जार बन्धर जादि निग निया सन्ता क द्वारा निगण भक्ति का प्रचार भा जनता क वाच किया गया। तत्कालीन धार्मिक वायु मण्डल म याग साधना का विपुग्ता था। जत जनता की र्चि का ध्यान रखत हुए यति स्वामा जा न याग क कतिपय मिद्धानता को भी अपना गिशा म स्थान लिया तो कुछ अनुचित नही जान पत्ता। टा० माता प्रसाद गुप्त का अनमान है कि रामानन्द नाम के एक स अधिक महात्मा हुए और व कालांतर म बण्णवस्वामा रामान क स अभिन्न मान गिय गय। उहाने गिवा है— स्वामी रामानन्द का महत्व इस कारण है कि उहाने उत्तरा भारत म भक्ति आन्दोलन का नतत्व किया। उनका गिप्य परम्परा का बहुत कुछ विश्वमनाय इतिवत्त हम नाभादास क भक्तमात्र म प्राप्त हाता है। किन्तु इन गिप्या म स किसी का रचना म राम का अवतारी रूप हमार सामन नही आता। इन भक्ता म सजिन की रचनाए हम प्राप्त हुद ह उनक राम निगण ब्रह्म है। इसलिए एक सम्भावना यह भी है कि राम रक्षा स्तात्र क रामानन्द उक्त मन्त परम्परा क प्रवतक रामानन्द स भिन्न रह हाग आर कागलर म नाभादाम क समय (सवन १६५) तक दाना महात्माआ का व्यक्तित्व एक मान लिया गया हा। १ हिन्दी विश्वकोष म रामानन्द नाम क दम ध्यक्तिया का उल्लेख किया गया है। डा हजारा प्रसाद त्रिबनी का मत है कि

१—रा वयवाठ रामान क हिन्दी रचनाए प २६।

२—डा बन्धव उपाध्याय भगवत सम्प्रदाय प २८३।

—ग० माता प्रसाद गुप्त हिन्दी साहित्य द्वितीय खण्ड प० ३ ५।

४—हिन्दी विश्वकोष प० ४९ ९१।

स्वामी रामानन्द उत्तररचना महात्मा थे। वे स्वयं नगुण रामापासक व जीर विगिष्टाद्गतमतावच्छेदी थे। उन्होंने जाति पाति जादि का बन्धन ताडकर एक उत्तर मतवाद का प्रवर्तन किया और अपने गिष्या पर किमा प्रकार का बंधन नही लगाया। इस कारण उनके उपरान्त आगे चलकर गिष्या प्रगिष्या द्वारा विभिन्न र्चि जीर प्रतिभा व अनुसार भाग निगुण नाता रूप में विकसित हुए। कतिपय जय विद्वाना का मत है कि स्वयं रामानन्द ता विगुद्ध बण्णव भना थे किन्तु उनका गिष्य परम्परा में परिस्थितिका याग भावना का प्रवर्ण हुआ। स्वामी रामानन्द के गिष्य जनतानन्द जीर जनतान्द व शिष्य कृष्णदाम परहारा थे। परहारा जा राजपूताने व दाषाच्य राज्ञण थे। उन दिना राजपूताने मनाय पथिया का बन्ध प्रभाव था। इहाने नाय पथिया का परान्त कर अपना गद्दी म्यापित का था। नाय पथिया का पराजित करन व गिण्ड उन् योग भाग का भी अभ्यास करना पना हागा। इस सम्बन्ध में जनश्रुति भा मिश्री है। इना गिष्य राह जीर जगन्नाथ थे। काह यागाम्याम में निष्णात थे उहां को गलता गद्दी का उत्तरगधिकार बनाया गया। कौह व गिष्य नारकाणाम के पूणयागा हान का माध्य नाभादाम न दिया ह— अन्त्याग याग तन त्यागिमा द्वारकादाम जान हुआ। याग भावना से प्रभावित इन मन्त्रात्मात्रा की एक जलग गावा बन गया जिस तपमी कहा जान लगा। इस गावा व अनयाया स्वामी रामानन्द का भी पूण यागा मानन ग्य। विद्वाना का मत है कि वात् में इस गावा में साम्प्रदायिक ग्रथा का रचना हुई जिह स्वामी रामानन्द व नाम से प्रचारित किया गया। ये मभा मत तर्कारित हैं। स्वामी रामानन्द का इत्याग भाग में प्रभावित मानन व लिए कार्द निश्चित प्रमाण नही है। जाचाम गगन उह विगुद्ध बण्णव भक्त माना है। आचार्य गुप्त का मत समीचान जान पन्ता ह। सम्प्रदाय में भी स्वामी रामानन्द व विगुद्ध बण्णव भक्त हान का भायता ह। अत स्वामी रामानन्द का विगुद्ध बण्णव भक्त ही मानना उचित हागा आर म्या आधार पर उनका रचनात्रा की गमाया का जाना चाहिए।

स्वामी रामानन्द व नाम से मिग अधिकांश हिन्दू रचनाए तपमा गावा में प्रचलित हैं। मिद्वान्त पट्ट जिनमें यागामाग और बण्णव धम का समन्वय करन का प्रयास किया गया है इस गावा का प्रमुख साम्प्रदायिक ग्रथ है। इन हिन्दू रचनात्रा का भाषा निम्नवर्ति की है। जिना अग तक इसका बनमान रूप र्चिपकारा व प्रमाण व कारण विहिन हो सकता है फिर भी ये उच्च शक्ति व पंडित का रचनाए नही बना जा सकता। स्वामी रामानन्द व सम्बन्ध ग्रथ गगन

हैं जो अति पगबली में निरुद्ध हैं। मन्वृत और हिन्दी रचनाओं की भाषा में इनका अधिक अन्तर सम्भव नहीं हो सकता। इस आधार पर भी हम इन रचनाओं को स्वामी रामानन्द कृत नहीं मान सकते। स्वामी रामानन्द के समय में यह प्रसिद्ध है कि उन्होंने अपने उपदेशों के लिए हिन्दी भाषा का अपनाया था और समय समय पर वे विनय और स्तुति में हिन्दी भाषा में पद भी बनाकर गाया करते थे। सम्भवतः उन्होंने हिन्दी में कुछ रचनाएँ भी की होंगी। इनकी स्मृति रखना हिन्दी साहित्य का परम कर्तव्य है। रचनाओं के सम्बन्ध में प्रामाणिक सामग्री का अभाव है। जब तक प्राचीन हस्तलिखित न प्राप्त हो जायें तब तक इनके सम्बन्ध में निश्चित मत निर्दिष्ट करना कठिन है। उस समय तक जा हिन्दी रचनाएँ रामानन्द के नाम से मिली हैं वे राम साहित्य के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता। कब-कब एव पद जिसे उन्होंने हनुमान जी का स्तुति का है और जिस विद्वानों ने प्रामाणिक भी माना है राम साहित्य के अन्तर्गत लिया जा सकता है।

अध्याय ५

आदि काव्य का हिन्दी रूपांतर—शोश्र्वासी विष्णुदाम

वात्माकि रामायण महाभाग्य जौर श्रामभोगवन—य ताना ग्रय धामिर् एव माहितिक परम्परासा क लिंग उतताय ग्र य कह गये हैं। अनर आरार पर परवर्ती वाग् म धामिक एव साहित्यिक रचना सा वा विगाग् परिमाण म निमाण हजा। य ग्रय सस्मृति क प्रतिरिति एव पाल क भाग्यर हैं। धामिक श्रुति म य गवापिन महत्वपूर्ण हे जनणव ममाज म इतडा नमग्रया क रूप म मन्व प्रतिगा र्ग। श्रुत्या म न्न ग्रया क पन्त राछन का व्यमस्या गता था तथा यक्तिगत जीवन म इनका अनुगाग्न धमराय मान रिया गया था। इन ग्रया क तत्तागत भाषा म रूपान्तर प्रस्नुत करन का भा एक परम्परा पायी जाता है। कर्वाचित एवा सस्मृतन जानन वाग् गला क लिंग पाग् एव धम गिया का मुविवाक गिए किया गया हागा। कृष्ण भक्ति गाता म भावान भाषा क रूप म जनेक ग्रय मिग्न हैं जिनम भागवन कया का रूपान्तर प्रस्नुत किया गया है। महाभारत क भी रूपान्तर इभी प्रकार प्रस्नुत रिय गया। अति काव्य क आरार पर अनेक साध्प्रत्यिक समायणा का रचना वा गयी जिनरा समाज म उदुन प्रचार हुआ। जन सागरण क लिंग वात्माकि समायण क भाषा रूपान्तर प्रस्नुत किय गया। एम प्रकार क रूपा त्तर विभिन्न आयुनिक भारताय भाषाआ म मिलन हैं। तग्गु म इस प्रकार का रचना भास्कर रामायण क जा बहुत लोकप्रिय है। चाग्वा गताग्नी म रचित यह एव उन्हुग् माहितिक श्रुति क। यह वात्माकि समायण का सस्मृत गभित अनुवाद ह। इस लया भास्कर है किन्तु ग्रय क कृठ जन उतर पुन गिप्य जाति न गिभ हैं। चाग्वा गताग्नी का ग्रय रचना रामचरितम् है। यह मग्वाग्म का मत्रप्राचान रचना क। इस रचना निम्वाकुर् क राजा बनाय गय है। रामचरितम् म वात्माकि रामायण क यदराग्ड का कया दा गया है। मलयाग्म म पद्मवा गताग्नी क उतराद्द म वात्माकि रामायण का एक दूसरा रूपान्तर प्रस्नुत किया गया। यह कग्गग गारा रचित कण्णग रामायण है। इस परम्परा म आग चक्कर राजावाग करउ कमान द्वात्माकि रामायण का मलयाग्म रूपान्तर किया जो करउ कर्मी रामायण नाम म प्रसिद्द है। गुजराती साहित्य म कृष्ण कया का प्रधानता है

किन्तु गुजराती म भी आदि ताव्य क स्थान्तर प्रस्तुत रिच गय। एग प्रकार आदि ताव्य क भाषा स्थान्तर की एग रिपाट परम्परा भारतीय भाषा म मिश्रता है। हिन्दी म एग वादि का प्राचानतम उपस्थ रचना गास्वामी विष्णुदास द्वारा रचित भाषा वामाकि राम यण है जिसका विवचन प्रस्तुत अन्वय म दिया जायगा। आग चत्तर धम परंपरा म हिन्दी क जनक कविया क आदिताव्य क भाषा स्थान्तर उपस्थ होने हैं।

विष्णुदास म हिन्दी ममार प्राय परिचित नहा है। इनका नाम अर तक गाधवर्ताआ तक सीमित रहा है। हिन्दी साहित्य के इतिहास म विष्णुदास क सम्बन्ध म उल्लेख नहा मिश्रता। खाज रिपाटों म इनका सत्रध म सूचनाए प्रकाशित का गया है। विवचन की पठ्ठा गताया अत म विष्णुदास हिन्दी क गौरवगायी कवि हुए। भाषा जो वणन गयी का दष्टि स उनको रचनाए जयन्त मन्त्रपूण है। विष्णुदास न जिग भाषा जोर कथा साहित्य का सजन किया उनका विकास अगद दा गतता म हिन्दी क परवर्ती महान कविया की रचनाया मय्या जा सकता है। गास्वामी तुलसीदास क प्राय सवा सौ वष पूव का विष्णुदास का रचनाए हिन्दी साहित्य की मूल्य निधि ह। हिन्दी साहित्य म विष्णुदास का गौरवपूण स्थान है इनकी रचनाए अप्रकाशित हैं।

नागरी प्रचारिणी सभा की खाज रिपाट म उगभग ६ वष पूव विष्णुदास के सम्बन्ध म प्रथम सूचना दा गया। १९६८ की रिपाट म उनकी रचनाए महाभारत और स्वर्गाराहण बताया गयी। महाभारत कथा क हस्तलिख का समय १७६७ ई और स्वर्गाराहण क हस्तलिख का समय १७७५ ई० बताया गया। महाभारत कथा म ७९ पत्र और दा हजार पाच सौ स्याह स्याक तथा स्वर्गाराहण म पन्ह पत्र और चार सौ अष्टारह स्याक बताया गय। महाभारत कथा म उल्लेख क जाघार पर इसका रचना काल स १६२ बताया गया। य ज्ञाना ग्रन्थ दतिया राजपुस्तकाव्य म सुर्गित बताया गय है। सन १९१२ १६ का राज रिपाट म दूसरी बार सूचना प्रकाशित का गया है जिसम उनका रचना रचिमणा मंगल का सूचना दा गया। हस्तलिख म २४ पत्र स्याक सख्या ३ तथा रिपिकाट १८६४ ७ बनाया गया। प्रति के गास्वामी राधाचरण वत्सवन क पास हान का मचना दी गया और उमर सादि और जन्त के जग भा उद्धत किया गय। सन १९६२८ की स्याज रिपाट म रचिमणा मंगल और सन लीग की सूचना दी

१—सभा खाज रिपाट १९६८ पन् ९२ सख्या २४८।

२—वही सन १९१२ १६ पन् २४१ सख्या १९३।

गया।^१ अन्वे जग नी उदत त्रिय गया। मन १०२० ३१ का नात्र रिपात् म
महाभारत क्या स्वगाराहण और स्वगाराहण पव का सूचना दा गया।
स्वगाराहण और स्वगाराहणपव क्वाचित एव हा ग्रय ह किन्तु उनक ना
उद्धरण त्रिय गय है व भिन्न हैं। मन १९ १ म डा० बधवा न रक्मिणा
मग का फिर सूचना दा।^२ इन सवनात्रा म विष्णुदास की जिन रचनाना
का उल्लेख किया गया उनक नाम हैं—१ महाभारत क्या २ रक्मिणी मगल
३ स्वगारोहण ४ स्वगाराहण पव और ५ सनह लाग। य रचनाए
अप्रकाशित हैं। इनका विषय कृष्ण क्या ह।

महाभारत क्या^३ म महाभारत क वक्तान का सशप म वणन किया गया
है। ग्रय का आरम्भ उपन्यात्मक छला स हाता है—

विनम घम विपि पापडू विनस नारि गह परबडू ।
विनम राह पगाथ पात्र विनम से जगरी डाडे ।
विनस नीच सन उपजाह विनम मून पुरान गह ।
विनम मागनी जर जु लाज विनम जूझ हाय विनु मात्रै ।
विनम रागी कुपय जा करत, विनम रन हाने रन घरमी ।
विनम राजा मत्र जु हीनू विनम नटकु कला विनु हीनू ॥
विनम मन्त्रि रावर पासा विनम काज पगाइ आसा ।
विनम विद्या कुनित्रि पनाई विनम मुन्त्रि पर घर जाई ॥
विनम यति गति कानी ब्याह विनस अनि लाभो नरनाहू ।
विनम घन हीने जु जगाह विनस मन्त्रा चर जगहू ॥
विनस सानू लाह चनाय विनस सब करे बनभायें ।
विनस त्रिरिया पुगिय उगमा विनसे मतहि हुने विन हासी ॥

विनस विप्र विन पत्र कर्मा विनस चौर प्रजा क भमा ।
विना पुत्र जा बाप लगाय विनस सबव करि मन भाय ॥
विनम जन प्राय जिहि पार्जे विनम दान सब करि दाज ।
इना कपट वाह वा कीज जा पढा बनबाग न दाज ॥

१—नाज रिपात् सन् १०२६ २८ पष्ठ ७, ९ ६० सग्या ४९८ ६ ९।

२—वहाँ १०३१ पष्ठ ३७ सग्या ०६।

३—यना सन १०२६-२१ प० ६५२ ६, पिनहाट जिला आगरा क श्री
कृष्ण चौब का प्रति सन्दत।

अहनार ते हाइ अकाजू एम जाय तुम्हारा राजू ।
हीनि कीनिहू है तिनमारी जम दीम नर वन्द पमारा ॥

इन पद्या से उपस्था एव नानि व अतिरिक्त तत्सानीन मामाजिक आत्माँ पर भा प्रकार पन्ना । अत्र म कवि न परम्परागत कथ्युनि दा है तथा ग्रथ कार क रूप म अपना नाम भी दिया है—

विरथा काठ भया जान् जा पापन समय गाव्य ।
हरिहर करत पाप सब गया जमरपुरी पाप सज गया ॥
अविचर लाव जो उत्तिम धान निचल वास पाखन जान ।
एकादशी महेश ना कर अखमघ जज्ञ उन्नर ॥
तारय सबठ कर जन्माना पना धरित सुन द वाना ।
वरिष त्विस हरिवस पुरान गऊ काटि विप्रन कह दान ॥
जा फ मर माध जलाना जा फल पाडव सुनत पुराना ।
गया क्षन पिना जा भर स्य पव गगाजी कर ॥
पडो चरित जो मन द सुन नास पाप विष्ण कवि भन ।
एव चिद सुन द वान ते पाव अमरपुर धान ॥
पयो कथा सुन द दान तिनको हाय प्रयाग धान ।
स्वर्गारोहण मन द सुन नास पाप विष्ण कवि भन ॥

महाभारत कथा पर आधारित विष्णदास का दो अर्थ रचनाए स्वर्गारोहण और स्वर्गारोहण पव है। इन दोना रचनाओ म पाडवा के हिमाचल जान की कथा वर्णित है। दाना ग्रथा म दोहा चौपाई का प्रयोग हुआ है। स्वर्गारोहण^१ म कवि गणग स्तुति व पचात कथा का आरम्भ करता है—

गवरा नन्द सुमनि द गननायक वरदान ।

स्वगारोहण ग्रथ का वरणा तत्र बन्वान ।

गणपति सुमनि दह आधारा सुमिरत सिद्धि सा हाइ अपारा ।
भारथ भाषी ताहि पसाई अह मारद के लागी पाई ॥
अ जा सहज नाथ वर कह स्वर्गारोहण विस्तर कह ।
विष्णनाम कवि बिनय कराइ द वद्धि जा कथा कहई ॥
रान त्विस जा भारथ सुन नाथ पाप विष्णु कवि भनई ।
यो पाख गिरि गय हवार कही कथा गु वचन विचार ॥

१—वाज रिपाट १९२९ ३१ प ६५६ ५७ दरियागज जिला एटा के श्री गकरलाल पटवारी की प्रति से उद्धत ।

दत्त कुम्भनहि भारत किमौ, कौरव माग्नि राज मव त्रिषी ।

जन्तुल म भय धम नरना गया द्वार भयौ प्रवसा ॥

शायर के अन्त ही जान आर कवि के प्रकाश के उपगत यथिष्ठि न गज्य त्याग न्न का निश्चय किया। इन्होंने चारा भाद्रमा का उत्तरकर राज्य समाप्त का कहा किन्तु अत म मवन गाय त्याग न्न तथा शिमाग्य के लिए प्रस्थान करने का निश्चय किया—

मुनः नाम कह धम नरना शर शर मुन र उपन्मा ।

अथ यह राज तात तुष लह के भया जवन कह ॥

राज गमल अथ यह समारा में छाया यह कथे भूभाग ।

धनु चार न लय उत्तर निनया क्या शर यह ग ॥

७ ७ भूमि भगनु धरवारा वाट दुःख हात मगरा ।

टात नय त चारा भाई भीममत वाठ निर नाद ॥

कर जय शर विनइ मवा गया शायर कवि जाया त्वा ।

गात लिखम माहि कूचन गयऊ र्णा न्न खर द्व भयऊ ॥

गग जुद्ध न जानी जात कवि जग देव रक्षी ठहराद ।

इनन वचन मुन नरनाया पाचा वध च इव माया ॥

नगर लाक गख गमचाए मानत कथी न बाहु का रात ।

कचन पुरा मु उत्तम ठाऊ तहा वय पात्रव का राऊ ॥

स्वगाराहा के अन्त म कवि ने अपने नाम का उत्तर्य किया है तथा मान्यता का वर्णन किया है।¹ महात्म्य वर्णन महाभारत कथा तथा विष्णुनाम के अर्थ १—वत् ।

गगनात्तम वन मा मन धरत अ जा अत्रमय पुनि करत ।

ताम्य मकर कर अम्नाना मा फर पात्रव मुनन पुराना ॥

वय न्न हरिविग मुना न्ह कानि विप्रन वी गाद ।

गया मध्य का पित्र भगत अ फर कर जाचमन कराद ॥

भूय पुत्र कुम्भन नगर्त तारा पाप न्न मय जात ।

स्वर्गागण मन न मुन नाम पाप विष्णु कवि भनत ।

विन न्नमान त्हि ज। दाना नारी फर गगा अम्नाना ।

मह स्वगारागण वा कथा पन्न मुनन फर पाव जया ।

पात्रव चरित जा मुन मुनाइ अन्न धम पुत्रि फर पाव ॥

स्वगाराहा का कथा फर मुन जा वाद ।

अष्टमी पुराण वा ताहि महापन्न हाइ ॥

प्रथा में समान रूप से मिलता है। जगन दा प्रथा के एक ही रचयिता का जाना स्पष्ट है। स्वगाराहण पत्र में भी पाया कि हिमाचल जा का वर्णन है। इसमें जगन सभा जान रिपाट में उद्धृत किया गया है। उद्धृत जगन में पाया कि हिमाचल के लिए प्रस्थापित कुन्ती का रिपाट जाति प्रयोग वर्णित है। रचना में चापा का प्रयोग किया गया है। विष्णुनाम का जय रचना में उद्धृत है। इन प्रथम में कृष्ण द्वारा उद्धव का गापिया के लिए सत्संग पर गाकुल भजन की कथा है। कृष्ण ब्रज में अपनी बाललीला का स्मरण करते हैं और गापिया के प्रेम में विह्वल हो जाते हैं। गोपिया का जानामन इन के लिए जान का सत्संग पर उद्धव का गाकुल भजन है। गापिया की सगण रूप में उद्धव आस्था पर उद्धव प्रभावित हो जाते हैं और लौटकर कृष्ण का ब्रज का वत्तान्त सुनते हैं—

सब ऊँचा आय यहा श्रीकृष्ण चले के घाम ।
 पाय गगि बदन किया जानत न ल नाम ॥
 ग्वाल बाज सब गापिका ब्रज के नाव जनय ।
 तुमहा पाय लगत बह्या सुना देव ब्रह्मन्व ॥
 नान जसाला हत की कहिय कहा बनाव ।
 व जाने के तुम भरे मा प कह्यो न जाय ॥
 व चित्त टारत नहा स्याम राम की जार ।
 मघ नामक पुरनी ग्रहे मूरति मघर किनार ॥
 अम गापित के प्रेम का महिमा कहूँ जनत ।
 म पूछी पट मास न तऊ न पायो जनत ॥
 दह गेह सब छाडि के बग्त रूप को ध्यान ।
 वन का भजन विचारिय सा सब फाकी मान ॥

तब हरि ऊँचो सा कहा हूँ जानत सब जग ।
 हा कहूँ छाया नहा ब्रज वासिन का मग ॥
 ब्रज तजि जनत न जाय हा मरे ता या नेन ।
 भूत भार उतारिहा घरिहा रूप अनक । दत्याति ।

कृष्ण कथा मन्मथी विष्णुदास का जय रचना रक्मिणा भगवत है। इस प्रथम में कृष्ण और रक्मिणा के विवाह का कथा वर्णित है। यह मगन काव्य है। हिन्दी

१—जान रिपाट सन १९२९ १ प ६५७-५८।

२—जान रिपाट सन १९२६ २८ प ७६ ।

साहित्य में विवाह प्रसंग को केवल मंगल काव्या की रचना की एक परम्परा मिलती है। पृथ्वीराज रासो के ४६३ समय के त्रिजय मंगल में यह काव्यरूप मिलता है। इस प्रसंग में सयागिता का बधूधम का उपदेश दिय जाने का उल्लेख है। मंगल काव्य परम्परा के अन्तगत प्रथम स्वयं प्रथम रूप में विष्णुदास की कृति रक्मिणी मंगल उपलब्ध है। इस परम्परा के अन्तगत जाग भा रचनाएँ हैं। कृष्ण रक्मिणी विवाह की कथा को लेकर नरहरि भट्ट ने रक्मिणी मंगल की रचना की। गोस्वामी तुलसीदास की इस प्रकार की रचनाएँ पावनी मंगल और जानकी मंगल हैं। पध्वागज राठौड़ कृत बलि और माराकृत नरसा जा का माहेरा जाति रचनाएँ इसी मंगलकाव्य परम्परा के अन्तगत रची गयीं।

विष्णुदास की रचना रक्मिणी मंगल काव्य की दृष्टि से अत्यन्त प्रौढ़ एवं सरस है। इसमें कथा पद्य में वर्णन है। रक्मिणी मंगल का हस्तलेख (संख्या ३१८) भायभाषा पुस्तकालय में सुरक्षित है। इसे प्रस्तुत लेखक ने देखा है। आरम्भ का पुष्पिका इस प्रकार है—**श्री गणेशाय नमः। अथ विष्णुदास कृत रक्मिणी मंगल लिप्यते। अन्त की पुष्पिका में लिखा है—**देति श्री रक्मिणी मंगल। मपूण। शुभमस्तु ॥ हस्तलेख का लिपिशाल नष्टा दिया गया है। खोज रिपोर्ट में रक्मिणी मंगल के अंग उद्धृत किये गये हैं।^१ प्रथम के आरम्भ में गणेश स्तुति की गयी है—

रिधि सिधि सुख सफल विधि नवनिधि दे गुरु नान ।
 पति भति पुत पति पाइयत मनपति को घर ध्यान ॥
 जब चरन प्रताप त दुख मुख परत न दीठ ।
 ता गजमुन सुख करन का सरन आवरं दीठ ॥
 प्रथम ही गुरु के चरण बदन गौरीपुत्र मनाइय ।
 भाति है विष्णु जुगात् है ब्रह्मा सबर ध्यान लगाय ॥
 दवा पूजन कर कर मागत बुध जी नान विवाडम ।
 तात अति सुख हाय अब आनंद मंगल गार्य ॥
 गारा लामा मुह्रा सरस्वता निनका सास नवाडय ।
 उदर गूय ताउ गगा जमुना निनत अति सुख पाइय ॥
 सन महत को पग रज ल मस्तक निरक चणाय ।
 विष्णुनास प्रभुप्रिया प्रानम का रक्मिणी मंगल पाइय ।

१—ग्राज रिपोर्ट सन् १९२६ २८ प० ७ ६० गन्वापुर जिला सातापुर के श्री गणेश लाल दुब की प्रति से उद्धृत।

शुक्ति व पदसात् कथा का आरम्भ होता है। कवि राजा भीम की त्रिपुत्रा क्विमणा और ब्रह्म व अवतार कृष्ण का कथा कथा है—

गुण गऊ गणपत व चरण कमल विल लप।
 मन इच्छा पूरण करा जा हरि हाथ मगप।
 भावम रूप का गङ्गा कृष्ण ब्रह्म अवतार।
 जिनका जलुनि कल्प ही मुन राज नर नाग ॥
 कुछ मन मारी धारा सा बीरई भाषा कान्य बनाई।
 राम रोम रमना ता पाऊ महिमा वण नहि जाई ॥
 गुन नर मनोजन ध्यान धरत हैं गति किन्तू नहि पाई।
 गङ्गा जपरपार प्रभु का का करि मक बनाई ॥
 विल समान गण गऊ स्वाम के कृपा करी जाण राई।
 ता काई सरन पत्त हैं रावर कीरति जग म छाई।
 विष्णुनाम धन जावन उनका प्रभु जा मा प्राणि गणा ॥

विष्णुनाम भक्त कवि ४। उहान क्विमणा का चित्रण कृष्ण का दामा के रूप म किया है। त्रिभुवन स्वामा का पाकर क्विमणा के मन का आम पूरी हो गयी।
 'म मगत काव्य का अन्तिम पत्र स्पष्ट है—

विष्णु पद

माहन महलन वरत विनास।
 बनक मन्दिर म केठि करत हैं जार काउ नहि पाम ॥
 हकमनि चरन मिराव पूजी मन की आम।
 जा चाहो सा अम्ब पावा हरि पनि दक्की साम ॥
 तुम विल जोर न काऊ मरा धरणि पनाठ जकाम।
 निस दिन मुमिरन करत निहारा सब पूरत परकाम ॥
 धत्त धत्त व्यापक जनरजामा त्रिभुवन स्वामा सब सुगराम।
 विष्णुनाम हमन बनाई जनम जनम का दाम ॥

इत पत्रा को रचना गाम्त्रामा विष्णुनाम न मूरनाम जी स गगभग सौ वप पुत्र का थी। 'मकी कथा करत हुए डा गिवप्रमान सिंह ने लिखा है—ब्रह्म भाषा म गण कृष्ण भक्ति का आरम्भ बल्लभाचार्य व बन्धुवन पधारन के ८० ९ साठ पहले श्री कवि विष्णुनाम द्वारा किया जा चुका था। यह एक नया ऐतिहासिक सत्य है।^१ बण्णव पनावण व सम्बन्ध म नागरी प्रचारिणा पत्रिका

म कहा गया है—मूरदास का ब्रजभाषा का प्रथम पत्रकता मानना कथमपि उपयुक्त नहीं है क्योंकि उनसे लगभग सत्तर जसों वर्ष पूर्व क एव कवि की ब्रजभाषा का कविता तथा पत्र भी उल्टा प्रहल है। इस कवि का नाम विष्णुदास है। उनका प्रथम परिचय ता बाबू 'श्याम सुन्दर दास न १ ०६ ७ का हिन्दी ग्रन्थ का राज रिपोट में दिया था परन्तु इनके ऐतिहासिक मूलत्व का पता अभी चला है। वर्तमान राज से पता चला है कि ब्रजभाषा में काव्य का आरम्भ मूरदास से लगभग एक शताब्दी पूर्व हुआ गया था। विष्णुदास की काव्य रचनाओं का मूलनाम हिन्दी पुस्तक की राज रिपोर्टों में प्रकाशित हुई है। परन्तु उनका काव्य का ऐतिहासिक मूल्य का अब हारा लगा है। साहित्य की दृष्टि से इनका काव्य नितान्त महत्पूर्ण है—सन्तुष्ट शाला तथा रत्नमणी मंगल। इनमें से मनहूला का गाथा तथा उड़व के मन्वाण के रूप में और मूरदास के भ्रमर गीत का मूल रूप माना जा सकता है। रत्नमणी मंगल काव्य है जिसमें धाराप्रवाह का माय रत्नमणी जा के विवाह का काव्यमय वर्णन है। इस रत्नमणी मंगल में पत्र गली के दान हम मिलते हैं। ब्रजभाषा में विष्णुदास प्रथम पत्रकार माने जा सकते हैं।

सन् १९४१-४३ का राज रिपोट में विष्णुदास का भाषा वाच्यिक रामायण नामक रचना का मूलनाम बताया है। इस मूलनाम का चर्चा करते हुए डा० माना प्रसाद गुप्त ने लिखा है—उन्हें (विष्णुदास का) वाच्यिक रामायण के विना हिन्दी रूपांतर का कर्ता बताया गया है। विष्णुदास नाम के भक्त एक से अधिक हुए हैं। एक विष्णुदास महाभारत के एक मशहूर रूपांतर के कर्ता हैं और उनका समय सन् १६९२ विनया (सन् १४३५) माना गया है। यदि वे ही वाल्मीकि रामायण के रूपांतर के भा कर्ता हैं तो कुछ अशक्य नहीं है।

विष्णुदास नाम के एक से अधिक भक्त हुए हैं। एक विष्णुदास स्वामी रामानन्द की गिष्य परम्परा में हुए। भक्तमाल के अनुसार कृष्णदास पयहारी के गिष्या के तर्क नामों में विष्णुदास का भी नाम है। गलनागादा की गुरु परम्परा में रामानन्द जनानन्द काल्ह छात्र कृष्णदास विष्णुदास नारायणदास नाम आये हैं। रसिक प्रकाश भक्तमाल में काल्ह लघु कृष्णदास विष्णुदास नारायण दास आदि नाम आये हैं। ये विष्णुदास कदाचित राममन्त्र रहें होंगे किन्तु इनकी

१—हिन्दी में कर्णव पत्रावली का प्रथम रचयिता नागरा प्रचारिका पत्रिका वर्ष ६६ अंक २४ पृ० १८८।

२—गंगा राज रिपोट १९४१-४३ पृ० ७३४ सख्या २१८।

३—दिल्ली साहित्य त्रितीय सत्र पृ० ३०६।

रचनाओं के सम्बन्ध में काँई सूचना उपलब्ध नहीं है। गजराता कवि माण्डव
के पुत्र विष्णुदास साल्वा गतात् १६ म १७। उ १० गजराता में रामायण
का रचना का थी। मन्नागट्ट में एक कवि विष्णुदास हुए जिनका रामचरित
सम्बन्धी काव्य रचना का था। य गास्वामी तुम्हासास का निम्न परम्परा में था।
विष्णुदास नाम के भक्ता के सम्बन्ध में अभी ११वें काय नहीं पाया है। किन्तु
उनका निश्चित है कि कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय जिन विष्णुदास की रचनाओं का सम्बन्ध
सभा का स्वाज रिपाटों में किया गया है व एक ही कवि की रचनाएँ हैं। भाषा
आर वणन गला का दृष्टि में भाषा वामाकि रामायण भा दृष्टा जिनका
कवि का रचना सिद्ध होता है।

सभा की १९०५-८ की स्थापित स्वाज रिपाट में विष्णुदास के सम्बन्ध में
विशेष विवरण नहीं प्रस्तुत किया गया है। रिपाट में यह सूचना पाया है कि
उ गापाचल गट् जयवा ग्वालयर के रहने वाले थे जहाँ उनका पिता एक राजा
टागर सिंह का राय था। रिपाट में विष्णुदास रचित मन्नाभागत कथा का
रचना काठ सन १४३५ ई. बताया गया है। ग्वालयर में डूगर सिंह का राज्य
काठ सन १४८१ से सन १५११ विक्रमा तक माना गया है। डूगरसिंह के
पुत्र कीर्तिमत्त का राज्यकाठ सन १५११ से १५२६ विक्रमी माना गया है।
ग्वालयर का नाम गावगिरि गापाचल गट् भी था। इन दोनों राजाओं के
राजकाल में ग्वालयर विद्या एवं साहित्य का केंद्र बन गया था इसका प्रमाण
मिलता है। उनके राज्यकाठ में अपभ्रंश के जन कवि रघु ने पद्मपुराण तथा अन्य
रचनाओं का प्रणयन किया था। रघु ने मुकीगट् चरित की रचना सन १४९६
विक्रमा में की थी और उसके पूर्व के पद्मपुराण का रचना कर चुके थे। सन
१४९२ में डूगर सिंह के राज्यकाठ में विष्णुदास द्वारा महाभारत कथा की रचना
अनिहाम सम्मत सिद्ध होती है। इस प्रकार हिन्दी कवि विष्णुदास और अपभ्रंश
कवि रघु समकालीन तथा एक स्थान के निवासी सिद्ध होते हैं। विष्णुदास के
सम्बन्ध में और काँई सूचना अभी तक नहीं मिली है। इनका नाम गास्वामी
विष्णुदास मिलता है।

१—भक्तमाल प २४८।

—डाक्टर वल्क रामकथा प० २१८।

—नागरा प्रचारिणा पत्रिका वष ६१ प० ८।

८—ग० हरिवंश फौडर अपभ्रंश साहित्य प २४।

—परमानन्द जन गान्धा महाकवि रघु—वर्णी अभिनन्दन ग्रन्थ प ३९९।

मभा की सन् १०४१ ४३ की खोज रिपोर्ट में भाषा वारमीकि रामायण व रचयिता विष्णुदास बंदूक हुए हैं। ग्रंथ में २१० पांजीर ६२४१ अक्षरों व बताये गए हैं। यह ग्रंथ म्युनिमिपल म्युजियम अलाहाबाद में सुरक्षित है। प्रस्तुत लेखक ने इस हस्तलेख का संप्रहाय्य में दिया है। इसमें २१९ पत्र हैं। संप्रहाय्य का विवरण पत्रिका में इस—श्री वारमीकि रामायण का हिन्दी छंद अनुवाद—लिया गया है जोर अनुवादकता विष्णुदास बंदूक हुए हैं। हस्तलेखक दाता का नाम आचार्य राधाकृष्ण गार्वामा महाजनी टाला प्रयाग लिया गया है। हस्तलेखक आरम्भ में कुछ पत्र भी लगे हुए हैं। जिनमें विजयादशमी व अक्षर पर पूजा का विधियुक्त विवरण लिया गया है। इन पत्रों में—जा जाता जन्मिदि तरणे सेतुबंध समुद्र—आदि श्लोक दिया है और फिर पूजा की विधिया दी गई हैं। प्रथम उल्लेख सन् १८०७ का है। इसका बाद क्रमानुसार सन् १८३० तक विजयादशमी पूजा का उल्लेख है। यह पूजा कर्नाटक हस्तलेखक गोस्वामी के यहाँ सम्पन्न हुई होगी। इसका बाद दाता है कि इस हस्तलेखक लिपिकार सन् १८०७ का पूर्व का है। दायन में भा हस्तलेख पुराना जान पड़ता है। विजयादशमी पूजा व विवरण बाद पत्रों व पश्चात में आरम्भ नहीं होता। इस समय हस्तलेखक आरम्भ का पत्र नहीं है। पाण्डुलिपि का आरम्भ २३वें पत्र से होता है। जान पड़ता है कि बीस वर्ष पूर्व हस्तलेखक आरम्भ का पत्र था। क्योंकि सन् १९४१ ४३ की मभा की ग्राज रिपोर्ट में ग्रंथ का आरम्भ का अंग उद्धृत किया गया है।

इस संप्रहाय्य में वारमीकि रामायण का एक जोर रूपांतर है। संप्रहाय्य पत्रिका में इस रूपांतर का नाम—वार्मीकि अनुवाद रामायण—लिया हुआ है। गनी हस्तलेखक संख्या २८४ २२९ है। इसका भी दाता आचार्य राधाकृष्ण गार्वामा हैं। कता और लिपिकार का नाम नहीं दिया गया है जोर लिपिकार का भा उल्लेख नहीं किया गया है। भाषा का दृष्टि से यह परवर्ती काल की तथा किसी अन्य कवि की रचना जान पड़ता है।

विष्णुदास द्वारा भाषा वारमीकि रामायण में आदि काव्य का मतिष्ठ हिन्दी रूपान्तर चौपाइया में प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रथम बाण्ड द्वात्रिंशत् तृतीय बाण्ड हनुबाण्ड और तृतीय बाण्ड उत्तरबाण्ड कहा गया है। बाण्ड व अन्तगत संग अथवा अध्याय रखे गए हैं। पहला बाण्ड में ४५ और दूसरे में ४६ गण हैं। तीसरा बाण्ड अपूर्ण है। चतुर्थम वार्वामा का कथा व अनुवाद है।

१—म्युनिमिपल म्युजियम, अलाहाबाद, हस्तलेखक संख्या २२३।२८६।

पद्मार्थ म रामरथा का उत्पत्ति वर्णित है। तत्पुत्रगन्त प्रथम गग म श्रा शृगा
त्रपि का आगता तथा राता श्राग्य का मुमत्र ता पगमग वर्णित है। दूतरे
गग म पुत्रपि यत ता वगन है—

मिगा रिपि दगग्य ल जाई। हा वग जा पूज पाई। ६।

इति श्रा वाल्मीक प्रत रामागत भाषा वणन मिगा रिपि जनम तपस्या
अगगग गवन वनी नाम प्रथम मुमग।

श्रगरय मुनि मत्रा क वन आप गय मिगा रिपि वन।

श्रीमपात्र की करि मनुहारि त जाण जवघपुरा प्योमार। ७।

जनक आशि पौहमा क राउ महम जगमा रिपिह कराउ।

अस्वमत्त दसरय अरठ्यौ मिगा रिपि आचाज भयो। ८।

कवि न तीमरे सग म गगावतरण चौद सग म विवामित्र चरित्र और
पाचवें सग म विवामित्र यज्ञ का वणन किया है। वाल्मीक क छठ सग म साता
स्वयवर तथा राम वनवाम की कथा विस्तार म कहा गया है। राम श्रमण और
माना वन जात हुए तमगा के तार पचत हैं जहा मध्या हा जाना है। रात का
उनक माध आय नगर निवासा सा जात है और उम समय मुमत्र रथ कर जाग
निकर जात है। मबरा हाने पर जयोध्या वासी श्रघर-उधर राम का दूतन है जोर
उह न दखवर वित्राप करत हैं। राम शृगवेरपुर पचत है जहा निपात्रराज
उनका स्वागत करता है और भेंट प्रस्तुत करता है।

१—भाषा वाल्मीकि रामायण—

लडिमन कुवर कर मनुहारि कोउन बहुरे पुरप का नारि।

चन्त चन्त त्तिनायर आयया तममानीर मित्रना भयो। ४२७।

ठाइ ठाइ जब सूतौ लाग तव बुधि उपनी रामनि जाग।

कहू सौ न जनाइ बात घरतन रथ हाकथी अघरात। ४२८।

घारा दूर खाज निन बायी बहुर वन मारग हाबायी।

जाग्या लाग बहुन दुप भयो हाहादइ राम कित गयो। ४२९।

राम लडिमन वरि करहि पुकार वन उन धावहि बारवार।

निनहु न काह देप्यो कह्यो रथ की गाज तमहि जन गह्यो। ४३।

बहुरि महाजन नगरा गय। राम न दप बिलप गए।

मरउतार गय बलवार। मत्र जात्र गाव क तार। ४३१।

कामिल दग रपु हिंगनी तात रम न राघी बला।

मिगवरि नगरा सुभ ठाउ भात्र सुवस नाम गुत्राउ। ४३२।

लक्ष्मण और सीता व साथ राम गंगा पार कर प्रयाग पहुंचत हैं। वहां स भरद्वाज मुनि व नाम पर जान हैं—

चौन्ह बरस तपा हम नए, द उपन पिता परटए।
साइ अवहि हाय धरि भाउ रहिय जाग बनाउ ठाउ।६४४।
इतनी सुनत रिषीस्वर भन दबराज तुम करिहौ घन।
चित्रकाट तुम योगी ठाउ चउन्ह बरस बह्या रिषि राउ।६४५।

प्रयाग स राम माना और लक्ष्मण चित्रकट की गंग प्रस्थान करते हैं। विष्णुनाम न चित्रकट गमन का कवित्वपूर्ण ब्रणन किया है। भरद्वाज मुनि मांग लियाकर अपन आश्रम पर लौट जाते हैं। राम यमुना व निकट पहुंचत हैं और नाविक का उठाकर नाव पर चढ़त हैं। यमुना पार करने व पश्चात जंगल का पार करने हुए राम चित्रकट पहुंच जाते वहां आश्रम बनाकर निवास करने लगे। चित्रकट पहुंचने का क्या का वषण ऋषव अध्याय म किया गया है।

राम वनवास का यह वषण शक्ति काव्य म जयाध्या काव्य म आया है। इस क्या का यह रूप परवर्ती राम साहित्य म भा मिलता है। विष्णुनाम न

राम जानि तनि आरु बोया राजु म मवु चाह दाय।

निनि मनुगुरि राम का बरा ल अनर न्यि गजवरतुरा।६३२।

तव करि मार राव धर गयी उया मूर भुनमारा भया।

सपन राम मुभय न जाई। कह वात राधा समुझाइ।४५४।

१—वर्ग—

बन कुवर ता तारथ हा रिषि बहुर माग्य लियग।

बन बन जमुना पाहचोयी डावर बाणि नाव चनि गयी।४४६।

आपुन दाऊ चह कुमार धर बधरा धरि हृथियार।

अर निनि साना ल चडा म पार पहुंच जा।६४७।

छा बनघन ताल निवात पाठ लछिमन राम अगिमान।

पग योहन रै चौपाम कुहेकुहे वा बाइवाम।४४८।

रिल वसान ननवन कू म बलग दाम समतूर।

दपन पौहच गिरवर पाग, जन इ निवमूरनि कगना।६६९।

तर्हरि मात्रती न बड़े करि आश्रम तहू र।

भाजन हाम करहि प्रग माणि जन बर्नाह बगन मचारि।४५०।

शक्ति काव्यी कि प्रग गमाउन भाषा बनन श्री रामजी बनासग गवन करना चित्रकट विराजना नाम पठमा अध्याइ।

बालकाण्ड के अन्तिम छंदों में अपने नाम का उल्लेख भी किया है जो फलप्रति
कही है। खोज रिपोर्ट में उल्लिखित कवि की अन्य रचनाओं में भी इस प्रकार
की फलप्रति मिलती है। बालकाण्ड के अन्तिम छंद (४५वां सर्ग) में फलप्रति
का वर्णन किया गया है।^१

भाषा वाल्मीकि रामायण का दूसरा काण्ड हनुवाण्ड है। इसमें यद्धकाण्ड
तक की कथा कही गयी है। हनु काण्ड का आरम्भ इस प्रकार होता है—

श्री राम जी आ गनस जी आ गरमुती जा गन गहा जय आ रामान
का दूसरो काण्ड थी हनुवाण्ड लिख्यत।

इसके उपरान्त सीता की खोज हनुमान द्वारा सागर उधन की कथा प्रारम्भ
होती है—

बाल्मीकि जो कह्या पुरान बाण कथा जो करी बपान।
बाल चरित थोरा मन रह्या हनु गए सु बौहत कह्या।१।
हनु गए सु सुनहु करि ध्यान बाण कठि जाव मतान।
रिप दरिद्र न व्याप रागु होए न बघौ नारि बियाग।२।
उही सुधि अगद गह गह्या मधुर जामवत सा कह्या।
मोसा कहौ कौन बरवीर नापि जाए साइर कौ नीर।।
या साइर का धार न पार सुरनर कौन उलघन हार।
भारे हिये भया सदेह हम सौ बहा जावधि एह।४।

इस वर्णन के अन्तगत २२वां चापाइ के बाद एक श्लोक दिया गया है जिसमें
जामवत हनुमान को समुद्र उधन के लिए प्रेरित करत है—

१—बही

धारी बुधि विद्या गुनहीन अहनिमि राम चरन मननीन।
विस्नदास कवि विनती कर स करिज भवसागर तर।१३२।
मनहि सुनहि जे कर उपगार दान दहि ज विनहा सार।
तिन फल विस्नदास कवि भन काटि जसप न जाना मन।१३३१।
दहि काटि विप्रन का गाइ सागर सगम गगा जाए।
सूज पव कर कुरपत गा फल होइ सदाव्रत दत।१३३२।
जा फल जठसठि तारथ वाय सा फल राम विचार हाय।
जा फल विस्नदास कवि भन राघौ धरित कान सुन।१३३२।
एति आ वाल्मीकि कन रामान्न भाषा बनन प्रथम का बालका सपुरा
मुममस्त।१।

उत्तिष्ठ हरिगादृष्ट लघयस्व महाणवम् ।

पराहिमवभूताना हनमन या गनिस्तव । २४।

इतिथा वाल्मीकि नत रामाइन भाषा बवन हनु बाड हनुमान स्तात नाम
प्रथमा स्वग । १।

यह श्लोक वाल्मीकि रामायण के विभिन्न भागों के सरसठव सग का अडती मया श्लोक है जिस कवि ने यहाँ उद्धृत किया है। विष्णुदास ने वाल्मीकि रामायण का गहन अनुशीलन किया था और अपना रूपांतर मूलवृत्ति के अक्षरानुसार निकट रखा था। इस प्रथम श्लोक के अर्थ का प्रचार रण गय है। उक्त श्लोक के उपरान्त हनुमान समुद्र पार कर लवा पहुँचते हैं।

हनुमान के द्वितीय सग में कवि ने लवा नगर अशाक बाटिका में सीता सोना नमान सवा तथा साता मन्त्र का वणन किया है। साक्षात्कार होने पर परमसुत ने सीता से कहा—

सुनि सुनि सीथा पवन सुत कहैं । ता लागि राम विलपतु रहैं ।

बदर गय दहा निसि पूरि । हीड पवत नीर दूरि । १८३।

नो भूप तिनि माघी प्यास । माग पिगि तुम्हारी आस ।

साता चाहत तमी वधि । ज स पाव स मव सिधि ॥

मरी भाग पहुँच्या जाइ । मैं तुम नननि तपी मा ।

अब हूँ ह राघी सजागु । रापिस सब परिहरा मोगु ॥

कुमल राम वधी नडिमना । तुम लागि ह गिरवर घना ।

भोजन कर न सात्र राति । अहनिंसि जननि तुम्हारी ताति ॥ १८६ ॥

साता का जावस्त करन के लिए हनुमान ने राम नामानित मुद्रिका अर्पित कर दी—

जत्र तट वछ त अत्र दाय । वादपूत मन घायी वीया ।

जात्र जजहू मन न पर्याइ । इनिवत मन्त्र अर्पी घाट । १९७।

राम नाम तहि त्रिप्या सुनार । साता बात्र वारजार ।

आसू गल छाय ता नन । मूघी बात न आव वन । १९८।

×

×

×

यन पन मन्त्र पत हनिउत । साता सुग उपया तपत ।

जात्र हाय नवाया माग । उत्रा मया हूँ जब दीस । २०२।

घनि घनि पवन पूत वरबीर । घनि जननी निठि पाप्या वीर ।

सो जात्रा साहर ना पीया । हीय न डर रावन का बापी । २०३।

जत म सीता ने चूडामणि उतार कर हनुमान को गिया—

मनि तमालिक जनक सुगया । बना मैं थ काण साया ।
धरी हाथ हनिवतहि तन । वीहरि सत्तम कह आपन । २४५।
मनि पाज आनठ वार । विकल गया जानकी सरीर ।

जो न पत्याउ जननि गुनि वन । गि त्तम मत्पौगिनन ।
लछिमन राम त्व क पार । मघत्त धन बरम धार । २४६।

इति था बाग्मीकि गत रामान भाषा बनन हनुवाड साता हनु सत्सी बनन नाम दुत्तियो सग ॥

हनूवाड म यद्धकाण का बधा बस्तु का वणन विस्तार स किया गया है। हनूवाड के जत म कवि न पुन रामचरित का महिमा का वणन किया है। विष्ण दास भक्त कवि थ। जान पता है कि उहान कवठ धार्मिक विषया पर हा रच नाए का था। किसान राजा आदि का प्रशंसा म काइ ग्रथ नही लिखा था। ठिया असब सग म हनूवाण्ड का अन्तिम अंग इस प्रकार है—

जोग जुगति मन राप ध्यान कचन बौहति दति ज दान ।
तारथ सठ कर जा हान तिनि को राम नाम परखान । १५५५।
पुहमा काउ राउ न आहि स्वारथ करन बिाउ जाहि ।
विस्नदास मन राधो रहे राम चरित घमलनि कहै । १५५६।
पिता कचन सया वन पड मारयो दमकधरु बलि बड ।
सुर सतास काटि जस लया सा थाराम सभा का जया । १५५७।

इति श्री हनूवाड सपूरन मुभम त जयाप्रति लिप्यत दाप न दापत ।

ग्रथ का तासरा काण उत्तर काण । इसम उत्तर रामचरित का वणन किया गया है। कथाबस्तु जाणिकाव्य क अनसार है। यह काण जपूण है। हस्तगत म २१९ पत्र क वाण क पत्र नही ह। ९३ क छन्द क बाद ग्रथ खति है। अन्तिम पत्र पर अन्तिम अंग इस प्रकार है—

साता सहित भयो अभिपय पीहमी राम रघुवसी एकु ।
एकछत्र सिंग राज समत पाछ बरस भोगइ बहुत । ९३२।
कुस लौकुस राज यत् कर राम पिता चरन चितु धर ।
बदूत हत राम सो जाहि साता सहित अनुध्या ताहि । ९३३।

इसके पश्चात् गेप क्या का जग नहीं है। आदि काव्य के अनुसार सम्पूर्ण रामचरित इस ग्रन्थ में रखा होगा। इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में खोज की अपेक्षा है। अंग्रेजों से सप्रहान्त्य का हस्तलिखित प्राचीन ज्ञान पत्र है। लिपिकार ने किसी पूर्व प्रति में इस तयार किया था। इस ग्रन्थ की और प्रतियाँ मिल जाय तो इसका पाठ निर्धारण भी सम्भव हो सकेगा। तुलसी पूर्व हिंदी राम साहित्य के अध्ययन एवं मूल्यांकन की दृष्टि से यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

दास्य भक्ति का पल्लवन—ईश्वरदास

विजय की चौहवा पत्रहवा गतांगी में उत्तर भारत में स्वामी रामानन्द ने राम भक्ति का प्रचार किया था। स्वामी रामानन्द के गिण्य वगैरे नरक के विभिन्न भागों में गढ़िया स्थापित कर रामभक्ति का प्रचार क्षेत्र व्यापक बनाया। स्वामी रामानन्द तथा उनके गिण्य प्रगिण्य महात्माजाक प्रथम में भक्ति जान्ता न मध्यकाल में जन आन्दोलन के रूप में परिवर्तित हो गया। समग्र भारतीय समाज का इस आन्दोलन में प्रभावित किया। इस काल में भक्ति का जल प्रवाह मुर सरि की पुनीत दिव्यपारा की भाँति प्रवाहित हुआ। इस प्रवाह में स्नान ममाज की अपूर्व सुख एवं गति की उपरिष हूँ मना। भक्ति जादालन की मव प्रमुख विपत्ता वभवगानी भक्ति साहित्य का निमाण है जो अत्यन्तकाठ तक कोटि-कोटि जनो का मजल बना हुआ है।

स्वामी रामानन्द ने दास्य भक्ति का प्रचार किया था। अनय भाव में रागम का मवा पत्राति पर उठाने का किया। गरणागति अथवा प्रपति का स्वामी रामानन्द ने भक्ति का विगिष्ट तत्व बनाया। दास्य भक्ति समाज में सर्वाधिक ग्रहण हुई। दास्य भक्ति का पल्लवन जग चलकर गिण्य साहित्य में हुआ। स्वामी रामानन्द का मत्य के लगभग एक गतांगी क उपरांत दास्य भक्ति का गिण्य साहित्य में मवप्रथम साभात्कार ईश्वरदास का रचनाओं में हुआ है। विजय की सत्रहवा गतांगी में ग्सी घारा में गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस तथा अपना अय रचनाओं में दास्य भक्ति का सर्वोत्कृष्ट रूप प्रस्तुत किया।

ईश्वरदास के सम्बन्ध में आचार्य गवत ने अत्र सतीन दशक पूर्व भक्ति साहित्य का सामान्य परिचय दत्त हुए गिण्य था—गिण्य जोर विगानो की काव्य परम्परा में यद्यपि अधिकतर जाययताता राजाओं के चरितों और पौराणिक या ऐतिहासिक जाख्याना की ही प्रवृत्ति थी पर साथ ही कल्पित कहानियों का भी चरन था इसका पता गता हूँ। गिल्ली के वादगाह मिक्तरगाह (मवत १५४६ १५७६) के समय में ग्वि ईश्वरदास ने सत्यवती कथा नाम की एक कहानी गहा वीपाइया में लिखा था। जिसका जारम्भ ता व्यास जनमजय

के सवाद से पौराणिक ढंग पर हाता है पर जो अधिकतर कल्पित स्वच्छन्द और धार्मिक भाग पर चलने वाला है।^१ आचार्य गुबल ने से सेप में कथानक तथा रचना काल का उल्लेख भी किया है। सत्यवती साहित्यकथा के अतिरिक्त आचार्य गुबल ने ईश्वरदास की अथ किमी रचना का उल्लेख नहीं किया। सत्यवती कथा सन् १९३७ में हिन्दुस्तानी में प्रकाशित की गयी।^२

ईश्वरदास की रचनाओं में मन्वन्त में मूचनाएँ नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में प्रकाशित की गयी। सन् १९२३-२५ की रिपोर्ट में भरत विलाप की मूचना दी गयी।^३ विवरण सख्या १७३ पृ० ६६८ में इस रचना में ९ पत्र १३५ अनुच्छेद होने की मूचना दी गयी तथा हस्तलिखित लिपिकाल सन् १९०३ बताया गया। प्राप्ति स्थान सम्प्रदाय मूचना के साथ रचना के आदि और अन्त के अंग भी उद्धृत किये गये। सन् १९२६-२८ की रिपोर्ट में स्वर्गाराहण नाम की रचना की मूचना दी गयी। रचना का आरम्भ रामप्रसाद के नाम से और अन्त ईश्वरदास के नाम से होता है। रिपोर्ट के सम्पादक ने यह मत व्यक्त किया कि इनके रचयिता कल्पित ईश्वरदास हैं। रिपोर्ट में सख्या १८५ पृ० ४६ में ग्रन्थ के आदि और अन्त के अंग किये गये तथा हस्तलिखित लिपिकाल सन् १९१४ बताया गया। सन् १९४४-४६ के प्राचीन हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों की खोज की उत्तरीयवा प्रचारिणी विवरणिका में श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने ईश्वरदास की दो रचनाओं—भरत विलाप (सख्या २१) और अगस्त्यपत्र (सख्या २३) की मूचना दी।^४ उन मूचना में दो रचनाओं के अंग भी प्रकाशित किये गये। सन् १९६१ में श्री उषादेवी पास्या ने ईश्वरदास की रचनाओं का विस्तृत विवरण किया और भरत विलाप अगस्त्यपत्र तथा रामजन्म के हस्तलिखित मन्वन्त में मूचनाएँ दी।^५ एक अन्य रचना एवाङ्गा के नाम भी कवि की कथायी गयी है। इस समस्त विवरणों में ईश्वरदास का रामकथा सम्प्रदाय जिन तीन रचनाओं की मूचनाएँ मिलती हैं वे ये हैं (१) भरत विलाप (२) अगस्त्यपत्र तथा (३) रामजन्म।

१—आचार्य गुबल लिखित साहित्य का इतिहास पृ ७३-७४।

२—हिन्दुस्तानी भाग ७ (१०-१७)।

३—सम्पादक विवरण १९२३-२५ सख्या १७३।

४—सम्पादक विवरण १९०६-०८ सख्या १८५।

५—नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ५६ अंक १।

६—नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ६१ अंक १।

ईश्वरदास के सम्बन्ध में विशेष सूचना उपलब्ध नहीं है। कवि ने अपनी कृति मत्स्यवती कथा का रचनाकाल सन् १५५८ विक्रमाब्द में लिखा है जो इस प्रकार है—

जाति एक पञ्च क मगा पाच आत्मा आगे जगा।
भागे भास पाप उजियारा निधि नौमी मो मगन्बारा।
नपत अम्बिनी भेषक चण पच जना मा मग जनग।
जागिनीपुर लिली बडयाना माह मिकर बड मुलाना।
कठ वठ सरसुती विद्या गणपति दीह।
ता दिन कथा अरभ यह इमरदाम कवि काह।१।

इस उल्लेख से कवि दिल्ली के बाग्याह सिकन्दर गार्ह का समकालीन ठहरता है। ग्रन्थ की रचना सन् १५५८ विक्रमाब्द में आरम्भ की गयी। श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने यह मत व्यक्त किया है कि ईश्वरदास दिल्ली के ही पाम जोगिनीपुर स्थान के निवासी थे। यह मत तर्कान्वित है। कवि ने अपने समय के राजा सिकन्दरगार्ह का केवल उल्लेख किया है। जोगिनीपुर दिल्ली का ही एक नाम है। यह मानने के लिए कोई प्रमाण नहीं है कि कवि स्वयं दिल्ली का निवासी था। रचनाओं में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है वह अध्याध्या के आम पाम की ठंड अवधी है। अध्याध्या के आमपाम के क्षेत्र में कवि का सम्बन्ध होना चाहिए। विश्वसनीय सूचना के अभाव में ईश्वरदास के सिकन्दरगार्ह के रायकाठ (सन् १५४६-१५७४) में वर्तमान हानक अतिरिक्त और कुछ अधिक नहीं कहा जा सकता।

ईश्वरदास नाम के एक में अत्रि कविया की सूचना मिली है। १९३२-३४ का खाज रिपोर्ट में मारवाडी हिन्दी में रचित गण हरि रस की सूचना ली गयी है।^१ इसमें रचयिता गणेश ईश्वरदास बताया गया। विवरण में कहा गया—'खोज में मिली दा प्रतिया में समय नहीं लिया गया है ही मकना है कि केवल खोज विवरण (१९२६-२८ सख्या १८५ १९२२-२५ सख्या १७३) में उल्लिखित रचयिता हैं। पर एसा कहने के लिए कोई प्रमाण नहीं। राजस्थान के भवन कवि महात्मा ईश्वरदास प्रसिद्ध कवि हैं। इनकी रचनाओं में हरिरस का अच्छी स्थिति मिली जिसमें ३६१ छन्दों में अवतारों का स्तुति की गयी है।^२ इनका समय सन् १५९२ बताया गया है। ईश्वरदास नाम के अन्य कवि मत्स्यवती कथा

१—ममा खाज विवरण १९३२-३३ सख्या ०१ पृ० ३८।

२—ईश्वरदास हरिस्त राजस्थान रिमच सासायटी वृत्तता सं० १९९५।

के रचयिता ईश्वरदास में भिन्न हैं। ईश्वरदास का जब तक मिठी मभी रचनाएँ जवधा में हैं।

ईश्वरदास के नाम के सम्बन्ध में भी विवाद है। श्री उत्पलदास गाम्वा ने अपने ग्रन्थ में रचनाओं के सम्बन्ध में प्रायः उक्तवाचक शब्दों पर कवि के नाम पर विचार किया है। किन्हीं हस्तलिखित ग्रन्थों के नाम मूर्जनाम दिया हुआ है। अपना मत व्यक्त करते हुए श्री गाम्वा ने लिखा है— "मैं यह प्रतीत होता है कि ग्रन्थ का मूलकता मूर्जनाम है कि ईश्वरदास। यह भासा मत है कि इनमें एक नाम ही और दूसरा उपनाम। यद्यपि किन्हीं के मत में तब तक तब ही नाम ही नाम ही दिया गया है। अतएव जब तक कि प्रमाण न मिले तब तक यह समस्या खोली रहनी है। वास्तव में नाम के सम्बन्ध में गाम्वा के लिए अवसर न मिल पाया। मूलकता तथा ईश्वरदास का रचना है यह निर्विवाद है। मूलकता तथा म कवि ने अपना नाम ईश्वरदास दिया है। इस रचना का ध्यान रखते हुए प्रायः चर्चा कि इसमें कवि ने अपने नाम का उल्लेख नहीं कर दिया है। कवि का नाम १ २ ४ ५ १६ ५३ ५८ आदि में तथा पचासवें पद्य के शब्दों में ईश्वरदास कवि करने दिखाया में जाया है। अतएव यह स्पष्ट है कि कवि का वास्तविक नाम ईश्वरदास ही था। सम्भव है मूर्जनाम कवि का उपनाम हो। ईश्वरदास का कृतियों का सम्पादन भी हुआ है। कश्चित् म. म. १९०६ में मुद्रित भक्त विद्याप का एक प्रति नागरी प्रचारिणी मंडल के पुस्तकालय में है। ईश्वरदास की मूर्जनाम ग्रन्थ स्थानागत भा प्राप्त हुई है। भक्त विद्याप का कृष्ण प्रतिभा में प्रयत्न करने पर तुम्हाणम का नाम आया है। इसमें यह भा अनुमान किया गया है कि भक्त विद्याप के रचयिता तुम्हाणम है किन्तु वे मानते हैं कि रचयिता गाम्वा का तुम्हाणम में भिन्न है और उनके पूर्वजों भी थे। मूर्जनाम अर्थात् विद्याप तुम्हाणम के भक्त विद्याप के मत हीन रहे म. म. में जो मत व्यक्त किया गया है वे तर्कादि हैं। इसका लिए काठमांडौ आचार्य नहीं है। भक्त विद्याप का मूलकता तथा क

१—नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ६३ अंक १।

२—ईश्वरदास के मूलकता तथा कवि कृतियों का विद्याप का मित्र।

—मंडल गात्र विद्याप १९२६ २८ विद्याप परिशिष्ट।

नाम ही पूर्वजों पाशा राम लखन म. म. लख।

तुम्हाणम मत हीन भक्ति कर मत लख।

६—हिन्दी के मध्यमकालीन साहित्य का. गीतानाम निवारी पृ० १००।

रचयिता ईश्वरदाम का हा वृत्ति माना जाना चाहिए। जत्र तक इमर विपरीत कोई पुष्ट प्रमाण न मिल जाय।

रचनाएँ

सत्यवती कथा तथा भगत विद्याप आदि रचनाओं के रचयिता एक ही कवि ईश्वरदाम है। यह इन रचनाओं के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है। सत्यवती कथा में मरम्भना की वृत्तना का गयो है।

कण्ठ उठ मरम्भती विद्या गणपति दीह
ता तिन कथा जरभ यह मरम्भ कवि बाह।१।

इसी प्रकार भगत विद्याप का आरम्भ इस भांति है—

मरगत चरण मनिउत मन म उट्टा उठाह।
गभयया कहु भापहु जाक गुन जगगह।१।

सत्यवती कथा का समाप्ति इस प्रकार है—

सहस्य नाम जा मुन कहत कथा फल पाउ
काहि ताय जन काहा मरगतस कवि गाउ।१८।

भगत विद्याप की अन्तिम पंक्ति इस प्रकार है—

भगत विद्याप कथा वीमर इमरगतस कथा गाउ।
जा नर मुलना जा गावहा जनम जनम अघ जाइ।

दोना रचनाओं में गार्हिक साम्य भी मिलता है—

जाउत तू चोप जह वर कथा जाहि।
वनपत है जा व्याघा कथा मापहु ताहि। न क ८।
चाप दत विद्याप भयऊ अतर वगि जाजन मत गयऊ। भ वि०।
स्वयं त्रय ब्रह्मा कर धात वस त्व जाग परधान। म क ।
गमचरर छात्र जम्हाना राव नगर सकल परधान। न वि ।

गलावती का समाप्ति के उदाहरण वगैरे जा सकते हैं। भाषा और वृत्तन शैली के आधार पर ये रचनाएँ एक ही कवि ईश्वरदाम की मिल्द जाती हैं यह निश्चिन्ता रूप से कहा जा सकता है।

सत्यवती कथा ईश्वरदाम द्वारा धार्मिक जाग्यन काव्य है। वनवाम के समय पाण्डवा का मातण्य रूपि तारा मुताह गया सत्यवती कथा का समम वृत्तन है। समम मनात्व और पतिव्रत धर्म का महिमा का वृत्तन किया गया है। सम रचना का रामकथा से सम्बन्ध नहीं है। किन्तु समम रामकथा का निर्माण मिलता है। सत्यवती अपना सृष्टियाँ के साथ मरावर में प्राण एव स्नान करती

हैं। ऋतुवण इस एक वक्ष पर चत् वर दग्गता है। वाग्गजा का इसका नाच होता है। इस अवसर पर उनकी उक्ति इस प्रकार है—

एक सखा दव पल्लवद्वारा चकित ह्व क सवन निहारा।

एक सगी वह मोहि अस भावा रामचन्द्र जनु देवन आवा।

की ब्रह्मा हरिहर की माया की हनुमत त्रिभीषण आया।

ऋतु वण क माय विवाह सम्पन्न हा जान पर मलयवती नारायण म वट्ठा
 है कि गम जिस पर प्रसन्न हा देवता लाग उम पर वृषा करते है—

जा कह परसन हो गधुराया देव लाग नाच कर माया।

ईश्वरदास की राम कथा सम्बन्धी रचनाएँ तान —भरत विगाप जगत् पज जोर राम जम। भरत विगाप का नाम कद हस्तगंगा म भरत विगाप भी मिलता है। रचना का ऐतन स भरत विगाप का नाम सम्भव जान पत्ता है। भरत विगाप की कद हस्तलिखित प्रतिया उपलब्ध हुई हैं। चार प्रतिया का हवाला श्री विश्वनाथ प्रमाण मिश्र न १९४४ ४६ का त्रिवापिन रिपाट म दिया है। इसम जगत् पज का भा उल्लेख किया गया है। भरत विगाप की दो प्रतिया और राम जम क सम्पन्न म सूचनाएँ श्री उद्योगकर्त गाम्त्री न दा है। भरत विगाप और राम जम श्री गाम्त्री क सग्रह म सुरक्षित ह। उन्नि यह भी बताया है कि भरतगाल पुस्तकाग्य गया म एउ गत्वा है निमम राम-जम आर भरत विगाप रचनाएँ हैं।^१

भरत विलाप म ईश्वरदास न राम वनप्राग क उपरांत भोज क मनियान्त म ऐतत ग्गरय की अन्त्यष्टि राम को वापग जान क रिप भरत का चित्रक माया तथा तरणपादुहा लेकर जयाध्या त्रीने की कथा का वणन दाहा चौपा र्पा म किया गया है। रचना कर्ण रस स जानप्रात । इसम भरत की नाम्य

१—नागरी प्रचारिणी पत्रिका वष ४६ अंक १।

—भरत विलाप की चार प्रतिया का पता इस प्रकार है—(१) सवत १८८० का लिपी प्रति प० गयाप्रमाण गाम्थ्या (ग्राम वनसाला राकधर भन्सा जिला मुल्तानपुर क पाम (२) नागरी प्रचारिणी सभा बागी (यापिक सग्रह) म (३) श्रीदौन्दरामपाण ग्राम जोर राकधर महिजाण पुर जिला इलाहाबाद क पाम (४) नागरी प्रचारिणी सभा बागी म।

—जगत् पज का पता—१० जानन् रिपाठा, ग्राम दग्गवापुर राकधर भरवारा, जिला इलाहाबाद।

२—नागरी प्रचारिणी पत्रिका वष ६१, अंक १।

भक्ति का चित्रण किया गया है। भरत राम के जन्य भक्त के रूप में सामने आते हैं। भरत विनायक व हस्तगर्व (नम्बर २७/२११६८२ और नं २१७८। २ ५) ग्बक न आयभाषा पुस्तकालय में दस है। इनका जिक्रिवात् नमग सवन १८९० और १८८ विनमी है। श्री उल्यगकर गारुनी न अपन मग्रन् की एक प्रति का पाठ नागरा प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित कराया है। नागरी प्रचारिणी मभा क मत १९२ २५ व खाज विवरण में सवन १९ ३ का प्रति के आदि और जत व जग उद्धत किय गय है। साहित्यिक दष्टि से भरत विनाय महत्वपूर्ण रचना है। दारथ की मत्य व उपरात भरत के अयाध्या गान तथा राम को अयाध्या गिवा गन के गिग चित्रकत् जान तथा चरण पादुका लेकर लौटन क करण प्रमग वाल्मीकि रामायण में अयाध्याका उ म ६८वें सग स ग्कर ११३वें मग तक में वर्णित है। ग्वरगाम क्त भरत विलाप पर विचार करते समय गोस्वामा तुलसीदास के रामचरितमानस में तथा के कुछ अंग उद्धत कर दिय गय हैं। जिनसे हिन्दी राम साहित्य में इस कथा प्रसंग का विकास स्पष्ट हो जायगा।

भरत विनायक का आरम्भ राम वनगमन के निर्णय से होता है। रामचन्द्र वन का चले गय। अयाध्या में गार्क व्याप्त हो गया नगर निवासी रत्न करने ग्य। अवध उज्ज गय। दारथ न पुत्र गार्क में प्राण त्याग गिया। केकयी ने पत्र देकर भरत का ननिगत् से वतान क गिए न भेज। इन गीघ्रता में चत्कर भरत क पाम पहुँचे—

रचि रचि क्वत् पत्र गिपावा दूत हाथ द नहर पठाया।
जाहु दूत भरत के पामा जवधपुरी के भयी निरासा।
चौप दत विना तत्र भयऊ अतरबसि जाजन सत गयऊ।
जहवा भरथ चतुरगन रत्नऊ जा सो त्त दडवत कीणउ।

भरत न अनिष्ट की जागता में चिन्ताग्रस्त हाकर तुरत अयोध्या के लिए प्रस्थान किया—

एसन मार न मन पतिआइ अब ती अयोध्या दपहु जाई।
आतुर चत्त न वमन सभारा आग पीठ न एक विचारा।
धनि चरि आए जवव प्रवेसा नही सभार पाग निर केसा।
अपत कत्पत रावन जाई पुनि वत्र नगर लाग कुसलाइ।
मन उगाम दपौ तव दूता मोरे मन न हाइ परतीता।
वसुधा त्पौ मन क हीना पसु पछी सब दूत मलीना।

अयोध्या के निकट पहुँच कर भरत न धारा जार मुनसान देता। नगर के लाग मन मार दुवा हा रह थे। गार्क सतप्त पुरजन अभ्रुपात कर रह थे—

जब वह निकट जय पहुँच जाय, सुखवाले दला मत्र जाइ ।
 नगर क लाग मत्र मन मारा, जब वह निकट वाह पसारा ।
 घर घर राव पुष्ट कर नारा राह जा रावहि पतिहारा ।
 बन मह राव पुष्टु जा पजी हाहाहा रावहि जल मठा ।
 भरखाहि तपि लाग मत्र घाइ कुमल भरथ पूत्र मत गए ।

अथाध्या का यह दगा दयवर भरत गानातुर ही गय । राम बनगमन का
 बात सुनकर बमर्ति हा गय । इस प्रकार व राजमन्त्र भवागत्या क पाग
 गय—

वारहि वार माह धम भूमि पर मूरछाए ।
 ह्रिद मुमिरि रघनाथरहि वरि त्र मधि पाए ।
 मुमिरि राम त्रिभुवन दाउ भाइ रावन भरत कागिग पत्र गाए ।
 तहौ मुमिप्रा वटि विरपाइ भग्यहि क्षपि विरत उरि पाए ।
 भरथ मुपात्रा राउ गल ला पुनि ममाना जात्र कराए ।
 कौसल्या तव रागति आइ भरखाहि त्रि विरत हाइ घाए ।

१—इस प्रसंग क वर्णन क लिए त्रिविध रामचरितमानस—अथाध्यावाण—

मुनि मुनि आयनु धामन घाए चल वग वर वाजि लगाए ।
 जनरय जबध वरभउ जवन, कुसगुन हाहि भरत कटु तउ त ।
 दगहि रानि भयानक मपना जागि ररहि कटु वाजि कल्पना ।

एहि विनि भाचन भरत मन धावन पटुच जाए ।
 गुं जनगामन धवन मुनि च गनत मना ॥१२६॥
 चल समाए वग हथ हाय नाथत भरति मत्र जन वाए ।
 हृदय साव वड बहनु माहात्र अग जानहि त्रिय जाऊ उगाए ।
 एव निमय वरम गम जाई यहि विनि भरत नगर नियगाए ।

साहन सर गरिता वन बागा नगद विगपि नधावन गगा ।
 लग मूग हथ गय जाहि न जाए राम विनाय कुराय विगाए ।
 नगर नागिनर निपट कुत्राग मन तवन मत्र मपनि हागए ।
 पुरजन मिर्ति न कर्ति क गवहि जाहागहि पाए ।
 भरत कुग पूरि न गवहि नर विपाडु मन माह ॥१५७॥
 हाए वा नहि जाइ निहारा अतु पुत्र त्रि सि लामि दमारा ॥ इत्यादि ॥

रावहि भरथ बहुत विन्पार् पुनि कौमल्या रात्र बगार् ।
 पूछ भरथ कहा दुबौ भार् कहा अपन वहाँ रघरा ।
 जिन देपत मोर नन जगत् पुनि कौमल्या कहा विन्पार् ।

कौमल्या न भरत का राम के वनगमन का सूचना था। उस पर भरत अनुधुन
 जीर सत्र रानिय विन्प करन लगा। राजमहत् म गाक ममुत् उमत् पत् ।
 कौमल्या न भरत का समचाया जीर मान्दना था। वत् म भरत कवया के पाग
 पहुँचे। उन्तान कवया ना भत्सना था—

वन्वित्रि काट्ट प्रवा सत्र वांगल्या मत्र माइ ।

बहुरि चल निज मानु पह करना वरनि न जाइ ।

रावन भरथ चल पुनि ताहा बठी वत् मदिदर जाहा ।
 भरथहि दपि कवत् उठि घाट्ट कहा भरथ ठात् रहु मा ।
 अत्र ताहि मिलह कवई मात् राम अप्त जब त्तु वतात् ।

राम लपन वन दीह पठात् जिन दपत मार नन जुडाई ।
 कवत् पापिन अजगत कीटा राम लपन सात् वन दान्हा ।
 भ्रिग जीया कवई ताहारा भरतऊ जी न हानि महतारी ।
 कवत् राज करा घर जाइ हुमत् जाव वन जह रघराई ।
 जहि नीती अकरम वान न भाई सा ता भरथ वनहि अत्र जाई ।

१—वही अयाध्यावाण्—

जस वा जाव जनु जग माहा जहि रघनाथ प्रात् प्रिय नाहा ।
 भ जति अहिन राम तउ ताहा का तू अहमि सत्य बहु माहा ।
 जा हसि मा हमि मह ममिगत् आगि जात् उठि वर्नहि जाई ।
 राम विराधा हत्थ त प्रगत् कीह वित्रि माहि ।
 मा समान का पातकी वात् कहउ वउ ताहि । १६१ ।

भरतहि दपि मानु उठि घाट्ट मग्छिन जवनि परा वत् भार् ।
 दखन भरत विक्त् भय भारा पर चरन तन दमा तिसारी ।
 मात तानु वत् दहि दवात् कट्ट मिय राम लपन दाउ भार् ।

कौमल्या के वत्स सुनि भरत सहित रनिपासु ।

व्याकुल विन्पन रागूह मानहु साक निवास । १६५ । इत्यादि ।

पिता के स्वर्गवास का समाचार पाकर भरत पुन मूर्छित हो गया। आवस्यमान पर उन्होंने अत्यष्टिसत्कार किया जो अर्घ्यहीन कम किया और पिता का आत्मा की शान्ति के लिए बहुत दान पुण्य किया। दशरथ का अत्यष्टि का व्रणन वामनादि रामायण में भी आया है जिस ईश्वरदाम ने इस प्रकार कहा है—

एव पिता गगनहवावा गृहकीह दमकरम बगवा ।
 अत्रिना जन पुत्र्य वत् पितु त्ति मय विधि पात् ।
 यदुत्ति जाय निज मातु पद पुनि गा गाचर काटि।१

कवया की भरत ने पुन अत्यना का गुण वशिष्ठ का अभिवादन किया। राम का व्रणन के लिए भरत ने चित्रकूट के लिए प्रस्थान किया। राम के त्यस दुःख भरत चित्रकूट की ओर चला जा रहा था। मार्ग में राम के चरण चिह्न देखे उन्होंने दण्डवत किया। चलते चलते भरत के पाव में पकाउ पड़ गया—

गमुजि सा राम वाग उन मला रावत भय भए मन मग ।
 गुण वशिष्ठ तत्र वात्त जात धारज धरो मम त्रिपि भात ।
 तत्र उठि भय गर्गह मिर नात् न जमाम तत्र गुण गमुवाइ ।
 वगि राम कह जाव मागत कवत् कवत् तुरित मित्र जाइ ।
 तत्र उठि भरथ जा वनाहि गिनाग जहि वन राम अतन पगु धारा ।
 रासन कल्पत पपत जात वा मह कुम नाग अधिवाइ ।
 वस मिधारदु श्री रघरात्, तुम त्य प्रिन जा मार जात ।
 कहि त्रिपि त तुम वन पगु धारा कतिन पय पग है गुटुमाग ।
 मदि पर पाव राम कर चीहा अतन भय दणवत काटि ।

१—वर्षी अयाध्याकाण—

एहि विधि शत्रुप्रिया मय काली विधिवन त्याग निलाजति पाहा ।
 मापि गुप्त मय के पुरात भरत वाह अगलान विधाता ।
 जन्म जग मुनिवर आयमु लान्हा तह तस महम भानि मय राहा ।
 मय किमुद त्रिय मय दाना धन वाजि गज वाहन नाता ।
 गिहासन भूपन वसन अन्न धरनि धन धाम ।
 त्रिय भरत ली भूमि गुरु मे परिपूजन काम।१६९।
 पितु हिा भरत काहि अस करना मा मुन लाग जाइ नहि वना ।

कहा राम लछिमन दुबो भाइ धरनी मानु माहि देह बनाद ।

चलन न पाव पथ के जारा परउ दाउ तल पाएन फारा ।'

इश्वरदास ने माग म निपादराज से भट तथा भरत के प्रयाग पदचन का उल्लेख नहीं किया है। भरत चित्रकूट पदचन है। उनका माथ सना का दम लम्भण नुद्ध ही जात है किन्तु भरत के शाप का वणन कर राम उद्वेगित जाश्वस्त करते हैं और भग्न का प्रमपवक शिवा उन के लिए कहते हैं। राम द्वारा भरत के शाप का प्रयोग

१—वही जयाध्याकाण—

पूठत मर्खाह सा ठाउ श्वाऊ। नमु नयन मन तरनि जगऊ।

जह सिय राम श्वन निशि साए। कहत भर जठ गचन काण।

भरत वचन सुनि भणउ विपाण। तुगन तहा गयउ निपाण।

जह सि मुपा पुनात नरु रघवर किय विग्राम।

जति सनह साएर भरत कणउ दण प्रनाम। १८७।

बुस साथग निहारि सुगइ। काह प्रनाम प्रदाउन जाई।

चरन रख रज जागिह लाइ। बन न कहत प्राति अपिकाई।

गवन भरत पयाह पाए। वान जाहि सग डारिजाए।

पयसा यश्वत पायह कस। पवज कास जासवन जस।

भरत पयाह जाय जाजू। भयह दुखित सुनि सकु समाज।

१—वही जयाध्याकाण—

सनहु श्वन भरत सरीसा विधि प्रपच मह सना न दामा।

भरतीह शान न राजमन् त्रिनि हरिहर पद पाइ।

कहुनि काजा माकरनि छार मिय गिनमाइ। ।

श्वन तुम्हार मपत्रपितु जाना सचि मवत्र नहि भरत समाना।

गनु शान स्वगन जत ताना मिश्रइ रचइ परपचु विधाता।

भरत हस रविवम तयागा जनमि काह गन दाप विभागा।

गति गुन पय तजि जवगन वारा निज जम जगन कीह उजियारा।

कन भरत गन साण सभाऊ पय पयागि मगन रघराऊ।

सुनि रघवर वाना विवर शयि भरत पर हतु।

सबल सराहत राम सा प्रभु का वृषा निकतु १२३१।—त्यादि।

का वपन वा मावि न एक पयस संग म किया है (२९७)। स्वर्गनाम न राम
त्वमर का मुन्दर वान किया ॥ इन प्रमा का वुठ पवित्रता इस प्रकार है—

या मन अगा जा लावा वन पर मका पह तकि धावा ।
जाना भरय फान ॥ गावा गन निमका कगन मा जावा ।

भरय ममान न माग मुमाइ मगुन भूपन जानी भाइ ।
गमवद्र कर आगमु पाइ । लटिमन गा भरय क ठाइ ।
रग प्रताम वान मन गग घाण भरय एक मह गइ ।
घाए गमादि एक पह गग भरय पर पुनि राम क पाइ ।

जन कति भरय पर पुनि चरना उपजा प्रम जाय नति चरना ।
रावति भरय नयन गरि लण । राम उठाइ उठुनि उर गण ।
नतिप्रिय बहुरि बचन कहि भरय कान्ह परवाय ।
रमवाक गुनगय कहि वग्यय मति माय ।

भरत म पिता क नियन का ममाचार सुनकर राम दुवा हा गय । भरत
न माताका और पुरमाभिया का दान दगा का भावाग किया आर राम म बाग्रह
किया कि व क्षयाया गग करे अथा मत्र गग जपन प्राण गवा गेग । राम न पिता
क वचन का माग्य दवर वन म रहना श्रयस्कर बनाया और भरत का गौन क
गिए ममनाया । भरत लानन क गिए नयाग नया हान । राम न उहे आबमन
रगन दुए अवधि तग राज-वाय कगन का वग । भरत न मवक श्रय का ममना आर
रग पाका कर अयाध्या लण । व नलिप्राम म तए करत दुए रहन लग —

पिता वचन हम मानि क चाह बरख प्रमान
तव गी राज मभारा माग वचन हिन मान ।

चाण वरग अवध मुनि पाइ तवाहि भरय रावहि गललण ।
बहुरि रमा उहु भानि वृपाइ । दन वाग गति कहि ममुजाइ ।
रामवद्र का अग्या पाइ चल भरय चरनन मिर नाइ ।
सक धम्म जानि मुय माना जाए भरय अवध असथाना ।

नाति प्राण लमिमा रपुरा । तव पाजा मिर गन वपाइ ।
गम लगन मिय बत मुय पाइ । चगन सात्महि सज बनाइ ।
हमदु रह्य पुर वाहर जाइ । नलिप्राम भइ वावरा मना ।
कुम विगल सापरा बनाइ । बठ वासन प्रभु मन लाइ ।

आगे पौआ घरि सरि नाइ । रामहि जपत सत्ता मिर नाइ ।

नित प्रति पूजा ताकी करही । अवघ जघार प्रान तन घरही ।'

इसके पश्चात् श्रुति माहात्म्य क दाहे क साथ यह रचना समाप्त हो जाता है।

राम जन्म का एक प्रति की सूचना श्री उत्पत्तकर गारुड ने जपन संग्रह क गुटके म हाने का दी है। एक अन्य प्रति मन्मथ पुस्तकालय गया म सुरभिन गुटका म बताया गया है। इस रचना म कवि न श्री रामजन्म कथा का वणत किया है। यह प्रति प्रस्तुत लेखक का दखन का नही मिर मर। अगद पत्र की सचना श्री विश्वनाथ प्रसाद मित्र न सभाखाज रिपाट १० ६४ ६६ म दा है। अगद का प्रतिना इस रचना का वष्य विषय है। इस रचना म ईसरदास न अपना नाम दिया है। प्रति खडित मिला है। खाज विवरण म उद्धृत अग इस प्रकार है—

अगद पत्र

मारा दाहइ मत्रा चाप पठवहु एक हुता ।

वगि जइ ल जवहा बलि रइक पुत्रा (बालि राइ क पूता ?)

रघनदन अस बाल अगद का नही जन (जान ?)

राम राम जग तरन इसरदास कवि भान ।

१—वही अयायाकाण—

बधु प्रबाध काह बहु भाता । विनु जघार मनताप न साती ।

भरत साल गरु सचिव समाजू । सनुच सनह विवस रघराजू ।

प्रभु करि कृपा पावरी दीन्हा । सान्तर भरत सीस घरि लीन्हा ।

नलि गाव कर परन कुटीरा कीह निवास घरम धुर धारा ।

जटाजूट मिर मनि पटधारा । महि सनि कुस साथरा सवारा ।

असन बसन वासन प्रत नमा । करत कठिन रिपि धरम सपमा ।

नित नव राम पेम पन पीना । बहत धरमदल मन न मलीना ।

नित पूजन प्रभु पावरी प्राति न हृदय समाति ।

भागि भागि आयमु करत राजकाज चहु भाति । २४५

श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अपना मत व्यक्त करते हुए लिखा है— भरत विलाप और अगल पञ्च ता एक ही ग्रन्थ के अंग जान पड़ते हैं। सम्भव है कवि ने रामचरित्र पूरा लिखा था और य उमा के अंग था। इन उद्धरणों से स्पष्ट है कि सम्भवता की वजह से मत्स्यवदा कथा और भरत विलाप दोनों में की गयी है। अगल पञ्च का अर्थ प्रति मित्रा है जिसमें यदि वह स्वतंत्र रचना है।—भगलाचरण के अंग प्राप्त नहीं पर विलाप वर्णन दोनों के मिश्रण जगत है। कवि का नाम इमरनाम ताना प्रथा में लिया है। भाषा भी सरस जयरा है। जो रचनाएँ रचनेवाले का अर्थ तक मिला है उनके आधार पर यह सम्भव है कि कुछ निम्नलिखित रूप में नया कहा जा सकता है। इस वजह से कि रचनेवाले ने रामकथा के भाग में अंग का स्वतंत्र रचनाएँ का है। यह भाषा है कि उल्लेखित पूरा रामकथा पद्यबद्ध का है जिसके अंग प्राप्त रचनाओं में मिश्र है। इस सम्बन्ध में और ग्राह्य की अपेक्षा है।

भाषा—आचार्य गुरु ने मत्स्यवदा कथा का भाषा के सम्बन्ध में लिखा है—
 पुस्तक में पाँच पाँच चापाद्या जथाख्या पर एक ग्राह्य है। इस प्रकार ५८ ग्राह्य पर यह समाप्त हो गया है। भाषा अथाख्या के आसपास का ठाक ठाक अवस्था है। वाट (है) का प्रयोग जगह जगह है। यही अवस्था भाषा चौपाद दाह का प्रथम अंग कहानी का रूप रंग मूपा कवियों ने ग्रहण किया। चौपाद ग्राह्य का प्रथम मत्स्यवदा कथा में निश्चित अंग मिलता है। किन्तु अगल विलाप का जो प्रतिया अवलोकन मिला है उनमें वह प्रथम निश्चित नहीं है। ममा मगहालय के मवन् १८८० के हस्तलिखित में चौपाई ग्राह्य का प्रथम है, किन्तु मवन् १८९० के हस्तलिखित में दास्य नहीं लिख गये हैं। जो उल्लेखित ग्राह्य न भरत विलाप का जो प्रति नागरा प्रचारिणा पत्रिका में प्रकाशित की है उसमें चौपाद्या का संख्या ग्राह्य के साथ भिन्न भिन्न है। भाषा इन सभी रचनाओं का अवस्था है। इन कृतियों में अथाख्या के आसपास के क्षेत्रों में वाग्य जान वाग्य अवधी भाषा का प्रयोग किया गया है। कुछ उल्लेखित नाव लिख जान हैं—

- १—जा कठ वाट कम हमाग गा गर भूजय इहि समारा ।
- २—भा चरित्र मुनुय मन लागे ताहर कहत छूटि बरागा ।
- की मन्तरी कुला आग अधिक् रण एकर मव चाही ।
- ४—अतय कष्ट बढ़ा नहि जाइ मन उठ मन पर मुग्याई ।

१—श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र नागरा प्रचारिणा पत्रिका १९५६ अंक १ ।
 २—आचार्य गुरु हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० ७४ ।

- ५—कहा व्याधि म चउ न पारौ ।
 ६—एसी भाति देवतह दुनन वा काहा व्यान ।
 ७—चोप दूत विग तउ भयऊ । अतरवमि जाजन गन गयऊ ।
 ८—कवइ पापिन अजगुन काहा राम नपन माता वन गहा ।
 ९—जेहि तीनी जवरम कीन त माई सा ती भरय वनहि जउ जा ।
 १०—हमर रह्य पुर बाहर जाइ । नरि ग्राम भुइ वाजरा गनारि ।
 ११—आग पीआ सिर धरि नाइ । रामनि जपन गन्य गय पा ।

रचनाआ म कतिपय स्वभा पर पूरा प्रयाग भा मिठना । भग्न विग क ह्माग्या म भापा की कुठ भिठना लिखाया गता ह । ता क्वाचित लिपिवाग क कारण हागा । जार प्रतिपा क मित जान पर पाठ निर् चन किया जा सकगा । ग्याव्या क जासपाम की इसा भापा का प्रयाग जाग चर कर गान्वामी तुम्नास न रामचरितमानम तथा अपना जय रचनाआ म किया है ।

सत्यवती कथा सन् १९२७ म हिन्दुस्ताना म प्रकाशित का गयी था । इस रचना के माय सम्पादक ने एक टिप्पणी म है— सत्यवती कथा की भापा अवघा ह । अवघी भापा म प्रम और वार गाथाए लिखन क लिए क्या चना गयी यह दूसरा हा प्रश्न है । गास्वामा तुलसीदास न इस भापा का रामायण म जा परिष्कृत रूप प्रदर्शित किया है वह गतालिया म वन पाया हागा । कवि ईश्वरदास की अवघा तुलसीदास जा की अवघा स ७४ वष पूर की हे । ईश्वरदास रा गिनता अष्ट कविया म नही का जा सकती । भावा और भापा का हानता का दष्टि स उनका तुम्ना सत्यवती क रचयिता नूरमुहम्मद स हा सजता ह । इनका भापा म छत्र पिटलान क लिए जसाधारण ताउ मराड करना पटना हे । भावा म कवित्व का जभाव ह । बहानी का बणन भी कुछ रोचक नहा ह । साहित्य का दष्टि स सत्यवती कथा नाची धरा का कृति है । पर अथ का महत्व इस कारण ह कि गह उस समय की अवघा भापा का प्राय जसा का तसा नमूना उपस्थित करता ह । जहा तहा दा एक प्रयाग ब्रजभापा और भाजपुरी के हैं । पर इम प्रकार क प्रयाग जायसी और तुलसीदास म भा मिलत है । इस समुचिन मूल्याकन नहा कहा जा सकता । वास्तव म ईश्वर दाम का रचनाए कई दष्टिया स अत्यधिक महत्वपूर्ण ह । इनम तत्कालीन अवघा का स्वरूप सुरक्षित है । शुद्ध साहित्यिक दष्टि स भी य कृतिया बहूमूल्य ह । इनका पाठ निधारण का समस्या अवय्य है, जिनका कारण भापा सम्बधा कठिनाई का जनभव हाता है । रचनाआ की और प्रतिपा मिठ जान पर पाठ निर्धारित किया जा सकगा । एग समय जा हम्नलस सुठम है उनका साधार पर भा पाठ निर्धारण का प्रयास किया जा सकता है । इन रचनाआ का भापा प्रवाहपूर्ण एउ सजाव है । कथा

प्रमत्ता के बणत प्रीत एव भासिक हैं। यह इन रचनाओं के अध्ययन मस्पष्ट हो जाता है।'

१—रचनाओं के कुछ अंग —

बल महेश तत्र चान ममारा त्वं डमरु पत्न्य जाधारा ।
 चन्द्र त्रिगत जग मह गगा परे सीस फनि सीमित अगा ।
 मरु पद्म विभूति विभेया जाला मिगी माह महेशा ।
 भग रीठा त्रिय जपमारी च तहा जट तप कर भारी ।

जहवा क्या कर अमताता ताहि गरवर को करे बपाना ।
 चाण्ड घात बघाई पापाना भीतर गरि का जतर जाना ।
 पुण्डन जगा वत नमारा तामर मल्ल बरुठ परिधारा ।
 क्री बेति तह चररा रगा यदुविधि भवरा कर विगमा ।
 जग वं जनु जानि नहि जाई नाग पति र त्रि ठाई ।

राज व्यास उहुत पुकारा जहट त्रिठ रात्र मत्र पारी ।
 बाध मिह रात्र वन भा । रात्र पया त्रुत जाताही ।
 तनु अतर गर रात्र जा रात्र वातर ह्य ठाई ।

चाण्ड वप वृषनर वन माग प्रार ।

गाव का भाई सवा क्या बरुद मुमार । ६२।

अहिनिमि कष्ट दुवी के जगा मग भाग्य तन खा पनया ।
 बाध भाटु तह वत विराग चद्र त्रिमि फररुद बहून मिधारा ।
 धरप जपर वट्टे वतामा ममरन त्रिजुग टमकु अतामा ।
 गरज मपन रात्रि अत्रिधारा त्रि भवावन तम नारी ।
 ताम्रि वृ प म ना गाना बाध जामन वन कर पाग ।

बिनती माग वल्ल मुनु तजउ डाउ नगनाह ।

बहुन वरु न तिह का व रंवर मन माट । ६२।

रम गार रक्षा कर घाना वन दव जीर परधाना ।

एत एत अनुमति का विचारी च तदा ज मी कुमारी ।

ब्रह्मा महि च विपुरारी जग त्व च म प्रारो ।

रामकथा विषयक रचना भरत त्रिगुण म भग्न की जिय ताम्य भक्ति की अभि-
 यक्ति हुई है वह रामचरित मानस की पूव पाण्डित्य के रूप म त्रिगुण देता है।
 मानस म इसी ताम्य भक्ति का विगत स्वरूप उपकरण जाना है। ईश्वरराम न कथा
 प्रमगा का वर्णन सक्षय म किया है। य प्रमग परवर्ती राम साहित्य म विस्तार क
 माय वर्णित मित्रे हैं। ईश्वरराम की रामकथा मन्मथी रचनाआ म इस ज्ञान का
 सकेत मिलना है कि भक्ति भावना स प्रभावित होकर राम साहित्य विनय की सा-
 हवी गताब्दी म किस दिशा म विनमित हो रहा था। यह सकेत भक्ति भाव भाषा
 उक्त जाति क्षत्रा म स्पष्ट रूप स मित्रता है। हिन्दी राम साहित्य क ईश्वरराम

नारद महिंत वरम्हा आये गन गवरख तिमवत सिघाये।

चाह सप तारागन जीर जीर मन झार।

अधकाठ कीह बहु काह कया कही विचार।४८॥

(सत्यवती कथा स)

भरथ बचन मुनि केकई भई बहुत खभार।

पुन चथा बनराज तजि त्रिथा कलक हमार।

भरथ देपि राधाहि विरुपाई कहा केकर् पुनि समुझाई।

त्रिग त्रिग तार राज जी पाटा राम रुपन दिन अवघट घाटा।

राम चरन चिनु गग हमारी राज करा त्रिग जम तुमारी।

जा तुम चाहो बन भरथ मियाइ पिना सौ दाह देहु तुम जाई।

कर धरि आगन ज्ञान उठा कहे भरथ करा पछिताई।

तोहर रोबत सब मरि जाई उठि क भरथ तहा चलि जाई।

हम मन बध रहै बन पिता गए सुरधाम।

केहि विनि साम काम पुर राज प्रजा प्रिय काम।

कहा भरथ मुनिए रघराज हमनहि अवघाहि जाइव भाई।

सग रहहि हम विपनि गवारु तपति चरन नाथ गौ लार् ॥

कहा भरथ तुम मारहि काजा पूजहु राज अवघपुर राजा।

भाइन महु हम भवक ताहारा करि सवा पार्वहि निमनारा।

भरथ बचन मुनि प्रभु सुप माना कहा भरथ तुम साध सुजाना।

दमरथ पिता भरथ अस भाई नत्य कदो जग काउ न पाई।

गीरवास्पा रचयिता हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में उन्हें उनका उचित स्थान दिया जाना चाहिए।

बर धरि भरपहि लाट उगई जाहु भग्य जय मोरि लागई ।
 प्रजा लोग मय बापहु जाई महला मयी गव बगई । ॥१॥

(भरत विष्णु स)

अध्याय ७

भागवत भावित रामचरित—महात्मा सूरदास

पुराण साहित्य में प्राचीन इतिहास प्रस्तुत करने की विधिगत गयी प्रह्लाद है। पञ्चमण पुराणा में प्राचीन राजवर्ग का वर्णन तथा उन वर्गों में मन्त्रों तथा पुष्पा के चरित का वर्णन मिलता है। उस उम्र के अतस्त पुराणा में इन्द्रावत तथा रामचरित का वर्णन किया गया है। पुराणा में मन्त्रमणि श्रीमद्भागवत का प्रधानवर्ण विषय श्रीकृष्ण चरित है। इस विष्णुनायक महापुराण में प्राचीन राजवर्ग तथा अन्य अवतारों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है। भक्ति का महात्मा का प्रकाशन इस महात्मा उपजाय्य ग्रन्थ का विशेष प्रयोजन है। श्रीमद्भागवत में स्फूर्ति तथा प्रेरणा ग्रन्थ कर अवातरवर्ग में वर्णन चरित एवं कृष्ण भक्ति महात्मा विष्णु साहित्य की रचना है। यह रचनाएँ सम्पूर्ण प्राकृत अपभ्रंश हिन्दी तथा अन्य का अन्य भाषाओं में विभिन्न साहित्य रूपों में निरूढ मिलती हैं। श्री गंगा में हिन्दी साहित्य के भक्तिवर्ग में कृष्ण भक्ति साहित्य में जो अपूर्व श्री सम्पन्नता तथा सरमता मिलता है वह भागवत का प्रभाव ही प्रकाश ही सम्भवता मकर। कृष्ण भक्त कवियों का रामश्रीभागवत का आधार पर अपना रचनाएँ प्रस्तुत की। इस परम्परा में रामकृष्ण चरित के अमर गायक महात्मा मूरदाम ने पायपनिस्स्यन्ति पदावली की रचना की। रामश्रीभागवत में रामकृष्ण के वर्णन के साथ रामावतार का वर्णन किया गया है। मूरदाम ने भी मूरदास में रामावतार का वर्णन किया है मूरदाम द्वारा वर्णित रामचरित प्रस्तुत परिष्कार का विशेष विषय है।

रामश्रीभागवत के प्रथम स्वर्ग के तृतीय अध्याय में अवतारवर्णन के प्रथम में राम का वर्णन करते हुए कहा गया है कि राम ने स्वभावों का साथ सम्पन्न करने का उद्योग राजा के रूप में अवतार ग्रहण किया और मनुष्य जाति वारतापूषण करने में आगे का। (१-२२)। तृतीय स्वर्ग के सातवें अध्याय में ब्रह्मा ने भगवान् के अवतारों का कथा सुनाई है। उसमें अवतारों में रामावतार का कथन वर्णन करने में भागवतद्वारा न कहा है कि हम पर अनुग्रह करने के लिए वर्णना के रूप अपना रामावतार—अन्य शब्दों में रामावतार के साथ इन्द्रावतार में अवतार हुए। पिता के उत्तर में भाया के साथ वे गये उनसे विराध कर रखण

उत्ते हाथा मारा गया। लका का नष्ट करा के लिए राम समुद्र तटपर पहुँचे उम समय साता व वियाग में उक्त तत्र लाल हा रथ उनका अष्टि से ही जन्म हुआ जन्म लग समुद्र न भयमान होकर उनका मांग लिया। रावण व वक्षस्यल म स्वग कर ऐरावत व दान चण हाकर लिंगात्रा म फल गय थ, जिससे लिंगाएँ धवर्णित हा गइ था, तब विषयपुत्र रावण हमन गया था। व रावण साता की चुराकर गया और जय यद्ध के लिए आया तब राम व धनुष की टकार में उनका अभिमान प्राणा के साथ तल्लण विनीत गी गया। २ ७ ०३-५।

श्यामभागवत व नवम स्कन्ध म इन्द्रावुवन का तथा वग व राजात्रा का वषा किया गया है। इस स्कन्ध व जनगन श्रा गवत्त नमवें तथा ग्याह्वै ज्ययाया म परागिता का श्यामचरित मुनाया है। न अव्याया म ग्या मख्या तमग १६ जीर २६ है। दगवें ज्ययाय म त्रतात्रा की प्रायना म सभान भगवान ब्रह्ममय हरि व अपा उगाता म चार रूप धारण कर लान्द्र व पुत्रा व रूप म जत्राण जान व गाय रामचरित का आरम्भ जाता है। चौद स्कन्ध म रामनथा व प्रसगा का निर्णय करत गग राम वा न्युति का गया है। जानर विप्रमित्रे यत मान स्वपवर धाभग राममाता सिवाह परगाम स्वयतयत, रामवनगमन गूणल रिरीकरण स्वपण यत मानाहण जगपत्त मस्कार मुप्राय मत्री वास्त्रिय गाना की गान प्रसगा का उगत गग गता म है। समद्र जउन तथा मना व पार उनगन का वगत चार गता म विज्ञा गया है। मम न राम से निरतन विज्ञा— जाप मनु वीर दे इममे जापन यग रा विन्तार गता विप्रिजय करत वा भूपान यत प्रायमेतव व आपन यत का गान करेगे। राम रावण यद्ध मान गता म वर्णित है। रावण वष व उपरान्त तन्मिय रिगाय गता है य पाब गता म वर्णित है। राम न गता वास्त्रिका म माता का तप। विभाषण का लका का गाय दवर माता का विज्ञान पर वगया तथा गमण मश्राव गीर हनुमान व भाय राम न जयाध्या के लिए प्रग्यात किया। माग म त्रयना उन पर पुण्य वषा कर गे। जयाध्या पदुचन पर गल तमिर पर पात्रा गन कर नगर निवागिया व माय राम का स्वागत किया। जयाध्या म राम व ग्यागत राधातिपत्र तथा गमगाय का गता विचिन रिन्तार म ० गता म वर्णित है। गय गतात्रा का वपन करत गग पुन गे। उत्तर गमचरित का ग्यात्र जध्याय म वधन किया है। गम साता निगाय गगुन गम माता हा धरता म प्रसग गमगाय तथा राम का परमधाम गमन वर्णित है। गगद्भागवत म वर्णित यत क्या गमचरित व मुख्य प्रसगा का निश्च माय करता है तथा राम की महिमा का वधन करती है। श्यामभागवत का यात्रना का अनुकरण करत हुए गुरगाम जान ना गमचरित का वधन किया है।

धामतभागवत की परम्परा तथा गूरु रं रामचरित वणन की रत्ना वरत दृग्ग
 न नीनन्याय गृह न रिया है— अष्टाष्ट के प्रथम चार कविया ग गले का
 राम का य परम्परा म र्वरत व्यक्तिया रं रं रं हम हिन्दी भाषिय व इतिहाग
 म मिरता है। एक भागवतनाम जीर दूगरे भूपति कवि। कवि भागवतनाम के हिन्दी
 म रिय भेत् भास्कर ग्रंथ के नाम के अनिरिक्त रं० रामकुमार यर्मान अने रिया
 साहित्य व इतिहाम म उक्त ग्रंथ का जीर कोई परिचय नहा रिया। हम्नरिगित
 पुस्तक का मरिप्त विवरण भाग १ नामक पुस्तक म आचाय डा यामगुत्तर दाम
 न भा कवि भागवतनाम व वार म रिया है— उनके विषय म कुठ भा नान नगी है।
 र्मल्लिण्डम रचना व म्मर्य म यह कुठ नहा वहा जा सकता। भूपति का भागवत
 नापा दाम स्वयं तथा रामचरित रामायण रचनाजा के म्म्वच म स्वाज रिपाटी की
 सूचना जानना हम्नर्यो रं साधारण रं गुण ने यह गिद्ध किया है कि इनका ममय
 विरम की अठारवा गताली (मवत १७८४) है। रं गुण न जपा म न व्यक्त
 वरत हुए लिखा है— इम प्रकार अष्टछाप के प्रथम चार कविया से पठर राम-काव्य
 परम्परा म जान वाता कार् ग्रंथ अभी तक नहा मिला। सुरसागर व तवम
 स्वयं म मूरदास द्वारा वर्णित राम चरित भागवत नवम स्वयं का अनुकरण
 रं राम काव्य परम्परा व किसी रिया कवि का प्रभाव नहा है। नन्नास जादि
 त्मरे वग व नार अष्टछाप नन्ता रं ममदा अन्त्य रंके जीवन का म ही तुलसी
 का रामचरित मानम जा गया था। नन्नाम के ऊपर तवम तुलसी नाम जी व
 रामचरित मानम वा रं का प्रभाव पया था।

गूरुनाम का जम आचाय गवत न मवत १५८ माना है। म्म्रनाय म
 मायता है कि मूरुनाम जा वरुभावाय स जाय म म्म रिन छा र थ। इमसे
 मूरुदाम का जमनिधि वमाय गवत ५ स १५ ५ ठहरती है। इस जमनिधि
 का रं रानन्याठ गण तथा अय विराना न स्वाकार किया रं। आचाय गुव
 न रंके मत्यका रं जनमान मवत १६२ म किया है। वाता म निरं है कि
 मूरुनाम का मत्य मास्वामा विरठन्नाय की मत्य म पठर हा चरा थी। मास्वामी
 विरठन्नाय की परनाक यात्रा मवत १६८२ म हुई था। रंके कितन पूव मूरुनाम
 न रंका ममाप्त की था यह निश्चित रूप से नहा कहा जा सकता। प्राय
 मान म न यह है कि मूरुनाम जा का मत्य मवत १६३७ म हुई था। अस्तु मूरुनाम
 जा का ममय मवत १५ ५ म मवत १६ ७ तक ठरता है। मवत १६०७ म
 मूरुनाम जा न साहित्य रंका ममाप्त की थी। आचाय गवत का मत है कि

सूरदास जी ने सूरदास का रचना के उपरांत ही इसका निर्माण किया होगा। इसमें विद्वान् जानता है कि सूरदास जी सूरदास की रचना गास्वामी तुलसीदास की नियोजित रचना रामचरित मानस व ब्रह्म पद्य कर चुके थे। सूरदास की रचना के मध्यम में १० राम निरञ्जन पाण्डेय ने यह मत व्यक्त किया है—
जन्म मन्ना के आधार पर सूरदास जी गास्वामी तुलसादास जी से १४ १५ वर्ष आयु में बने थे। इस तरह तुलसादास हिन्दी के राम कवियों में सूर का स्थान प्रायः मशहूर मान लिया जा सकता है। सूर जीर तुलसी एक दूसरे से प्रभावित हुए गये। हमें मालूम नहीं है कि इन सब महात्माओं में से एक भी एवाग्रही नहीं था। इनकी उपासना में इनके युग तक विकसित सब उपासना पद्धतियों के उपास्य तत्व मिलते हैं। इन मन्ना न चारा तरफ से मत्त्व और पवित्रता का संग्रह कर लिया था तथा असत्य और अपवित्रता का परित्याग कर दिया था। न्याय पद्धति के आधार पर सूर की समस्त साधना में राम विष्णु शिव इत्यादि देवता संप्रहीन हो गई हैं। राम और विष्णु का कृष्णभक्ति शाखा में भी महत्व दिया गया है क्योंकि राम और कृष्ण दादा विष्णु के अवतार माने गये हैं।

महात्मा सूरदास ने अभ्युपासना के आधार पर राम और कृष्ण की उपासना की है। पुष्पिमाग के अग्रतम व्याख्याता सूरदास ने भक्तितत्व भागवत में ग्रहण किया। इन सारग्रहण एक उत्तरवेत्ता महात्मा ने ईश्वर के मंगुण रूपों का समान रूप में उपासना की है। यद्यपि इन रूपों में कृष्ण का उद्धान प्रमथता दो किन्तु राम को उद्धान अपन हृदय से दूर नहीं किया। अभ्युपासना का यह तत्व सूरदास में सर्वत्र दृष्टिगत होता है। सभी प्रकार के जाग्रह व अभ्यास की चर्चा करते हुए १० माताप्रसाद गुप्त ने लिखा है— सूरदास सामान्य वाम व पुष्पि मन्त्रों के रह जाते हैं किन्तु उनमें हमें बड़े साम्प्रदायिकता विरुद्ध नहीं मिलती जो उद्योग मन्त्रों के रूप में सभी मन्त्रों में मिलता है। सम्प्रदाय के और किन्हीं प्रमुख भक्तों ने रामचरित का गान नहीं किया है किन्तु सूरदास की एक अत्यन्त पवित्र रामचरित का गान करती है। तुलसीदास में भी हमें बहुत कुछ यही प्राप्त होता है। तुलसीदास के रामनाम्य और कृष्ण नाम्य में जाकर प्रसार विपन्न जा अनुपात है लगभग बनी अनुपात सूरदास के कृष्णनाम्य और रामनाम्य में लिखाई पकता है और सूरदास ने राम का गुणगान और उनका गान का वर्णन उल्लास में किया है जितना तुलसीदास ने कृष्ण का उल्लास का किया है। हमें मालूम नहीं कि अपन कृष्णस्वरूपों के प्रति उनका

जितना अधिक उत्कृष्ट जनसंग है उतना अथ स्वस्व के प्रति तभी कि भी जना पूरी उदा अथ स्वस्व का प्रति है। मूरत्नाम के रामचरित व मय्यव त भा जनक पत्र वग की प्रति म मुरर वा पत्र है। इमतिग रामसाहित्य म मूरत्नाम का याग उप तथाय नगी है। यगी नगी वह उन्नेवनीय भी है।¹

मूरत्नाम न वल्लभाचाय के शास्त्र म श्रीमद्भागवत की कथा का पत्र म गान किया है। मूरत्नामर का रचना मूरत्नाम न भागवत व आधार पर का जोर उमी वणन पद्धति का अपनाया। दशमस्कन्ध म जोर कथा का मूरत्नाम रचन विस्तार व गाय वणन किया है। गय स्वघा का कथा का मय्यव म वग है। भागवत म न्यि गय शावणा व वणा व आधार पर मूरत्नाम न भा रचनगा तथा मवतिन वरा प्रसगा पर आधारित पत्रा की रचना का है। रमा पत्रि न अतगत रामावतार वणन भागवत म किया गया है और मूरत्नामर म रम य। रमा र। मूरत्नाम न अपनाया है। इम प्रकार हम लवन है कि मूरत्नाम का रामावतार वणन भागवत का याजना का जनमरण है। किन्तु यह कह दना जावयन है कि मूरत्नाम न रामचरित का जो वणन किया है वह गय पत्र गली व अनक है तथा गवया मात्कि है। यह मूर व रामचरित वणन व विवचन म स्पष्ट हो जायगा।

रामचरित रणत—मूरदास न रामजम म रणर रायाभिपक तन की कथा का वणन किया है। पहले उहाने कहा है कि गय जीग विनय नाम व दो पाप व विप्र राग म जगुर हा गय व। एक को हरि ने वारा रण घाण कर माग या जोर एक का नर्मिह रण घाण करे मरर किया व। य हा पाप रणग रार कुम्भरग हु। उनके सगर न रण भगवान् राम का अवतार जयादा म राजा रणरथ व यन पुन रण म हु। य कथा राजा परातिन का जम गक्य न मनाया व। उमा प्ररर इमका मूरत्नाम वणन करत हैं।

वात्ताण रामचरित का वणन रामजम म जोरम्भ गा हा। जोर मूरत्नाम रणर म रण किया कि रयामरगान धाराम न भूभार उतरन व रण अतरर किया है। रगा रणरथ व जागन म भा रगा है। जयाध्यानामिषा का अपार मय्यव है। पुन रम पर राजा रणरथ न गवस्व लन कर किया वामू नग हीर रणव। याचक निहा हा गय। रामरम पर जयाध्या म वरान् रजता ह। मित्रवा मणरगान करता ह। मामव का ध्वनि रगा है। राजा रणरथ वणिष्ठ म रामजम व गवय म पुन हैं। वणिष्ठ निधि पर विचार कर कहत है कि राम का चौर्य भवन म यन छायगा। रामजम पर रगा रणरथ व घर

दण्ड देग व राजाआ न बघाई के ठीके भेगे। दल-स्वर्ण भणि धारण म भर भर कर आवे। घर घर मगलचार हाने लगा। नगरनिवासी सब जानद म भर कर गरीर का सुध सुध मूल गय। दण्डरथ न गी हाथी दान म लिय। मूरदास पापाय भते हैं कि रामचन्द्र विरजायी हा। रामजम जोर जयाध्या म मगल का बणन मूर ने तीन पदा म दिया है (० १६ १८)। मगल उपगत दा पदा म राम ही गरीरीय का बणन दिया गया है। रामचन्द्र धनहा रथ चलत है। दण्डरथ गीगल्या व मामन कायमय जागत म राम राग करत है। माना पिता उर लय कर आनन्दिभार हा जान है। रामचन्द्र अपन भादिया र साथ गरीरीय करत है जिस गण्ड तमा तताम वगण स्वता मगन जात है (० १९ २०)। गाम्बामा मुग्ग्यागम न कजिनायग (१ १-७) तथा गाना वगी (१ ७) म वारु गाना बणन दिया है जा मूर व कृष्णलीय बणन व जनगार है।

विश्वामित्र न जयाया आवर यत रक्षा व जिग राम मगण का मागा। राम न ताका का मारकर विश्वामित्र का यत बसाया। अनतर माना स्वयंवर लया जनकपुर गय। माम म राम गगा तट पर आर। वह पापाणभूता अहिया का चरणा स स्था कर उठार दिया। मूरदास कहत हैं कि जिगवा पतित उपारन विरुद्ध है उमन लिए यत बग काम गता है (१ २१-२२)। जनकपुर म श्रीरामचन्द्र व मगनवा जोर दण्ड कर माना विमि स निहारा करता है कि राम स गत हमारा नहं हो गया है। धनुष नायन का पिता का रा वगि है जोर राम जभा जिगार है इनरा यत दण्ड धनुष वग चगाया गामगा यह मुने माय है। माना का जग्या जानकर प्रभू न धनुष हाथ म लिया। धनुष व टटत हा जय राजा उमी प्रकार छिप गय जम गार म ताराण छिप जान है (० २३)। धनुषमग का मूरगाम न सागन बणन दिया है—

१—मूरगागर—

रघुपुत्र प्राटे है रथगार।

दम दग त टागा जाया रगत वान्त भन्दिहार।

पर पर मगल नान बघाई जति गुरवामिन भाग।

जाग मगन नय गय डागन कछ न माय सरार।

मगय वगी मूा लग्य ग-गय ह्य गार।

न अगाम मूर निज्जीवी रामचन्द्र रागार। (०-१८)

ललित गनि राजत अति रघवार ।

— — —
 वरनामय जय चाप त्रिय कर गति मुहु कर्णार ।
 भूभत सास नमित जा गवगत पारत मात्या नार ।
 डाग्न महि अघार भया फनिपति नग्म अनि अङ्गा ।
 त्रिगज त्रिनि गतिनि माता गगन त्रिनि भयमा ।
 रवि मग तया तरकि नार त्रिय उदय गग गान ।
 मिव विरचि व्याकु भय त्रिनि मुनि जय नार्या भगवान ।
 भजन गत प्रगट अति अङ्गुन अल त्रिसा नभ पूरि ।
 खवनहान मुनि भए अङ्गुन नाग गग्ग भय चुरि ॥ २६ ॥

दास्य जनकपुर जाय । जनक मन्दिर मय जाकर बठ जहाँ मातिया स आर पुगया गया था । विप्रा न बढ का उच्चार किया यत्रनिषा न मगडाचार गाया । विमान पर च सुर गधव गम मोता त्रिवा त्र्यकर सुया हण । गृह्यग न कण माचन का अत्यत कामठ कल्पना का थे । हाथ सा कण त्रि टूटता है । राम सीता का कर स्पग कर मग्न हा गया । मविषा दस्य त्र्यकर मुय टूटता है । स्त्रिया मगत्यारा गाता है और कहता है त्रि रघुपति ज पिता और भाइया का वान कह यह कण तत्र छूगा तत्र कौनया माता जायगा । स्वण चपन म पगाफ त्रिया ताता है यदत्रिया क वाच तत्र और तत्र यत कौन करा है । सल म रामच हार गय और साता जात ग । विप्रा न इमशरचवार स राम का अभिपक कराया । जनकपुर म अपार जान फठ गया ।

१—त्रिण गास्वामा तुत्यानाम वा वनप भग वणन रामचरित माता—

भर भुवन धार कडार ख रवि त्रिज त्रि माग्ग च ।

चिररहि त्रिगज त्रि महि अहि का कुम्भ कम्भ ।

सुर अगुर मनि करकान त्रि मकल विव विचार्या ।

वात तत्र राम तुलमा जयति वचन उचार्या । इत्यादि—

वालकाण २६१ ।

२—मूरमागर

कर तत्र तत्र नहि दू ।

राम गिया कर परम मग भय वातुक निरगि गया सुय दू ।

गावन नारि गारि मग त त तनि भान वा कौन चगव ।

दगरथ विदा होकर चल। जनक न प्रभूत दायज दिया और वदना की। माग म परशुराम मित्र राम न धनुष चलाया। परशुराम प्रभु का स्वरूप समझकर वन वा चल गय। अयाध्या पहुचन पर नगर क लागे ने जगूव सुत का अनुभव किया। कौगल्या आदि मानाजा न जास्ती उतारी। इस अवसर पर सुग-नर मुनि व सुग पर मूरदाम जति जात हैं। इस प्रकार जालवाण्ड की बया मूरदाम न चौन्ह छटा म बहा है। रामजम अयाध्या म मगल गरश्रीडा धनुषभग वरण माचन जाति वणन सबया मालिन है। जहयाद्वार ता प्रमग भागवन म नहा ह जिसवा वणन मूर न किया है।

जयाध्या वाण्ड—जयाध्या वाण्ड का बया वा वणन मूरदाम न २६ छन्दा म किया है। अपना बद्धावस्था का विचार कर राजा शशरथ का मन भागी है। उन्हान निश्चय किया कि अब व राथ राम का मीप कर मयास लता चाहि। इस अवसर पर बवेयी न उन् दा बरा का स्मरण कराय और कहा कि भरत वा राथामिपक हो तथा रामचद्र चौन्ह वष क लिए वन जाय। यह सुन कर दगरथ अत्यन्त व्याकुल हो गय कुठ बहन नहा जना। उन्हान बया वा बहन समझाया वित्तु उसन अपना हठ न छोडा। राम-लक्ष्मण-माता का ध्यान कर दगरथ दुवा हाकर रदन करने लग। रागिमा तथा पुत्रवामा यह सुनकर शोक म डूब गय। बवेयी न राम स कहा कि राजा सजाच व मार कुठ नहा कह पा रह है। उन्हान भरे पुत्र को राथ और तुन्ह चौन्ह वष का वनवाम दिया है। पिता का जाता गिरावाम कर राम कौगल्या व पास जाग लन गय। सुनत ही कौगल्या वानर हा उठी। दगरथ श्री राम क लिए विनाप करत जा कहत है कि राम न प्रम्यात करत हा भर प्राण च जायग। रामचद्र न माता का वत क बया का ममप्राकर जनकपुर चल जा का बहा। सावा न कहा कि म आपक रूप का वनवाम व ममय देगूगा उग समय मरा जम सफल हा जायगा। म मय मयुष का निळाजलि कर वन विपला म आपक सम चरूगा। राम न लक्ष्मण स भा जयाध्या म रहन वा कहा। लक्ष्मण क नया म नीर भर जाय व कुठ बह न मन आर राम क चरणा म लिप गय। अतर्पामा प्रभु ने प्रीति जानकर उह अपने गाय ल लिया।

तव वर शरि छु रघुपति जू जम कौसल्या माता जाव।
 गुणपल जुन जल निरमथ धरि आना भरि कुटा जा वन का।
 मन्त जूप सकल जुवतिन म, हार रघुपति जिना जनक का।
 परे निगात अजिर मूर मगल विद्र व अभियत रगमा।
 मूर अमिता आनद जनकपुर, माद सुवन्ध पुरातनि गाया १९२ ।

दशरथ पञ्चात्ताप करत है। बार बार राम का वात चलात है। ॥७ कहत है कि राम-सीता-लक्ष्मण किस प्रकार वनफल का भाजन करत ॥७ ॥ पर गात्रग जिना रथ अथवा पत्राण क किस प्रकार उरगे। इम प्रकार गात्र करत ॥७ ॥ अथ विलयन लग चारा जात मय राम अपमान करत ॥७ ॥ राम-सीता-लक्ष्मण वन का जात चत त्रिय। पुरजन यह सुनकर विद्वु हा गया। दशरथ न राम हा माना कहत हाण जनत हा गाण। राम माना और लक्ष्मण क गाय रहत वन का ॥७ चत गया। (० ०)।

कवट प्रमग का मामिक वणन भूग्याय न नाल पनाम किया ॥ ९ / ६२।
 ७ मण कवट स तगरा ७न क गिग कन्त ॥ ७ कन्त ह नि रामचन्द्र ७न गगापार उतरत क गिए खट हे उवर तुमन नाव कया गिपा दा ह। कन्त कहता हे कि ना रामचन्द्र का पगरण ७ म्या म गिग स्त्रा म्य म पगिवर्तित ७ गया मरा ता काठ का नाव हे। इसा स मरी जावका चन्ती हे अतएव घरण धान नाजिए तव नाव पर बटिए अथवा घाट जठ का स्थान में निवट ना गिपा सभता हे।'

१—मूरसागर—

नीला हा नाही ७ जाऊ

प्रकट प्रताप भरन का दगा ताहि कही पुनि पाऊ।
 तृपामिचुप कवट जायो कपन करत सा वात।
 चरन परसि पापान उन्त ह कतधरी उन्ति जात।
 जा यह बहू हाइ काहू का दार स्वल्प धर।
 छट दन् जाइ सरिता तजि पग सा परस कर।
 मरा सवन् जाबिका याम रधपति मुक्त न कात।
 मूरजनास चन्ती प्रभु पाछ रनु पगारन दीज ॥९४१॥

मैं निरगन्त विस बठ ताहा जा गीर गणाऊ।
 मा कुटम्य याग गगा एमा क पाऊ।
 मैं निधन बठ घन नहा परिवार धनरा।
 समर टाकाह काति क बायो तुम बरा।

नर हा जन्थाह ७ चन्ती तुम्ह बताऊ।

मूरनास का गिना नाक पहचाऊ ॥९४२॥

केवट प्रसंग भागवत में नहीं है। वाल्मीकि रामायण में भी यह प्रसंग नहीं है। अध्यात्म रामायण में केवट प्रसंग अहल्याद्वार के उपरान्त जनकपुर जान के लिए गंगापार करते समय रखा गया है जिसका वणन वाल्मीकि के छठ मंग में किया गया है। गास्वामा तुम्हादास जा न इम मारिभक्त प्रसंग का वणन किया है— पात भरा सहरो मक्का मुत वारे वारे केवट का जाति कठ वेत्त न पत्ताहा ज्यवा एहि घाट त थारिक दूनि जै कलि जल घाह दगावनी जू आदि उक्तिमा सुत्तर वत पण ह। रामचरित मानस में वही भाव का वणन करते हुए गोस्वामी जा न केवट का प्रसंग अटपट वन का वणन किया है। सूरदास जी तुम्हादास के वणन का अनंतर केवट प्रसंग हिन्दी साहित्य में रामचरित का सम्बन्धी जग बत गया है।

केवट प्रसंग का अनंतर सूरदास ने पुरवचन का प्रश्न का नरान प्रसंग का उभावना की है। वन जात हुए पुरवचन सीता में प्रश्न करता है। वन जात का कारण पूछता है तथा राम लक्ष्मण से उनका सम्बन्ध के बारे में जिज्ञासा करता है। यह प्रसंग भागवत में नहीं है। वाल्मीकि रामायण तथा अध्यात्म रामायण में भी यह प्रसंग नहीं मिलता। महानाटक में पुरवचन का प्रश्न का प्रसंग मिलता है (३१५-१६) जिसमें माग में चटाहिमा का स्त्रियाँ मादर पूछता है कि ह जायें यह नीलकण्ठ से समान नप्रवाले तुम्हार कौन हैं। मुख का नाचा करते हुए जानना न

१—अध्यात्म रामायण १ ६ २-४।

२—मागी नाव न केवट आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।

चरत कमल रजु कहु सब कहई। मानुष करनि मूरि कछु उहई।

छुवा गिला भइ नारि मुनई। पाहन ते न काठ कठिनई।

तरनिउ मुनि घरिनी हाइ जाई। बाट पर मारि नाव उडाई।

यहि प्रतिपालऊ सब परिवार। नहि जानउ कछ और करार।

जो प्रभु पार अवसि गा चहु। माहि पत्त पदुम पवारन कहहु।

पत्त कमल घाइ चत्त नाव न नाप उतगई चर्षी।

माहि राम राउर आनि दमरथ साथ सग गाचा कर्षी।

यह नार मागहु लखनु प जय लगि न पाय पत्तारिही।

तव लगि न तुम्हादास नाय कृपाल पाह उतारिही। इत्यादि

राजा से मुस्कराकर स्पष्ट उत्तर दे दिया।^१ इस मामिल प्रसंग म मूर का भी चित्रवर्ति रमी है। उहाने इसका बणन तीन पदा म किया है। पुरवधुएँ माता म पूछता है—

सखा रा कौन निहार जात।

राजिव नन घनप बर गह वन मनार गात।

राजित हाहि पुरवध पूछत जग जग मगमान।

कुउ जय म्त्रिया माता स वन्ता है—अगे मुन्हागिनि नुम जग कहा का निवामा रा तुम्हारा गाव वान है। साता न उत्तर दिया कि नम मरव व ताग वन जयाव्या व न जा वन्ता नगर है जहा वन कुल व वन राजा दगाथ राय करत हैं। म्त्रिया फिर पूछता हैं—वध तुम किस कारण म वन का जा रहा हा मच्छा बात कहा घरदार छाकर पदक क्या जा रही हो। साता उत्तर दता है— मासु का सीता मुहागिनि सो मखि अनि ही पिय की प्यारा। अपन मुन कौ राज निवायी हमना नम निकारा। म्त्रिया न जब यह दिपरान बात मुना ना उनक नना स नाग टन लया। कुउ म्त्रिया न साता म राम जात जगम ने माथ अपन घर चरन न गिा जाग्रह दिया। नम पर सीता न कहा कि राजा दगाथ न चौह वष तय अन म रहन का जाना दा है इस कारण हम घर म न । रन गवत। उनक वचन का मय करव औन पर न भवा फिर मिरेग। म्त्रिया न फिर पूछा—साता तुम्हार दवर कौन हैं और तुम्हार पति कौन ह। माता न उह बनाया कि गाव बण वाट मरे टवर ह और म्याम गगर वाट मरे पति है (९-४४)। ग्रामग्रण दूर तक साता व माथ गया फिर उनसे मिन्न पर वे वन लया रा गया—

वहि धा मया वगऊ का है।

जन्भुत बनू लिय भग डालत दखत त्रिभवन माहै।

× × ×

वनम का पति अहि उनहार पुरजनि पूछ घाइ।

राजिव नन मन का मूरति मननि णियो वनात।

१—महानाटक—प० ४३

पथि पथिववधूमि मातर पच्छयमाना

कुवलय दलनीन कोड यमार्थे तवति।

म्निन विवमिनगन श्राणविभ्राननत्र

मन्मवनमवन्ता स्पष्टमाचष्ट सीता। २ १५।

गई सकल मिलि सग दूरि लौं मन न फिरत पुरवास।

मूरदास स्वामी क बिहुरत भरि भरि लति उमास ॥९-४५॥

भास्वामी तुलसीदास ने जमुना पार कर चित्रकूट जात हुए माग म ग्राम वामिया तथा पुग्गवू सीता वातालाप का विवाद चित्रण किया है। रामचरित मानस म यह प्रसंग जयाध्याकाण्ड म दाहा ११०-१२१ क वाच विन्ताम्पूवक लिया गया ह जिसम सीता क तिरछे नयना म राम का पनि बतान का हृदयस्पर्शी बणन तुलसीदास जी न किया है। कवट प्रसंग श्री भातिपुग्गवू प्रसंग भा मूर तुलसी क बणन क पश्चान हिला राम माहित्य का अपूव मरसनायुक्त बयाग बन गया ह।

राजा दशरथ न पुत्र वियाग म गरार त्याग लिया। जयाध्या क पुरवामी जीव जन्तु पावसागर म तिमन हा गय। भगत क ननिहाल स गीटने तथा कइवी क प्रति उनक कवत का बणन तान पना म किया गया है (० ४७ ४०)। गुरु चणिष्ठ क मनगान पर भगत राजा दशरथ का त्रिधिवत जल्यपि मस्कार करत है। जनतर भगत चित्रकूट जात हैं। भरत क चित्रकूट जात तथा पाण्डवाए प्राप्त करन का बया पाच पना (० ५१ ५५) म मूरन कहा ह। इम जन्म पर कइया का प्रसंग उमर पना है। भगत राम स कहत हैं—रघनाथ स विमुख हानर विन विधि जीवन हा सबता है बन चरण कमठा का दय विना धरती पर वान मा सुय मित्र मक्ता ह। भरत हूठ करक राम क चरण पकट गत है किया प्रकार छोडते न। क कहत है—ह रघनाथ निदुरता छात्रिय बोगत्या माना परम दुषी है आप भगत लाट चलिए। राम न भगत का मनवाया, पिता क आत्म का स्मरण बगया तथा उपना दर भगत का जानस्त किया। भरत अवल्य के रूप म राम की पाण्डवाए तार अयाव्या गत—

भगत गान मानत नु आया नन उमगि जत तरया।

मूरदास प्रभु दई पावरा अवघपुरा पनु घागि ॥९-१६॥

१—रामचरित मानस—

बहुरि बदन त्रिभु अचत गीरी। पित्र तन चिनइ भौं करि बाका।

मजन मनु निराछ नयननि। नित्र पनि कहउ निन्हि मिय सयननि।

भइ मुनि मव ग्राम बधूरी। रकह गय रामि जनु गूरी।

अनि सप्रम निय पाय परि बहू विधि दहि अवाय।

गदा साहागिनि हाठ तुम्ह जव गि महि अहि मान ॥११६॥

चित्रकूट त चल खीन तन मन विश्राम न पायी।

सूरदाम बलि गपी राम क निगम नति जहि गायी। - ।

भरत क चित्रकूट गमन तथा पावगी ठकर जयाच्या ठीतन वा कथा का जाति
वाक्य क पञ्चान परवर्ती रामन्या साहित्य म विक्रम हाता र्ग्य है। इमका
मवाधिक विश्राम गास्वामी तुम्हीनाम के रामचरित मानम म मिश्रता ।

आरण्यकण्ठ—आरण्यकण्ठ की कथा वा वणन मूर न वारण पत्ता म किया है।
इमका आरम्भ रामणका क नामिका ठीतन व हाता है। जग पत्ता म मरणापण
वध वर्णित है। कनक मग तथा साता हरण का कथा चार पत्ता म वर्णित ।
राम धनप वाण साज हए बनेल वमन दए बाधर जय कनक मग क प।उ
दौत है तव सूय उनक आराध्य सगुण जवतारी रूप का स्मरण करण ।—

पात म नत सटारन मनन अड जनक जवधि वए जाय।

मूर मजन महिमा लिखरावत धमि नि सुगम चरन जागव। ५८।

साता न पुष्प वाटिका र्ग्याया। आराम वाटिका के पीधा का प्रगमा करक
प्रमपूवक उह साचने थ। जदुर धार धारे वए उनम फड जीर फए र्ग्यन र्ग्य।
पीधा की सुतर पकिया र्ग्य प्रकार र्ग्या वा जम स्वण का र्ग्याए मजाई गयी हा।
वहाँ कनक मग बनकर मारीच जाता है लिखाई पत्कर फिर भाग जाता है। राम
पीठ धनप लएर जाते हैं। लम्भण क भा चठे जान पर रावण विभूति र्ग्याकर
भि ता मायता है साता भिभा र्ग्यकर आता है जीर रावण उए हरकर उजाता है
जीर जगाक वाटिका म रखता है। मूरदाम कहते हैं—करम रख मटा नहि जाई।
(९-१९)। साताहरण प्रसंग म मूरदास न लम्भण क राम के पाम जान समय
रेखा ग्याचन तथा लम्भण क प्रति सीता के (कटार) वचन का निर्रिग मात्र करन
हुए साता साता के हर जान का वणन किया है। वाल्मीकि रामायण म माया
साता क र्ग्यण का उल्लेख नहा है जीर न रामभागवत म इमकी चर्चा है। माया

१—मूरमागर—९६०।

इहि विप्रि वन वस रघरा।

रामि क तन नमि मायन र्ग्यमन क फड लाइ।

जगन जनना करा बारा मगा चरि चरि जाइ।

कापि क प्रभ जान ला। तर्नि धनप चए।

जनक तनया धरा जगिनि म लया रूप बनाइ।

दह न बाऊ नए जान गिना रा रघरा।

क मा जनज मी रह्यो ह्या तुम छाति जनि कए जाइ।

माता वधन मंत्रम पहने कूम तथा जगद्वत पुराणा (सातवा साताष्टा) म मित्रता
 २। रामका विरामित रूप अघ्यात्म रामायण म मित्रता है जहा कहा गया है कि
 रामचंद्र न रावण का उल्लास का जान लिया और माता स कहा कि अपने
 आवार का लाया कुटी म निवर्गित कर दें और एक वष तक अग्नि म जल्य रूप
 म रह। राम का वचन सुनकर साता न बना हा किया। मायामया मीता न
 मायामय मग का ज्वरकरी शीला मग प्रनात क गिग वाद्यकर गन का राम स कहा।
 माया माता क हरण की क्या मूरलाम न जेही है। अनंतर गाम्बामा तुम्हाणस
 न गका वधन किया है। परवर्ती राम-माहिय म भी यहा क्या ग्रहान हु २।

माताहरण क उपरान्त राम साता क विषण म विलाप करत है। राम
 विलाप का मूर न तीन पत्ता म वधन किया है (९६२-६४)। राम माता का
 नाम जगद्वत पुकारत है तथा गाम्बाम हो अश्रुगत करत है। उपरण स राम
 कहत है—हू भाड वतना न मित्र कर राम जन म जानका का हर किया है इनके
 पाम माता क जगा क कूठ चिट्टि लिवाया जन है। गिह न उनका कति काकिल
 न मघर वाणा, चद्रमा न मज का छग मगा न नत्र का गामा चम्पक पुण्य न वण
 वमर न चरण-वर गामा जनार न दत्तावली हम न गति द्विम्बाफ न जाळ
 तथा मप न वणा का गामा चराया है। (९६३)। वत म राम प्रेम विह्वल हा
 जना पाप स साता क मन्वद्य म पूछत है—

फिरत प्रभु पूछत धन-धुम बनी।

अहा वधु काह अलाका इहि मग वधु अवली।

×

×

×

बहु त्रिय-हार बहू कर-कवन बहु नूपुर बटु चार।

मूरलाम धन-धन अवलावत विलाप वतन रघवार। (९६५)।

गाम्बामा तुम्हाणम न इस प्रसंग का मार्मिक वधन अरुण्यकाण म किया है।
 राम न जाग जाकर जगय का दाह-मस्वार किया है और उम निज पत्र प्रदान

रना मृग मारीच मारपी गिरयो जवन सुता।

गया गा न रग माता कल्यो सा बहि नति जाद।

नरति निगित गयो छत्र बरि नई गाय चुगद।

१—अघ्यात्म रामायण ३१-६।

२—रामचरित मानस ३२६।

३—रामचरित मानस

हू मग मृग है मधुवर मना। तुम्ह दग्गी माता मृगनयना। इत्यादि—१-०।

किया। जनतर राम गवरी व जाधम गय। भक्ति क वग म गकर जू प
खाय और उस जमर प लिया। भक्ति का मत्तिका का ववान करने हुए म्गनाम
न म प्रमग म कटा है—

जाति न का की प्रभ जानत भक्ति भाव हरि जग जग मानत। (९ ६७)

गवरा का प्रमग भागवत म न्ग है। वाल्मीकि रामायण तथा जघ्यात्म रामायण
म यह प्रसग जाया है। भक्ति भावना क प्रचार के साथ गवरा का क्या लोकप्रिय
हो गयी। सूर की भाति तुलसी तथा अय परवर्ती राम-साहित्य क रचयिताजा
न नका वणन किया ह।

किष्कि काण्ड—श्राम्भागवत म किष्कि काण्ड का क्या का
निर्ण मान मिलता है। सूर न म क्या का ६ प्म म (९ ६८ ७) म क्या
है। राम माता का ग्राज करत हुए श्रुष्यमूक पवत पट्टके। वग हनमान म भ
तथा सुग्राव स मित्रता हइ। राम न साता क आभूषण वानरा क पाम म सप्त
ता वध किया और वात्कि का वय किया तथा सुग्रीव का राय लिया। माता
का ग्राज के लिए वानरा के दठ भेजे गय। राम न हनुमान का मत्तिका दी।
ममद्र तट पर सम्पानी न वानरा का मीता का पता बताया।

सुदर काण्ड—सुदर काण्ड का जविकारिक क्यावस्तु का श्रीमद्भागवत
म केवल निर्ण किया गया है। हनमान का समद्र पार करना हनमान साता
सम्वात् का दहन सीता का राम का सत्ग राम का लका क त्रिए प्रस्थान जाति
का वणन भागवत म नहीं है। सूरदास न इन प्रसगा का चित्रण विस्तार के साथ
किया है। भागवत के क्या निर्ण मात्र के स्थान पर सूरदास ने तमयता के साथ
सुदरकाण्ड की क्या का वणन ३२ प्म म किया है।

समुद्र तट पर वानर दठ विचार करता है कि ममद्र पार कौन वार का
जायगा। जामवन्त न हनमान क बठ का सरात्ता का और उह ममद्र तट
के लिए प्ररित किया। हनमान न अपना गरार वग क रागना क लिया।
एक गिरि गिवर पर च क विरकिा ग लिया और ममद्र पार करन के लिए
उठ प्म। उस ममय गगन म आपात हआ क म गप-वसुधा नभ कापने ग
रविग्ध विचरित हा गग। नमान आकाग म एस जा रह थ नस मरगिरि
सपन गकर उ गहा हा। (९ ७४) हनमान लका मपच गय। वनकपुरा का म
उहान माता का वान का किन्तु पता न गन क कारण हनमान दुकी ग गए।
उन्ने रावण क भवन का गगन किया और वहा का मपप लया। फिर क
अगक वात्किा गय जग निगिचरिया रामनाम जपना हु लीन मत्रान सीता का
धर कर बटा था। हनमान माच विचार म थ गगा ममय आकागवाणी हई कि

महा साता है इन् प्रणाम करा। निगिचरिया रावण का गुणगान करना है और माता का रावण का धान ममजाता है। उस पर माता क्रुद्ध हो जाती है। निगि चरिया ने रावण से जाकर कहा कि गगन डालने लग पध्वा उड़ने जाय मम्मभव सम्भव हो जाय किन्तु माता का मत्व भाव रहा न बनता। एसा स्त्री का क्या हो कर त थाय उमक थाय से मम्म हो जाआग। रावण ने राम से बर कर उनक हाथ से मूर्यु का माग चुना था। उमने कहा—

जौ माता मनेत विचर नौ श्रीपति वाहि सभार।

मान मुर्य महापापा कौ कौन थाय करि तार।

य जनता व प्रभु रघुनन्दन नौ सवक प्रनिहार।

माता राम मूर मगम त्रिनु वात उताए पाए। (० ७८)।

रावण पुन माता का ममजाता है और कहता है कि मम्मने चाल मम्म किन्नरिया का नुष्टारा लमी बना ल्या तुम्ह पटराना बनाऊगा। जानका ने तप की धार देकर कहा—रावण तग जाभ गये जायगा। मैं ममथ का पला हू मिह का भय कहा श्रगाल पाता है। रावण माता का धारन का धमका कर चला जाता है। त्रिजटा-मीना-मवाए तान पना से धर्षित है। त्रिजटा माता से जावम्न करता है और कहती है कि नलकूबर के पाप के कारण माता पर रावण का बर न चरगा। नलकूबर ने रम्मा के साथ दण्डकारे करन के लिए रावण का पाप लिया था किन चाहने वाला पर स्त्रा का भवन करन से रावण के गिर के नौ टुकड़े हो जायेंगे। पाप काय कथा वा माकि रामायण के उतरवाण तथा मन्त्रागिन के रामायणान म मित्रता है किन्तु धाम भागवत म मका उल्लेख नहा है।

मीना त्रिजटा से हृदय चाल कर वातालय करता है और कहता है कि वह तिन के आयाग जे रघुपति के चरण वमल का मैं हृदय से लगाऊगा। माता

१—गामाकि रामायण उतरवाण—मन्त्रायण मग २६।

०— २६४।० ०३ ३।

—मूरगाण—मा तिन त्रिजटा के बर अ—।

जा तिन चरन बमर रघुपति के चरि जानना हृदय चरने।

बमर लडिमन पा मुनिपा मा मा वहि माहि मुने।

बमर वृषावन्त कौमिया बर बधू वहि माहि बरह।

✓

✓

✓

जा तिन राम रावनेहि मा मरिह म दमगाम चरने।

ता तिन मूर राम प माता मरबम बरि बयार्द है। ९ ८१।

कहता है कि मैं राम तरण में चित्त किया है मुझसे बगवतमान ही जाय गय
 का गिर बपित हो जाय चागर-रति पश्चिम में उदित हो ता नी में मयुर मूर्ति
 रघुनाथ-मान रति नहीं छालेगा। (८२) त्रिजटा अपना स्वप्न सीता को
 सुनाती है जिसमें उसने राम का विजय और रावण का वध तथा लका का विनाश
 किया है। साता के जग फटने हैं—और गुम गगुन हाता है। उसा समय
 हनमान प्रसट हुए और रावणरति का वणन करन गये हैं। उदित साता का
 बनाया कि राम-रक्षण कुण्डल से है। साता के लिए राम न कति रूप धारण
 किया है जत नल नग प्रण करते। सीता को सगप हुआ कि य रावण न
 तो नहीं है। इन पर हनमान ने यह मातु सन्धानि मुनि का दर्श प्राति कर
 नाथ करकर मद्रिका द द। साता ने उह बगवत निरुद बगया और चिर
 जावा हात का जागावा द दिया। साता-हनमान मन्वा विस्वार से ग्यारह
 पत्ता में वर्णित है। मद्रिका न के प्रमग का वणन बड़े बार किया गया है साता
 कती है—

हनमत भली करी तुम जाए ।

वारम्बार कहति बहति दुख सताप मिगय ।

शो रघुनाथ और लडिमन के समाचार सज पाय ।

जब परताति भई मन मर सग मद्रिका आय । ९९ ।

साता ने अपनी दुपगाता हनुमान से कही और राम के प्रति सत्प
 कहा । हनमान ने सीता का परिताप किया और कहा कि चिंता करने की जाव
 यकता नहीं में गपय करके कहता हू कि मैं राम को शीघ्र ले आऊंगा । हनुमान
 ने कहा कि मैं अभी जानकी का लिखा जा सकता हू किल्लु इसके लिए राम का
 जाना नहीं है। ९९५। सीता को आना पाकर हनुमान ने अगाध वादिका
 का विध्वंस किया और पागवड ह। रावण के सामन गय। हनुमान राम के
 बल पराजय का वणन करत है। रावण ने हनुमान को पछ में तल-नूल पावक

१—मूर्त्तमागर—

म गति दक्ष जान मन्मा बस जु कही ।

मुन कपि अपन प्राण का पहरा बब लमि दनि रनी ।

य जनि चप चया चान्त है करतन बडू द्विचार ।

कहि धी प्राण कहा गारकी राकि मुख द्वार ।

इतना बात जनावनि तुम सौ मनुचनि ही हनुमत ।

नाहा मूर मुया दुख बबू प्रभु कन्नामय कत । ९९२ ।

लगा दिया, उहो लका का भस्म किया। लका-देहन का प्रसंग भागवत में नहीं है। हनुमान के मन में सगाय हुआ कि वहाँ इस अग्निवाण में सीता भी न जल गयी है। उसी समय अग्निवाणा हृद— जाके द्विय अंतर रघुनाथन मा क्या पावन जरई। हनुमान पुन सीता के पास गया सीता ने क्या कि रघुनाथ के चरणा में पड़ कर मेरी म्यति उह बता देना। हनुमान का स लीने मधुवन का उजाडा। राम के पास गया तो राम ने उनसे सीता का कुण्ड धाम पूछा। हनुमान ने लका का सारा घतात कह मुनाया।

लका काण्ड— तीसरे भागवत में राम रावण युद्ध ११ श्लोका में वर्णित है। लका में जथाया अज्ञान तथा रात्राभिवक जाति प्रसंग का वर्णन २८ श्लोका में किया गया है। सूरदास ने युद्ध काण्ड को पद्या का विस्तार से वर्णन किया है।

युद्ध काण्ड की कथा का आरम्भ सूरदास राम के सना लेकर मधुवन तट पर पहुँचने में हाता है। हनुमान से साता का वतात सुन कर राम सना लेकर लका का जार चल पड़ा। सूरदास ने अभिमान का सजीव वर्णन किया है—

भूमि अनि दृगभगा जागिनी सुनि जगी सहस फन सेम की सीस काप्यौ।

कटक अतगिनित जग्यो लक खदभर परया मूर का तेज घर घूमि द्यप्यौ।

—श्लो ११०२।

राम सना सहित जलनिधि के तट पर आकर खड हो गया। वहाँ उढाने हनुमान का आर दृष्टि फेरो। हनुमान तुरत उनके पास आय। हनुमान ने राम से कहा—स्वामी निगाचरा का नष्ट करना साधारण काम है। आपका आत्म ही तो रावण मरीच अनक निगाचरा का नाश करे। आप बहू ता जानकी का उ आऊँ अथवा काका विष्णु कर शत्रू। दगासन की वीमा भुजाआ का एक धाम में बाट डारू जीर उन तृण ग्रहण करा के तीवित आपक चरणा में गिराऊँ। आपका आत्म पाऊँ तो का गन का समुद्र के पास उठा जाऊँ। सूरदास ने हनुमान के इन कथना का वर्णन चार पद्या में किया है। यह सूरदास की मार्मिक उद्भावना है। इस प्रकार का वर्णन जयश नहीं मिलता। इस प्रसंग में सूरदास ने एक अमृत कामल मन्थना का है। हनुमान राम में बहूत है—मनु बोधन के लिए गार्ध प्रयत्न करें अपना आत्म दें जिसमें सारा बना मिल कर सियु का बाघें दुम-गापाणा में तब तक इस समुद्र का बाँध लिया जाय जब तक मीना के अधुजल का समुद्र आकर इसमें मिल नही जाता। अत्रएव ह

प्रभु इस अकाठ प्रलय का मत्न की कृपा कर। मक पचात विभीषण गरणा
गति दो पना म वर्णित है। विभाषण न पहुँ रावण स मन्त्र निवन्त किया कि
राम ममत् तट पर आ गय है अतएव मग कचन मान कर माता का कर उनस
मितिय राम समार के कत्ता है। उनक चरणा का नमस्कार करिय। उकेग
न चरण प्रहार करके कायरता क लिए विभाषण का भजनता वा। इस पर विभा
षण अरण गरण क द्वार तुरन्त पडुचा (० १११)। राम न विभाषण का गरण
म ल दिया। मूराम भक्त-वत्सल प्रभु का यग गात है—

कहा मो बहुरि कह्यो नहि रघवर यत् विरल चलि जाया।

भक्तवट्ट कानामय प्रभ कौ मूराम जम गाया। ११२।

विभाषण का गरण दन क पचात राम प्रतिना करत है कि मैं अयाध्या
तभी जाऊगा जब विभीषण का राय द दूगा और सता क माय समुद्र का बाध
दगा। रावण का बध करके हा मैं दगरथ मुन राम कहाऊगा। विभाषण
स राम कहत है कि मैं उका का नष्ट करके गज का बध करके माता का प्राप्त
करुगा।^१

राम क समुद्र तट पर पहुँचन का समाचार पाकर मन्त्रा रावण को
समभाता है। रावण-मन्त्रा सम्बान का मूरदास न विस्तार क साथ ६ पना

१—मूरमागर—

रघुपति वगि जनन अब कीज।

बाध मिधु सबल सता मिलि जापुन आयमु राज।

तव तौ तुरत एक ती बाधौ दुन पावाननि छाड।

नितिय मिय मियन-नीर ह्व जब ग मिल न जात।

यत् गिना न करि कृपानिधि शरन्वार जनुगइ।

मूराम अकाठ प्रत्य प्रभु भनौ दरम गियाइ। १ ११ ।

२—मूरमागर—

हौं तत्र नगर जयाया जत।

एक वान मुनि निचय मग। गाय विभाषण नहा।

कपि दठ जागि जात मय सता गागर मनु बधही।

काटि दमा मिर वाग भुजा तत्र दगरथ मुन न कौ ।

छिन एक माहि एक ग तारा कचन काठ ठहौ।

मूराम प्रभ कृत विभाषण रिपु हनि माता उहौ। (१ ११३)।

म वणन किया है (९ ११८ ११९)। यह प्रमग भागवत म नहा है। गाम्बामा तुम्हादास न इसका वणन किया है। सूर क वणन म मन्त्रारी रावण म कहता है कि राम समुद्र के तट पर था गय ह माआ मन गम म मिला नता ता का नष्ट हा जायगी (९ ११८)। मन्त्रारी राम का सुयग वणन करता है आर कहता है—ह कन्त परम पुनीत जानकी का लकर राम म मिलिण और अपन कुट का बन्क मिया ढाणिए। राम क चरणा म अपना आ गिर रखिय आर अपन अपराध स मुक्त हा जाइय। राम कृपानिधि है ब पावन कग्मे (९ ११७)। अनंतर मन्त्रारी राम क वारतापूण त्रत्या का मुताकर रावण स राम का गणन म जान का कहता है। सीता का हर कर अन दो मन्त्रारी निर्दिष्ट बाय वताता ह आर विनाय स वचन क लिए गम का गणन म जान क लिए रावण का प्ररित करती है। (९ ११६ ११७)। रावण अपन बल का वणन कर मन्त्रारी का आवस्त करन का प्रयत्न करता ह (९ ११८)। किन्तु मन्त्रारी पुन गवण का समझाता ह और तुरत राम क पाम जान क लिए प्राथना करता है (९ ११९)। अगळ प म रावण द्वारा भज गय गुरु-भारण दूता का प्रमग वर्णित है।

सेतुसय और जलनिधितरण प्रमग का वणन भागवत म चार आका म (९ १० १२ १६) वर्णित है। मूराम न इस प्रमग का वणन चार पना म किन्तु विस्तार क साथ किया है। राम कुग मायगा क आसन पर समुद्र तट पर बठ गय। तान तिन धान जान पर भी सम न आकार का माग नही लिया तन राम न धनप वाण हाय म लिया। इस पर समुद्र भयभात आ गया आर व्याकुल होकर राम क पाम जाया। तनना न मनु बाबा जिवक म्प म पापाण जल म तरन गता था। राम का प्रनाप लयन क लिए विमान म उठर देवा आय। राम का नाम उकर का नवगाण म डून नता पाया कि कियुग म मूराम ही क्या बूझा पायेंगे। (० १०१ १०२)। जलनिधि तरण क गम्बय म मूराम का कपना मनाए न। जानका क त्रिशाण म राम न भय कर साथ किया सम पर मनु था मनु पर जान न जानर आकाण म छाव न मथा क समान जान पत ध। उका गजना मध निघोर जान एता था। मना का पक्ति म्मा जान पडता था जम समु म गिरनवाग नन्विया बायम गता गयी ह। माना राम क भय म समु पलिय मायक भज न जानी ग। सम का पत्नी विषाण टन दूर करन क लिए राम न साथ वपा म रक्त का नता प्रवाञ्चि

वर मम का विवाह कराया जिगम म्रण लका-वत्त धा यदभूमि क विवरे मणि- मुक्ता जाभूषण ध। सनुवदु म्पा मगत् तिक्त मम का लगाकर राम पार उतरे।' मूर का यह कथना सबया मीतिर है।

मना क माय राम क ममत् पार उतर जान पर मन्त्रालरा पुन रावण का मम चाना है। म प्रमग का वणन मूरदाम न तीन पत्ता म किया म। मन्त्रालरा कही म—विषय मारगधर ममत् पार आ गय। उनक माय मागर त् पर मर मना का अपार भीरु है। राम क ऊपर छन विमान है। मरा यत् प्रभ्नाव है कि जानका का अब भा द राजि। राम न मागर वधा उनक एक बानर दन ने म्का का जला लिया। उनका बगवरा न करिय। जनणव यत् कवद्ध प्रायना ह कि विभयन पति राम का जानका भाग राजि। रावण न अहकार म कहा कि तनाम काटि त्वना मग मवा करन है। मैन मत्त का बाघकर रूप म रवा है। राम म्मण का क्या विमान है त् क्या म्मना है। मन्त्रालरा कही है कि जा हानिहार प्रभ न रच रवा ह उस फाइ मट न । सकता। (९ १२५ १२७)।

राम न जगत् को दून बनाकर रावण के पास भजा। यह क्या बामोकि रामायण म यद्वकाण क ४१व मग म वर्णित है। भागवत म यह प्रसग नहा है। अध्यात्म रामायण म भी यह प्रसग नग लिया गया है। मूरदाम न जगत् दूतत्व प्रसग का सविस्तार वणन नौपत्ता म किया है। गाम्बामा तुलसीदास न भा म्स प्रसग का विस्तृत वणन रामचरित मानस म प्रस्तुत किया है। मूरदाम क वणन म वालि नदन-वत्त अगत् रावण क द्वार पर जाते है। पौरि स म्मवान दीर कर

१—मूरभागर—

मिव-नत् उतर राम उतर।

राय विषम कान्हा रघनदन मिय का विपनि विचार।

सागर पर गिरि गिरि पर अबर कपि धन क आकार।

गरत् किक्त जाघन उन्न मन दामिनि पावक वार।

परत फिगद् परानिनि भातर गरिना उक्ति वहात्।

मन रघपनि भयभात मिध पला प्योमार पयात्।

वाग म्रिक्त दुमह सबहा कौ जायी राजकुमार।

वानवष्टि म्दानि करि मरिना ध्याहत म्गा न वार।

मुवरन लक-वत्त आभूपन मनि मुक्ता-जान हार।

सनुवध करि तिक्त मूरप्रभु रघपनि उतर पार। ९ १२४।

गया दशश्रीग को सिर नवा कर निवेदन किया कि राम का दूत द्वार पर आया है। यह सुन कर अभिमान सदन-दस-वदन ने नन की सन दकर अगद को बुला गन का कहा। कपि क वप का देख कर लकन अटठहास करके हसा और वाग—
 तुम अच्छे वार ह्य राम का मेना का थाह लग गया। सुभटा से सविन छन का छाया म सिंहासन पर बठा रावण रिभय पनीत ज्ञाना था। उसने आग कहा—
 दव-जानन मन्तराज रावण का सभा म एक वदन को मत्र (सधि वाता) वन्न क लिए भेजा है (इसम तुम्हारी तोर की बार्द्धि गन्नि का अनुमान न जाता न।)
 इस पर अगद न वग— क रावण तरा तना क्या जातक ह कि मैं तग हार जाडकर प्राया वरु। मैं तर स्वण मकुट छान कर तुपे पटक कर तन्वार म तेरा मिर वात ता बिन्तु तेरा मत्य ना गम क हाथ होगा जल मध्य म न तुझ क्या मारु। यह सुन कर रावण जाला—अग्नि मरी ग्माइ वात ह सुरपनि पाना भरते हैं वायु मेरा द्वार स्खुड करते हैं नारन यग गात ह दव गह वहस्पति मुच तिथि व तिन वतात हैं मर द्वार पर जह्या उच्च स्वर सवदपाठ करन है। मैंन यक्ष मत्य वासुकि नाग मनि गन्ध तथा मबल वसुजा का जीत कर लाम बना गया है। तपसा राम ने यन्नि आकर डरा डार हा दिया है ता इमका क्या भय है। म पर अगद न कहा कि तप का बल मच्चा वरु ह। तप वठ क रिना जल पर पापाण कौन तग सवता है। कौन ऐसा सुभट है जा एक ही बाण म बालि का मार द। गरण म जान स राम काणि लोपा का बिन्मत वरु क्षते ह। जतणन अघे दगय्य जाकर राम से मिठा। और मत्यु मुख म अपने का उवार ग। यह सुन कर रावण वरवाल हाय म लकर वाप करके बोला—अरे म मैं क्या राम का गीग नवाऊ। मैं शकर की गपय खाकर बहता हू कि वररा का मैं पर म आवाग म उग दूगा। सम्मुख यद कर्ण्य और मन म तनिव गका न गऊगा। मैं मारी बालर मना को मार कर ममुद म वहा दूगा। ततीम काटि देवता मरा सवा रात गिन किया करत हू ता क्या अब मैं राम म डर जाऊँ। मेरे आघात म गनु पृथ्वी पर गिरये। रक्त की घार वहा कर मैं भरव का तप्प बरुगा। अभा वारा का मजित करता हू। रणभेरा वजवाता हू जार तव एक एक म भिदकर युद का स्वाद चमाऊगा। (९ १२)। अगु न कहा—रावण कृ तभा तर गरज रहा है जय तव राम हाप म धनुष नग नन। (१० १२०)। अगु न रावण का राम का मग्य गुताया—राम न क्या है कि रावण म तेर घल का जानन ह। मुन यद म जान न। नुग मकुट्यय यमलास भग गगा। तर दग पाग गवर का वड़ाऊगा। और रात्र विभाषण का गगा। (१० १२१)।

जगत् न कहा—रावण मुन आत्त नही है अयया में लका का नष्ट कर देता। तर् मिर का छेत्न कर देवताजा का भय दूर कर देता। राम नत्रा वाल रावण तू अधा है। मुने भवन से तून सीता का हरण किया है। रया नही पार कर सका। तू अब भी जनक सुता का ळकर राम की गरण म जा (० १ २)। रावण तू मग है जा राम का गर वत्तगता है। सीता का रामको ळकर तू ळकग बना ळ। रावण न क्या—जगत् तू पिता का वर क्या नउ गया। तून कुल गर का नग मारा ता तरे स्थान पर क्या क्या नहा उत्पन्न ळ। वालि महायाद्धा था तर् दखत राम न उमका वध किया। जगद न कहा—राम न कृपापुण ळत्ति स मर पिता का दया था उस दष्टि पर मैं ममस्त नरेणा का निठावर कर द। रावण न फिर कहा—यत्ति तुम म वर और पुस्त्याव नहा है ता मैं तुम्ह लका का जाधा राय देता हू। मर भहित य राभम युद्ध करने म गका नहा करेगे। (मरा मगयता से पिता का वत्तग ला)। तर् जगत् न रावण का मन राज ळ कहा—गम मरक ईग है कृपा निवान है गानकी का ळकर उनका गरण म ताजा। (९ १)। रावण न ळजान का ळगया जार यद्ध क ळिए मता ळ नन करने का आत्त लिया। जगत् न प्राय कर ममा म चरण राया और पतिता का कि यदि को मरा चरण ळटा ळ ता राम पिता यद्ध किय लौट जायग।

रात्ति नत्तन राम क पाम लौट कर जाय। प्रणाम कर निवेत्तन किया कि जयपति रावण का मैंन उन्नत मम गया किन्तु कात्तव्य उस कुठ मून नग पन रहा हू। ळद्रजान यत्त क ळिए चर कर आया है। अतएव आप भा मता सजित कर। जगत् दूतत्व प्रमग का मकि रामायण म म उप म ह। पर्वतों माहित्य म ळमका विदाम ळा है। मगनात्तक क जात्त जक म रावण जगत्-मवात्त का विन्तार से वणन किया गया ळ। जभितः कृत्त रामचरित क १८व सग म भी विम्पन वगन जाया है तथा कुठ मात्प्रत्यायिक रामायणा म जगत् दूतत्व का वगन किया गया है। मूरत्तम न इम प्रमग का मजाव वणन ळिया है। मास्वामा

- १—कापि अगत् कही घरों धर चरन में ताहि जो सक काऊ उठाई।
तो विना जद्ध निय जाहि रघुवार फिरि मुनत मव उठ जाधा रिमा।
ळ पचि हारि नहि टारि का मकषी उठयो तव आपु रावन गित्याई।
कहा जगत् क्या मम चरन कौ गहत चरन रघुवार गहि क्यों न जाई।
मुनत यत्त मकुच कियो गौत निज भवन कौ बात्तिमुत हूतहात मिवायो।
मूर क प्रभ कानाद मिरया कही अब दसकथ कौ काठ आयी। (९ १३५)

तुम्हारा और मूरवास के इस प्रसंग के वर्णन में साम्य है।^१ गांधामाजी का वर्णन अधिक विस्तृत है। रामचरित मानस में जगत् के बड़े प्रसंग तथा गवण मुकुन्द राम के पास फेंकने का भाव वर्णन किया है।

रामण रावण के सम्मुख प्रतिना करने हैं कि भाई मैं इंद्रजीव का न भ्राता श्राचरणा का नाम न जानूँ। रामण रावण समस्त ममस्त निगाचरा के सहार का महत्त्व करते हैं। मना करण रामण यज्ञ के लिए प्रस्थान करते हैं। जीव का घरा का घरा (० १ ७ १ ८)। इस अवसर पर मन्त्रालय पुनः रावण का ममताता है जीव करता है कि उठकर लवा लका घर ला गया है वानर मना घरा का भाति छापी है चारा आर अत्रा हा गया है। लका में राम का दुःख फिर गया है मुझे यह वृमति वही में आया। रावण जटकार से भर कर बहता है—भर राम भिर वाम मुजाए है लका के चारा आर सौ याजन का स्वाद है मघनात मा पुत्र वृम्भकण मा भाई है रह रह कर भयमान रावण वान न चांगे जीव न राम का वानि का उपान करा मैं वन तपसा नात्या कातान रावण में पकट कर मगाऊगा। राम पर मन्त्रालय न रावण का फिर ममताया जीव राम का महिमा का वर्णन किया। (० १६०)। मघनात न रणभूमि में भयकर यज्ञ किया वाण वलि का तथा वानर मना का नागपाग में बांधा। राम न वृषा करण पाग में मना का मुक्त किया। (० १६१)। रावण न वृम्भकण का जगाया जीव यज्ञ के लिए प्रगति किया। रामण न करवाण मभाण जीव रावु का टक रूब करण का मकल्प किया। रामण यज्ञ भूमि में जयमण ल्या। रामण न राक्ति हाय में रा तत्र स्वनाआ न गताकार किया। विजति राणि का नीति बर राक्ति हूरी जीव रामण भूत पर गिर पण। राम वृम्भभिभूत रा गय उत्रव नयना में नार करण ग्या। (१६६)।

मूरवास ने रामण का शक्ति वर्णन राम के पास तथा तत्पश्चात् रावण मजा वनी राम के प्रसंग का विस्तार में वर्णन किया है। भागवत में यह प्रसंग नहीं है।

१—रामचरित मानस—६ १७ ५।

गमुष्टि राम प्रताप करि वापा । ममा भाग पत करि पण गया ।
 जी मम चरण गकमि मठ टारी । विरहि राम माना मैं हाग ।
 कपि बल दगि मकर हिय हारे । उग आपु कपि के परचार ।
 गहन घरत कह वालि कुमार । मम पण गहन न तार उबाग ।
 गहमि न घरत राम मठ जाई । मुनत किरा मन बनि मनुचार् ।

अप्यात्म रामायण में इसका विस्तार स वणन किया गया है। परवर्ती रचनाश्री में इस कथा का अधिष्ठ महत्व दिया गया है। गान्धामी तुलसीदास ने भी इसका सविस्तार वणन किया है। सूरदास का वणन कृष्ण राम में आतप्रातः २। मूर्छित लम्भण का लेखकर राम अज्ञात हो जाता है। राम कहते हैं कि अत्र मैं किमवा भ्रामा का गत्र मना ममुत् का भाति उमत् रहा है उमका निवारण किम माय कर कह। जयाह गात्र भमत् म मरी ताव चत् रहा था कवत् राच हा म थक गया। गत्र क मन फा प्रति हा गया। मैं जनेन प्राण त्याग दगा और जानका भा म सुन कर प्राण त्याग दगा किन्तु गर्णागत विभाषण का क्या होगा भरे मन में यही राच है। लम्भण का मिर गात्र म ग्य कर राम गात्र करत है। (९ १४६)। राम पवनसुत हनुमान का वन्दन है। हनुमान राम का सवा क लिए प्रस्तुत हो जाते हैं। राम वश सुपण का बताइ श्रीधरि द्राणाचल स गत्र के लिए हनुमान स कहते हैं। हनुमन न राणाचत् पञ्चकर जीयधि न पृ चानन के कारण पवन का हा उठाकर ल चले। लागत ममय व जयाया क ऊपर न जाय। भरत ने उपत्य का अनुमान कर वाण चलाया। हनुमान पश्चात् पर उतर भरत क निकट पहुँच आगे अपना नाम हनुमान बताया। भरत क दुःख पूछने पर हनुमान ने समाचार बताया।

सूरदास ने इस स्थल पर कुछ मौलिक कल्पना का है। हनुमान का समाचार सुन कर कौगल्या और सुमित्रा ने विवाह किया। (९ १५१)। सूरदास ने सुमित्रा का चरित्र उच्च भाव धरातल पर चित्रित किया है। सुमित्रा कौगल्या से कहता है—वह माना धर्य है जो गुरवार को जन्म दे जो भीर पडन पर गत्र दल का दर्शन कर कनव्य पालन करें। हे स्वामिनि आप दुःख न करें। मैं लम्भण का जन्म कर सपूता हुई। यदि लम्भण राम के नाम आ जाय। यदि लम्भण जियेगा तो ममार भ रह कर मुक्त भायेंगे। गण उनका कांति मायेंगे। यदि व मर गय तो मूय मण्डल का भजन कर व त्रिय-लाक में निवास करेंगे। मरा यही

१—रामचरित मानस—६ ५४ ६२।

२—सूरदासर—

निरति मत्र राघव धरत न धार।

भए अनि जनेन विभाष-कमत् त्त-लाचन मायत नार।

वारत् वरप नात् है माया तान विबल सरार।

दमरय मरन हृग्न सीता का रन बरित का भीर।

दूजा गूर सुमित्रा-मुन विन कौन धराव धार। (९ १४५)

कामना है कि राम त्रिजयी हाकर घर लौटें। (९ १५२)। कौशल्या बड़ा माना है व हनुमान का सत्पुत्र होता है—कपिलर, राम म वह दना व मंग पुत्र ता ता बिना छोड़ भाइ लक्ष्मण क राम नगर म न आव। यन्ति लौटें ता लक्ष्मण तथा जानसी के साथ मकुटा गये नता ता मुमिनाकुमार पर अपन का यौशवर करे। मुमिना अपना सत्पुत्र रामान का स्त्री ह जोर कन्ता है—भवक युक्त म प्राण तत्र भा स्वामा घर लाता है। श्री राम जब म वन गय भरत न गुण्यपभाग छांट लिया जाइ कुमा हाकर रत्न है। (९ १५३ १५४)। पवन पून न कहा—आधा रात रात गयी १ राम न मजीवनी क लिंग म भगा रा। भरत न कहा—पवन क माथ मर वाण पर बठ जाजा म तुम्ह पन्चा द। मर मिर पर राम का पादुका ठ मी के बल पर मैं भरत कहाता ह। हनुमान मजीवनी त्वर लका पहुच गय। जाइ हाथ जाडकर मिर नवाया। भरत का सत्पुत्र गुण्या जोर मजीवनी त्वर मूर्च्छित लक्ष्मण का फिर स जगाया। (१५६)।

लक्ष्मण क मूछा स जग जान पर राम न प्रतिना का—मैं दूसरी बार हाथ म वाण न ग्या एक हा राण म समझ निगाचरा का नाग कर ग्या रावण का पत्र कर लता का गाय विभायण का लक्ष्मण जोर लक्ष्मण जोर माता क माथ सुव स अवाध्या जाऊंगा। (९ १५७)। राम न रण म वाप किया है। ब्रह्माणि रिमाना म बर कर राधाम त्वर तत्र। सुरपुर स मज कर रथ आया राम उम पर बठ। भूमि काँप उठा मित्र क्षमित ता उठा गप का मिर कपिन हा गया पवन का गति रण गया तत्र राम वचन मग ताता जान कर विलम्ब। घरा अम्बर तथा लिंगाज म वाण छा गय माना प्रत्य रात म जनक मूय उन्ति हा गयहा। ध्वजा पताक तत्र रथ टरन गग। मुभक्त जपन लग रक्त का घारा आकाश म उल्लङ्कर हाथा घाता क मिर पर गिरा ग्या माना मूय क रक्षा स अग्नि निवृत्त रही हा। कवच रथ स गिर कर फिर उठा है जम अग्नि की लपट भभन रही हा। राम का दाशरथि माना राम क वाग स अग्नि प्रचण्ड हा उठा हम अग्नि म कुञ्ज और सना

१—मूरगागर

मुना कपि वाग्या का शत्रु।
इति पुर जनि आर्षहि मग वरगत्र त्रिनु लक्ष्मिना त्र्युधान।
छाश्या रातनात्र माना त्रिनु चरननि विन रात।
साहि विमग्य जावतापि त्र्युपनि त्रिहिया कपि ममूता।
लक्ष्मिना गन्नि वरगत्र वरगत्र जनि गत्र पुर कात्र।
नानर मूर मुनिनामुा पर वारि अपुनपी दात्र। (९ १ ५)

सहित रावण क भस्म हात दर न लगी। (९ १५८)। युद्ध म रावण का वर पर राम ने अपना प्रण पूरा किया। महाप्रती रावण का राम १ क्षण भर म त्रिनाग कर लिया। उन्होंने विभीषण का राय लिया और स्वताश्रा का उद्धार किया (९ १५९)। रावण की मृत्य हो जान पर मन्त्राचार्य तथा अन्य रावण पतिव्या विलाप करती हैं। विभीषण गोक करत हुए रावण के कम पर पचाताप करत हैं और कहते है कि रावण न किता का बहना न माना अपना राज भी छाया और प्राण भी खा लिया। (९ १६०)।

युद्ध समाप्त हान पर ऋषमण न सीता का अगाक वाटिका म जाकर दगा। साता वस्त्राभूषण पहन कर पुष्पक विमान म बठ कर राम के पाम जाया। राम न सीता का दय मुख फर लिया इसम सीता मर्दित होकर गिर पया। मूरदाम कहत हैं कि तीना राका के स्वामी राम जग उपनास स उर रहे है। (९ १६१)। साता ने ऋमण स अग्नि प्रज्वलित करने को कहा। सीता अग्नि म स्थिर जामन उगाकर बठ गयी जस जगार म स्वण रता है। अग्निदेव ने प्रकट गजर व निष्कृतक है साय्य लिया। जाका स देवताजा तथा महाराज गगरथ न भा यहा कहा। तब राम न सीता का विमान पर बठा लिया और जयाध्या का चल पड। (९ १६२)। इंद्र ने रणभद्र पर जमन की वर्षा का और कपि भाठ तत्काल जय-जयकार करते हुए उठ ख हुए।

राम प्रत्यागमन का प्रसंग भागवत म भी है। विन्तु मूर का वषण मीठिक एव मािमिक है। इधर राम त्वा स अयाध्या व तिए प्रस्थान करने हैं उधर अयाध्या म माता कौगल्या रामक लौटन क सम्बन्ध म गकुन निवाल रही ह। इतन म वाग हरी डा पर जाकर बठ गया। कौगया कहता है कि मैं राम लहमण का आँव भर कर देव उ ता सुग दाना भर कर दविजान्त विगऊगा और जीवा भर तेरा नाम जपगा।' राम जयाध्या जाकर अपना जमभूमि का

१—मूरसागर—बठा जनना करति मगनाता।

ठिमन राम मित्र जय मारी ताउ जमात्क माना।
 वना कहत मुक्ताग उर न परा कर उरि रगा।
 अचरु गारि लु लुव गामा सुव ज जानि उर पठा।
 जब तौ ही जावा जावभर मया नात्र तय जपिया।
 थधि जोत्त जाना भरि तौ जह गारिनि म थपिहौ।
 जय क जा परचौ करि पावा जह दगौ भरि जाय।
 मूरदाम मान क पाना मठी चाव जह पावि। (९ १६४)।

दान करते हैं। जन्ती जन्मभमिश्च स्वर्गापि गरीयमा' का भाव लेकर मूर
 क राम कहते हैं कि मैं बहुत मन रहना चाहूँगा जयाध्या क जागा का तब मेरा
 हृदय आनन्द म भर जाता ।

माता लक्ष्मण सहित राम अयात्र्या गीते। उनका गान का समाचार
 सुनकर जयाध्या म प्रत्येक गृह तारण बजा बल क सम्भ जलपूण बला म
 सजाया गया। दधि-दूध-मलाई फल-फूल-मान बनर बाल म ग्यवर म्त्रिया
 मगक गान करती हैं। नगर म बल ध्वनि और गयना होता ह। पुरवामा राम
 का अपार महिमा देखकर मन-बुद्धि विकार भूल गया। (९ १६६)। दूरे स
 लाम राम का विमान म आत दरन हैं। अपन साथिया का राम विमान पर म
 इगित कर अयाध्या क निवामिया का उता रह हैं। भगत का दय राम
 कहते हैं—वपिराग गया व भगत जा गया। उनका मिर पर भरा पादुका
 उहान राजवेश त्याग लिया । गरार दुःख हा गया ह उहान समार
 का स्वामा-मवाधम मिलाया ट। राम न विमान दूर छात्र लिया जा
 पत्त जाय। भरत न भूमि पर पड कर अभिरात्रन किया। भेंटत समय राम
 क आगू भरत का पाठ पर गिर रह थे। माना विरह म जलत हुए भरत की
 ज्वाला का बुझा रह हा। राम पुरवामिया म मित्र। इस समय स मूरदास क नत्र
 गाल हुए (९ १६८)। राम का आगमन सुन कर कोणिया उठकर गी ।
 मुमिया आरता सजाकर गइ। माना उमा प्रसार गीरा जम गाय अपन वरम
 को दूध पिगत क लिए दास्ता हैं। नगर म आनन्द-भूषक कागहल दान
 लगा। दक्ताआ न लुभा बजा नाना वण क पवित्र दान गग बाविया
 मुमयित ज स माचा गया मुकिया न मगयान गाया। म्त्रिया गृह क ऊच
 म्या पर चढ़कर राम का दान गया लाल-लज त्याग कर उह गया
 गाग तवाया और जागाय लिया। राम का म्वा क लिए अयाध्या उम
 पत्त—

१—हमारा जन्मभूमि म गाउ।

मुन सस मुपीर विभागण अचनि जयाध्या ताउ।
 गत वन उपवन-गरिता-भर परम मनाह गाउ।
 जपती प्रहृति त्रिय बाग्य गी मुरपुर म न रगऊ।
 हा क वागा अरगरत ही आन उ न ममाउ।
 मूरदास जी त्रिय न मराव ती बहुत न जाउ।

—मूरदास (९ १६५)

दमन की मन्त्रि जानि चली।

रघुपति पूरन चट मिगसन मनु पुर जग्यि तरग ग्या। (९१७१)

भरत ने मणिमय मिगसन आकर ग्या। अपन गाय म स्वण पात्रा म मय दूध तथा जल भरा। राम को आमन पर बग्याया जीव चरण घाया चरणान्त केयर मस्तक पर धारण किया। राम के प्रति भक्त का भक्ति का यह ग्या ममस्पर्शी वणन है।

सूरदास ने राजनाथ अर्चन हुए राम का कल्पना का है। वे कहते हैं कि मैं प्रभु को अपनी विनती किस प्रकार सुनाऊँ। राम का जावा अस्त है उक्त प्रार्थना सुनान के लिए भुव समचित्त गमय नया मिगता। रात्रि वातन लगना और एक याम रह जाती है तभी मैं उठकर दीपता हूँ किन्तु मसोच हाता है कि सुकुमार स्वामी का नीचे से कस जगाऊँ। मूय का विरण निकलन हा उनक पास गह्रा र्यादि अगणित सुरमुनि का नाम हा जाती है और भुव गर नहीं मिग पाता कि प्रभु तक गा सक। आपका राम राजमभा से उचन है वहा भाड रहता है फिर स्नान भाजन गयन आदि करत है। सत्या पीत हा नारद गुण गान करन पहुच जाने है। जय वृषानिधि आप की रन्धि कि मैं किस प्रकार अपनी विनता आपका सुनाऊँ। कमलापति एक उपाय में कर मन्ता हूँ यदि आप कहें तो उतावर ममया है। आपका नाम पति उचारन है जतएव आपका पास प्रार्थनापत्र लिखकर भजत है। (९१७२)। भक्ति निवन्दन करन की महात्माया की यह अपना गतो है। गाम्वासी तुलसीदास ने ना आराम के पास विनय पत्रिका भजकर स्वयं वाचन का उनसे निवदन किया है।

—१ सूरदासर—

मनिमय जामा जानि घर।

दधि मय नाग कनक के काण्ड जापुन भरत भर।

×

×

×

परगत पात्र चरानावन दुग जग जग मन्त्र हर।

सूर मन्त्रि जामा ग्या जल ज करि माग घर। (९१७१)

२—सूरदासर—

तुमहा कौ वृषानिधि रघुपति किन्ति गिनता म जाऊ।

एक उपाय करो कमलापति कही तो रन्धि ममशरऊ।

पतिन उचारन नाम सूर प्रभु यह रता पटुचाऊ। (९१७२)।

३—विनय पत्रिका—पृ म २७७

मूरसागर म वर्णित रामकथा यहा ममान हो गथा है। भागवत म नवम स्कन्ध के एकादश अध्याय म राम का उत्तर चरित दिया गया है। इसका अन्तगत माता निवृत्तान्त लवकुश जन्म माता का पशुवी म प्रवेश राम परमधामगमन आदि प्रसंगा का वर्णन किया गया है। मूरदास ने इस कथा का वर्णन नया किया है। माता निवृत्तान्त आदि प्रसंग भक्त मूरदास का हृदय ब्यापित आकर्षित न कर सक। गोस्वामा तुलसीदास ने भी इन प्रसंगा का वर्णन रामचरित मानस म नहा किया है।

भागवत म वर्णित रामकथा इतिवृत्तात्मक है। मूरदास ने रामकथा का मार्मिक प्रसंगा का चक्र गय पदा का रचना का है। जहाँ भागवत का अनमरण उद्धाने दिया है वहा उक्ति भागवत का निर्णय भा किया है— मूर कह्यो भागवतऽ नमार' मुक जन्म नय का समयाया मूरदास त्याग बहि गाया कट कट्टु गुह कृपा त था भागवत अनमार' आदि। रामचरित वर्णन म आरम्भ के पद म इस प्रकार का निर्णय है। गय वर्णन म मूर का भावुक हृदय मार्मिक प्रसंगा का भाव प्रवाह म बह गया है और उसम भावा का हा प्रकाशन हुआ है। नवम स्कन्ध म मूर ने १५८ पदा म रामचरित का वर्णन किया है जिसका विवरण ऊपर दिया गया है। रामक अनिर्दिष्ट मूरसागर म ५८ अथ पद हैं जिनम राम का चर्चा आ गया है। राम स्कन्ध म ७५ पद ८१६ और ८१७ रामकथा विषयक हैं जिनका मूरदास मूर का अनन्तपामना म है। पद ७७ म उक्ति अवतार वर्णन क मन्वन्त म रामावतार का चर्चा का है।

१—मूरसागर—पद मन्त्रा—

११	१३	१८	२५	२६	२८	५६	म ३६
५४	५७	६१	६६	७१	७९	९०	९७
११०	१२०	१५५	१५२	१७८	१७६	१७५	म १८० तक
१८२	१८८	१९५	२१९	२२०	२३३	२५	२५५
२६६	२९६	२०७	२०६	२१०	११	११८	३५०
२४६	२५३	७०	४२२	८१६	८१७	८९	९२०
१५९	१६०१	१८१	३४१	३८३८	४४६	५६००	
३७४	३७५१	३७५३	५७५७	७८१	७७८६	८६७	३८८१,
२९०१	७९	८१६	४१३०	८२७,	४८१	८८७	४६२७
८७१०	८८०	८८५	४०३४।				

परिणाम १—पद म० ० १५६ १ ७

परिणाम २—पद म० ० ५ २६०

रामचरित मन्त्राधी पदा का एक मञ्जुल इधर मूराराम चरितावली नाम से प्रकाशित किया गया है। इसमें कुछ अनिश्चित पद मप्रहीन हैं। किन्तु इन अनिश्चित पदों का प्रामाणिकता जमलियत नहीं है। इसमें मूरारामचरित रामकथा भा दी गया है जिसमें रामजन्म से लेकर रामाभिषेक तक की कथा में १५ म वर्णित है। गुरुदास ने वाल्मीकि अवतार तथा रामचरित बणन के लिए मतकाटि रामायण की चर्चा की है और कहा है कि रामचरित का बणन में भवजजात्र का मटने के लिए करता हूँ—

कठ गछप मूर जब वरनत लघुमति दुरजठ बाल।

यह रमना पावत के कारण भेटन भव-जजाल।

मूरारामचरित की कथा में विश्वामित्र यज्ञ रक्षा माना स्वयंसे पराराम ममागान बनवाम मीताहरण का विजय तथा रामराज्य प्रसगा का बणन किया गया है। बणन सतिप्त है तथा राम मन्त्रिणा का प्रकाशन इसका मुख्य उद्देश्य है। इनर कतिपय विज्ञाना न मूरारामचरित का जट्टछापी मूर-वृत्त न मान कर उन अप्रमाणिक रचना बनाया है।

मूराराम के रामचरित बणन का आधार अभेदापामना है। दाम स्वयं में यशादा कृष्ण का पत्रिका पर मुग्धा रती है। यगोला कहती हैं—गठ मा ताजा मुग्ध एक गरम कथा मुनाऊगी। यह मुनकर कृष्ण साकर कथा मुनन लग। कथा मुनने लग कमल-मन के हृदय में आनंद उत्पन्न हुआ। यगोला ने कथा आरम्भ किया—स्वयं म मर गजा दगरथ हुए उनके चार पुत्र थे। उम मुख्य राम थे जिन्होंने मना जनकगुता था। पिता का बचन मान कर उहान राय उठा लिया तथा भार्गवना के साथ बन चले गया। बनक मृग के पीछे परम उत्तर राजिव काचन राम दीन। रायन साता बाहर चला गया। यह मुनकर नर नरन कृष्ण का नाद उचट गइ। श्मण धनप दा श्मण धनुपदा कहत हुए थे उठ वठ। यह लखकर जनना यगोला का बन्ना भम हुआ। (१० १९८)। अगले पद में भा यहा बणन है। यगोला कहता है—नर नरन एक कहाना मुना दगरथ मुत राम थे उनका मीता रानी था। पिता का आज्ञा निराधाय कर राम बन जाकर पचवटा में रहत थे। वहाँ रहत अभिमाना निगाधर रावण न मीता का हरण किया। इस कथा के कहत हैं—श्मण धनप दा बहकर कृष्ण उठे पर और यगोला का हृष्य भयभान चला गया। (१० १९९)। इस बणन में कृष्ण स्वयं राम हा गय है

१—मूराराम चरितावली—गानाप्रम

२—१० ब्रजवर वर्मा—मूराराम—१० ९०

—१० प्रमतरायण टण्टन—मूरारामचरित—एक अप्रमाणिक रचना।

मूर की अनेक शक्ति का यह गजातम श्रष्टान है। मूर के लिए रामकृष्ण के ही रूप थे। भागवत में पंचम स्कन्ध के उपरीमवें अध्याय में विष्णुस्य वष के वणन के मन्त्र में हतमान का रामभक्ति का चचा के रूप में रामकथा का निर्माण किया गया है। इस अवसर पर भागवतकार ने मनुष्यत्परासी राम और हरि का अभिन्नता प्रतिपादन की है। यह अभेदापामना मूर के रामचरित वणन का वास्तविक आधार है। ऊपर के विवरण में यह स्पष्ट है कि मूरमागर की रचना में मूरदास ने भागवत का भाजना का अनमरण किया किन्तु उनका रामचरित वणन सबका मौलिक है। उन्होंने ममग्र रामचरित का अभेदापामना के आधार पर स्वतंत्र दृष्टि में रखा है और इसी रूप में उसका वणन किया है। मूरदास ने रामभजन में प्रतिष्ठित रामकथा के स्वरूप का ग्रहण किया। उन्होंने राम के ब्रह्मत्व का प्रतिपादन किया तथा रामकथा के मार्मिक स्वरूप को महत्त्व देकर रामभक्ति का भावना को प्रतिष्ठा का। तुलसीदास हिन्दू राम-गाहित्य के रचयिताओं में मूरदास का स्थान अग्रगण्य है राम गाहित्य में इन महात्मा का योग स्पष्टतया उल्लेखनीय है।

१—मुरासमुरा वाप्यप वानरा नरः

सर्वोत्तमा य मुञ्चनमममम्।

भजन राम मनुजाइति हरि

यउत्तराननस्यवाग्यान्निदि ॥ भागवत ५, १९, ८।

अध्याय ८

रसिक सम्प्रदाय में रचित राम साहित्य

रामभक्ता का एक गमदाय सीता राम की रसिक भावना से उपमाना करता जा रहा है। उन भक्ता के सम्प्रदाय का रसिक सम्प्रदाय के नाम से अभिज्ञि किया जाता है। इस सम्प्रदाय के भक्त राम की मधुर लीलाया का ध्यान करते हैं। उनकी भावना माना राम की जातरिक मवा है। पिछले दशक में हुए गायनय में इस सम्प्रदाय की भक्ति पद्धति तथा साहित्य पर विगप प्रकाश पया है। इसके अनुसार रसिक भावना प्राधान काठ से चत्री जा रहा है। वात्माकि रामायण के कतिपय प्रमगा में रसिक भावना निहित बनाया गयी है। अत्रातर वाल मत्रम भावना का प्रमगा विक्राम होता रहा है। हिन्दी साहित्य के भक्तिवाक्य में इसका व्यवस्थित रूप लिखा गया है। रसिक साधना का आरम्भ गृह्य साधना के रूप में हुआ। रामानन्द सम्प्रदाय के अतगत यह साधना विकसित हुई। तथा अद्यतन काठ तक चला जा रहा है। रसिक सम्प्रदाय के अतगत विपुत्र राम साहित्य का रचना हस्त है। हिन्दी राम साहित्य में रसिक भावना की साहित्यिक अभिव्यक्ति सबसे प्रथम स्वामी अग्रनाम का रचनाओं में उपलब्ध होता है। इनके पूर्व के रसिक महात्माया का रचनाएँ इस समय उपलब्ध नहीं हैं।

वात्माकि रामायण में राम का मयाल-स्वरूप चित्रित किया गया है। राम का यह मयाल-स्वरूप मवाधिक ग्रहण हुआ। जनमानस में प्रतिष्ठित रूप स्वरूप की एक परम्परा बन गया जो परवर्ती काठ में अशुष्ण रहा। गास्वामी तुम्मायाम न राम के मयाल स्वरूप का सर्वोत्कृष्ट जवन किया। इसके आगे सिमा जय रूप का कल्पना भा नहीं की जा सकता था। किन्तु उस समय भा राम का रसिक भावना का उपमाना प्रचलित था। या भगवता प्रमात् सिंह न इसका चर्चा करते हुए लिखा है— गास्वामी तुम्मायाम जा न रामचरित के जिस स्वरूप का अभिजाक्ति अपना कृतिया मका वह अवय प्रधान है। उनका राम का मयाल न ग्यात उक्त विराय नवा के उमत्रा और काकधम के सस्थापक हैं। किन्तु तुम्मी का समजायान रामकाय-धारा में रामायामता के एक दूसरे पक्ष के अस्तित्व के भा चिह्न मिलन है जिसका दशक ध्वय तुम्मा म भा यत्र-त्र हा जाता है — वह है रामावन सम्प्रदाय

म माधुय भक्ति का उत्कृष्ट । रामोपासना का इस पद्धति का प्रचार भक्ता के एक सम्प्रदाय विशेष तब सीमित था । सिद्धान्ता की भोपनीयता के कारण उनका उपदेश केवल जनरल आर दीर्घित साधना का ही दिया जाता था । अतएव उनका सारा साहित्य जायाय पीठो के वस्ता म प्रथा अप्रवाणित और अविवेचित ही पडा रहा । उधर तुलसी साहित्य क प्रचार स रामचरित क एश्वय प्रधान अथवा गुकल जी के गण म गल गक्ति सौम्य समन्वित रूप का प्रतिष्ठा लोक व्यापक हा गया । उसके जावार पर जनसाधारण क्या साहित्य की गतिविधि से परिचित विद्वाना तब ना यह धारणा वा गयी कि रामसाव्य वा परम्परागत स्रोत एकमात्र मयादावद्ध अथवा ऐश्वयपरर भक्ति को ही लेकर चला है । माधुय विषयक जो रचनाए उमम यत्र-तत्र उपलब्ध गयी है वे जत्यत जवाचीन अंगील और साहित्य क लिए अज्ञाभन हैं । परन्तु अनुसंधान स्थिति का एक नमरा ही रूप प्रस्तुत करता है । इधर इस माधुय धारा का जा साहित्य उपलब्ध हुआ उसस विदित होता है कि गोस्वामी तुलसीदास की पूर्ववर्ती ममनागोन और परवर्ती रामोपासना इसी स्रोत प्राप्त थी । वास्तव म इस पद्धति क सावक कविया की सख्या इतनी अधिक् है कि तुलसी मम कागीन भक्तिधर म प्रमन श्रुगारी रामभक्ति क एक अपवाद स प्रतीत हात है । यह हमरी बात है कि इस सम्प्रदाय म इस प्रकर प्रतिमा का कोई कवि अवगति गी हुआ जो मूर और मीरा ना भाति जन-नामाय को भी इस निव्य रग का आम्नात गग मक्ता । पारमाण ना दलि स सम्पूर्ण रामभक्ति साहित्य का ना निगई स अधिक् भाग रमित भक्तों द्वारा ही विरचित मिस्ता * और प्राचीनता क विचार से साम्प्रदायिक विश्वासा के अनुसार यह कम स राम उतनी पुगनी है जिननी तुल्याकी एश्वय प्रधान भक्ति-पद्धति । इसक विनाम गुना क जनगीत स यह स्पष्ट हा जाता है कि किना काल विनाय म निनी कारण म इगवा प्रवाह क्षाण भ* ही हा गया हा किन्तु सोन कभी सवता ननी निगामी नि्या ।

रसिक साहित्य क विधाना क अनुसार रामभक्ति म मधुर भावना का प्रवाह वा भाति राममण रचित सत्कृत साहित्य क वाच्य आनन्द रामायण रामनिगामृत भाति रामायण नमलाहिना काग* रल आनि पया म दग्ना जा सकता है । रसिक गपिता स सिद्धान्त क म रामनामनी-धापनिप* साधानिप* मविनामहापनिप* राम रहस्यापनिप* आनि उपनिप* का उल्लेख किया जाता है । गहिनाआ क रूप म नमलाहिना निदमनिना रामग गहिना अगत्य मनिना वाल्माकि मरिना धर

महिता वशिष्ठ महति मन्त्रागिव गन्ति मन्त्राभमन्त्रिा त्रिष्यगन्न मन्त्रिा ब्रह्म
महिता जाति प्रया का निर्ग निया गया है। जागर भक्त स्वामी रामानन्द अन्ता
नन्द वृष्णनाम पयहारी जाति का रमिक भावना का पादक बताया गया है।
रमिक गाधना के सम्यक् म निर्लिप्त प्रया की प्रामाणिकता जसम्बि नया है। इन
प्रयो का रचना-काठ तथा उनकी प्रामाणिकता क सम्प्रदाय म निश्चय एक कठिन ममस्या
है। इन प्रथा का सम्यक् विवेचन अभी तम नहीं हो पाया है। किन्तु मास्वामा
तुलनात्मक क पूर्व रामभक्ति म मन्त्र भावना का जन्मित्व सिद्ध अवश्य होता है।
स्वामी रामानन्द न माता का पुरुषनारत्व तथा मन्त्र आद सम्बन्ध क अन्तगत
भाषा मतत्व और भोग्य भोक्तृत्व सम्बन्ध का स्वीकार कर मधुर भावना क
महत्व का स्वाकार किया है किन्तु उन्तान हमरा विवेचन प्रस्तुत नया किया।¹ जाग
चन्द कर रामानन्द सम्प्रदाय म रमिक भावना का प्रवण कियाथा दता है।

रमिक भावना का विकास वृष्णभक्ति क अन्तगत परम्परा मे माना गया है।
तुल विद्वाना का मत है कि रामभक्ति म मधुर उपासना वृष्ण भक्ति क प्रभाव म
उत्पन्न एक विरामित हुई। डा माताप्रसाद गणतुलना-पूय राम साहित्य की रचा
करते हुए लिखा है—ठीक इसी समय (मूलनाम-काण्ड) रामभक्ति द्वारा म एक नवीन
विकास कियायी पन्ता = जिमके जाति प्रवक्त के रूप म जगत्मास जात हैं जिताने
अप्रअत्रा क नाम म रचनाए का है। अप्रनाम न जानका का एक मयी का भावना
म रामभक्ति का है। अप्रअत्री की यह मधुर उपासना धारा तुलना के मयात्वात्
क मामन वन्त जिना तक त्वी रही किन्तु प्रायः सो वप पाठ जमा हम जाग दरमे
वन्त क। म यह निवृत्ती और नदनतर हिन्दी का मारा रामभक्ति साहित्य इससे
सरानर हो गया। हम मन्त्र धारा का सूत्रपात निम्न-रह वृष्णभक्ति क प्रभाव
और उमा क अनुकरण सहजा था। रसिक-साहित्य क विद्वान रामभक्ति म रमिक
भावना का स्वतन्त्र विकास सिद्ध करत हैं। डा भुवनचरनाथ मिश्र ने अपना मत

१—वृष्णवमता भाम्बर—

पुरुषकारपरा	विनिगद्यने
सकमगा	कमगा कमप्रिया
वृषममौ	वृष्णा तत्प्रायता
नभिरुपाय	सुभूय पर पर।
—मवागिगवरप्रातिहेतुस्त्रागियायन	
रामापुरुषशाराया जायनन पन्तत।	

२—हिन्दी साहित्य—जिनाय सन् ५० ०५।

इस प्रकार व्यक्त किया है— यहाँ अवश्य ही अन्य कर्म की बात यह है कि रामावत सम्प्रदाय के साहित्य में मधुर भाव का सन्निवेश या विकास बस कृष्णभक्ति के जनरूप पर नहीं हुआ है जमा अधिकांश मधी ममागचका एव माय विद्वाना का मत है। यहाँ स्वयं दान्य प्रस्फुटित होकर माधुय में पर्यवसित हुआ और मम्भव ह उस पर उस समय का जय माया पद्धतियाँ—कृष्णाद्यत सखा सम्प्रदाय वाणव मन्त्रिया एव बौद्ध सृष्टिया तथा काश्मीर गव और रमद्वर दान का प्रकारांतर मकुठन कुठ प्रभाव अवश्य पना होगा। मचता यह है कि मध्यकालीन ममस्त माय नात्रा म क्या वण्य क्या गान्त क्या गव, क्या बौद्ध भाव का उपासना का हा स्वर मय्य है और गेय ममस्त भाव गौण है। प्रभाव जा कुठ जीर जमा कुछ है रामायत मपुर उपासना जपन माय म न प्रस्फुटित विरचित पञ्चित पुष्पित स्वतंत्र माधना गगन रूप म न इम उतरावण म छा गयी था जीर फिर भा मयाता का मुख्यता व कारण इस गलवर खन का अवराग नहा मित मना। इसीलिए यह रमा दुई गुप्त परम गुह्य हा रनी रग जीर आज भा परम गुह्य ही है। ' तुगारा भावना का जारम्भ म ही ज्ञानभक्ति म प्रदानता रहा है। कारणतर म म भावना का रग वाणभक्ति म अधिक मन्ग हाता गया। मध्य युग म इम भावना क आश्रय म महृत्य कृष्णभवा कविया न अपूर सरम साहित्य का रचना का। रन मन्तरमात्रा का वाणी म मायय मध्य यग का मवप्रान भाव उन गया। इमका प्रभाव रामभक्त कविया पर भा अश्रय पना। गाम्बामी तुम्हाला मकी रचना म भा मधुर भाव का अभि र्प्रति म है किन्तु उमका जवन मयाता क अन्तगत थी ह्रा है। रमित गादि म व पञ्चनी रचयिता शृगार भावना स अधिक प्रभावित हुए हैं।

रामायन-सम्प्रदाय में स्वामी अप्रदास के पूर्व रसिक साधना के मरघ में स्पष्ट सूचना नहीं मिलती। भक्तकाल में नाभादास जा न स्वामी रामानन्द के गिष्या प्रगिष्या का दगाथा भक्ति का भण्टार बताया है। नवधा भक्ति के पर दगाथा भक्ति का विज्ञाना न प्रम र्णया भक्ति माना है। किन्तु नाभादास जा न स्वयं इमना विषयन नहीं किया है। उन्होंने कवउ मातदाम को रघुनाथ की गाय्य र्क्ति प्रयत्न करन वाला बताया है। नाभादास स्वामी अप्रदास के गिष्य थे और उनकी गायना रसिक गायना था। नाभादास न इमका स्पष्ट वरत हुए कहा है कि स्वामी अप्रदास का कृपा स उन्हें भक्ति प्राप्त हुई था।' प्रियादास न नाभादास का

१—रामभक्ति साहित्य में मधुर उपासना—पृ० ११८।

२—अप्रदास चरित—

श्री अप्रदास कदना करी शिष्य पत् नह बड़ाय।

भक्ति पद्धति का मञ्जित करने हुए उक्त नाभा ऋषि के नाम से अभिहित किया है। मध्यवर्ती म रमिक मानना व प्रमाण व प्रमाण हम प्रकार मित जान है।

इधर गत गतागत म रमिक परम्परा को और प्राचीन सिद्ध किया गया है। जयाध्या के प्रसिद्ध मन्त्र और मानस व प्रथम टीकाकार महात्मा रामचरण दाम के गिष्य मन्त्र जावगम जी यग्य प्रिया न रमिक प्रकाश भक्तमाल की रचना की। इन ग्रंथ म रमिक मम्प्रणय के महात्माजी का वक्त प्रस्तुत किया गया है। यगल प्रिया जा का स्वगवाम मन १८५७ म चिरान (छपरा) म हुआ था। हम प्रकार रमिक प्रकाश भक्तमाल जवाचान किंतु मम्प्रणय का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। रमिक मम्प्रणय म हम ग्रंथ का मायता प्राप्त है। रमिक प्रकाश भक्तमाल म गठनाप का राम ना आदि पापन कहा गया है। रमिक साहित्य व विद्याना व अनन्तर कुल गोखर जाठवार का भक्ति रमिक भाव की था। कुलगेवर रामभक्ति म निमग्न रहत है। उक्त राम के प्रेम ना उमात् था जो भक्ति व आरंग व रूप म प्रगत होता था। प्रप नामत के अनन्तर कुलगेवर न इष्ट की प्रेरणा से अपनी पुत्री का विवाह श्रीरंग व साथ कर लिया था। याना जालवार को प्रेमभक्ति प्रसिद्ध है। गोला का साता

नाभा मन जानत भयो महल-टटल निन पाय।
 ऋषि चाण्डीगति ज चतुःशतिका वाम।
 जगत अमिय महचरी रमम गिने नाम।
 तिनका कृपा वराम त अग्र समति गर पाय।
 नाभा उर जानत रह रमिक जनन गुण गाय।

१—नरामाल (रूपवत्) प ४

पचरम मार पचरम फूठ थाके नीक
 पीक पत्रिाव का रचित बनार है।
 वजयन्ता घाम भाववता जतिनाभा नाम
 गइ अभिगम स्याम मति ललाई है।
 धारा उर प्यारा कहू करत न यारी
 अत्रा इति जगत् परि पायत ना आया है।
 उवि भक्ति भाग तात नमिन तुगार तात
 गत वग रव जाई यान जाति पात है।

२—रमिक प्रकाश भक्तमाल प० १०

प्रथम ना गन्काप जाति पारपत आय।

रा अवतार भी कहा जाता है। इस प्रकार वृष्णव आचार्य राम के साथ सत्य दास्य, वात्सल्य आदि भाव से सम्बन्ध जाड़त थे। साता का पुरुषकारत्व बरबरमुनि आर लावाचार्य स्वीकार करते थे। स्वामी रामानन्द ने भी सीता का पुरुषकारत्व स्वीकार किया है। युगल प्रिया जी ने रामानन्द का रहस्य उपासना का उद्धारन कहा है। स्वामी रामानन्द ने गिष्य जनतानन्द का भायगात्रिय जान रमिकापात्रक बताया है किंतु इनके सम्बन्ध में जोर का सूचना नहीं मिलती। रसिक प्रमाण भक्तमाल के अनन्तर वृष्णनास पयहारी माता जी के उपासना के जोर उनकी भक्ति मधुर भाव की थी।^१ ये भगवता प्रमाण मित्र ने लखन का सूचना दी है कि उन वृष्णदास पयहारी की एक लघु रचना प्राप्त हुई है। इगवा प्रिय रात्रयाग है। यह रचना अभी प्रकाशित नहीं हुई है। इसमें अनिश्चित वृष्णनास पयहारी का रचनाए उपलब्ध नहीं हैं। रामानन्द सम्प्रदाय का तपसा गायना में वृष्णनास पयहारा का याग सिद्धिया का प्रामाणिक अवश्य है।

स्वामी अग्रनाम के पूर्व के रामानन्द सम्प्रदाय के मन्तरमात्रा की रामचरित मन्थी रचनाए उपलब्ध नहीं है जो मित्रता भी है उक्त प्रामाणिक कहा जा सकता। इन महात्माका का रमिकापात्रक स्वीकार करने के लिए यद्यत् सामग्री की आवश्यकता है। रसिक सम्प्रदाय की मायना जा भी है जो तक महात्माका का प्रामाणिक रचनाएँ उपलब्ध नहीं हो जाती तब तक इस सम्बन्ध में कोई मत निश्चित नहीं किया जा सकता। वृष्णनास पयहारा के गिष्य स्वामी अग्रनाम हुए जो रसिक सम्प्रदाय के आचार्यक बन गये। अपना रचनाओं में य अग्रनाम अग्रनाचरा जाति छाप करते थे। इसमें इनका रसिक भाव की साधना की पष्टि होती है। ये सखीभाव में लिये दर्पान का समन्धी गाय का ध्यान करते थे। उनकी वाह्य सखा नस्यनिष्ठापरक थी।

१—रसिक प्रमाण भक्तमाल पृ० १२

गाय गिष्य प्रधान एतान् चतुर प्रधानी।
बड जनतानन्द कन् श्रगार श्वानी।
रसिक ममाधा प्रर वृषा उर गह गृह है।
जनक लगे के वृषा राम रम पूरि र है। इत्यादि।

२—यही पृ १ वृषा अनन्तर रसिक पुरन पयहारा।
वृष्णनास रमराति उगागक मित्र वनधारा।
पुत्र एतया भजन भूमि प्रगते गिष्य धारा।
पूर्व सूचिका धरी प्रिय लहु गुपारा।

अग्रदास जी न मधुर भाव का उपासना करने वाग का 'रमि' नाम से मन्वा धित किया है। इस कारण उनका सम्प्रदाय का नाम 'रमिक सम्प्रदाय' प्रसिद्ध हो गया है। इस सम्प्रदाय का जानकी सम्प्रदाय जानकी उक्तभा सम्प्रदाय रहस्य सम्प्रदाय और मिया सम्प्रदाय भा वना जाता है। किन्तु उनका मन्व प्रचलित नाम रसिक सम्प्रदाय है।

नाभादास जी न रमिक भाव का ए वष जीर टुगार क वाच माना है। रमिक उपासना माना राम से अपना सम्बन्ध स्थापित करते हैं मन्वा जयवा सना भाव से विध्य दम्पति का सदा करते हैं। य भक्त हनमान का जाचायत्व स्वीकार करते हैं जीर रामचरित की परम्परागत मयाग का अभुष्ण रखते हैं। साता राम मन्वा का सख प्राप्त करना तथा विध्य दम्पति का भवर गीलाग्रा का जानना प्राप्त करना इन भक्ता का लक्ष्य हाता है। रसिक साधका की साधना पद्धति का चर्चा करते हुए ना भगवता प्रसाद मिह न लिखा है—रामभक्त रमिना का एक निश्चित साधना पद्धति है जिगना अपना अलग साहित्य है। सम्प्रदाय क प्रवतक अग्रदास जी से उकर रमिकाचाय रामचरण दाग जा तक टुगारा गान्वा म और रामगए जा से उकर शीलमणि जा तक सख गाला म जिन गान्वा एव गाम्प्रदायिक प्रथा क आधार पर रसिक भक्ति क सिद्धात विकसित हुए है उनम य उपनिषत् पुराण गान्वा वाल्मीकि रामायण सब ध णव एव गान्तत म भागवत जालवार मन्वा गान्वापाचाय का रचनाए हनुमनाटक भुगुडि रामायण महा रामायण तथा मत्या पाख्यान विनेप उल्लयनाय है। यहाँ एव वात य भा स्पष्ट कर दना जावयक है कि रसिक सम्प्रदाय क जतगत या ता पांचा रमा का साधना जतनिहित मानी गया है किन्तु उनका नमरुद्ध इतिहास शृगारा जीर मत्य गान्वाग्रा म हा मिश्रता है। गान्त का य उग म रसिका का साधना मानते हैं। जतएव इम आर ध्यान कम गया है। इम भाव क उपासक भी उहुत थाने हैं। वाल्मीय जीर नाम्य गुद्ध रसिक भाव वाक मान जाते हैं किन्तु इन भावा क साधका का भी सख्या अपभावृत यून है। निम्न रनका उपासना पद्धतिया का विवचन यवस्थित रूप से नहा हुआ है। नसि रमा म टुगार जीर सख का हा विगप महत्व दिया गया है क्योंकि जगा रूप म यगना भाव जाते हैं। गप प्राय जग क रूप म है। जन उनम से उहुता का साधना मिश्रित रूप म पाया जाता है। इम गाला म जनक गन एम मिश्रत है जितका साधना पद्धति पूरासत धारणा का पछि करना है। महात्मा गजगधवगत दास्य भाव न उपासक गन हुए टुगारा साधना म नडा रखते थ जीर पन्ति उमापति जा उपास्य पर वागय भाव रखते हुए भा उनका टुगारा जीर मत्य छाग्रा का गान करते थ। इमा प्रकार ना रामरम रगमणि दास्यमिश्रित भाव क उपासक थ।

विकास श्रम स पचरसा मे शृंगारी साधना का सूनपात पहले हुआ । अतएव गद्यस्थित एव शृंगारलावद्ध साधानात्मक साहित्य उसी का मिलता है। सख्यचार्यों ने बाडा हरफेर करके जा अपनी उपासना पद्धति चलाइ वह सपी भाव की हा पुरुषाकार कल्पना पर आधारित है। इा दाना का साधना प्रणाला म बाइ जतर नहा। उताहरणाय नम मया त्रिव्य दम्पति वा कलि के सहायक उसी रूप म माने जान है अस मजरी सपिया। प्रिय सदा उपास्य स उसी प्रकार व्यग्य विना करत तिस प्रकार जानकी जा का समवयस्क सपिया। सुहृद सखाजा का नामत्य भाव रखत हुए भा राम का शृंगारा लाजाआ क चित्तन की स्वतन्त्रता ह। दाना म भेद कवल इतना है कि सपिया वा जिस प्रकार उपास्य का जतरग सवा का एनाधिकार प्राप्त है उसा प्रकार सखा राम की प्रहिरग सवा—बालनीडा जाके सवारा यद याता दग रक्षा तथा राय प्रबंध जादि म मग्य सहायक मान जात ह। जतएव उका सवा म कवल सवा क स्वरूप म जतर ह।

रसिक सता क जनसार साधना का परम त्रिव्य त्रिव्य दम्पति का सवा गुण जीर थगल कलि क ओकातर रस का जासादन है। इन ताना का प्राप्ति उपास्य क मान्निध्य महा हा मना है जतएव अपन त्रिव्य शरार का मया सया दानाणि विना एक रूप म ध्यान कर प्रभु वा सवा म स्वय की अर्पित करना ही उगका मुख्य साधन भाता गया है। एम साम्प्रदायिक साहित्य म त्रिबुज सवा रम महल भाधुप जाणि नामा म अभिहित त्रिया गया ह। यगल स्वरुप का त्रियाम माता म य सभी रग प्राप्त हा जाी हैं। अतएव रसिकापागना का वह एक जनिदाय जग कर गया ह। रागलीला म उपास्य क जातमय स्वरुप का चरम अभिव्यक्ति हाता है। वह जत्रारा राम का चिन्तित है जत उगम प्रग जाव का परम पुण्याथ माता जाता ह। रसिकताया न साधनायस्था म भा राम एव प्रभु की शृंगारिक चण्डाजा का चिन्तन कर उस त्रिव्य-जानत का जास्थान करने का ध्यवस्था का है। रसिक साधना का गार अस्वाए प्रताया गया हैं। प्रथम अवस्था म साधन आचार्य वा शरण म जाता ह। गीरसम्प्रदाय क सिद्धान्ता क सम्बध म नान प्राप्त करता ह। साम्प्रदायिक मायाशात्रा का हृदयगम कर लन क पञ्चान सागर दूगरा अवस्था म भावत ह म उपास्य वा सवा कर म ममय बाता है। सत्यञ्चान साधक उपास्य की सवा म प्रसिष्ट हाता है। चौथा अवस्था म वह इण की सवा करता हुआ गुण का अनुभव करता है।

रमिक साधना के अधिकारी गुरु आचार विचार वाग शत जन मान गये ।
 किन्तु मयूर भाव का प्रधानता के कारण रमिक गायना में विवृतियाँ के लिए अवकाश
 रहता है। जाति कवि ने रामचरित का चित्रण वाग चरित रूप में किया था।
 वह मयागणमुष्पलम राम का चरित था। रमिक साहित्य में राम करने वाग जानने
 में मयागण आत्मविष्पलम आग मयागण रमागण विगमा र्वर्षिताम
 राम का बन्धना का गया। राम के मयागण स्वरूप आर रमिक स्वरूप में महान
 विषय शिवायी देना है। अन्तिय शृंगार भावना के कारण रमिक गायना में
 विवृतियाँ परिचित हुए जिनका निर्णय करते हुए आचार्य गुरु ने धाम प्रकट किया
 — अत्यन्त सत् का वात है कि इनके कुछ शिवाय एव द्य रामगणित का भा
 गुरारा भावनाओं में लपट कर विवृत करने में जट गया है। तुलसीदास जी के प्रयोग
 में हम दिखाने आय है कि कृष्णभक्त मूरदास जी का शृंगार रचना का कुछ अवतरण
 गास्वामा जी का गातावग के उत्तरकाण्ठ में लिखाया पता है पर वह कर्म
 जानतासब तक रण गया है। अर आकर कृष्णभक्ति गाला का प्रभाव बहुत बंधा।
 विषय वामना की आर मनष्य की स्वाभाविक अवति के कारण कुछ शिवाय रामभक्ति
 माग के भीतर शृंगार भावना का जनग प्रवण ही रहा । भगवान राम
 के निव्य पुनीत चरित के कितने धार पन की कल्पना इन श्रमा के द्वारा हुए है
 यह लिखाने के लिए श्रमना (उद्धरण) बहुत है। अर पावन आदम का एगा
 वाभलम विषयय र्व कर चित्त वाग न जाना है। रामभक्ति गाला का जनमयान
 करने वाग का साधन करने के लिए ही रमिक गायना का यह थाग गा विवरण
 लिखा गया है। गह्य रहस्य भावना भाव श्रमिक समावग स श्रिता भक्तिमाग
 का यह दगा हाता है। गारवामा जी ने गह्य साहित्य आर गुण रूप में श्रिय राम
 कित्त का प्रवण फ गया था वह रम प्रकार विवृत का जा रहा है। आचार्य गुरु
 ने अपना मन रगभा पनाग वष पूर्व व्यस्त किया था जत्र रमिक साहित्य बन्ध
 उदल्य नहा था। गन वषों में रम साहित्य के सम्यय में तत्परता के माय गात्र
 का गया है आर रम परिमाण में रचनाओं का पना भा गगा है। रमिक सम्प्रदाय
 के आधनिक साधना ने वासाकि रामायण में रमिक भावना साजन का प्रयाग
 किया है आर कतिपय विगना ने मन व्यक्त किया है कि गास्वामा तुलसीदास का
 गायना रमिक भाव का था। महर्षि वात्माकि आर गास्वामा तुलसीदास में रसित

१—शिवाय साहित्य का अन्तिम प ११ - ८।

२—चरित्र गणय-तुलसीदास का गह्य साधना—नया गमाग गायन १९५३

—रामभक्ति में रमिक सम्प्रदाय—प० १० ११ ।

भावना का आरापण विच्छेद कल्पना मात्र है। यह प्रस्तुत लेखक का निश्चित मत है। कामल मानवाय भावनाओं की अभिव्यक्ति और रसिक गुह्य माधुर्या में अन्तर्दृष्टि जिस विम्वन नहीं किया जा सकता। बाल्माकि सूर तुलसा आदि वानराग महात्माओं ने भक्ति क्षेत्र में अपन इष्ट के चरित्र शृंगार पत्र का उच्च धरातल पर चित्रण किया जो उनकी मर्यादा का पापक है। अज्ञानता गतात्मा तथा उमक बाद के रसिक राम साहित्य में शृंगार भाव का अविद्यता के कारण विकृति जा गयी। इस प्रकार के अश्लील एवं विकृत साहित्य का अस्तित्व का रसिक साहित्य के विद्वानों ने भी स्वाकार किया है किन्तु उनका कहना है कि यह अनाधिकारियों द्वारा रचित है। सपथक कर दिए जाने के बाद भाषा-प्रकार साहित्य उपलब्ध है जिसे रसिक परम्परा के अंतर्गत लिया जा सकता है और जिसका अध्ययन अनुशासन वाञ्छनीय है। प्रस्तुत लेखक का इस साहित्य का जितना ज्ञान देखने का मिलेगा वह साहित्यिक दृष्टि से सामान्य व्यक्ति का ज्ञान पड़ता है। रसिक महात्माओं में स्वामी अग्रनाथ और नाभादाम का रचना महत्वपूर्ण है। यहाँ केवल स्वामी अग्रनाथ के सम्बन्ध में विचार किया जायगा।

स्वामी अग्रनाथ के जीवन के सम्बन्ध में विधि-सचचना उपलब्ध नहीं है। अन्तर्-म्यनि-काल के सम्बन्ध में कोई प्राचीन निश्चयात्मक उक्त्य नहीं मिलता। साधुनाथिन मायता है कि उनका जन्म जयपुर के किमा गाव में मालहवा गताश्री के उत्तरार्ध में हुआ था। नाभादाम जी ने रामानन्द सम्प्रदाय की जो परम्परा प्रस्तुत की है उसके अनुसार स्वामी अग्रनाथ स्वामी रामानन्द का चाचा पाया में आविर्भूत हुए थे। स्वामी रामानन्द के गिष्य जातानन्द के गिष्य कृष्णनाथ पयहारी उनका गुरु थे। कृष्णनाथ पयहारी ने गन्ता में वण्यवा की पहली गढ़ा स्थापित की थी। स्वामी रामानन्द की मृत्यु संवत् १४६७ विक्रमा में अगस्त्य संहिता के माध्य पर सम्प्रदाय में मानी जाती है। स्वामी रामानन्द के स्वगवाम में यही नियम विद्वानों ने स्वाकार की है। स्वामी रामानन्द के पञ्चात् उनके गिष्य अनन्तानन्द हुए और अनन्तानन्द के गिष्य कृष्णनाथ पयहारी हुए जिन्होंने गन्ता गढ़ी की स्थापना की। यदि इन दो महात्माओं के लिए सा पथ का समय माना जाय तो स्वामी अग्रनाथ का आविर्भाव बाल्य विक्रम की साठहरी गतात्मा का उत्तरार्ध ठहरेगा है। इस प्रकार स्वामी अग्रनाथ महात्मा गन्ता में गमनातीन ठहरे हैं स्वामी अग्रनाथ का जन्म १६२२ में वर्तमान माना जाता

है।' स्वामी अग्रनाम का यह स्थितिकाठ राम मानिय क विना न स्वाकार किया है।

साम्प्रदायिक भावना के जनगार जावन क आरम्भ का म हा स्वामी अग्रनाम पयहारी जी क गिष्य हा गय थ। पयहारा जा का मत्य क उपगल अग्रनाम क वर गहर्भा का अनास गन्ता गद्दा क उत्तराधिकार गग। कुछ काल तक अग्रनाम जा गन्ता म हा रहे जनलर व अपन गिष्य नाभादाम क भाय जयपुर क निकर खामा नामक स्थान भ चर गय और वहा गणी स्थापित का। वना पर अनन आना म नभादाम न भक्तमाल की रचना (सवत १६४२) का थी। नाभादाम गाम्वामी तुलसीदास क उत्तरसमसामयिक थ। नाभादास न अपन गरू स्वामी अग्रदास क भक्त जीवन के अतिरक्त और कोई सचना नहा दी है। भक्तमान सनात हाता है कि अग्रनाम जी आचारनिष्ठ महात्मा थ। व प्रत्येक क्षण सीताराम की उपासना म ग्य रहते थ। वाटिका से उह विषेय प्रम था। सीताराम के विहार स्थर अया ध्या क अगोक बन और प्रमो बन की कल्पना क आधार पर उहाने अपन आरम म गय वाटिका लगाइ थी जिमका सारा काम व स्वय अपने हाया स करत थ। मानाराम का अख नाम जप व करत रहत थ उपासना के विना उहने अपन जावन का एक क्षण नही बीवन दिया। रूपकला न नाभादास क यण्य का टाका अन प्रवार की है—आपके स्थान क समाप पुष्प फलादि यकल वाटिका थी उसना था मानाराम विहारस्थल जगाकवन और प्रमाद बन की भावना से मानकर उमम प्राति करत थ सा प्रीति आपका ठाक प्रसिद्ध हा गया क्यकि आप निज कर कमना स स हा उमका सब कृत्य अथान मा तुलसी आनि वना का कारना

१—आचय गकर हिला साहित्य का इतिहास प १४६

२—ग० भगवती प्रसाद सिंह नागरी प्रचारिणा सभा पत्रिका वष ६६ जन
० ३४ प ३२३

ग मानाप्रसाद गुप्त—हिन्दी साहित्य विनाय खण्ड प ३०७

—भक्तमान—उप्य ४१

मनाचार था मन प्राप्त जसे करि जाय ।

मवा मुमिलन मावधान चरण राधर चित्त गय ।

प्रमिय वाग मा प्राति मन्थ कृत करत निरलर ।

रमना निमन् नाम मन वपन घाराधर ।

(ग) कृष्णनाम कृपा करि भक्ति दत्त मन बच प्रम करि जटल गया ।

(ग) अग्रनाम हरिमजन दिन काठ बया नहि बित्तया ।

साधना रत्न पत्रिका का बनारस इत्यादि निरन्तर किया करते थे और रमना (जिह्वा) म ध्रा साताराम गिम्ल नाम इस प्रकार से सप्रेम उच्चारण किया करते थे कि जिस काँई अशौकिक जानते का मधे भयुर मयुर शब्द करके बरसता है—(भक्तमाल सटीक संपुट ५० ३१८ १९)। भक्तमाल के टाकाकार प्रियदास ने आमेर के राजा मानसिंह के स्वामी अग्रदास के दर्शनाथ रवासा जाने का उल्लेख किया है। यह सूचना सीवा नरंग रघुराजसिंह ने भी राम रसिकावली 'मत्ता है।' राम रसिकावली के अनुसार मानसिंह स्वामी अग्रदास के गिम्ल थे।

रसिक सम्प्रदाय की भाष्यता के अनुसार गठकाप (आठवा गताब्दी) से लेकर वृष्णदास परमहंस तक रसिक साधना परिपुष्ट हो चुका थी और उसका प्रसार भी हो चुका था। यह साधना आचारनिष्ठ महात्माओं में रहस्य साधना के रूप में प्रचलित थी। स्वामी अग्रदास के समय तक इस साधना का सगठित रूप देने की आवश्यकता का अनुभव होने लगा था। स्वामी अग्रदास ने रसिक सम्प्रदाय का संगठन किया और अपनी रचनाओं में रसिक रहस्य साधना का व्याख्या की।

१—भक्तमाल (संपुट ५०) ३२

दरगाने काज महाराज मानसिंह जाया
छाया बाग माल बटे द्वार द्वारपाल हैं।
चारिक पनीवा गये बाहिर ल डारिक का
दया भारभार, रह बटि ये रमाल है।
जाय दगि नाभा जू न साप्याग करी
ठाड़ भरा जू आवे चू अमुवनि जाल है।
राजा मग चाहि हाकि आनि ब निहारि नन
जानत आप जानी भय दासनि दयाल हैं।

२—रघुराजसिंह—राम रसिकावली—

मानसिंह जयपुर का राजा था अपनी से सब से समाजा।
अग्रदास गुण आपाकारी से समाप चरन से धारा।
एक समय में महंग गवारा मानसिंह नृप से शगुधारा।
अग्रदास दरमन के हेतु गग दरमन किय माद निकरू।
दग बराला पत्र गुण ठटि गारा सांर पत्र बरन करि गारा।
नाभा के पुनि अग्र के यहि बिधि धरित उपार।
मान महीपति के तथा था यहि पाव धार।

वे प्रतिभाशाली मगधनरुत्ता मिद्ध ण। स्वामा अग्रनाम द्वारा प्रवर्तित मन्प्रणय का व्यापक प्रसार हुआ। उत्तर भारत में अनेक गण्डिया उनका गिण्य प्रगिण्या द्वारा स्थापित की गया। हम मन्प्रणय में अनेक महात्मा हुए जिन्होंने राम मान्दिय का रचना की। रसिक साधना में शृंगार की प्रधानता है किन्तु अग्रनाम ने आचार पर विशेष बल दिया। वे स्वयं पवित्र एवं निमग्न चरित्र वाले महात्मा थे। उन्होंने अधिकारी व्यक्तियों का ही रसिक साधना का रम्य बनाने का उपदेश दिया। अग्रदास ने सीताराम का नित्य एक रसमया लीलाओं का ध्यान तथा मान्दमा सेवा का प्रथम दिया। उन्होंने बताया कि रसिक साधना अन्तर्गत है। इसके अंतर्गत सात्विक साधक ही है।^१ इस प्रकार रसिक साधना में मन्प्रणय नित्य का अग्रनाम ने प्रमत्त तत्त्व माना और रसिक साधना का अधिकारी व्यक्तियों तक ही सामित रख भक्ति का दण्ड आचार पर सप्रणय का मगधन दिया। स्वामा अग्रनाम की कृपा से रसिक साधना का पलवन का साक्ष्य नाभादास जान भी दिया है।

रचनाएँ—अग्रनाम का रचनाओं के सम्प्रदाय में सन १९ की सभा खाच रिपाट में पहला ध्यान मजरा का सूचना दी गया हस्तलेखन २७ पत्र तथा १ ६ पत्रों का बताया गया। सन १९ ३ की खाच रिपाट में हितापन्न उपपाण वाचना का सूचना दी गयी तथा हस्तलेखन महाराज बनारस के पुस्तकालय में सुरक्षित बनाया गया। हस्तलेख का लिपिकाल सन १७५३ तथा समय ५४ कुट्टिया

१—अग्रनाम कुट्टिया—

रम शृंगार अनेक है तत्रों का काउ नाहि।
तुलसी का काउ नाहि मान अधिकारी जग मैं।
बचन कामिनि दग्नि हूँ हूँ लागत तन मैं।
जावन जग के भाग राम मम त्यागउ डूना।
पिय प्यारा रम मिय मगधन नित रहत अनन्त।
नन्त अग्र जम मन के गरि लायक जग माहि।
रम मियाग अनूप है तन्त्र का काउ नाहि।

२—श्री अग्र व गुरु कृपा तें याता नवरस बन्त।
बन्त रचना गुरु उचि पन्त नवरस सुरसित।

—खाच रिपाट १ ००-११

—रम रत्न रिपाट १ ० ५० ६३ मन्व्या ७३

४—नन्त मान रिपाट १ ३ ५ ६४ म ६

रत्ने की सूचना ली गयी।^१ सन १९०६-८ की राज रिपोर्ट में ध्यान मजरी और कुन्धिया का पुन सूचना दी गयी।^१ ध्यान मजरी में ८ पत्र २०५ इत्यादि नाम प्राप्ति स्थान हरिपुरा निया बताया गया। सन १९०० ११ व राज रिपोर्ट^१ में पत्र ग्रंथ रामचरित व पत्र की सूचना नाभा नागयण दास व नाम म ली गयी। विवरण व निराशंक न भा यमन निया वि द्यम ग्रथ व पत्रा म अग्रगम का टापत्र जतएव इमने कता स्वामा अग्रगमनाग। हस्तलय म ८७ पत्र ० २ २११ तथा वमजा रिपिकात्र मवत १८८० प्रताया गया। प्राप्ति स्थान मन्त अग्रगमन कारण अग्रमण विला जथाध्या बताया गया। राज वरन पर प्र सुत अत्र का उक्त हस्तलय अग्रमण किंग म नहा भिना। सन १९०२ ०८ की राज रिपोर्ट^१ में राम ध्यानमजरी का सूचना फिर दा गया। सन १९३१ की राज रिपोर्ट^१ में ध्यानमजरी की पुन सूचना त हुए उपमाण वावनी कुन्धिया का भी उल्लेख किया गया। आचार्य गुकर न अग्रगम की चार रचनाओं का सूचना था—रिनापत्रा उपमाण वावनी ध्यानमजरी रामध्यान मजरी और कुन्धिया^१ वास्त्रम म दा हा रचनाएँ हैं—ध्यानमजरी और कुन्धिया। अग्रगम का एक रचना गम ज्याताग भिना है। तनरा सस्कृता में एक रचना अष्टयाम भिन्ती है। अग्रदाम की पत्रात्रगी डा० भगवतीप्रसाद सिंह न परागित कराया है। इसने सम्प्रदाय में उत्थान बताया है— तुलसी व पूर्ववर्ती रामभक्ति साहित्य में अग्रगम का पत्रावत का विषय महत्व है। इसमें इक्यावन पत्र मर्कित हैं जिनमें एक पत्र (म पत्र १०) नाभाग्राम का है। इसमें विन्ति हाता है कि अग्रदाम की परम्परा में हिमी सात ने पत्रात्रगी का वतमान रूप रचयिता व निवगत हाने व वात्र निया और आचार्यगिष्ठा स हा पत्रगिष्ठा नाभाग्राम की रचना का उगम स्थान न निया।^१ समीन रामकल्पम निर्वाह मराज तथा अयत्र भी अग्रगम व कुठ फरक पत्र मिलन हैं जिन् सम्प्रदाय में मयिता प्राप्त है। अष्टयाम पत्रावत स्वामा जानवा कारण (मधुकर) तारा सकन्ति की गयी है जिनमें अय मना व गाय अग्रगम व पत्र मालिन हैं। अग्रगम का एक अय रचना अग्रमागर^१

१—राज रिपोर्ट—१० ६-८ पृ० ५८ म० १०१

२—राज रिपोर्ट—१० -११ पृ० - १ म० २०२

३—राज रिपोर्ट—१९०५-०४ प ० म १

४—राज रिपोर्ट—१० २१ प १० म० ५

५—आचार्य गान्धि साहित्य का इतिहास—पृ० १६६

६—नागरा प्रारिणा परिभा—१०६६ अत्र ० ४—पृ ३३४-५६

की मूचना मिलता है। रमिक प्रकाश भक्तमात्र म यगत् प्रिया न इमता उच्यते
उत्तरेय त्रिया है।' सिद्धता है कि महात्मा रामचरण नाम न राम ग्रन्थ का ज्ञान
रेवागा म अपना निरन्तर परिवर्तित करके त्रिया था। इन्द्रागर अथवा उगा
सागर उपर्युक्त नही है। राम प्रकार अबतक का गान म मिली स्वामा अग्रजान
की द्विती रचनाए य है—

१—ध्यान मजरा अथवा रामध्यान मजरा

२—कुन्तिया अथवा त्रिनापत्या उपपाण वाकना

—राम ज्ञानार जीर

४—पदावली

ध्यानमजरी—ध्यानमजरा स्वामा अग्रजान की सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति है। रमिक
भक्ता व ध्यान के लिए एककी रचना की गया है। रमिक मन्त्राय म इगता प्रतिष्ठा
गीता की भांति है। इस ग्रन्थ म अवधपुरा तथा मयापत्त मातागम का जिनका
ध्यान रमिक भक्त निरन्तर करत है अर्चित पदावली म वर्णन किया गया है।

ध्यानमजरी के मान हस्तलेख ज्ञानभाषा पुस्तकालय म सुरगित है।
एन हस्तलेखा को प्रस्तुत रूपक न दया है। हस्तलेख मन्था ८१ । ७२ का
लिपिकात् सवत १९१४ है। एक अन्य हस्तलेख मन्था ८१ । ७६९ का लिपि
काल सवत १८१८ है। हस्तलेखा म पत्ता की सख्या ७० है। कुछ अन्य प्रतिधा
म पत्ता का मन्था ८ है। हस्तलेखा म पाठभङ्ग कम है किन्तु राम रचना का सम्पादन
होना अभा शय है। इसी एक प्रति राम रगमणि का मकरमायरा टाका न
साय प्राप्त है। ध्यान मजरा अथ स्वाना म भा उपर्युक्त है।

ध्यानमजरी म पृष्ठ अवधपुरी का भव्य वर्णन है।' अथाध्या व भवन रवण

१—रमिक प्रकाश भक्तमात्र—

अग्रस्वामि ना जग्रमहेश्वर जनक रग का।

पुणस्वामिका मिलन त्रु प्रिय भाति भग का।

चक्रवर्त्त प्रिय नाम स्वाय मिय बम करि राया।

प्रगत स्वामि पत्त रग व्याम राम मन मन चाया।

ग्रन्थकार—शृंगार रम-भागर मजरी ध्यान ।।

नया जन्मा पत्त रमिक गन पय जान ता। १ ।

२—ध्याननार—

अवधपुरा निव धाम परम अति मुक्त राव।

हाटक मणिमय मन्त नगन का वाति विराज।

जीर मणियां स खचित हैं और नयनाभिराम चित्रा स सज्जित ह। नगर तारण
 पनामाया स विभूषित है आर रत्ना क प्रकाश स प्रकाशित है। अबधपुरा का जूब
 गामा दनकर सूय का रथ ठहर जाता स स्वता हर्षित हा पुण्य बपा करन ह।
 अनंतर धमगाल पुत्रवामिधा का मन्थ स चित्रण है जा राम का मुग्ध बणन वरन
 रत्न हैं। अबधपुरा का ध्यान मुखप्रण जीर नामाच्चारण अधनागक है। नगर
 का बापिया वूपा एव ताराग स निमल जठ भग रहता है। उनक सापान रत्न
 चरित हैं जीर उनम प्रफुल्ल कन्हार गय गए ह। गानर वशा का छाया स
 पर्यिण कूजत हैं। चारा जोर उपवन है जिनम काबिल कार कपाल का ध्वनि
 सुनाए ता है माना व प्रमु का मुग्ध बणन कर रत हा। वस फल स रत गए ह
 माना पयिता का रत्न क लिए भुजाए फलाए हुए हा। निरत ग मरय का पुनात
 उबल धारा स जा मुग्धा गना क लिए बकुण्ड का निसना सा जान पत्ता स।
 नग क तट पर नर मागिया का भाव रहता स माना आवाग स स्वगण उनर जाय
 हा। नदी स प्रभूत जठ है और धारा क प्रवाह का गत मुनाइ दता है। तट पर

पीरि द्वार अनि चार मुन्दावन चित्रित सा ह।
 चपत्ता मन्तर कपतर दयत मन माहै।
 भवन भवन चित्राम चित्र का रभा साहै।
 वनज मुनन का पात्रि कानि गापन मग जा ह।
 तारण बनु पनाक ध्वजा तह विमल मुग्धा।
 माना रघुवर हितकरन आय निमुनन ठवि ठाई।
 वीथा वगर बजाग रान चरि जानि उजामा।
 रहन न पाव निमिर मन्ज हा हात प्रकामा।
 रति पुरा छवि मरा भय्य क जटनत रय रति।
 हरपति वरपहि मुमन विवय जन निरति पुरा छवि।

१—वनी—निवर्तहि गरजू मरिन घर अग उबल धारा।

भगतागर का तरत रिक्ति यह पान उतरा।
 हग्न पाप प्रय ताप जनन निजिन फल दना।
 मुग्धा जन आगाह मुग्ध वरुड निगना।
 तार रत्न का भार रत्न अग परम माहाण।
 मनर व्याम का तराणि अमरगन सवन जाय।
 कर जा मन्जन पान घय बरभाग जनर क।
 विविध जानि बे पाट तहा मत धरिन मुनिन क। इत्यादि।

भाति भाति कं घाट बन हुए हे जिमक अंतर मुनिया का मन माहित हाता है। तत्र क निरप जगाव बन = जिमम विविध प्रकार क वृत्तारक बन मुगामिन है। जगाववन म एक कल्पय र हे निमक निरप मणिषकन रचनमय भूमि पर निमित्त एग पाम है। अक मध्य म एक स्वर्णप्रतिमा है जिमकर एक स्वर्ण मिहागन स्थित =। मिहागन क राज म कर्म का मुभामन है जिमक मध्य म कणिका है। कणिका पर साता राम विराटमान है। अनतर राम क अकारण स्वरूप का बणन किया गया है। राम दिव्य किराट धारण किय गए है जिमका रचिरता क अग निरकर का ज्ञानि अजित गता है। काना म कुच्छ गामित हैं। मर हाम जोर मद्रुवचन से राम लाग का जानति करत हैं। व मणिया की माण धारण स्थि हे जोर उनक क तम्य पर धावत्म जोर शीम्नुभ मणि की गामा हा रता =। जो राम मनापवान धारण किय हुए हे जोर उनक गरीर पर विविध प्रकार क दिव्य आभयणा का गामा हा रही हे। उनक दाहिने हाथ म बाण तथा त्राय म त्रियायुध धनप है। श्रीराम साह वप का किगारावस्था म नित्य विगज मान हे। उनक वामभाग म जनककुमारा माताजा हैं जा विविध दिव्य आभयणा से मुगामिन है। उनकी पाठ पर सुन्दर बणी है जा अति धनी की भाति जान

१—बहा—

तामधि गामिन राम नाक इदीवर आभा।
 अखिल हर अभाधि मजठ घन तन की गामा।
 निर पर दिव्य किराट अति मजठ मनि माती।
 निरपि रचिरता लजित निकर दिनकर की जाती।
 कुच्छ अलित कना जगठ अनि परम मुत्ता।
 निनका निरपि प्रसाम अजित राकम तिनमा।
 मचक कुटिल मुचा मराह नयन मुत्ताय।
 मख पवड क निकट मन अति छोता जाय।
 × × ×
 दाण भज पर मुभग मुगवन मुत्ता राज।
 त्रियायन मुविगाट वाम क घनप विराज।
 पात्म वरम किगार राम निन मुत्ता राज।
 राम रूप का निर्गमि विभाकर वातिक राज।

—बहा—

जन राजन रथवार धार आसन मुत्तरारी।

पत्ता २। व उल्लूक माली का माया मणि जगि बेंग कठपानि आनि अनेक
 आनूपण धारण किय कणिका पर विराजमान हैं। इम प्रकार साता राम दिव्य
 धाम में विराजमान है। अग्रगत न गीता क स्वरूप का मनाहर वणन किया है।
 त्रिव्य रूपि का मया क गिए शशस्न लक्षण जीर भरत प्रस्तुत हैं। पवनपुत्र
 अनमान प्रभुकी कीर्तिका गान करत ह। आनामग परिचारिकाएँ अपन अपन स्थान
 पर स्थित हैं आर जिनका जा अधिकार है उमक अनुमार भवा वाय म रत हैं।

ग्रथ के अन्त में स्वामी अग्रगत न स्पष्ट कहा है कि दिव्य रूपि का यह ध्यान
 बचन रमिक जन हो कर सकत २। एक धार इम अमन रम का निमन पान कर
 गिया फिर उम जान याग तप निम्नार उनीत होते ह। रमिक जना क अनिश्चित
 यत्नस्य जय ज्ञाना क लिए नया कर्ना चाहिए। अग्रगत न रमिक जना क
 निमित्त रम रक्षक की प्रवर्णित किया है।'

रम मन्त्रिणनन धाम निनि जनक कुमारी।

नगन जरे छवि भरे निविध भूषण अम माँ।

मन्त्र जग उत्तर विन्नि नामाकर का है।

X X X

अनुजित युग स्वरूप बचन अस उपमा जिनका।

जिनक उपमा गानि शक्ति करि भागित निदारी।

यहि विधि राजत राम जवधपुर जवधविहारी।

रूपि परम उत्तर मुजग सबक मुचारी।

१—वहा—यह रूपि कर ध्यान रमिक जन तिन प्रति ध्याव।

रमिक बिना मह ध्यान और मपनटु नहि पाव।

अमन अमन रम धार रमिक जन यनि रस पाग।

नहि का नारण जान याग तप छान जग।

X X X

निशे भूति जनि कही कुञ्जिका पक मन्त्रि मा।

यह उचर मणिमा परिहरे परम रमिक नन।

X X X

श्री गुरु गन्त जनप त जग रापुर वासा।

रमिक जान निर वग्न रमि यह तानि प्रसागा।

ध्यात मजरा नाम गुना मय मा बहाव।

श्री रपुनर का दाह मन्त्रि जन अग्र मु गाव।

कुडलिया—कुडलिया म स्वामा जप्रगम राग रचित छयप-कुडलिया मवन्ति है। इमका नाम उपपाण वावना भा है। कुडलिया का एक हस्तमय मभा सप्रहालय म (हस्तमय मय्या २७८७।१६/७) प्रन्तुत गय न गया है। हस्तमय जपूण है। इमम कुडलिया मय्या ६८ तम उपमय है। हस्तमय का हस्तमय क पत्र नही है। कुडलिया का एक मयमन जयानया क स्वामा राज किगारीवर गरण न प्रकाशित किया है जिसम ७२ कुडलिया हैं। यह मयमन का लण्डा म प्रकाशित हुआ है। इमके उक्त मभा वाल हस्तमय म मिन्ने हैं। कुडलिया छटा म स्वामा जप्रगम क उपमय मप्रहात है। हस्तमय उद्यय विषय वासना स मन का हटा कर भक्ति म गगाना है। कतिपय उक्त म सगण भक्ति का निर्माण मय्या है। उगाकरण क रूप म कुडलिया यथा त्रि जान है—

मनुष्य जानन म धाराम का भक्ति ही मूल्यमान है। सामारिक धन सम्पत्ति व्यय है। समार मजम लेकर भक्ति करन वाग्य मनुष्य उम अतिथि क समान है जा मून धर म जाना है जोर जट्टन काय राकर लात जाना है। अतएव मनुष्य को मत्मग जोर राम का भक्ति करनी चाहिए। वहा स्वा सम्पन्न है मनी एव मवगण सम्पन्न है जा पतिव्रता है। मया प्रभार नाग रूप बना चीव धय है जिसका हरि चरणा म रति है। जप्रगम एम चीव पर तन मन वार दत हैं। सामारिक

१—कुडलिया—

मूना धर की पाहुना तया जावे त्या जाय।
ज्या आव त्या जाय धम विन विक नर देहा।
सूठ कुटम सप्रत तज मन याम मयया।
परमारथ का पाठ दाठ मवारथ मा गी।
जम अभ नहि लया राम की भक्ति न राया।
जय कह मन्मग दिन कतू अभ न जय।
मूना धर की पाहुना तया जावे त्या जाय।

२—बहा—सा नारि मनवरा तारा काग्य वारि।
जारा राग्य वारि चारि साग्यनि भाव।
मयम मुन हरि क्या रनना गावित गग गाव।
जारज विष्टु उगार मुमनि मुकुटाना सारि।
हस्तमय वम हरि चरण जगन चार कर उगार।
अप्र क है ता दाम पर तन मन गारा वारि।
सा नारि मनवरा जावा काग्य वारि।

सुखा का पगित्याग कर जा हरि लीग के रम म मन्म रत्न हैं जीर निभय हा प्रसन्न मन स हिरगुण गान करत हैं जिनका मन राम क चरण कमल म वमता न व वाग व भय म मुक्त हो जान हैं।' भगवान का शरण म तान स सुख प्राप्त होना है हरि म विमुख हान म हुन हाता है। दयाप्राप्त विभाषण आति इमक उदाहरण है। अतएव मनुष्य का हरि के चरणा म प्राति करना चाहिए।' जा राम क चरण कमल का आश्रय छाडकर जय का आश्रय रता ह वह हाथा का डाड कर गध पर बठता है वह आत्महन्ता एव पापी है।' एक अय छठ म अग्रनाम जी न राम

१—व्या—

सुख सा साव कुम्हार चार न मटिया ल्य।
 चार न मटिया ल्य भजन द्य हाय हाय मन।
 आटा ल्य न तासु रह सत्वग मत्पान।
 इन्द्रिय राम न हाय मरत मिय्या करि जान।
 हरि लीग रम मत्त मुक्ति निभय गण गान।
 अग्र वमन ज राम पल वाग चिनीता ल्य।
 सुख सा साव कुम्हार नित चार न मटिया ल्य।

२—व्या—

हरि सम्मुख सुख पाय विमुख भय दुख हाय।
 विमुख भय हुन हाय दय दयाप्राप्त विभाषण।
 दया गुग्गुचि गुनानि दय प्रहारा पिता मन।
 देव दय का यज्ञ दय पथ वेणु चिनीता।
 वम जनक मुन अय दय पादत्र जग जाता।
 अग्र मुकुट प्रतिविम्ब म अपना जानन जाय।
 हरि सम्मुख सुख पाय विमुख भय दुख हाय।

३—व्या—

राम चरण तजि जात रति ना गा तजि गत्य चडा।
 गा गज तजि गत्य चडा भया आनम हन पापा।
 वरै अविद्या मूल वरै गण द्राह मुगुणा।
 वरै वृनघ्ना मुक्ति वरै वरै नात रगमा।
 वरै शानानि हात वरै ताग्यन म नामा।
 अग्र वरै गा गति रता तान ताप ताइ रती।
 रामचरण तजि आन रति ना गजतजि गत्य चडा।

कुडलिया—कुडलिया म स्वामी जगदास नाग रचित छय्य-कुडलिया मरुति नै। इसका नाम उपपाण वाचना भी नै। कुडलिया का एक हस्तलेख मभा सप्रहाय्य म (हस्तलेख संख्या २३८७।१६८७) प्रस्तुत लेखन न गेवा है। हस्तलेख अपूण है। एमम कुडलिया संख्या ६८ तक उपलब्ध है। इसका वाल हस्तलेख क पत्र नटा है। कुडलिया का एक मरुति जयोया क स्वामी राज किशोरीवर शरण न प्रकाशित किया है जिसम ७० कुडलिया हैं। यह संकलन दो खण्ड म प्रकाशित हुआ है। इसके छंद सभा वाल हस्तलेख स मिलते हैं। कुडलिया छंदा म स्वामी जगदास क उपपाण सप्रहाय्य नै। एतका उद्देश्य विषय वासना म मन का हटा कर भक्ति म लगाना है। कतिपय छंदा म सगुण भक्ति का निर्माण हुआ है। उदाहरण के रूप म कुछ छंदा यटा स्थि जान हैं—

मनुष्य जावन म शाराम का भक्ति नी मूल्यवान ह। सासारिक धन सम्पत्ति व्यय ह। समार म जम लेकर भक्ति। करन वाला मनष्य उम जतिथि के समान ह जो मून घर मे जाना हे ओर बहुत काय हाकर लग जाता ह। अतएव मनुष्य को मत्स्य और राम का भक्ति करनी चाहिए। वहा स्त्री सम्पन्न है मनी एव सबगुण सम्पन्न है जो पतिव्रता है। एसा प्रकार नाग रूप बनी जाव घाय है जिसका हरि चरण म रनि नै। जगदास ऐसे जीव पर तन मन बार देते हैं। सासारिक

१—कुडलिया—

मूना घर कौ पाहुनो एका आव त्या जाय।
ज्या आव त्या जाय घम विन विक तर देहा।
पूठ कुटुम सग्रह तज मन श्याम सनना।
परमार्थ को पाठ नए स्वारथ मा गी।
जम गम नहि लयो राम की भक्ति न काग।
जग कह समग गिन कउ गम न ताय।
मूना घर कौ पाहुना एका आव त्या जाय।

२—बहा—सार् नारि मनेवरा ताका काग चारि।
जाना काना ज्वारि ताहि मानापनि भाव।
अव्य मुन हरि क्या रनना गावि गग गाव।
आरन विदुष उदार मुनि मुकुटाना सार्।
हृदय धम हरि चरण जगन डार कर डार।
अग्र कौ ता दाम पर तन मन नारा वारि।

सुखा का परित्याग कर जा हरि लीला के राम में मग्न रहने ह और निभय हा प्रमत्त मन से हिरणुगुण गान करते हैं जिनका मन राम के चरण कमल में बसना है व काट के भय में मुक्त हो जाने हैं।' भगवान का शरण में जान से मुख प्राप्त जाना ह हरि में विमुख हान से द्रुत जाना है। दशप्रार विभाषण आदि इसका उदाहरण ह। अनएव मनप्य को हरि के चरणा में प्रीति करना चाहिए।' जा राम के चरण कमल का आश्रय छात्रकर जय का जात्रय रता ह वह हाथा का छात्र कर गध पर बैठता है वह आत्महन्ता एव पापी है।' एक अर्थ उक्त में जयनाम जी न राम

१—बहा—

सुख सा सोव कुम्हार चार न मटिया ल्य।
 चार न मटिया ल्य भजन दूत हाय हाय मन।
 आठा ल्य न तामु रह गत्मग मजजन।
 चन्द्रिय राम न हाय मरल मिथ्या करि जान।
 हरि लीला राम मत्त मुक्ति निभय गुण गान।
 अथ बसत ज राम पत्र काट चिनीता ल्य।
 सुख सा साव कुम्हार नित चार न मटिया ल्य।

२—बहा—

हरि सम्मग सुख पाव्य विमग्न भय टुव हाय।
 विमुख भय द्रुत हाय दर दशप्रार विभाषण।
 दया मुग्धि मुनीनि दय प्रहृष्ट पित्त मन।
 दय दय का धन दय पय वशु विनीता।
 कम जनव सुन जय ल्य पाव्य जग जाना।
 अथ मुवुट प्रतिभिन्द म अरना आनन जाय।
 हरि समुख सुख पाव्य विमग्न भय टुव हाय।

३—बहा—

राम चरणतजि जात नि ना गज तजि गल्य नय।
 गा गज तजि गल्य चडा भया आनन ल्य पाया।
 बड़े जविष्ठा मूट बड़े गम गह मुगपा।
 बड़े वृत्तघ्ना वृष्टि बड़े दय नान ल्यमा।
 बड़े पीनानि नान बड़े गारुडन म नामा।
 अथ बर गा गति नरी तान ताप गा ल्यो।
 रामचरण तजि आन रनि मा गजतजि गल्य चडा।

कथा का निर्माण बनी सुन्दरता में किया है। अग्रनाम का कथने हैं कि राम का मर्मा जपार है। मन मव में वर है मना का राम का ही हृदय में प्राण करना चाहिए जोर उठा वं मुयन का गान करना चाहिए।

पदावली—पदावली अग्रनाम का मन्त्ररूप रचना है। पाठ बनाया जा चना वं जि स्वामी अग्रनाम क पत्र प्रियर रूप म मग्रह ग्रन्था म मित्र है। पदावली का काँ प्राचान हस्तक्य प्रस्तुत ग्रन्थ को नया मित्र सहा। नागरा प्रचारिणी पत्रिका म पदावली प्रकाशित का गया ह (मवत २ १८ विक्रमा)। राम ग्रन्थारम्भ राम प्रकार लिया गया— अथ राम अग्रनामा वृत पदावली प्रारम्भ। ग्रन्थ क अन्त का पुष्पिका नया या गयी व। राम इमक विपिकाठ अथवा विपि रना का पता नहीं चन्ता। यत्र पदावली इन्द्राम क पदा का सक्त्त जान प ता ह। अग्रनाम जो क पत्र प्रस्तुत ग्रन्थ का सग्रह ग्रन्था म मिले ह। एन पदा म स्वामी अग्रनाम न माताग्रम का विगाराग्रन्था की गारा का मयत वणन किया ह। दिव्य दम्पति का त्तिचया मन्वया पद भी मिलन हे। इष्ट की मयत गीतना तथा गृगारा गारा का मनाहर वणन इन पदा म उपर्यथ गता व। साहित्यिक दष्टि स य पत्र मरम एव अत्यन्त सुंदर वन पत्र है।

स्वामी अग्रनाम न साता का रामावली का विगार वणन पदावली म किया है। उनक साग्र्य गाल एव माभाग्य का महिमा अग्रनाम न अनव वार ववाती है। अग्रनाम माता वणन पर वलिहारा जाने है जोर विभवन का गामा पाठावर वरन है। सीता क सीत्य का वणन ह्यग्रह्याति भा नटा वर मरने—ह्यग्रह्याति

१—वहा—कविजन करत विचार बडा काउ ताहि मनीज।

काउ कह अबना वरा जगत अवार फनाज।
सा धारा गिर गय गय गिव भूपण कीहा।
गिव आमन कलाम भजा भरि रावण जीहा।
रावण जीता वाति वाति प्रमु क सर दन।
अग्र कहै गारा म हरि उर धार ते वन।

२—पदावली—वलिहारा माता वणन की।

—वत्र अमन परम्पर आपति अमर विवह्य रत्न का।
वमरि मरुता चपत्र गत अति गामा दारा अमन की।
गवन चार बिन मयत वरमन राम काम टुव वणन का।
मचा मन्ति माभा विभुवन का वारौ मानता मन्त का।
अग्र स्वामिना विगार चमन्य मौमग हूँ सुव सन्त की।

कवि आर बेन वही स्वामिनी अग्र नहि पाव पाव। साता का मात्स्य गाल
अभुन ३ उमकी उपमा अयत्र नग मिलती।^१ माना का मौभाग्य अविचर ३
उनम राम का प्रम तिन तिन वत्ता ३—

मरी राना का अविचर मुहाग।

जाये परमि और नहि परमो रघुपति तिन तिन वात्स्या राग।

साता मा मिरजा न मुपतना कलि अवत्क लम्बा न दाग।

अग्रस्वामि स्वामिनी अर्हतिम मुख विष्णु दाउ भूरि भाग।

सीता का सौन्दर्य रेगडर ससार के अय सुन्दर पत्नीयों की सुन्दरता निरागति
हा गया— मम का साभा सिमित ल वहा का वान विलोक्य अन्तरभूत भई।
सीता का गामा व मामन सुन्दर पत्नीय थीतन हा मय और सक्चनग पवत—
अग्रय जाकाग-साताग ताति स्थाना भ वत्त गय। राम का मुख दनवाग सीता
की गामा पर अग्रयग वित्तहारी नात है।^१ राम और माना अपन हा मत्स्य =
इनकी उपमा अयत्र मोजना व्यय है—

राम सा राम सीता मा सीता।

मिच विरचि मारग मम मुख पत्तर ग्राजन वत्त विनीता।

सुन्दर गाल मुहाग अमित गुन जयिल गक नर नारा जीता।

थी अग्रस्वामि स्वामिनी उजागर नति नति धुनि गावन गाना।

राम का एक पत्नीगत साता का साभाग्य तथा अलौकिक रूप माचय मना
प्रकार अनेक पत्नी म वर्णित है। अग्रयम जो इहा अमृत रूप मानुष यस्त
गीत आदि गुणा स विभक्ति राम का मुख दन वाग तथा राम का जपन वग म
रखनवागी साताजा का ध्यान करत हैं और उनका वृषा की माचना करत ३।
अग्रदाम कहत हैं कि सीता गिग पर वृषा कर दता हैं राम उम पर दयाट्टा
जात है और उनका उदार कर देने है—

१—राम रवति गज गवति अवनिजा चपत्त बरनि मान् मृगनयनी।

वत्त वट्टु अरविन्दु कुत्त त्रि अघर गिर विद्रुम पिक बना।

सीता के सौन्दर्य साठ घन उपमा सक्क मकुचि भई गना।

बनिता वर प्रगार उजागर अग्रस्वामि जान् मना।

२—मवोपरि मरा स्वामिना राया का प्यारा।

जाया परमि और नहि परमा म्म लाना एक नारी।

स्वदग त्रिय दगम्य नम नम नाहित वाऊ मारा।

वत्नी व वत्त वमत्त पर था अग्र अग बलिगारी।

चहियत कृपा गंगा साता का।

नवया भक्ति जान का करना मित्रि गई मक वर गाता का।

पद्मव वद पुरान पुकारत करत वा नर वपु वाता का।

मगरी कर अफझ मुख्य ना मित्रि न एर द्रत माना का।

जाका जार तनक हमि हरत करत सहाय राम ज ताका।

श्री जगज्जग भज जनक ननिना पाप भन्तर ताप रीता की।

धनभग के पूव सीता का राम के प्रति आकषण तथा उनका आकृलता का सजाव वणन जग्रन्तम ने किया है। माता कहती है कि हमारा पिता न कठिन प्रण किया है। सावरे के करतल कामठ है मूरति मवर है जीव वय विगार है। व राजमभा म एमे लगते है जस तारायण के बीच चद्रमा। मन का माहने के लिए विधि न यह फल रचा है। ठाक वद का लाज दुस्तर है किनु रूपनिगान रघनरत्न को तेव कर धय नहीं रह गया है—

एसा मा जिय ऊजा चाव चगावा काई।

अध स्वामि के हाथ बिकानी जाना हाइ सो हाइ।

साना सखी से कन्ती है कि राम मन प्रिय लगत हैं। नरपति निबर निरम है। मूय पिता का प्रन तहा अच्छा गगना सारगपानि प्रिय लगत है उलान अपना चिनबन से मेरे चित्त को चरा गिया है। पिता न एसा प्रण हा क्या किया। कन्नि पिनाक जोर कोमठ राम का देख कर मरे हूथ्य म धय नहा रहा।

न्धिय दम्पनि का रममथा गंगा का वणन स्वामी जग्रन्तम न क पना म किया है। रसिक साधना के अतगत गगार पथ का स्थिति हृदयगम करन के लिए य पद् महत्वपूर्ण है। एन पद् म जग्रन्तस त्रिय दम्पनि का जोर का छवि का वणन करत हैं। प्रात बरत म राम जाग जात हैं और सीता मा जाना हैं। राम माना के विधुवदन का दखत हैं पचात साता भी जाग जाना हैं। उनवे नय जाग्य म पन हुए हैं। अग्रन्तम एसा छवि का ध्यान करत हैं—

१—नात प्रन काह का किया।

कठिन पिनाक रामकर कामठ धार न धरत हिया।

मन्तर मरनि आनठ क मम नाहिन जोर बिया।

वद चिनबना सावर मया चिन बिन चारि गिया।

रघपनि तजि ज रनि कर घग घग जिवनहि जिया।

अधस्वामि रम बन भई मैं मन माह लिया।

रजनी जल्प राम उठि प्र साय गया सीता जाया भार।
 वार वार विधु वन विलासत माना पावन सुना चमार।
 हरे हर बुझन चमवन उर वर सा विभुष चार टकटार।
 जागि परा जानना तहि छन आत्म पगे नयन का कार।
 बहुरि अक आगपि पिया का गौर स्याम गामिन एक जार।
 अग्र अना एमा छवि छाड गिग जाके जाव उर जीर।

रात्रि में जाने के कारण सीता का शरीर जालस्य से पगा हुआ है उनका पग डगमगा कर धरती पर पड़त है राम ने अघररस का पान किया है। राम का मुख दकर उह अपन वग में कर जानका मुन्ति हैं। एक पद में सीता द्वारा मजारी को सतुष्ट करने का वणन किया गया है। उद्देश्य यह है कि मजारी कुकट का निषेधन में रख मके जिमम भोर हाने की सूचना वह न दे सके। एक अन्य पद में वीर पक्षी रात्रि के रस वत्तात का वणन आरम्भ कर देता है। गुण जना के सुनने के कारण सीता का सकाच होता है। सीता की गण से पना का भ्रम में डाल कर इस प्रसंग का वणन की है।

१—रजनी जाग गामिनी आवन सग मरुर उचरत जयगान।

डगमगात पग धरत धरनि पर राम अवर रम कीनो पान।

आलस परे जडान जानकी मुदित मगत राखो पिय मान।

जग-अग ऊषाहि दन मव सबमु अपि शिये रनिमान।

सुप्रस विष सुदर वर रघुपति त्रिभुवन जुगती नहिन समान।

सहचरि सब बिलाकि विवम भई अग्र अला वनि वारनि प्रान।

२—राजकुवरि पूजनि मजाग।

बहान कीज अपन काज गुण भावएन वात विचारी।

निगा घन सुग हानि हान है बाज वर कीना तमचाग।

पापी नाप विचारी पाया पव प्यावन राघव क प्यारा।

जा चुप विष रह वह बुकनु ता कन हाय भार हिय हाग।

निगा भग ममर रम ममिन अग्र अद्रित जाक दुलारा।

३—रीर निगा की कहनि कनि।

गुरजन मुनन सकुचिन सीता भूगन चापि चूनि दई मनि।

शारया व्याज बाज कह्या भुया ती कनि जाना ज्यो स्वाग।

गुन गभ्रम मैं परया विभापनि भूनि गया पूरन अनुवाग।

नागरि उक्ति यह उपजो मगा रागि रजा वन निहारि।

अपमनी कन अचरज नाही बहेहा राजा कुमारि।

जनकपुर और अयाध्या म हिन्दो लान का वणन अनक पना म मिगता है। जनकपुर अत्यन्त सुन्दर लग रहा है। सावन का मनमाहक महाना है। पावन कुज म अम्भुन हिन्नाला बनाया गया ह। मन् मुनमान क माय हिन्ना म थाका देते हैं परम्पर जनग का रग उमगता है—

जनकपुर गगता ज मुगइ।

रग रगाली जनिहि छरीनी मव मित्रि झूठन आन।

भावन मन भावन पिय प्यारा जवना महज मुहाइ।

पावन कुज पज मुख वरमन कल्पन मन बरवाइ।

कचन यम जन्ति डाडी नग विवित्र विचित्र बनाइ।

रेमम डारि चारि बनि जाई चह निमि जगज जराइ।

गरी बाल गग रग शीमा लान लान लान।

वाता दन उन मुख पिय को मन् मन् मुमकवाई।

उमगउ रग जन परस्पर मन महार जमाई।

गावहि ममर रग भरि भामिनि काकि कठ गगाइ। इत्यादि।

×

×

×

अयाध्या म माता राम वृग वृलते हैं। रत्नजटित हिन्नाला बनाया गया है। उमपर बठ माताराम का गाभा क जाग विद्यन गिजन हाता ह। सखिया मना स पति का नाम उन का कहता हैं किन्तु साता नरा म मरन करती हैं। जवन्पुर म निव्य त्पनि नित्यवन्ति करत हैं।¹

हागी सत्रक क मरम प्रमग का वणन अप्रत्याम न किया ह। अयाध्या राम हाग खलन हैं। पिचकारा स रग वरमना है जन मघ बरसत हा। चारा जोर केमर कुकुम का काच मच गया है। देवता विमान म चन् लीला का मुख लन्त है और पुष्पवषा करत है। इम लाग का दान करन बाल पुरवासा घन् भाग्यवान

१—झूलन मिया राजिव नन।

रत्न जन्ति हिन्नाला मगिराम मुख के एन।

स्याम अग पर गौर झक्कन दामिना घन गन।

मथिला रघवीर साभा निर्गलि लजित मन।

नाम पिय का ग्दु नागरि जा सखित मन चन।

जातका नन् उन मुख मा उन ठाचन मन।

परम्पर झूलन झुगवन बन्त मसुर वन।

जवन्पुर नित वन्ति दपनि अष आनन् उन।

हैं। अवधपुर मे चारा जार राग का धूम मचा है। नायक नायिका मे मन्त्र म जयवाल्मीक गान गाना है ता मन्त्ररिया चंग मन्त्र उषम गजरा मयुर स्वर् महनाद बजा उठना है। काल मया राम का मुग गाना है ता काइ सीता बे गुणा का मराहना करता है। अरय जार जनक राजा का पाशिया का स्मरण कर दामिया मग गारा गाना है। यह छवि स्व कर देवता पु पवलि करन हैं जार राम का जयगान करन है। अग्राम सीताराम फगरम गन का छवि पर बन्धारा जान हैं। अयाध्या नगरा मुन्चि पूवक सजाया गया है। हाल मन्त्र वाला मे एक टाग साता की है तथा दूमरी भाग्या महिन राम का है। अगजा क पनाम बहन है—
जम बाधिया मे नया उम पया है। धूप का मुगभिन धत्री आकाग मे छा गया है। राग गाला पुरजन प्रेम मे निरखन हैं। माना जालरत्र मे हाला राग दय कर मुचा हाता है—

रग रग मन्त्र भग जगन जनक गुना रघरा है।

राज सुमन बरमन सुर मघन स्व तुमी बजाइ है।

जातर निरखन मुग जनना जान तिष बजाइ है।

हाग राग का भाति अग्राम मे सीताराम का जन्मिन् बणन मित्रा है। मरु व पुनात मे माता के साथ राम बन्धारा करन हैं। मन्त्रा नाम जग अलग सजा है। राग मे मुन्त्रा नाम जन पनाम रत तु है। अजगिया मे जग भर कर पगर उठान है। राग मे परिचारिणा तथा ना ना ना गन है। गल भर जान के कारण नत्र राग मे जान है। अग्राम बन्त्र है नि तर नारा म नीरखि का स्वन्त्र मुचा जान है—

जग विना विहरत गाना सग मुन्त्र वर रघरा है।

घायम का तुपार नर गुन मरु सुमग मुहा है।

१—रघुनाथ वधू अगम क्षत्र राधा मन्त्र गारी।
भरत परमार्थ मुनि नहि पयन का प्रातम का गारा।
जह न राम जानना मनमुर लपव बन्नि नहि जाना।
बमर कुम कुम काव मचा है बरगन घन पिचका है।
नम विमान मन धरित न है मुखनिता मर गाव है।
पुत्र धरि करि जय जय चर प्रनन्ति मन्त्रा है।
बन्नि मुन्त्रा बाहुना पुत्रासा बन्नागा है।
मानाराम स्वम्न ह्य घनि अग्राम अनुगगा है।

लोचन लाल भये पय पूरित बसत जग ज्योत्सवा ॥

निरखत नारकेलि नरनारा जप्रअग मा नाईहा ॥

दिव्य सम्पत्ति क प्रमोद वन विहार की याकी जप्रअग न प्रसन्न का ह। मरु
क तीर पर दिव्यस्य ग्री है जहाँ बलि और उनाए झूम रती हैं पटा पर नवर गजार
वस्त है सुन्दर कुत वन हुए है। उना पर जनक लग रघनउत जभन मयुरस्य
म विराजमान ह। कक गविमशक्ति मन्त्रिय। कगान करता ह। नानाराम
मगत का जानत है। इम रम का जानत विरग र मिसर जन पान है—

जा जप्रवती विपिन राज यहि सुग तह नित समाज ॥

जानत कोउ रसिर भट जिन यह रग पा ॥

इम प्रकार स्वामी अग्रदास ने सीताराम की मघर गीतजा का वणन पटा
म किया है। पटा म मयाग के अलगत हा शृंगार का जनन हजा है। उन वणना
म नाजनातिक की दनित दिया भा सम्मिगित का गया ह। इन पटा का
जप्यामाय वर्गीकरण भी मिगता है। जविगण प कगार गगजा ताग
जय रममया गगजा क मध्वन म हैं। कुठ पटा म रमचरित क जय प्रमगा
का भा उग्य हजा है। एगा जान पता है कि स्वामी जप्रअग न गाराय का
मरु गगजा का विम्वार स वणन किया है साथ हा उहान जय गगजा क
प्रमगा का लकर भी पटा की रनना का थी। अग्रअग क रच हए पटा का मरु
ग जान पर इम मन्त्रय म विचार सम्भव हो सकगा।

एक पट म रावण म गरी सवाव वर्णित है। मगारा रावण म कहेना ह
कि देना राम की ध्वजा फहरान गगा। तुमन विभवन पति स धर टाना है जिम
मागर पर गव करा थ उस पर गिग तरन गी है—

जव दया राम का ध्वजा फहराना ॥

यकन टाउ फरकन नजा गरु उग जगमाना ॥

रमग धार वाग्मिमुत जग हनमान जगवाना ॥

बन्दि म गि मुत पिया रामय विभवन पति म गाना ॥

ता माग पर गव करा है तापर गिग तराना ॥

गगा कता है— म्या तानि का उद्वि जाग गता है नु उनहा बगइ ररता
॥ नै न तपना नाईग का भनत मग स पग मगारुगा—

दियेना तानि उद्वि का गडा उनहा वन गगना ॥

नव मग म पारि मगग जा तपना गड भाई ॥

मगगा पुन राम क दन का वगा करता है जार रामय रम मुम्भरण जार
मपना क वग म मरण कराना है—

हनुमान म पाया उनक लक्षण स बलि भाई।
 जगत जग्गि म वूँ पग्न हैं काटि गन नहि खाइ।
 मधना म पुत्र हमार कुभक्षण स भाइ।
 एव वाग मनमुप राइ लरिहैं जुग जुग हात बगई।

राजग न ममज्ञान दुए मगारी पुन कती है—मरा कहा बात तुम्ह प्रिय नही
 गना। मैंने रात्रि म स्वप्न लखा है कि मान का लका लुट गया। एक बंदर
 न गगर म आवर घूम भवा दो लका का जला दिया। गव बरन व रावण
 गव छाया गव म लका लुट जायगा। रघुनाथ स जाकर मित्रा जिसम उना
 जवर हा जाय—

बहनि मगारि मुनु पिय राजग ताहि मम एन न भाइ।
 राति का सपना एमा भया है मान का लक लुटाइ।
 वर ए ए लखि जाया घर घर घूम मचाइ।
 वाग उगारि सम म टार लका जागि ग्याइ।
 गरवा रावण गरव न काज गरवि लक लुगाइ।
 जाय मित्रा रघुनाथ कुवर स लव जवर हा जाइ।
 इरु ग्य पुत्र सवा ग्य नानी मोन आपना ठाना।
 अग्रस्वामि ग ल पर जजह न चत्या माना।

स्वामी अग्रनाथ का साधना दास्य निष्ठा पत्न था। उन्होंने याचना का
 है कि व रामभक्ता क दामानुनाम हा रामरया का श्रवण कर तथा मुन स
 राम नाम का उच्चारण करें। अग्रनाथ कहते हैं कि मायादि म मुन कुल काम नहा
 है मर गिर पर सना का पगरज हा, मना म मुन जनगग हा भार हरि चका
 करन कात्यायन हा। एव अय प म उन्होंने माना का वृषा का याचना
 विचिप ल स का है। स्वामी अग्रनाथ कहते ह कि रामचंद्र गजपाट पावर
 राजा का गव हैं उनम ठगुग आ गया है आर इन दासा क गि उ
 गमय न। है। किन्तु यि मिथिग ग म य दल न न जाय ता

१—ग मारि दाग राघव राम।

दागनिगम दाग व अनुार क्या श्रवण मुन नाम।
 माग जाति चारि पत्न्य भग व नरि नाम।
 पग रनु मायु का मि ए वृषा करा मुग्गाम।
 गन गा गगुग निरनर म्दि विधि वाव राम।
 आ अग्रनाथ चाहत हरि चरचा सुगमिप रि राम

बहियत कृपा ऋणी साता वा।

नवप्रा भक्ति जान का करना मिटि गई म
पन्मत बंद पुरान पुकारत करत वा न
धगरी कर अर्थ सुरत ना मित्रा न एर
जाका जा तनक ऋमि हरत करत सहा
री अग्रबला भजु जनक नदिनी पाप भडा

धनुभग के पूव सीता वा राम क प्रति जाकपण
मजाव वणन अग्रदाम न किया है। माना कहता है कि
किया है। सावरे के करतल कोमठ हैं मूरति मधुर
व राजसभा म एस लगत हैं जैसे तारायण क बीच च
त्रिा विधि ने यह पन् रचा ह। लाक बन् की लाज द
रघनन्त को दल कर धध नयी रह गया है—

एसा मा जिय ऊरजो चाप चण
अग्र स्वामि क हाय बिकाना हानी ह।

माना सखा स कहता है कि राम मुन प्रिय लगते हैं।
मय पिता का प्रन नहा अच्छा लगता सारगपानि प्रि
चितवन स भरे चित्त का चरा किया है। पिता न एसा
पिनाक और कामल राम का दान कर मर हृदय म धद
त्रिध्य दम्पनि का समथा ठीका का वणन स्वाम
किया है। रसिक साधना क अतगत श्रुगार पण वा
त्रिए य पन् महत्वपूर्ण है। एक पन् म अग्रनाम त्रिध्य दम्
वणन करत हैं। प्रात वण म राम जाग जाते हैं जीर
सीता क विनुवन्त का दानन हैं पन्चात साता भी
आत्म्य स पण हुए हैं। अग्रनास व्मी छवि का घ्या

१—जान प्रन काह का किया।

कति पिनाक रामकर कामर धार न धरत
मन्त्र मुग्नि आनर क मम नाहिन जीर
वक चितवना सावर ममा चित विन चारि
रघपनि त्रिजि व भति कर धग धग जिवनहि
अश्वस्वामि रम बन भ म मन माह

अध्याय ९

राम-साहित्य के अथ प्रणेता

राम-साहित्य के अथ रचयिताओं के सम्बन्ध में विचार रखना तथा अथ सूत्रों से सूचनाएँ मिलती हैं। इन सूचनाओं में निम्नलिखित रचनाओं का परिमाण ज्ञात है किन्तु उनमें अभी पूर्ण नहीं हो पाया है। इन कृतियों के रचनाकार तथा रचयिताओं के बत प्रायः अज्ञात हैं अथवा उनके बारे में प्रामाणिक सूचना का अभाव है। बावजूद इसके इन रचनाओं का वर्गीकरण करना अभी भी संभव है। अतएव सूचनाओं में निम्नलिखित रामभक्त कवियों तथा उनके रचनाओं के सम्बन्ध में निम्नलिखित रूप से कुछ कहा जा सकता है। कतिपय कवियों के नामों में कुछ जिनके सूचना मिलती हैं। उनमें जन-परम्परा के कवि हैं तथा कुछ अथ।

राम साहित्य की रचना में जन कवियों के योगदान की चर्चा उपरोक्त में रचना करने वाले जन कवियों के प्रयोग में पाठ का जा चुका है। जन राम-साहित्य की यह परम्परा आज भी चरती रही। हिन्दी में जन कवियों ने विस्तृत राम साहित्य का रचना का है। राजस्थानी में राम चरित का प्रणयन करने वाले जन कवियों की संख्या अधिक है। गत वर्षों में हुए पाठ-कार्य के फलस्वरूप जन कवियों की अनेक रचनाएँ प्रकाश में आई हैं।

जन कवियों का रचनाओं का गुणों का अथ जन-प्रयोगों का है। अथ का साहित्यिक प्रतिभा अथवा में लक्षण के पाठ के लिए रचना जिनमें में धर्म का माना जाता है। जन कवियों में गान-भण्डों के निर्माण तथा उनकी गुणों का अध्ययन प्राचीन काल से चला आ रहा है। यही कारण है कि जन-प्रयोगों में प्राचीन इन्हीं आज भी सुर्य हैं। अथ प्रयोग प्रकाश में आ रहे हैं। जन कवियों का राम चरित नामों की रचनाओं के सम्बन्ध में उपरोक्त सूचनाएँ मिलनी जा रही हैं।

ब्रह्मजिज्ञासु—ब्रह्मजिज्ञासु का रचना राम चरित है। यह राजस्थानी का प्रथम रामायण है। इस अथ का रचना मकर १९०८ में हुई थी। इसकी

हस्तलिखित प्रति डगरपुर न जन मन्दिर के भण्डार में सुरक्षित है। ब्रह्मजिनदाम दिगम्बर जनी थे।

रामचरित्र^१ के सप्रथम सूचना दत्त हुए श्री नाट्यानेत्रिणाह—राजस्थानी भाषा में भी रामचरित्र सप्रथी जन साहित्य काफ़ी परिमाण में प्राप्त हैं। लगभग पन सभा रचनाओं की खोज मँते की है। अभी कुछ छापी वनी और रचनाओं के मिलन की सम्भावना है। तीन वष पहले तक राजस्थाना राम चरित्रा में श्वेताम्बर कवि विनय समुद्र क पद्य चरित का ही सप्रमे प्राचीन हाना पात था। जिसकी रचना मवत १६ ४ में बाकानेर में हुई थी। इसके बाद मेरा डूगरपुर जाना हुआ तो वहा क त्रिगम्बर मन्दिर क शास्त्र भण्डार में इसमें १६ वष पूव राजस्थानी राम काव्य मिला जिसमें रचयिता सुप्रसिद्ध त्रिभरण कवि ब्रह्म जिनदाम है और जब तक क नात राजस्थानी काव्या में यह सप्रमे प्रानत है। ब्रह्मजिनदाम का रामकाव्य काफ़ी वना है। इसके कुछ पद्य डा कस्तूरचन कामावाज जय डगरपुर गये व तब मोट करके लाये थे। उना से व जानि जार अत क पद्य प्राप्त कर लिये जा रहे है—

राम राय राम ब्रह्मजिनदास वृत।

आदि—

धार जिनवर वीर विनयर पाय प्रग म न।

मरमता स्वामिणा वग तत्र ह्य उद्विसार बगामानड।

गणयर स्वामि नमसकर श्री मकर कारत गरुपाय वाण्ड।

मनि भवनकारनि पाय प्रणमिने वीरमु ह राम त्व चग।

ब्रह्मजिनदास नव निरमडा रामायण भवि रग।

×

×

×

अन्त—

श्यामूयमध जनि निरमडा मरम्बता गण्ड गणवन।

श्री मकर वीरनि गण जाग्याय जिण मामणि चयवत॥

ताग पाण जनि रवग ना भवन कारनि भवनार।

गणवन मना गण जाग्ये नव तत्र तथा माण भनार॥

नाण मनिवर पाय प्रगमान काणः मय राम गार।

ब्रह्म जिनदाग नग वूवना पन्ता पुष्य जगार॥

१—राजस्थानी भाषा का सप्रमे पहला रामकाव्य रामभारता त्रिगम्बर

साम्य मवाहृ कवण प्रह्य मल्लिगण गुणगम।
 पठा पठावा उटु भावमु जिन हा माय निवाम॥
 भविष्य जाव मशयिना किय म राम य माग।
 जनक गुण करी आगण त्या तगा बहु भवर॥
 मवन पत्रर अठानरा मागमार माम विगाल।
 गकल पय (ब) उल्लिखि जिनो राम किय गुणमाल।

ब्रह्मजिनराम का एक अथ रचना हनुमतराम का भा मूचना ली गया है।
 जन पचायता मन्त्रि जिनी क साम्भ भणार म हनुमतराम का प्रति सुरक्षित
 बताया गया है।^१

गुणकीर्ति—गुणकीर्ति का रचना राम मानाराम है। गुणकीर्ति ब्रह्मजिन
 दाम क विषय व। इस अथ का मूचना भा था नाहृ नटा है।^२ इसका परिचय
 दत्त हृग था नाहृ न जिवा २—यह राम जिनराम क रामराव्य म वाफा छाटा
 है। तनवा क तिम्वर भणार (जयपुर) र गुटक म यह जभा लवन म जाया।
 गुटक म जा ना चहुन सा रचनाएँ हैं जिनक वाच पत्राक ६५ म ११ तक म
 यह राम जिना हुआ है। प्रथम पत्र म १ पक्तियाँ ह और प्रति पक्ति म
 १८ २० न नर ह। वरार ४०० ग्यक परिमित यह श्रुतान २। रचनारार
 नहा लिया गया है। जनिम पद्या म कवि न कवण दतना हा उल्लय किया २ कि
 रामारण का कना का वा पार नरी म जनि हानहू दमए मय म हा य गान
 बताया है। जा विमान व्यक्ति हुआ बहा विमान म रचना क मरगा। मम
 पर दया कवक इम राम भास का गुना जाय और गलना क्षमा का जाय। ब्रह्म
 चारा जिनराम क प्रमा म गुणकीर्ति न राम बनाया। भाद्र धनवा और जानराम
 का निम बुद्धि का उरण करत २२ जिना है कि इम राम का मन स गान पर
 मनावाछिन धदि व नवनिदि प्राप्त हुआ।

इस राम म १२ भाग है जिनक नाम और पद्य मना इन प्रकार है—१
 पाठक १, २ भाग मिथ्या मालनी गाया १५। ३ भाग साहावा गाया १८।
 ४ भाग दणाराना गाया १६। ५ नर मुवना गाया ११। भाग
 लीना गाया १८। ७ भाग वासवाना गाया ६। ८ नाम था ह वावना
 कारनी गाया १२। ९ नाहृगना गाया ८। १० गारा का गाया १०।
 ११ नमारागा गाया १२। १२ रतागा ना गाया ८।

१—जन पचायता मन्त्रि जिनी (अनकान वप ४ दिग्ग १० प० -६९)।

२—गण्डुमारता परवग १९६६।

जभा तक उपरान्त रामकाव्या म ब्रह्मजिनताम के वाच्य के वाच्य इसा का स्थान (द्वितीय) है। आदि अंत क पद्य इस प्रकार हैं—

जाति— प्रथमय प्रणमाह धाम जिन गणहर
साग्या सुगति निय गुह्य।
तम पाय मनि घरी ब्रणवु विवधि
परि समय मिद्वान्त बरी एक चित्त॥

नाटक—

एक चित्त करी बहु मवीयण जाति जिणवर बद्ध।
जजित सभव स्वामि धमह ध्यय तथा जिन कदूण॥
जभयनदन सुमति पत्रमह पुत्र तिन मुतामुए।
चंद्र पुनह पुष्पमतह सीतल या गग धामुण॥१॥
मुनिहि सात्रन स्वामि वारि आठम हति उपन।
तम तणुय उवन हरि हरपम मूरत वमिनापन॥
माहता नदरीय राय गगरय अरराजिता तम मामिनी।
लक्ष्मीय साहम रूप निरूपम चर वरता कामिनी॥२॥

अंत—

विद्वान् जे नर हाइ तु विस्तार त करिए।
ए राम नास मुगवि तु मुन पर दया घटए॥३४॥
अनर मान हू विनु पत्र छत्र गग चूकुण।
मरमिति मामिण धवि तु अपराध मय मूडुए॥३५॥
श्री ब्रह्मचार जिणताम तु परमात् तेह तथा ए।
मनवातिन पत्र हाइ तु वागइ किम्ब धण ए॥३६॥
गण कारनि वृत्र रामन विन्तात् मनि रत्ना ए।
वाच धन श्री नानताम तु पुण्यमता निरमलीए॥३७॥
गावउ रग रमि रामतु पावउ रिद्धि बद्धिण।
मनवातिन पत्र हात् तु मपजि नवरिवि ए॥३८॥
इति या गम मातागम समाप्त ॥

मने लावण्य—जन कवि मनि रामाय का प्राचीन रचना रावण भण्डारी सवा ३। इसका मूचना अनवान म प्रकाशित का गया है।^१ रचना का निधि

१—एक पत्रागत लिखित जन परम्बना भवन धर्म (अनवान धप ५ किण १२ प १)।

अनात है किन्तु भाषा के आधार पर डा० माता प्रसाद गुप्त ने इनका समय सवत १५०० के आसपास माना है।^१ ग्रंथ का विषय सीता हरण का क्या है जिनका वर्णन रावण मन्त्रालय के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

रावण मन्त्रालय सवाद का सूचना मन्त्र १९०० की सभा खाज रिपोर्ट में दोष दिया है किमत्र ग्रंथ का प्राप्तिस्थान विद्या प्रचारिणी जन सभा जयपुर बताया गया है।^२ विवरण में रचना के आदि और अंत के अंग भी उद्धृत किये गए हैं।^३

रावण मन्त्रालय सवाद नामक एक रचना की सूचना डा० मुत्तक ने दी है। उन्होंने इस १६वीं शताब्दी की गुजराती रचना बताया है और रचयिता का नाम लावण्य समय दिया है।

माता हरण की कथा पर आधारित रावण मन्त्रालय सवाद नाम का एक अथ रचना भी मिलती है। इस रचयिता जिने राजि मूरि हैं। इस ग्रंथ का रचना का ज्ञात है। राजस्थानी के प्रसिद्ध कवि जिनराज मूरि की राम चरित सम्बंधी रचना जन गमायण है जिसका प्रति कोटा के खरतगुच्छाय नाम मन्त्रालय में सुरक्षित है। अंत रामायण के रचयिता ने आज्ञाम पत्र प्राप्ति (सवत १६७४ विक्रम) के पूर्व अपना राम चरित मन्त्रालय की रचना की थी। यह

१—मा० माताप्रसाद गुप्त हिन्दी साहित्य विज्ञान—पृ० १०६।

२—सभा खाज रिपोर्ट सन् १९०० पृ० ७३ सख्या ८५।

३—यहाँ—रावण मन्त्रालय सवाद—

जाति—शाराम चंद्रायणम् ।

मूला मूला साहसि गावाया । त प्रात प्राप्ता मिय नागर ।

गीत हरा कहि सु करया । रण रडा रामना पागर ।

सामन् रावण राजायर । १।

जामा जामा म पंड भावर । सीता सता तद वाय हर ।

बदरा बदरी वासना राम र । साम । २।

^

X

X

अथ—

साहसि जन् पायर तारद । नाह विन्म मायर ।

माह अग्नि त सामग । माह साह माह ना भाग र ।

जय २।५९

राम चवाध्या जाशमा । साहसि माह अघगर ।

महा लावण्य मन्त्र भण्ड । वरुत नर नव रगर । जय १६०।

इतिरा रावण मन्त्रालय सवाद मन्त्रालय त्रिविध रामा फुलपत्र मध्य

रचना तुलसीदास के परवर्ती का काल का है। यदि गणेश मन्तरा सवाय भाषा का कवि का रचना है तो उस भाषा का नाम कालगत गया जाना चाहिए।

विनय समुद्र—उपकाण्ड के उपाखाय विनय समुद्र की रचना पद्य चरित है। इसका सूचना जन गूजर कविया भाग १ के पृष्ठ १६९ में दी गयी है। इस ग्रन्थ का रचना सन् १६६६ विजयानगर प्रकाशक में हुई थी। विनय समुद्र का कृति पद्यचरित का हस्तलेख गीता जा के भण्डार उज्जयपुर में सुरक्षित है।

कुशलनाभ—कुशलनाभ न मारवाडा के सव प्रथम छन्द प्रथम विगत गिरा मणि का रचना की था। कवि ने इसका रचना जमलमर के महाराजकुमार हरराज के नाम में की है। इस ग्रन्थ में उदाहरण के रूप में रामकथा का वर्णन मिलता है। ग्रन्थ राजस्थाना भाषा सम्बन्धित जायपुर में प्रकाशित है।

माता के चरित्र का वर्णन जन कविया न स्वतन्त्र ग्रन्थों में किया है। माता चरित्र का चित्रण करने वाले कवि का नाम प्रथम तुलसीपूव काल के राजस्थाना भाषा में पाया गया है। यह परम्परा तुलसी के परवर्ती काल में भी मिलता है। था नाहटा ने तुलसीपूव के माता चरित्र सम्बन्धी राजस्थानी के तीन ग्रन्थों का सूचना दी है—माता चरित्र साता प्रथम और साता चरित्र।^१

समयध्वज—माता चरित्र का वर्णन करने वाला समयध्वज का रचना सीता चरित्र है। यह ५२७ पद्या की छान्दी रचना है। इस ग्रन्थ में सीता के चरित्र की प्रशानता है। समयध्वज नागर निम्ब के विषय में और परतलगत के जिनप्रभ मूरि गाथा के आचाय जिनभट्ट मूरि के समय में थे। ग्रन्थ का रचना सन् १६११ में नामात् मरठुग और गूजर भाषा गमल के पुत्र भाषण और दरगह मल के लिए का गया। इसकी एक प्रति हम विनय गदररा बाला में है। हस्तलेख में १६ पत्र हैं और लिपिकात् सन् १७२३ है।

सीता प्रथम—यह ग्रन्थ का रचना सन् १६२० में रणधरार में गाथा चरित्र के आग्रह पर की गयी। इसका सूचना जन गूजर कविया भाग १ पृष्ठ ७ में दी गयी है। इसमें ४ पत्र हैं। इसका एक प्रति नागर जा के मण्ड (बन्धन) में प्रेषित गया है।

हमरतन मूरि—हमरतन मूरि का रचना माता चरित्र है। यह ग्रन्थ में माता चरित्र है। इसका प्रथम मन्तरा जन विद्वत् नया जलनाथ मण्डार बन्धन एवं प्रेषित है। ग्रन्थ में रचना का नाम नहीं है। हमरतन

१—मातागम चौगा—समय मुन्दर कृत भमिरा—पृष्ठ २ ।

मूर्ति व अथ प्रथम सवन १६३६ ४५ म मारवाड म रचित मिलत है। इमाक लगभग माता चरित्र का रचना भा हुइ हागा।

था नाट्य न एक गद्य प्रथम माता चरित्र भाषा का भा सूचना था । इन प्रथम की १८ पन्ना की एक अपूर्ण प्रति जनक संग्रहालय म सुरतिन है। प्रति का लिपिकाल १६ १७वा गताती है। श्री नाट्य का अनुमान है कि इसरी रचना सम्भवत १६वा गताला म हुइ था। इसी प्रकार का एव अथ प्रथम सीता चरित्र मुनि जिन विजय संग्रह (भारताय विद्याभवन बम्बे) म बनाया गया है । इन प्रथा का रचनाकार जमा अनिश्चित है।

ब्रह्मरायमल्ल—जनकान म ब्रह्मरायमल्ल का रचना हनुमानगामी क्या के जन पचायती मन्त्रि जिला म मुगलिन टान का सूचना दा गयी ह। प्रस्तुत रचन का उक्त मन्त्रि म हनुमच्छरित नाम का एक रचना मित्रा जिमम लयक अथवा हस्तगत का लिपिका नहा लिया गया है। इनम हनुमान का चरित्र वर्णित है—

गता मिरामणि जाना गात्र विनपित ल।

नाम जपता प्रार्थन म जाय मिद्ध जन्म। इत्यादि।

इम मन्त्रि व गाम्भ्य भण्णर म एक रचना त्तमान चापा व नाम म प्रस्तुत रचन का मित्रा जिम ब्रह्मराय म हन बनाया गया है। इमका जार म्भ र्थ प्रसार —

अथ भा हणवत चापा लिप्यन।

स्वामी मुग्रतनाथ जिण म गमरत गी मिद्धि जावद।

नात्र पाप भंग मनि हाइ नमीगार करि जात्रा भाइ।

भाग कवि आम विजय निवत्तन रग्ना —

गरगति मात्रि कगे उपगार उपन उद्धि हा विन्तार।

मुम प्रगात्र कर ज्यणि मत्री ज्ञी क्या विधि गता कर्ती।

गपिगार न रि पात्री भू जनी व जग्ध हात्र मुत्र न।

ज्यु गारुष जाणा नात्र वण रजिना व । श्री जागाय।

एस्तम म ३१ पृष्ठ है। दसन । इमरग्य प्राचान गत पन्ना है।

ग १ ० का मना गात्र लिपि म रचन माध्यममा क्या ताम रचना की सूचना था ग । विद्या प्राप्ति म्यान विद्या प्रयागिजा जत ममा ज्यु

१—जन पचायती मन्त्रि लिपि (अनकाव वय ८ दिग्ग १० प० ६६)।

२—गमा गात्र लिपि मन् १० ० प० ० मया १ ।

बनाया गया है। सूचना में यह भी निर्दिष्ट है कि जन मन के अनुसार ब्रह्मराय मन्त्र न सवत १६१६ में हनुमान चरित्र का रचना का था। त्रिवरण में ग्रन्थ के आदि और अन्त के अंग भी लिखे गये हैं। जन पचायता मन्त्र लिखा की हनुमान चौपाई तथा खाज गिपाट में निर्दिष्ट दृष्टवत भाष्यगामा क्या अभिन्न रचनाएँ प्रतीत होती हैं किन्तु इनके हस्तलेखों के पराक्षण का आवश्यकता है।

१—बहा—आदि—आ नम सिद्धम्य ।

स्वामा मुन्नत नाथ जिण्ट । मुमिरत हाथ वद्धि जानट ।
नास पाप भत्रा मति हाथ । नमो साम जातिकर दाथ ॥१॥
आत्तिनाथ जिनसवा करा । भा वचन काम चित्त मधरा ॥
अजिननाथ बन्ना जगिसार । गृही नान पावी सिवद्वार ॥२॥
सभवनाथ जपी मन गइ । अज प्रम अनुम क्षा जाइ ॥
नमो साम अभिनन्दन त्व । सुरनर फणि मिठ जाव सब ॥३॥

×

×

×

अन्त—अन्तर्गत मुनि प्रगटी नाम । कीर्ति अन्त विस्तारा जम
मधवन्त न गाइ जगण्या । तामु मन्त्र गुण जाइ न भण्या ॥७७॥
तामुभिव्य चरणा गन । ब्रह्मराइमन्त्र मति कर टण्ण ।
हणुक्वा कीपा परगाम । क्रियावत मतमुर राम ॥७६॥
भणा क्या मति मे धरि हरप । साठ्ठ म माट्ठ मभ वप ।
रति वसत माम वमाप । नवमी गनि जगारी पाद ॥७७॥
हमो काइ मत पत्ति गणा । हाथ जाति विनयु तुम गण ।
अण्णरमान ज भग्ने हाइ । तारोँ टाप त्ठ मत का ॥७८॥
वार वार नवि भत्रा प्रसार । जण म जाव त्या प्रतमार ।
जा नर नाव त्या प्रतपाट । राग माग नवि न्याव काठ ॥७९॥
जिणवर वचन एक त्ठ म त्ठ । पुगति कुणाम्म निवारी दठ ।
हाउ मग मयामा मरण । नव भय धम जिनमूर मरण ॥८०॥
स्वामा मुन्नत नाथ जिण्ट । मनन गइ मिद्धि जानद ।
नाम पाप भत्रा मति टाट । नमाम साम जाग कर गइ ॥८१॥
निहि धार अण्वत चरित्र । गुण कान त्ठ टाट मन्त ।
अजर अजर ज निमन्त नया । जा जिणन्त ममारा जया ॥८२॥ इति
ग अण्वत माप्य गामा क्या ममाप्यः सवत १७ २ वरप । चत्र मुनि
तरम नियो । गम ।

सुंदरदाम—जन कवि सुंदरदाम की रचना का नाम हनुमान चरित है। इसका रचना काल सन्त १६१६ बताया गया है। कवि के मन्त्रय म सूचना उपलब्ध नहीं है। सन् १९३२ ३४ की मभा खोज रिपोर्ट म सुंदरदाम नाम के दो कवियों का विवरण दिया गया है किन्तु ये जन कवि सुंदरदाम से भिन्न जान पड़ते हैं।^१

रायमल—रायमल त्रिगुण जन कवि थे।^२ इन्होंने राजस्थाना हिन्दू मिश्रित रचनाएँ का हैं। इन रचनाओं का काल सन्त १६१६ से सन्त १६३३ तक माना गया है। इनका एक रचना हनुमत कथा है जिसका रचना काल सन्त १६१६ बताया गया है। इनकी रचनाएँ जयपुर के जन गान्धे भण्डारा म सुरभित मिलती हैं। ये राजस्थान के निवासी जार मुनि जनन कीर्ति के पिण्य थे। इनकी अथ रचनाएँ हैं—प्रद्युम्न रासा श्रीपाल रासो भविमयत कथा नमाचर राम सुतान राम निर्दोष सप्तमा कथा जाति।

मालदेव—मालदेव की गमग वास रचनाओं की सूचना मित्रा ह का विभिन्न विषया पर लीयी गयी है। धा नाट्य न इनका परिचय दते हुए दिया है—श्वताम्वर हिन्दी रचनाओं का प्रारंभ तो कवि मालदेव म माना जा सकता है। ये कवि भटनर के चत्तरीय गाना के जाचार मन्त्रय मूरि के पिण्य थे। सन्त १६१२ विदमा (१५५५ ०) के आसनाम इन्होंने प्रारंभ मन्त्रय जार रा म्यला म करान वाग रचनाएँ लिखा। ये प्रहुत जच्छ कवि थे। जन्मी रचनाओं म इन्होंने सुभाषित भी दत्त म दिया है जिनम कुछ इनके स्वरचित भा है। इनका एक रचना जन्मा सुत्रा चापाद है। इन्होंने जतिगित इनका हिन्दी का अथ विषया पर सत्रह रचनाओं का सूचना लीयी है।

जन कवियों के अनिरक्त अथ सम्प्रदाया के राममकत कवियों के मन्त्रय म सूचनाएँ मिली हैं। मध्य युग म स्वामी रामानन्द तथा उनका पिण्य प्रणिष्या द्वारा रामभक्ति का व्यापक प्रचार किया गया था। किन्तु इन मन्त्रयाओं का रचनाओं के मन्त्रय म सूचना नहीं मिलता। स्वामी रामानन्द के नाम से मिश्रित वाली रचनाओं का प्रामाणिकता के मन्त्रय म पाठ विचार किया जा चुका है। गान्धामा तुलनात्मक के पूर्ववर्ती रामानन्दी महात्माओं का रचनाएँ प्रायः उप

१—जन पतापता मन्त्रि लीये जनदाता वप ४।

२—गान्धामा रिवाट १९ - ४ प० ६ मन्त्रया २१० ११।

—यारगाना वप ० प० ११।

४—हिन्दी माहित्य विनाय मन्त्रय—न० ७ ३६।

अन्य नहीं है। इन महात्माओं ने रामभक्ति तथा रामचरित का प्रचार करने के लिए हिन्दू मरचनाएँ बनाईयाँ की हैं। किन्तु रचनाओं के हस्त-लिखित नुस्खे नष्ट रह गये हैं। जन-प्रयोगों का भाव इनकी मूर्तियों का समुचित व्यवस्था नहीं थी। तुलसी पूव का गणनालियाँ मर्यादा की राजनीतिक परिस्थिति में जलाने विषय था। वर्तमान महात्माओं के आरम्भ में ही उत्तराखण्ड के ममलमान विजेताओं के आक्रमण से उत्तर भारत आक्रान्त हो गया था। लगभग पाँच गणनालियाँ तक देश की राजनीतिक स्थिति अस्थिर बना रहा। यह युग विनाश-काल और वनर-हिंसा का युग था। जय हिन्दू समाज और हिन्दू धर्म का तात्पर्य आघात सहन करने पड़े। इस काल के मधुपर्क में विनाश हुआ और हिन्दू सभ्यता के केन्द्र का ध्वस्त किया गया। ऐसी स्थिति में प्राचीन ग्रन्थों की सुरक्षा प्रायः असंभव थी। आचार्य पाणिनीय यद्यपि कुछ हस्त-लिखित नुस्खे भी तो अभी तक वे प्रकार में नष्ट हुए जा सकते हैं। इस प्रकार वर्तमान महात्माओं के पूवार्थ का रचनाओं के मर्यादा में हमारा जानकारों स्वरूप है और प्रायः उनका प्रामाणिकता और उनके रूप के विषय में विचार है। नाभाग्राम जान-भक्तमात्र में कुछ महात्माओं के मर्यादा में रचनाएँ हैं। इनका उल्लेख नाच किया जा रहा है। नाभाग्राम के वंश का प्रमाण काल में दिया जाना चाहिये।

मानस—नाभाग्राम ने भक्तमात्र में सूचना दी है कि मध्य युग में भक्त मानस ने रघुनाथ की गायत्री कवि प्रकृत का था। इसी रचना ठूगारी भाव का थी। मानस के सम्बन्ध में नाभाग्राम ने निम्नलिखित छन्द दिया है—

गायत्रीकवि रघुनाथ की मानस परगट करी।
 कर्ना धार भिहार जाति उचरत रम गावो।
 पर उपकारक धार कविन रुचिगत मननाथ।
 वाग्य पश्यत जति रामन इन उदा।
 जानकि जावन मुजम रहत निमित्ति रम भाना।
 रामायन नाथ का रहनि उक्ति कविन भाषावग।
 गायत्री कवि रघुनाथ का मानस परगट करग।

नाभाग्राम के विवरण में जान जाता है कि रामायण और रामनाथ के तदनुसार पर मानस ने अपने रचना का ही विधान राम का रामनाथ गणना के वंश था। मानस गौर उचरत गल पद है। इसका रचनाओं के मर्यादा में काल सूचना न मिलती। मानस के मर्यादा में जो रचनाएँ लिखी गयी हैं। उन स्थिति में जो मर्यादा में नाभाग्राम मौन है। नाभाग्राम मानस का रचना का गणनाग्राम में मानस का नाम प्रस्तुत करने का नहीं

मिया। अतएव उनका चित्रितिकारण के सम्बन्ध में निरवयव पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। मगी तुलसीदास ने भक्तमाल प्रथम में नाभादाम के विवरण का स्पष्ट किया है। किन्तु उन्होंने कोई नया सूचना नहीं दी है। उन्होंने लिखा है— जानकी जावन महाराज के जो चरित्र रामायण और हनुमान नाटक और दीगर् रामायण में पायीं गिनी है उनका माननाम जो न भाषा में इस प्रकार व गायरा से बयान किया है कि हर के मन्मूख व फायरहू वगैरे हर ने जहाँ के हैं। अगरच जुमरा नीरम अपन ग्रन्थ में मुफस्सल बयान दिया लेकिन भगवत का ठगार और माधुज रम एसा बयान दिया कि जिसके पत्त सुनी में प्रिज्जर भगवत संप्र में तनीयत लग जाता है। और जो कथायद श्रगार के धाट्टण चरित्र में उपासका ने बयान किया है उसा तरंग राम चरित्र में मानदाम ने बयान किया।¹

नाभादाम के विवरण के अनिरिक्त माननाम के सम्बन्ध में जीरे बाई सूचना नहीं मिलती। राज में प्रस्तुत लग के बाय मग्रह प्रया में माननाम के नाम में भक्ति सम्प्रदाय के नाम पत्त मिले हैं। किन्तु उनका प्रमाणिकता अवशिष्ट नहीं है।²

मुरारिदास—नाभादाम ने एक अन्य महात्मा मुरारिदास का उल्लेख किया है। विवरण से पता चलता कि ये रामिक परम्परा के रामभक्त थे जोर मारवाण के रहने वाले थे। शका रचना से के सम्बन्ध में सूचना नहीं मिलती। नाभादाम ने निम्नलिखित विवरण दिया है—

दृष्टि विरट कुन्ता तरीर त्या मुरारि तन त्यागिया।
विश्वि विगैग गाव दम मर्यर मर जान।

१—तुलसीदास—भक्तमाल प्रथम—पृ० २ १।

२—राम साहित्य पृ० १ ।

भात रनावडा—पृ० २ २—

भात करत जावता मया। (एक)।

जोर राम ने चारि सिद्धांत मरे गणि वाणि उपा।

रघुवर लोचन मरत गदुगत नर लोचन के छया।

रक्त जग्नि वा लोचन ये म है उरर रर लुपया।

मानु कोपल्ला वरत सगा गउ करत ल वया।

वात मुहुत मारगटा तुलसी पर माई यापदाहिया।

माननाम के नामा बाया मुल्ल राम रमया॥

महा मटाळो मय मत परपण परवान।
 पगन घूबट वायि राम का चग्नि जिगायो।
 दमा सारग पानि हम ता मय पठाया।
 उपमा और न जान म पया यिना ना तिन धिया।
 वृष्ण विरह कुना मरार त्यो मुरारि तन त्यागिया।

खेमाल रतन—इसी प्रकार रामभक्त समाज रतन रागौर का सूचना नामा दाम ने भक्तमाल म ली है। य निष्ठावान राम भक्त थ। इनका भक्ति पद्धति मयुर भाव की था। किंतु इनके स्थितिकाल और इनकी रचनाजा क सम्बन्ध म नामात्मक न कोई जानकारी न ली है। नामात्मक का विवरण इस प्रकार है—

समाजरतन रागौर क जवण भक्ति आई सदन।
 रना पर गुन राम भजन भागीन उजागर।
 प्रभा परम विमार उतर राजा रतनाकर।
 हरि नामन के दाम दमा ऊवा ध्वज पारी।
 निर्भे जतनि उगार रसिक जम रमना धारा।
 दमया सपनि मत वण सण रतन प्रकल्पि वदन।
 समाज रतन रागौर क जवण भक्ति जाण मन्त।

मुक्तामणिदास—मध्यकाळ क एक जय प्रसिद्ध रामभक्त मुक्तामणिदास थे। इनका सम्बन्ध भक्तगीताम न नामाई चरित है किया है। ना भगवत प्रसाद सिंह जिन्हे रसिक भक्त मानत हैं। मुक्तामणिदास गास्वामा तुलसीदास क जीवनकाळ म वतमान थ। इनका रचनाजा क सम्बन्ध म सूचना न मिलता। इनके स्थिति-काळ क सम्बन्ध म जार कुठ निश्चित रूप मे नहा कहा जा सकता। अथाध्या म गास्वामा तुलसीदास जा स इनका भेंट हुई बताया जाना है। गास्वामा जा का उम समय मुक्तामणिदास जा न निम्नलिखित पं मुनाया थ —

गयन करहु रघुमार पियार।

हो पण्डे जा कौमिल्या वण भूप उठि भवन भियारे।

मगल याम यामिना बाता है नयन नान भरे रतनारे।

प्रफुल्लित मरल कावन माता मण समार मण्य कर धार।

रतनरसि मणिमय मण्डिर मण रचि मुचि माभिन जनक मुनार।

मा जावन महचरा मिया का मयन उचित मव माज गवार।

अनि जाण्य वन भरे भक्त यन जवन गल रिपुन उजियार।

मुनन मवण न पान बिना करि उण तान मक्तामणि वार।

यह गयन के समय का आरत। का पत्र है। गयनकाशीन मवा रसिक भक्ता की अष्ट्यामीय सेवा का अंग है। स्वामी रामानन्द न दाम्य भक्ति पर ही विराप वल किया था किन्तु कालान्तर म रामानन्द सम्प्रदाय जय वण्णव सम्प्रदाय के सम्पर्क म आया। कृष्ण भक्ति म प्रचलित अष्ट्याम पूजा पद्धति की भाँति भक्ता म भी अष्ट्यामीय पूजा का प्रचार हुआ। अष्ट्याम पूजा पद्धति का प्रचार स्वामी अग्रनास न किया था। उनका अष्ट्याम नामक ग्रथ भा मिलता है। उनक उपरान्त नामात्मास न इमी परपरा म रामाष्ट्याम की रचना का। पर्वर्ती काठ म श्री रामचरणनास महय जावाराम कृपा निवाम युगलानन्द गरण आदि महात्माओ ने इस पद्धति का प्रचार किया। आजकल इस पूजा पद्धति का पर्याप्त प्रचार है। स्वामी अग्रनास क अनुसार आठ याम इस प्रकार हैं—निगान्त प्रात पूर्वाह मध्याह्न उपरान्त माय प्रयाप और राति। इन विभिन्न यामा म आराध्य का अनुकूल सेवा की व्यवस्था न अष्ट्यामीय पूजा पद्धति म हाती है।

परशुराम देवाचाय—परशुराम देवाचाय निम्बाक सम्प्रदाय के मन्त्र मा थे। इनकी रामचरित सम्बन्धी रचनाआ रघुनाथ चरित मध्यान्त अवतार की सूचना दी गयी है। य ग्रथ प्रस्तुत लखक का लखन का न मिल सक। मगुण भक्ति सम्बन्धी पत्रा म भा रामचरित क पत्र मिश्रत है। उनका म्यिनि का अनिश्चित है।

निम्बाक सम्प्रदाय वण्णव सम्प्रदाया म लौकिक मिद्धाता और प्राचीनता की शक्ति स प्रतिष्ठित एवं महत्वपूर्ण माना जाता है। निम्बाक मत के मत्र प्रथम उपवण्ण हम भगवान मान जाते हैं। सम्प्रदाय क प्रवतक निम्बाकाचाय क मत्रय म कोई निश्चित सूचना नहीं मिश्रता। किवन्ती है कि निम्बाक का जन्म आर्य प्रणेश म ब्राह्मण परिवार म हुआ था। आर्य प्रणेश म निम्बाक मत का प्रचार नहीं मिलता और न वही इस मत का कोई प्रसिद्ध पाठ है। इस मत का मन्वद ब्रज मण्डल म है और गावघन क निकट निम्ब ग्राम निम्बाक सम्प्रदाय का मुख्य स्थान है। निम्बाक का जन्म गातावरी क तट पर वदूयपवन क निकट अरणाश्रम म अरुण मुनि की पत्नी जयन्ता देवी क गर्भ से हुआ था। यह भी कहा जाता है कि इनका आरम्भ का नाम नियमानन्द था। निम्बाकाचाय क नाम म प्रसिद्धि क मन्वद म किवन्ती है। निम्बाक मयुरा के पास यमुना के तीर पर ध्रुव क्षत्र म निवाम कर रहे थे। उम समय एक मयामा उनक पास आया। मयामा क माय अष्ट्याम चर्चा म क तत्पान हा गय और मध्या हो जान का उन्हें पता न चला। जय उगान अतिथि का भाजन पगना चाहा ता पता चला कि मयामा रात्रि म भाजन न करेगे। इसी निम्बाक का मानसिक ध्यदा हुई। इसी समय एक विचित्र पत्रा

घटा। अतिथि जीर निम्बाक दाना ने देखा कि आत्रम म नाम क वश क ऊपर सूय धमक रहे हैं। इस पर अतिथि ने भाजन किया। भोजन क उपरांत सूयाम्न ही गया जीर रात्रि का अपकार छा गया। इस घटना क प्राण जाचाय का नाम निम्बाक अथवा निम्बाकाचाय पने गया जीर उम स्थान का निम्ब ग्राम क नाम म रघाति मित्री। साम्प्रदायिक मायना के जनेमार निम्बाक का अविभाज काठ पाच हजार वष पूव है। ए भण्णारकर ने निम्बाक सम्प्रदाय का गुरु परम्परा की परीक्षा कर निम्बाक का समय मने ११६२ क जाम-माम निश्चित किया है। एमी समय को जावनिर्ग सिद्धान प्राय स्वाकार करते ह। नि बाक क चार गिष्य बनाये गये हे—श्री निवासाचाय जौदुम्बराचाय गौरमुवाचाय जीर लक्ष्मण भट्ट। निम्बाक मने क जाचार्या म पुन्यात्तमाचाय दवाचाय मुन्तर भट्टाचाय और केगव कश्मारी थ। केगव कश्मीरा निम्बिजया पणित ए जीर कश्मीर मे जपिक काल तक निवास करने के कारण कश्मारी कश्माल थ। इनका स्थिति काल निश्चित नहा है किन्तु कुछ विद्वान इह जगज्जदीन विजया (गामने काल १२९६-१३२० इ) का समयमानयिक मानते हैं। केगव कश्मारी क पश्चान सम्प्रदाय क तीन जाचाय गुरु गिष्य परम्परा म त्रिमिक रूप म उतराधिकारा हुए। य हैं श्री भट्ट हरियाम दवाचाय और परणाराम दवाचाय। इन महात्माश्री ने भक्ति साहित्य का निर्माण किया। इनक स्थितिकाल क सम्बन्ध म विचार है।

श्री भट्ट के सम्बन्ध म जाचाय गुवल न सिवा है—य निम्बाक सम्प्रदाय क प्रसिद्ध विद्वान केगव कश्मीरी के प्रधान गिष्य थ। इनका जाम सवन १५९९ म जतमान किया जाता है अत इनका कविता काठ सवन १६२५ या उमने कुछ जाग तक माना जा सकता है। इनकी कविता मारा मारा है जीर चरनी भाषा म थ। पद भा प्राय छोटे-छाट है। उनका कृति भा जपिक विन्तन नया है पर यान गनक नाम का सी पना म उनका ग्रन्थ दृश्य भक्ता म दत्त जात्र का कृति म रखा जाता है। जाचाय गनक न हरियाम दवाचाय जात्र परणाराम दवाचाय क विषय म कुछ नहीं सिवा है। ए प्रातन्प्राण मने न इन महात्माश्री क स्थितिकाल क सम्बन्ध म विचार किया है। उमने ब्रह्मचारा विचारा करण का निम्बाक मापरा म त्रि गय वन का जगन्नाथिक माना है। विद्वारा गरणजा क जनुमार म भट्ट का समय मने १ ५२ जा हरिद्वार म समय मने १ २०

१—भगवत—वर्णविद्य गविम—१ ८७

२—हिला गान्धिय का स्थितिकाल—१० १८८

है। डा गुप्त न अपना मत व्यक्त करत हुए लिखा है—वास्तव म ब्रह्मचारी जी न इन रचना भक्ता वा विद्यमानता का सवत गन्त दिया है। निम्वाक सम्प्रदाया तथा पगल गतक क रचयिता श्री भट्ट, केशव कर्मारी के गिप्य माने जात हैं। इनका (श्री भट्ट) रचनाकाल सवन १६१० विजयमा २। श्री हरिव्यास देव का रचनात्मक भा मूरुगम क समय का ही ह। वम निम्वाक सम्प्रदायी हरिव्यास स्व जा जायु म मूरु स बडे थे।' केशव कश्मीरी का समय निर्दिष्ट नहा है। अतएव गुप्त गिप्य परम्परा म हुए भट्ट हरिव्यास देवाचाय और परशुराम देवाचाय का समय निर्धारित करन म पुष्ट प्रमाण की अपशा है। इनका रचनाआ म काठ गन्तधा अन्तर्माय नहा मिलता। सप्रदाय क महात्माजा म श्री भट्ट न सवप्रथम त्राभाषा म रचना की। इनका रचना युग गतक म वा आश्विना क नाम रा सम्प्रदाय म प्रसिद्ध है रचना काल सम्बन्धा एत ताहा है —

नयम वाण पुनि राम गणि गता जक गति वाम।

प्रगत् भशा था पगत् गत यह सवत अभिराम।।

राम ताह म पाठभद भा मिश्रता है। दाह का उन्धत करत हुए सभा खाज रिपाट क निग ता ग टिप्पणा म कहा है—गिपि का मामूरी गलती स यह उत्पन्न उत्पन्न ा गया। पहला पवित्र म राग क स्थान पर राम लिखा गया राग की गण्या छ हाती है। इस तरह १६५२ सवन बरल कर १२५२ हा गया। यह निधि १९०६-८ की रिपाट म दी हू है।' राग का राम कन हा गया इस पर रिपाट म वाइ प्रकाश नहीं डाला गया है। यह उत्पन्नताय ह कि सम्प्रदाय म श्री भट्ट का समय सवन १२५२ हा माय है हरिव्यास और परशुराम का समय सवन १३०० और सवन १४५० माना जाता है। इस प्रकार रत्न महात्माजा का समय विवाद प्रसन्न है।

नानाशय न परशुराम स्व क सम्बन्ध म गिम्नर्गित उरण किया है—

था चरन का पवन गिर पुनि चरन क।

बून कात्त सम निरिड उ दापक ज्या हरत्।

श्री भट्ट मुनि हरिगत गत माग्य अनुमर्द।

कथा का रान नम रान हरि गुन उवरत्।

गाविल्ल प्रम गन्तराग गनि गित्त तात्त य वत्।

जगता दम क गाय तर परशुराम निन पाण्ड।

१—अष्टछाप और चरन सम्प्रदाय पृ० -

२—गभा गात्र रिपाट, १० - २५ पृ० १, २

नाभादास व वणा मे जात हाता है कि परगुराम देव न जमगा दग क गदा के बीच भक्ति का प्रचार कर उह पारप जयवा वणव बनाया। जगगा दम म तात्पय जागठ प्रदग जथवा राजस्थान क भूभाग स है। विचन्ना है कि जजमर क निकट उहान सलामगाह नामक फकार का परास्त किया था जोर फकार इनका मिदिया क सामन नतमन्तक हा गया था। जिस स्थान पर यह घटना हुई था उसी का परगुराम ने अपना प्रचार केन्द्र बनाया। यह आग चलकर परगुराम पुरी किशनग आचाय पीठ क रूप म प्रसिद्ध हुआ। यही परगुराम का मत्य भी हुई थी। इस प्रकार नाभादास न परगुराम क कायभय के सम्बन्ध म ठीक सूचना दी है। परगुराम नाभादास के (सवत १ ४२ विक्रमी) म पूव हा चके थ जोर नाभादास क समय तक प्रसिद्ध महात्मा हा चुक थे यह भक्तमात्र क वणन से स्पष्ट है। राजस्थान म वणव भक्ति क प्रचार म तथा स्थानि प्राप्त महात्मा हाने म समय अवश्य लगा हागा। अतएव परगुराम देव का १६०० विक्रमा क आम-मान अथवा उसके पूव वनमान हाता माना जा सकता ह।

परगुराम का रचनाए परगुराम सागर म सग्रहान मिळता है। श्री भट्ट की रचना युगल गतक आदि वाणा क नाम स प्रसिद्ध है। आदि वाणा पर आ भट्ट क निप्य हरिव्यास देव का भाप्य महावाणा के नाम स प्रसिद्ध है। इसा प्रकार परगुराम का रचनाए आरम्भ म क्वाचित परगुराम वाणी क नाम से जाना जाती हागा। अनन्तर मूरसागर के अनुकरण पर उमरा नाम परगुराम सागर हुआ हागा। सवत १६७७ म लिपिवद्ध परगुराम वाणी सुरािन है। परगुराम सागर म निम्नलिखित रचनाए सग्रहान है।—

१—निधि लीला २—वारलीग ३—बावरी गीग ४—विप्रमतीगी
५—नाथ गीग ६—पदावती ७—रागरय नाम गीग विधि ८—साच निपय लाला ९—हरि लाग १०—गीला समझना ११—नयत्र लीला
१२—निजरूप गीग १—निवाण लाग।

डा मानाला मनारिया ने परगुराम के बार्म प्रया की सूचना दी है—

१—माया का जाग २—ठल का जाडा ३—मवया दम जवतार
४—रथनाय चरित ५—आ वृष्ण चरित ६—सिगार मुग्धा चरित
७—पैप का जाग ८—छापड गजग्राह वी ९—ग्रहग चरित १०—

१—मभा ग्रात्र रिया १९ २— ८

नागरा प्रवाग्निा पत्रिका वर ८१ अंक (४) सवत १९७९ १२२-१४०

—गजग्याना भाषा जोर माहिल्य प १४२

अमरवाच गग ११—नाम निधि शीला १२—गोच निषेध लीला १३—नाथ
गग १४—निजस्य गग १५—श्री हरि लाग १६—या निवाण लाग
१७—मममणी शीला १८—निधि गग १०—नद लीला २०—नथप्र
लाग ०१—बावता लीला २२—विप्रमती तथा ७ ० क गगमग फुल्ल पत् ।

परमुराम देव का कविता का नाम परमा था। मगुग भक्ति मन्त्रा पत् म
राम चरित के पत् मित्र है—

लक्षण बाण धनुषि न मीहि जुद्ध की हम र ।
माया साल का सह सदा रुप करि हू अमुग विषम र ।
प्रगटी आरु जुद्ध विद्या वर मुमन मिनु साल्म रे ।
परमुराम प्रम उभगि उडे हरि गते हाथ अथम रे ।

परमुराम के पत् म राजस्थानी वर पुत्र पाया जाता है। एउ पद दूष्य है—

गाविद म वलाजन तग ।
प्रात मम उठि माहन गाऊ ता मन मान मरा ।
कनम करम भरम कुल करणा तागी नाग न जामा ।
करु पुवार द्वार मिग गाऊ बाऊ ब्रह्म विघाता
परमुराम जन करत वीनती मुणु प्रभु अविगत गाया ।

मध्य रग क भक्ता का स्थिति साल विवाङ्मन है। हम युग क राम भक्त
कविया क सम्बन्ध म योज रिपाटों भक्तमाल आरु मूत्रा स मूचनार्ण मित्रनी
हैं किन्तु इन मन्त्र म निधान्म मत स्थिर करन के लिए प्रमाणिक सामग्री मप्रति
उपलब्ध नहीं है। हम रग क कविया के सम्बन्ध म व्यापक खोज काय की अपेक्षा
है। तुलना पूर्व-युग क कविया की अप्रकृतित रचनाभा क प्रकाश म आ जल पर
तथा एउ सम्बन्ध म विवगनीय सामग्री उपलब्ध हान पर हम साहित्य का सन्धक
विचन सम्भव है। मरगा।

गाम्वामी तुलनाम के पूर्व हिन्दी क्षेत्र क बाहर रग क अथ भागा म विम्बुन
राम साहित्य का रचना हू था। य रचना प्रणीय भाषा म निवद्ध है। कवर
शुन रामयण विण भाषाभा म रामचरित मन्त्रा मव प्राचान काव्य है। मगकी
रचना १२ वा गता म कवर नेतमि मभाषा म का था। तन्म भाषा म तन्म
गता म प्राग्म म शिप रामयण का रचना हू था। हम गगप्रिय शिप छल
का प्रमाण दिया गया है। हम र रचयिता रगनाय क जान है। १ वा गता म की
दा अथ रचना उतर रामयण तथा निववनातर रामयण भा मित्रा है जिनकी
कथावन्तु उतरकाठ पर आपारित है। मन्त्र का अथ प्रसिद्ध रामयण भास्वर कन
भास्वर रामयण है जिनकी रचना चौथी गता म हूई था। इमा प्रकार

मन्यात्म म रचित राम चरितम गीतवा गताली का रचना है। जा मन्यात्म की मवप्राचीन रचना है। राम नामक कवि ने मन्या रचना की थी। मन्या यग का दूसरा रचना रामन्याप्याटु है जिसमें राम रावण यद्ध वर्णित है। मन्यात्म म १५ वा गताली म रामचरित मन्वया दा रचनाए मित्रा है। कर्णा कृत कर्णा रामयण म जाति काव्य का अनुवाक प्रस्तुत किया गया है। मन्या रचना रामयण चम्प है। जायभापाजा म अममिया म हरिविप्र का कृति चरुणा यद्ध की सूचना मित्रा है। इसका रचना १४ वा गताली म हुआ थी। इसी गताली म अममिया क काप्रिय राम चरित माघव कर्णा कृत रामायण की रचना हुई था। पन्हा गताली म गकरत्व न उत्तरवाण तथा रामविजय नाटक का रचना का था जोर उनके गिप्य माघव देव न गानका का प्रणयन किया था। बगदा क कृतिवाम रामयण की रचना पन्हा गताली क अत म हुई थी। उरिया म १५ वा गताली म सिद्धवर परिण न जा मारगताम क नाम म प्रसिद्ध है रामयण की रचना का थी। इनका रामायण अप्राप्य है किन्तु महाभारत जोर चण्णी पुगण मित्रा म मराठी म भावाथ रामायण रामचरित मन्वयी विगिष्ट एव प्राचीन रचा है। एकनाथ ने इसकी रचना १६ वा गताली क अत म की था। १७ म १४ वा गताली का जामाईत का रामगता ना प्या प्रथ मित्रा है। १८ वा गताली की रचनाए थ है—माण राम विवाह जोर राम वाच चरित मजी कमन सीताहरण भीम रामठाठा न प्या माण रामयण। इनक अनिरिक्त राम चरित सवधी आर भा रचनाए मित्रा है। हिती तर प्रगाय भापाजा म रामचरित सवधा कतिपय कविया का हिती रचनाए भा मित्रा है। मनर सम्पय म यहा म प्य म सूचना दी जा रही है—

गकरत्व—भवा गकरत्व अमम प्रण क निवामा थ। ताका जम सवन १५ २ (१४९ २) म जमम म नोगाव जि क दाराना ग्राम म हुआ था। गकरत्व अममिया साहित्य क जमनाता कहे गये हैं। गकरत्व राषाय २०। उनका दर्शन सवन १६२ (मन १९ ९) म हुआ था। उनर ग का नाम महद काटिया था।

गकरत्व न मन १८८१ म १२ वय का म्वा ताथयाथा का। ग यात्रा म व कणा उगावन जोर म्वा ११ ग। वागा क वरा म मारा भू का उगा कुण विमाना न किया है। ग विरवि कुमाव व जा न वाताया है हि गकरत्व काण म कवाव क म्वा न मित्रा थ जोर कवाव का रचनाआ म प्रभावित म्वा व। वगावन म गकरत्व न प्रजनाया गाया था जोर माहाण क जमम्य म हा कृता कया तथा प्रजनाया काव का अतगाणत किया था। उहाण प्रजनाया म वगाता

का रचना का है।^१ य वरगीत व्रजगुलिक प्राचीनतम उदाहरण मान गये हैं। कहा जाता है कि प्रथम वरगीत का रचना गार्ग्य न वदनाथ म मा था। इतना वरगीत नीचे दिया जाता है—^१

धृत्—मन भरि राम चरन्हि लागु
त न्ये न अतक जागु ॥

पत्—मन आपू क्षन-क्षण टूट।
देगो प्रान वीन दिन छूटे ॥
मन काल अजर गि ॥
जान तिठे क मरन मिठ ॥
मन निश्चय पतन काया ।
तद राम भग तत्रि माया ॥
र मन इ मव विषय घना ।
वेन दगि न दगत अपा ॥
मन मून पार क ज वि ॥
मुम चनि या चिन गावि ॥
मन जानि या गरर वह ।
दला राम वि गनि न ह ।

गार्ग्य न मायव कृता कृत असमिया रामायण क उत्तर काण्ड का रचना की थी। इसमें सीता वनवास में स्वगृहात् पयन रामनया का वणन किया गया है। क्या धम्नु वामीकि रामायण के अनुसार है।

रामचरित सम्बन्धा गार्ग्य का एक नाटक राम विजय मिश्रा ह। इस रचना में विष्णुमित्र क अथाध्या म जगमन स राम विवा क उपरान्त राम क अथाध्या लौटन तत्र की क्या का वणन किया गया ह। गाता स्वयंवर क समय अथ रात्रा का राम पर आश्रय तथा अथाध्या गन्त समय माग म परागम न नै का क्या ग गया है जा वारमाकि रामायण क्याधम्नु म निद्र है। कुछ विद्वाना न राम विजय नाटक का मयिग का कृति माना है। नव अनुमाग मिथिग प्रण म विद्यापति क समय क आगया गत्या का रचना अरम्भ गयी मा। विद्यापति क पंचान उगपति अथाध्याय का पाणिग रण नाटक तथा जय रानत उगपत है। मयिग नाटका का परम्परा अगम प्रण म भा पाया गया है। जय म न

१—असमात्र लिखक—ग २१ २६

नाटक का जकियादक कहा जाता है। डा० वरआ न जकिया का उत्पत्ति जगिका अभिनय स बनाया है। जतिपय विज्ञाना का मत है कि असम क वण्णव भक्ता न भक्ति प्रचार के लिए विद्यापति की भाषा को अपनाया। उन भक्ता की कृतिया रामायण महाभारत तथा राम-भागवत पर आधारित हैं। हिनार प्रान्ता क कविया न भाषा और भाव क माव्यु म जाहृष्ट हाकर ब्रजभाषा मही रचनाए की थी यह जय विज्ञाना का मत है। गकरदव क इमी काटि क दा अय नाक कालियमन और रुक्मिणा हरण हैं जा कृष्ण कया पर आधारित है।^१

गकरदव क गिप्य माघवदव न जममिया रामायण क वाग्वाण की रचना की था। इहान गकरदव का भाति वरगीत लिखे हैं। य मूरदास के समकालीन थ। जकिया नाटक परम्परा म इनक कृष्णकया पर आधारित नाटक अजन भजन और भाजन व्यवहार मिलने है। इनका जम सवन १५६६ म हुआ था। ब्रजभाषा की इनकी रचनाए प्रौ है।

मालण—गुजरात प्राचीन काल स ही भक्ति-क्षन के रूप म प्रसिद्ध रहा है। इम प्रदेस म कृष्ण भक्ति का प्रमुखता मिली। गुजराती साहित्य का वन्त बडा अण कृष्ण कथा पर आधारित है। यह प्रदेस श्रीकृष्ण का लाभास्थल भी रहा। गुजरात क कविया की आरम्भ का रचनाए अपभ्रंश म मिन्ती हैं। श्रीकृष्ण क जम प्रण ब्रज की भाषा के प्रति भायहा आगा म आरुपण हुआ और कवि समाज म ब्रजभाषा समाप्त हुई। मध्य यग म ब्रजभाषा अथवा ब्रजभाषा मिन्त प्राचीन गुजराती म रचनाए मिन्ती हैं। इन प्रणा क कविया न राम चरित सबधी काव्या का भा निमण किया। इम १४ वा गताली के जामादत कृत रामायण ना पण का उल्लख निष्ठ कया जा चुका है। इमक पञ्चान मालण ने राम विवाह और राम-वाक चरित काव्य की रचना का था। उनक पुत्रा उदव और विष्णुनाम न सम्पूण रामयण का रचना सवन १०१५ म का था। माण का समय विवाग्भ्रम है। किन्तु मामायणस भाय मत यह है कि मालण विक्रम का १५ १६ वा गताली म वनमान थ।^२ इम प्रकार य मूर क पूर्ववर्ती ठहरत है।

माण न ब्रजभाषा म भा रचनाए का है। कविता म य अपना नाम माण जन रखत थ। इनक ब्रजभाषा म प्राप्त पण कृष्ण भक्ति सवसा हैं। गुजरात म इहाने राम-वाक्य का रचना का था। मभव है रामचरित मन्वना हिनी क पण भी इहाने बनाम हा। किन्तु इम प्रकार का रचना अभा प्रकाश म नया आयी है।

१—मविग साहित्य का इतिहास—ग० जयकान मित्र—ग० ६२ ६५

२—क० मा० मणा—गुजरात एण म मरिचर।

वर्षों विद्वत्विद्यालय के आरिस्टल इन्स्टीट्यूट के नियामक प्रा० माधेमरा ने सूचित किया है कि विजय का १६ वां गतांग में माधेम ने रामायण की रचना की थी। माधेम का कृति अमूर्त है।^१

राम चरित मन्वन्था काव्या की हिन्दा तथा हिन्दान्त प्रथा में इस प्रकार विविध सूत्रा में सूचनाएँ मिलती हैं। इनका परिणाम अत्यधिक है। इनमें रामायण का व्यापकता का प्रियता मिद्ध हाना है और यह भा स्पष्ट हा जाता है कि राम चरित के आन्तर पर भक्ता एव कविया द्वारा विभिन्न युगा में विस्तृत राम साहित्य की रचना का गया। ये रचनाएँ विविध साहित्यरूपा में निवद्ध मिलती हैं। इन सूचनाओं में निम्नलिखित सामग्री के परात्पण का अपत्ता है। प्राचीन प्रथा के प्रकाश में आ जान पर तथा उन परात्पण-अनुगात्त के पञ्चान गाम्बामा तुम्मात्तम के पूर्व रचित हिन्दा राम साहित्य का और अधिक विगत एव सुदृक्कल स्परवा प्रम्नुत की जा सकती।



परिशिष्ट

हस्तलेखा म पब्लिश कतिपय रचनाएँ

स्वामी रामानन्द

(संवत् १ ७६-१८६७ विमा)

राम अष्टक

अवधपुरा त्रिज घाम बन्ना नासु सरजू गग है।
दमरुय नरुन अमुर गजन आ गम नाव पुन ब्रह्म है ॥१॥
मय माता घात गठमन धतप धारा श्रागम है
चात्रकु तप गार बगय श्रागम जाय पुन ब्रह्म है ॥२॥
रुद्रपुत्र छत्र माहू जारा एग्यानाग ननसात है
रावन मारावा भापन बापा श्रागम जा पुन ब्रह्म है ॥३॥
मारहू बग नुग चाग प्रगटा गान जीप नव सत है
आता अत मध्य ग्याजा लया श्रागम जा पुन ब्रह्म है ॥४॥
भाल तीरुन बाभात गचन आन ब श्रागम है
स्वामि गुरनि मरुन गुरनि श्रागम पुन ब्रह्म है ॥५॥
अस्य माया नव नाया लया नस्ति मरुता वर लयव
गान जाय ररुप ररु श्रागमना पुन ब्रह्म है ॥६॥
धनना हाँ धन माँ धन जाग ररुना लया रवा
करुना बगवार महा मुक्ता श्रागम ना वरुन ब्रह्म है ॥७॥
ब्रह्म विन्दु मरुत गारु वाशि ररुना रवा
ररुनास मरुतासि गावुना श्रागम जा पुन ब्रह्म है ॥८॥
राम अरुप ररुना नाँ लिन ररुत ररुत माग ररुत
गानुन अवतार जयनु श्रागम जा पुन ब्रह्म है ॥९॥

ध्यान लीला

मूरप तन घर कहा कमायो । राम नजन बिन जनम गमायो ॥
 राम भगति गत गणा गहा । मरू मूनी घघा माही ॥१॥
 मरी मरी करता फिरियो । हरि ममिगण ता कटू न करियो ॥
 नारा सेती नह गमायो । कबहु हिरद राम नहि जायो ॥२॥
 सुप माया सू परा पियारा । कबहु न सिवरथी मिरजनहारी ॥
 स्वारथ माहि चहु निमिघायो । गावित् कागण कबहु न गायो ॥ ॥
 एम ऐसे करत बहारा । आय साहिव क हृत्कारा ॥
 वन काल कीयो चारणा । सुत बटी नार काइ नहि मगा ॥४॥
 जा तुम करम काया ३ भारी । मा अब नग मु चउ तुमारी ॥
 जम जाग ७ ठाग कीनी । घरम राय बूचण बू लानो ॥५॥
 बाधा कौन कीया त करमा । मिरजन हार न भयो निमरमा ॥
 जिण पाणा म पदा कीयो । नर सी रूप ताहि क दीयो ॥६॥
 जा तू विमरयो मूरप अवा । ती तू जायो जम प बवा ॥७॥
 हरि की क्या सुनी नहा बाना । ती तू नाहा जन मू छाना ॥
 साथ क सगत मै कछून रहियो । मुषसू राम कटू नहि कहियो ॥८॥
 हरि का भगति करी नर नारा । घरम राय पू कहै त्रिचारी ॥
 मौकू दाम न दाज काई । जिसा करम भगताऊ माई ॥९॥
 पाप पन कू यारा छाणू । जा तुम करम करा सा जाणू ॥
 तुमरा करम तुम भगताऊ । जाण पुरा का जाग्या पाऊ ॥१०॥
 साहित्य की अग्या है मौकू । महा कमीटा दहू ताकू ।
 घडा घडी का लया हू । करमात्कि तरा भर दहू ॥११॥
 है हरि बिना कून रपवारा । चित्त द सिवरी मिरजनहारा ॥
 सबट मै हरि बहु उवारी । निम तिन मिमरी नाम मरारी ॥१२॥
 नाम निकवल मवन यारा । रटत अपन घन हाय उजारा ॥
 रामानन्त यू कहै ममजाऊ । हरि मिमरयो जन राव न जाऊ ॥१३॥

राम रत्ना

औ मय जनानि पुरम मत्य मत्य मुरू
 मध्या ताग्या मव टुम विनारणा ।

सध्या उच्चर विघ्न टर ।
 पिंड प्राण की रक्षा श्री नाथ निरजन करें ॥१॥
 चान घूप मन पुष्प इन्ध्रि पच त्रुतागतम ।
 क्षमा जाप मनाधि पूजा नमा देव निरजनम ॥२॥
 औं अखंड मडलाकार व्याप्त यन चराचरम ।
 तत्पट दंगित यन तस्म श्री गुरव नम ॥३॥
 परम गुरवे नम परात्पर गुरव नम
 परमात्म गुरव नम आत्मा गुरव नम
 आदि गुरदेव अनानि गुरव नम
 अनंत गुरदेव वं चरणरविंद्र को नमो नमस्कारम ॥४॥
 हरत सकल सताप दुःख दालिद्र राग पीडा बल्ह बल्पना
 सकल विघ्न खड खड तस्म श्रीराम रक्षा निराकार वाणी
 जनम तत्त निर्मो मुक्ति जानी ॥५॥
 वाधिया मूल त्रिधिया अस्थूल
 गगन गरजत धुनि ध्यान लागा ।
 त्रिगुण रहित सीत सतोप मैं
 श्रीरामरक्षा लिय आकार जागा ॥६॥
 पच तत पचभूत पचीम प्रकृति
 पच भू आत्मा पच बाई ।
 सम त्रिपि सम घर आणी प्राण अपान
 उपाय ध्यान मिलि अनहन् मन् की पवरे पाई । ७॥
 उलटिया सूर गगत भदन क्रिया
 नकग्रह डक छदन क्रिया
 पीपिया चण जहा कत्रा सारी
 अगनि परण भई जुरा बदन जरी
 डकनी मकनी परि भारी ॥८॥
 धरनि अनाम द्विचि पच चलता क्रिया
 अगम निगम महारम अमृत पिया
 भूत प्रत दत्य दानव मपारा क्रिया

१—राम रक्षा व प्राण प्रतिवा म पर्याप्त पाठ भिन्नता मिलता है। आन्ति श्रीर अन के अत्र प्राण सभी प्रतिवा म भिन्न हैं ।

वज्र की वाठरा वज्र का डट ते
 वज्र का खरग वाग मारा ॥१॥
 गरुड पया उर्या नाग नागनि डम्या
 विष का लहरिस निद्रा न थाप ।
 पित्र निरमर हुआ पिजरे पना सुआ
 राग पाटा गिया नहि दह व्याप ॥१॥
 राम राम ररकार उच्चरत वानी
 श्रवण सुनता रते समन्वित मलि मेल ।
 जिनमिना ज्वाति रुणवार बन्वता रह
 नाल विद मित्र भया रग रेल ॥११॥
 सनि के नहरा सनि सीपत रहै
 आपुम आपु मिलि जाप जाग्या ।
 मरार मा मगर मित्रि मरार निरपता रह
 जावसौजाव मित्रि ब्रह्म जाग्या ॥१२॥
 नन सौ नन मिलि नन निरपत हेर
 मप सा मप मिलि बोल बाल्या ।
 सवन मित्रि नात्र साजत रहे
 सत्र सौ सत्र मित्रि सत्र पाया ॥१॥

निरति सा निरति मित्रि निरति गगा रह
 सुरति सूर मुगति मित्रि मुगति आव ।
 ध्यान सा ध्यान मित्रि ध्यान मपन रह
 रग सा रग मित्रि रग पाव ॥१६॥
 ग्यान मा ग्यान मित्रि ध्यान सौ ध्यान मित्रि
 तप जजपा तप मात्र तप नात्र तप
 चित्त मा चित्त मित्रि चित्त चनन भया
 ज्ञानमा त्रिष्टि सा नाव तप ॥१७॥
 गार मा गार मित्रि नाम मा माग मित्रि
 जाव मा जाव मित्रि त्रि विर्य मित्रि नत्र मरा ॥
 मित्र गया घात्र जघ्नात्र नि गार म
 स्वन फत्रिक मति हार वत्रा ॥१६॥
 अरत नन उचरन वन चत्र अरु मूर नाड गरिया धार ।
 एतव नुवार मचना रते अत्रिया गीरिया वावन वार ॥१७॥

गग उन्नी च नानु पच्छिम मिन् निवमिमा त्रिव परवाम वीया ।
 जामा माहि तीतर रग्मा र्ह यू अजगवर हाय बापु जाया ॥१८॥
 युगायुगा र्णरणा वणत्रणा ता ता सुपमता वाउ के साज साजा ।
 चाचरा भूचरा पचरा जाचरी उनुनी पाच मुद्रा साघने मिद्ध राग ॥१९॥
 र्द डूगर जत्र जीर धल वाट जी घाट ओघट निरजन निराकार रक्षा कर ।
 वाय बोधिन वा करू मुप काला चौमठ यागिनी वाटि कुटवा कर ।
 पचरा भूचरा पचपाला नौ ग्रह दून पापड टा ॥२०॥
 जविल ब्रह्मा विदु लाक म र्णाद फिग्वा कर ।
 अविन् पुष्प निरजन निराकार वा चन फिर वा ग्या ॥
 दुष्टि अर् मुष्टि छल छिद्र म वार वता नवग्र अवघ हात पापड बापा ॥२१॥
 पथ मै धार म सा म चार म दम परदस म राज क तज म ।
 अग्नि क शा म नाव पमता र्ण उत था राम ग्या करे ॥
 जागता मावता गता माता सत क नाम प हाय धार र् ॥२२॥
 चक्र गीया राम जाय ग्या कर गुण वा जाय गुण मव ।
 च मूरदाद एव धर र्वा करे जातिया मत्राम र्वाविन्वा ॥२॥
 परि साधा रिया र्त्रिया जमन पिया विपवा म डूरि भागा
 र्म द वम जाति ज्याग जा भमर गुतार जात्रा नागा ॥ ६॥

१—जागरा प्रवारिणा ममा ग्राज रिपा—पह्लां प्रवापिक् विवरण
 पट्ट १०१ मत्या १८० डी आदि आर जा व जा इम प्रकार है—

आदि—॥ नो गमाय नम—राक—जा जस्य ग्रागम र्छया निराकार वाणा
 अनमत तत् निम्न मुक्ति पाता ॥ वचिना मूठ र्णिया अम्यु र्त्रिया
 गानि धुनि ध्यान लागा ॥ विगु र्त्ता र् मा र्ताय माता ॥ था राम
 र्छया राया आभार जा पवन त पवाम प्रवृत्ति र्णय वाय पचमू आमा
 ममि निष्टि परि पन जाना पान जमान र्णान ध्यान ममान मिर्ति अरु
 ग्मा का पजति जाता ॥ उर्त्रिया मूर ग्रह र्क छान बाया ॥ पयिवा
 च र्ता क्ता सारी ॥ तमि प्ररु इ र्णय चान जरी उक्तिा र्किनी परि
 माग ॥

अ—रुत्र नित्र धाम । जहा वगत अच्युत धनमम मवत मत्र हरि सार्व ।
 क्वर नदा अनप ॥ मत्र मूर्ति जातड । अन चरा र्गुणवद ॥ महामुत्र
 पीया ॥ निवि का दरु मत्र डूरि भागा । क्वर र्क वचन द्वा जाति र्वाग
 जगी ॥ भवर गुत्रा अरुम र्णय राम नागा व्यापि तु सागापन वाजय

योग चिन्तामणि

जी जकट विकट रे भाई। वाया (गन्) चन् न जाइ ॥
 पछिम (दि) गा की घाटा। फौज खती है ठाठी ॥१॥
 जहा नाद बिन्दु का हाथा। मतगर न चल साथा ॥
 सतगुर माह विराज। नीवत नाम की वाज ॥२॥
 जहा अष्ट दल कमल फूला। हम मरावर म भूला।
 जहा राग रग होय पास। जहा है हम के वासे ॥ ॥
 गन् को सीगले गन् का बूचले गन् से गन् पहिचान भाइ।
 गन् तो हृदय बस गन् तो नयना बस गन् की महिमा चार वेत् गन् ॥४॥
 गन् तो आकाश बस गन् तो पाताल बसे गन् तो पिन् ब्रह्मा छई।
 आप म देख ले सकल म पेयन आप मध्य विचार भाइ ॥ ॥
 कह रामानन्द सतगुर दया करि मिलिया मत्य का गन् सुन भाई ॥
 फकीरी बदल वात्साहा ॥६॥

सना बन्गी दीदार। सहज उतरा सागर पार ॥
 साह गन्मा कर प्रीति। अनुभव अपड घर जीन ॥७॥
 अब उलटा चन्ना दूर। जहा नगर बसता है पूर ॥
 तन कर फिकिर कर भात्। जिमम राम रोमनाई ॥८॥
 मुरत नगर का कर सयल। जिसम आत्मा का महत्।
 इन्द्रिया सिच मूल मित्रिया। जिम पर रपना बावा पाव ॥९॥
 दहिन को मध्य पर घरना। आसन जमर घर करना ॥
 डादग पव (न) भर पाता। उलट घर गाग को चन्ना ॥१॥
 दो नना कर वान। भौठ उरग कम कवान ॥
 त्रिवना कर अमनान। तरा मन् जाय आवा जान ॥११॥
 बाजा गव का वाज। बाठी मिवु म राज ॥
 लगी है गव के बाजा ॥१२॥
 मना बन् मवन् पार। दाह मखर दोहे पहार ॥
 जहा पर कुन्तल का चार। लगा है नौ लप हार ॥१३॥

बन उपरल नन त्रिति पायन मवन् त्रिकुटा मारग ॥ स्वामी रामानन्द जी
 ब्रह्मपाता ना राम रज्जवा गान् घिर हा शाना पय धार सप्राम समु सकट
 बचन ॥ त्रि श्रा गुमान् जा रामानन्द गम रना सगुण ॥

गवला करण मूल। जन्मिया बट ता दपना मन फट।
 माया ब्रह्म का आसा। परा है प्रम की फासी ॥१४॥
 बाजन प्रिना तम तूर। मह ऊग पच्छि (म) मूर।
 भवर है सुगय का प्यामा। बिया ह कम का वासा ॥१॥
 इद्रिया आराम का दाहा जिमका चालना न गट।

उनमना भर जद मसाल ॥१६॥

अमहाष स्वा मायी । गगन में वात्ता छाई।
 अमत निम (२) लाई। उल दरियाव निज्रिया ॥१७॥

यिह प्रिधि चना चौमठ सादिया।

हसा आन बग तीर। निगति बुग मोहवन हीरे ॥१८॥
 राम नना म रम रह मरम न जान का।
 जिसके मिलिया मतगुरु ताक पूरा मुहरम हा (ई) ॥१९॥
 बहै रामान वच्चा अगम पय का मला।
 पडा रापा गयव का हा मरावर के तीर ॥२०॥
 सापू सेले नवग दलि व का प।
 जानि अषी तिलमिग त्रिनु वाना विनु ते ॥२१॥
 साव परव ग का मुक्ति निगति का प ॥२॥
 माना का पात्र ग्या हीग का परका।
 चंद्र मूय का गन नहा जहा व दान पाव दाग ॥२॥

भगति जाग प्रय

भगति जागएक सुणा मायाणा बुधि प्रमाण बछू क बपणा।
 भगति करण करा आरम मै उ जघरि हाई थमा ॥१॥
 प्रयम परड निड वराग गहै विमवास करे मव त्याग।
 इनी जानि र उमा अयवा प्र अयवा वनवागा ॥
 माया माह क नहीं काहू रह मज नू बपवा।
 बनव कामिगि का कर न गगा आगा तिमना घर नगा ॥
 गीत भाव छम्पा उर धार धार महत दया वन धार।
 दान मरासा राप पागा य निगपय गद तमागा ॥६॥
 मानि मगास बछू न चाै ए दगा मग निरवा।
 रावग था गक न आण काडा बुत्रर एन बनि जाण ॥ ॥

१—गात्र बध्वा क गप म।

धर भाव बामू नहीं करि है गुर को सब लें हरि धरि है ।
 सार गहै कूबस सब नापे रमता राम लख करि राप ॥६॥
 आनदेव की कर न सेवा पूज एक निरजन दवा ।
 मन माही सब सूज ज राप बाहरि कवघन सत्र नाप ॥७॥
 सुनि स मन्दि अधिक जनुपा ज्याम मूरति जाति सटपा ।
 सहज सिधासन बठ स्वामी आगे सेव कर गगामा ॥८॥
 उत्तर सील सतान कराव प्रेम प्रीति का पाहाम चन्दाव ।
 भाजन भाव धर ल जागे मनसा बाचा कडू न भागे ॥९॥
 ग्यान दीप न जावती उतार घटा अनहल सत्र उचार ।
 तन मन सकठ अरपन करही दान हान फनि पाया परही ॥१०॥
 मगन होइ नाच अरगावे गन गद रोम अचल होइ जाव ।
 सेवा भाव बमू नहि चोर तिन तिन प्रीति अत्रिकी जारे ॥११॥
 ज्य प्रतिब्रता रह पावपासा य साहित्य क लिंग रहे दासा ।
 कोउ दस भूति मति जावा पतिवरता पनि न निरवानो ॥१२॥
 जान दसा पाव मति धारो, गुर को सबद ते हिरदे धारो ।
 मन् अपडत ताली ठावो पूरण ब्रह्म में जाइ मिगवो ॥१३॥
 राह भगनि अननि है विरला पाव मव ।
 भाग हुवो त पाइये कहे रामानन्द गुरदेव ॥१४॥

गोस्वामी विष्णुदास

(रचनाकाल लगभग सवत १४९२ त्रिभमा)

भाषा बामाकि रामायण

अथ ध्या रामाशन कौ दूसरी वाच ध्या हनुवाच विष्णुत।
वाचमार जा कह्यौ पुरान। ध्या कथा जो करौ बजान।
बाल चरित धारौ मन रह्यौ। हनु गये मु जाला क कह्यौ।१।
हनु गय मु मुनहु धरि ध्यान। बाड गिठि आव मनान।
रिष नरिद्र न व्याप रामु। हानन उषा नारि विषोणु।२।
गृही मुनि जगत् गणहया। मनुज जामवन सौ कह्यौ।
मा सा कही कौन बरवार। नापि जाइ माइर कौ नार।३।
या साइर कौ बार न पार। मुर नर कौन उल्लघन हार।
मर हाय भयी सन्ह। हम सौ कह्यौ अजाबुधि एह।४।
बाके जामवत तहि ठाइ। मन सदह बरहु तुम काइ।
यह जु एक बन्ध हनिवत। यकि पारिष नाह। अत।५।
सीनि बार एकहि तिन जाइ। ल आव लता उचकाइ।
इतु इतु कभवु रपिस दू बहे। यह मुन्न अजापी कहै।६।
अगत् अचिरज करपा बहारि। जामवन दूज कर जारि।
साइ पागिप कह्यो बहूत। वा हनिवत कवन कौ पूत।७।
तामी हगि बाच जामवन। पवन पूत कदीय हनिवत।
गव कथा तनि कारन कह्यौ। जग बर दवति मह कह्यौ।८।
याता जनम जवनि हा भयी। तबहि कूनि मूरज पहि गयी।
नान गगन जात्रा परवान। तरहे छाति गयी सा नान।९।
यह हनिवत गिन्धी जब भान। नर मुग्धाक नयी अवमान।
हैकत्त जय जय नयी। मुग्धाति वध परतमुन हयी।१०।
हय्यो तिनानर हनिवन परयी। निकगन शान पिता सम्हर्यौ।
तछिटा आया परत मुगन। पायो तहा मूया हनिरत।११।
पुत्र माग तर उर बकाउ। कौन बन्धानी ता पात।
एकौ पुत्र न गसरी महारि। अब बभूवत पाती मपारि।१२।

इतनी साचि पवन थिर भयो। नारत् कहन ब्रह्म मीं गयो।
 तवही कही पिता सौ दात। मिस्तिर मिघार हातु ह तान।१।
 नभूवन रापो करौ पमाड। पुत्र वियोग रिमानी वा।
 ता बिनु सात् विनमन लाग। दान देव जच्छ बर नाग।१४।
 सब कारन नारत् तप कह्यो। मुनि ब्रह्मा जु हस आरण्या।
 इद्र आदि मव गीहनि भय। मव मिलि तहाँ पवन पह गय।१५।
 हरि हस ब्रह्मा अरु सुर साय। मव मिलि पवन कौं जार हाय।
 ब्रह्मा करयो पूरत तप सापि। पुत्र जिवाड नभूवन रापि।१६।
 इतनी मुनि तप वाल्यो बाड। साइ जन कौं एहु मुनाज।
 पाछ हू जौं घाउ मारि। पुत्र माग क्यौं सकौं सहारि।१७।
 चिनगुप्त जम एह कहत। हम थ मीचु नहा हनिवन।
 ब्रह्मा असिप कह्यो अमाच। प्रत्कार ज्यौं नाही माचु।१८।
 सब देवनि मिस्ति कही असास। ना भेदहि जावष छनीम।
 अग्नि नार थ विया न हात्। रत सग्राम न जान कार्।१९।
 वाचावत्र बाड सा भयो। हन मूए त बहुरि जायो।
 जब यह रिपि आमि क भाइ। बटु जापन न जान काइ।२।
 अब तुम यानहु जाइसु दहु। साषा मुधि ल जाव एत्।
 सुग पनाल लहै कौ मार। जावन जात न हव है वार। १।
 जगत् मुनि जजा की वान। हन हकार्यो ह्य्यै गान।
 ता मी चिनव बारवार। तुम विन जीर न ज है पार।२।
 कहि कहै राम सौं जात्। कम सकिहै मौट न्पिगत्।
 जौ साना की पाव सार। तुम थ जसु उच्छि ममार।३।
 उतिम्ह हरिमार्त्त उ उधयम्ब महानव।
 क्यै मापिगनिनाप हनमामा गनिम्तव।२६।

इति श्री बामाकनन रामान्न भाषा वनन हनुमान स्तात्र नाम प्रथमा गण।१।

× × ×

पहिर कपरा निनि लवग। जत्कार माजापी मत्र जग।
 माथ जग मवनि परित्रा। पिता बचन ज राषा घरा।१९।
 रामनि नरथ काया मगात्। मत्रघन उच्छिम्ना कुमार।
 कौंसा गिगारासाया। जत्कार मत्र मामुनिनाया।१ १।
 ज मुगाव रात् वा नागि। न कौंसा उच्छि हकारि।
 दान गहन मानिनि जर। मत्रनाता हारा मारुत्।

म गयो महरु एकु। मत्रा कौ करी अमिपपु।
 मत्रघन सौ बह्यो हकारि। नुडु मिघामन अवधि मवार॥
 मुनन मत्रघन मुपमा हाथ। राघो पाम गयो रथु लात्र।
 ता ऊपर बड रघनाथ। नुडिमन गयो उषयो गय॥
 धा राम जब रथ आह्यो। त्यन गग मत्र महगह्यो।
 धा राम क रथ क नाम। मरवग स्था भान॥
 स्वारथा भग्य कुवार सौ भयो। धमन रथ मत्रघन लयो।
 चार भभापन कपिपति गह। यहि त्रिवि राम अजध्या गए॥
 चरन लपु कर अति वामु। हाथा चने चर सौ पासु।
 भयो अवासह ज ज वार। राधा अवधि करयो पमार॥
 उतिम भगुन भए ता तन। पने राम ग्रह आपन।
 जमरथ मन्त्रि राघो कहै। ताहि कपिगड भभापन रहै॥
 मत्र घरा गनु तिन गयो। तव कपिराउ भरथ वानवा।
 अवकै विरमै वाजु न हाइ। ताग्य कौ पठवावटु वाइ॥
 न आवहि तारथ कौ ना। हाइ अभिपेकु राम मरो।
 पवन पूनु पूरिउ निमिगया। दपिन रिपिनु पठिमनत्र भयो॥
 उतर माण अग गयो। काया पयानी तवहि मुमन।
 कायो पयानी तवहि मुमन। य पथ्य तारथ का लन॥
 उ जटु वरु आए बहारे। हा तारथ मतम वारि।
 भयो अभिपेकु राम नगनाथ। डाग लाप पीपर की हाथ॥
 मत्रा चारि विराहित माथ। उनि अभिपेकु कायो रघुनाथ।
 गय कुमुम माथ छाडीयो। मन्थ मात्र वर घनि भयो।
 जाँ कौमया बरई। मन्त्रि वीह न मुमिना गइ।
 मातावन हाग निनि हाथ। कर निरुन आगनि माथ॥
 माथ त्रिना जावहि न नारि। कामिनि गात्रि मगनचार।
 रथा लाग बरनि ज वाजु। गम कहै अभिपेकु जाजु॥
 राव नव भग्य कौ गजु। नौ गुप दप चाही आजु।
 अरु त्रि जगनु कौन कौ आनि। ननना गुनि तव भग्य वरुइ॥
 मुन्त्र गय नुडिमन नुड म या। रात्र छत्र भग्य धौ वरुइ॥
 गजु आजु नुडिमन कौ नर। ननि नुडिमन तव तिन मर॥
 गजु गत्र कर्म बरो मर। अन्निमि भगनि गम का करे।
 माहि गत्र बूगान न लयो। गिपि अभिपेकु राम कौ कायो॥

तव सो छत्र भभापन हाथ। मन चौर जापुन कपिनाथ।
 दीनी मित्र भभीपन हाथ। उच भए मर इव माय॥
 रिपि जासिप कहै जनि चाव। गवत्र कानी गान मुभाव।
 अछरि नाचहि तारहि तार। ऐपन मभा मत्र भूवाए॥
 सब काहू मन भयो अनट्टु। जनकु चकार प्रकाम्यो चट्टु।
 कनयरमाठ कुसुम की भइ। दवराज माला त्रमर्॥
 द पठई पवन क हाथ। पहिरो तवहि कठ रघनाथ।
 ध्रमठ कर रतननि जरे। कवन हार कन मूदर॥
 तहा सुश्रीव भभीपन राइ। दई राम भें गर लाइ॥
 जगत् कवर और कपि माय। दीन वीहन रतन रघुनाथ॥

पूज बारजार। भली वस्त राषी न भडार।
 सीता कठ त्रमात्रि हार। वर जार वूझीवो ध्रतार॥
 आइस चिट्ठिसि कहै तव राउ। वहि तहि ज जापर भाउ॥
 सुनि जानकी वीहन सुप भयो। तवति हकारि पवनमुन ग्यो॥
 घाली माल कठ ता तन। वीहन धवन वाए जापन॥
 जब हो साग समए मह परा। तत्र हनिवन आफी मूत्रा॥
 साई भई तरौना माहि। तात डरन न द्व हीं ताहि।
 वीहन भगनि करि ममने राइ। राम अजुघ्या राज कराइ॥
 ग्यारह महम वरम बन्वित। भूजा सब धरनि ना पए।
 बग्यो राज अवधिपुरि कर। ता मिर सेत छत्र फरए॥
 तरवर सेव फूट नित मान। सपत शीष राषी की जान।
 अरु दी जहि विप्रनि कौ तान। तप धन ता एए ममान॥
 दहि अमप भठ जामरन। विप्रनि मवा तप करन।
 राग माग आपन न हाइ। विषवा नारि न तप काए॥११७०॥
 परजा तप धरम व्यौर। पाप त्रिष्टि न राजा घर॥
 माच न काए हाइ अनाए। दिन माग वरम जग्यार॥
 करि जनानि न काज वात। मदन तप राषी का रात।
 मन त रामचरित जा मुन। नाम पाप विमन बदि मन॥
 कौ दग्धि त्रिष्टि तप। राग व्यापि व्यापार न तप।
 पुन कत्रि मत्र मुप रई। छत्रा मुन तवन वए रई॥
 उन्मि बायो न धरए तप। राम चरित मन राप वाए॥
 राम नाम जो नाम कए। मु नर नर न कए जाइ॥

जाग जुगनि मन राप ध्यान। कचन वीहिन राज दान।
 तीरथ मल कर जो हान। निनि कौ राम नाम परवान ॥१५७९॥
 पुन्मी वाउ राउ न आवि। स्वारथ कारन विनउ जाहि।
 विस्तारम मन राधी रहै। राम चरितु घम लवि कहै ॥
 पिना वचन मयी बनपडु। माखी दस कघर वलिवटु।

सुर तेतीम छारि जम लयी। मा श्रीराम सभा कौ जया ॥१५७७॥ इनि
 श्री बालमीक व्रत रामाइन भाषा बनन लया रावन कथा भभीपन अभिपक करनो
 भरताज समागमनो भरथ राम लठिमन सन्नवन जटा उतारना भरन मिलाप
 बरनना अनुष्या प्रवग करना श्री राम जो राज अवपेक करना नाम एउ चालास
 मो स्वग ॥४१॥ इति हनुकाटे सपुरन शुभमन्त जयाप्रति लिपत मम दाप न दीयत ॥'

ईश्वरदास

(रचनाकाळ लगभग सवत १५५८ विजयमा)

भरत विलाप

दोहा—

सरस्वती चरन मनावो मनमह बहुत उलाह ।
रामक्या बहु गावो जाके गुन जवगाह ॥

चौपाई—

रामचंद्र वन कीह पयाना । राजा दशरथ मन पठिताना ।
रामचंद्र छाया अस्याना । राव सकल नगर परधाना ।
रावहि मिआ सती वर नारी । राम उखन बिन अवध उजारी ।
रवि रवि बेकई पत्र ठिवावा । दूत हाय दे नेहर पगवा ।
जाहू दूत भरथ के पामा । जवनपुरी क भया निरामा ।
चाख दूत विना तव भएउ । अतर बमि जाजन मन गएऊ ।
जहवा भरथ चतुरगुन रणेउ । जाइ सो दूत दडवन बाएउ ।
कौ मा दूत अवध कुसगई । कम कौमिया तगरथ राई ।
कम राम रखन दुवो भाई । घर घर राजनानि ठुवरार् ।
नितक पुत्र भाण अनुरागा । विधि कर लिवा भएवरागी ।
का न भाण छत्र कर भगा । का थी त्मरथ पाएउ गगा ।
एमत मार न मन पनिआई । जवता अजाध्या तवदु जाइ ।
चन मा दूत अवध घरि पाऊ । अवधपुरा कर रवि मुभाऊ ।
जानुए चण्ड न वमन सभारा । आग पाठ न एक विचारा ।
चरि चरि जाण अवध प्रदमा । नग सभार पाग मिर कमा ।
चमन कल्पन रावन जाण । पुनि कहु नगर गग कुमगई ।
जय न दूत कहा कुमगई । एत आज क अथे गामाण ।
बगि चण अत्र दूता भाण । मय वचन में कौ नगाण ।
मन त्मम त्मौ तव दूता । माण मन हान परनाण ।
दमुथा त्मा गन क गाता । पमु पछा मय दूत मगीता ।

दाहा—

सत्य वचन तुम भावहु कुमल छम की बात।
राम लखन घर है की नाही मन मह बहुत उत्पात।

चीपाई—

जवघपुरी तहा दसरथ राजा। उहनी जठरह बाजन बाजा।
अवघ निकट जव पहुच आई। सुघका सब दसा जाई।
नगर के लोग सब मन मारा। अवघ निकट का पमारा।
घर घर रोव पुरस वर नारी। राह वा रोवहि पनिहारी।
वन मह राव पसु जी पछी। हाहाकार रावहि जलमछी।
भरथहि देवि लोग सब घाए। कुमल भरत पूछ मन लाए।
कहा मा तग अवघ कुमलाई। नहि ता प्रान तजन हों भाई।
निम्ब वचन कहा समझाई। वापति धरि मा विडि आई।
वकद माइ भग न काहा। राम लखन सोना वन दाहा।
राम लखन बन दान पठाई। भलना काह तुम वकद माई।
मुननाहि भरत परे मुरझाई। करन चन जचेत होइ जाइ।

दाहा—

वारहिवार माहम भमि परे मुरझाई।
नि मुमिरि रघनायकहि बहुरि उठ मुधि पाई।

चीराई—

मुमिरि राम लछमन दाउ भाई। रावन भरत कीमिला मह जाई।
तग मुमिना बठि विलगाई। भरथहि दवि विक्ल उठि घाई।
भरथ के चरन परा मुरघाई। भरथ उठाइ जव म लाई।
भग्थ मुमिना राव गल जाई। पुनि मुमिना वाप कराई।
कागया तब रावनि आई। भरथहि दनि विक्ल होइ घाई।
रावहि भरथ वतुन विक्ल जाई। पुनि कागिल्या वाप कराई।
पूठ भगन कहा टुवा भाई। कटवा जगन काग रघुराई।
जिन दयन मारनन जुदाई। पुनि कीमिल्या कहा विलगाई।
गम जगन माहि ग विमगा। पूठ जाइ वकद माई।
जिन दनकागा गट पगाई। भग्थ राव रावन गम भाई।
कुक्कन भगन मह म जाई। विक्ल जाइ मर राव लगाई।
राम लखन बन दान पगाई। कीमिल्या रावनि चिनगाई।
जव कागिया बुडुव अमरा। जग तुमर पर गा जगाई।

दोहा—

व निति बाह प्रवचन मय कीमलिया सब माइ ।
बहुनि चउ निज मानु पह कटना बरनि न जाइ ॥

चौपाई—

रावत भरथ चउ पुनि ताहा । बडा ककई मरि जाहा ।
नरथहि दखि ककई उठि पाई । कहा भरथ ठाडी रुडु माई ।
जब ताहि मित्र केकई माई । राम लगन जब देख बनाई ।
बहत ककई बचन बगारा । राम खन गए बन के आरा ।
जापन कही भरथ कुसलाई । राज करा अपन घर आई ।
सुनतहि भरथ परे मुरछाइ । छाता फारि मरहि किन माई ।
राम खन बन दीन पठाए । निन दगन मोर नन जुगई ।
ककई पापिन आगल कीहा । राम खन साना बन दाहा ।
बधु विराध बहुता दुख गीह । सो बरम कहा तुम बाहा ।
ध्रिग जीवत ककई सीहारी । मरतउ जा न हेनि मन्तारी ।
ककई राज करा घर आई । हम जाय बन जहा रघराई ।
जहिनीनी अकरम कीन त माइ । सा ता भरथ बनहि जय जाई ।

दोहा—

भरथ बचन सुनि केव न भई बत खभाग ।
पुत्र चल बन राज तजि त्रिया कक हमार ।

चौपाई—

भरथ दखि रोवहि विरग्याई । कहा ककई सुनि गमजाई ।
ध्रिग त्रिग तार राज जो पाग । राम खन निन अवस्यपाग ।
राम चल चित गग हमारा । राज करा ध्रिग तम तुमारी ।
जा तुम चला बन भरथ मिवाई । पिता मा गन उठ तुम जाई ।
सुनतहि भरथ परे मरग्याई । कन बन जवन हाई जाई ।
कर घरि गगन गन ग्याई । वा भरथ करा पग्याई ।
ना पर रावन मय भरि जाई । जकि भरथ तग चरि ताई ।
सुनत उठ मन लख मरग्याई । छाता खन पिता मर जाई ।
ना पिता तुम प्रात गकई । ककई कक तुम मिनि जाई ।
अगि जतम माग मर ताई ।
राम पिता गग नखावा । गह काय मय करम बगवा ।

दाहा—

दछिना दान पुय बहु पितुहिन मव विवि दान्ह।
वदुरि जाण निज मातु मह पुनि गा गावर कान्ह।

चौपाई—

तुम क्वइ वड अजगुत कीहा। सुन कावडत भाति दुव दीहा।
स्वामी मारउ ववन ग्याना। जहि सुग लागि राख प्राणा।
का मुन लै कै बोल्हु बना। राज न आवत तुमरे नना।
समुधि सा राम वास वन सला। रोवत भरय भए मन मला।
गुरु वशिष्ठ तव बोलेउ जाई। धीरज धरो सभ लवि भाई।
तव उठि भरय गुरहि मिग् नाई। द अमीम तव गुर समुपार्।
वेगि राम कह आन वालाइ। क्वइ कल्क तुरित मिटि जाई।
तन उठि भरय सावनहि सिधारा। जहि वन राम लघन पगुपारा।
रावत बलपत थापत जाई। वन महकुम काटा अधिकाइ।
वम सिवारेहु श्री रघराइ। तुम दये विन जीव मार जा।
वहि विधि ते तुम वन पगु घारा। कठिन पथ पग है मुकुमारा।
महि पर पाव राम कर चाहा। दगत भरय दडवन कीहा।
बहा राम उठमन कुवा भाई। घरती मानु मोहि देहु वनाई।
चान न पाव पथ व ओरा। परउ दाउ तल पाए नफारा।
पमु पछा सव देवी परेउ। राम के पत्र कुटी गिग गणउ।
देवि राम लठिमनहि बोलाई। मुनत लखन अए तव घाई।
बहा राम देखा को आई। मुनत ववन आए तव घाई।
चरन वनि उचे चनि घाए। चारा आर निहारत भए।
पूरय गिगा त्रिजि तव कीणउ।
देखा सन अपार जा आवा। वन पर मक्ल मह तवि पावा।
जाना भरय फौज ल आवा। राज निमकट वरन सा आवा।

दोहा—

उठिमन मन अनि प्राय करि बहा राम मन जा।
भग्य मिग्ग प्रभु जाए रघवनी गग लाइ।

चौपाई—

दगत भरय मात्रि द आवा। ग्यमा सना मग लावा।
क्वइ हमरा वन पगवा। राम कजाव नय यह आवा।
जय हिर मह बाहुउ घ्याना। भरय मिग्ग जाए अत जाना।

भरथ हठ की गति जब पाई। लठिमन का तब लेन पगई।
 कोह माह ममिता जन राखा। मधुर वचन वष मन भाग्यो।
 भरथ समान न सील मुघाई। सगुण भूवन जाना भाई।
 रामचंद्र कर अएमु पाई। लठिमन गए भरथ क ठाई।
 दड प्रनाम कीन मन ठाई। घाए भरथ अक मह लाई।
 रोवत भरथ आगे विलखाई। ल तब गए राम के ठाई।
 घाए राम गहि अक मह ग्हाई। भरथ परे पुनि राम के पाइ।
 उघुहि राम बहत समचाए। कवन कुमठ जा तुम चलि आए।
 प्रिय परिवार सकल डुप पाए।
 अस कहि भरत परे पुनि रचना। उपजा प्रम जाय नहि वरना।
 रावहि भरथ नयन शरि लाइ। राम उठाइ बहुरि उर लाइ।

दोहा—

अति प्रिय बहुरि वचन कहि भरथ कीह परवाच।
 देस काठ गुन दाव कहि बद प्रथ मति सीध।

चौपाई—

प्रथम कुमल भरथ समझाइ। कहा कौमत्यां सब भाइ।
 दसरथ अइया प्रान गवाइ। साची यान कहा समुझाइ।
 तब भरथ कहत अम गग। तुम तिन मामा सब जभागे।
 मर विरतत कहै अम गग। तजहा मुनन राम दुव भागे।
 दमरथ पिता प्रान क हाना। कौमिया रावहि निमि दाना।
 मुमिना बहत रिग्याई। निच वचन कही ममझाई।
 तजिए वचन जवाध्या जा। नहि ता प्रान मव गग गवाइ।
 कव पापिन बं दुव गहा। मुन प वन पति जिउ लीहा।
 रामचंद्र तब कव गहा। तान मुनी विधना दुव गहा।
 बहइ माना अति भग काहा। अष्ट मित्र मर झारि क चाहा।
 पिता क वचन मानि हम जाण। मुन न क मू प गग।
 मच वचन माना हम गग। अब मैं क मुना दुवो भाई।
 तुम घर कग जाण का हाना। प्रजा गग मर महि ममाना।
 चौ बनर मग उर पाण। तन भरथ गग चि जाए।

दाहा—

अम मव प्रथ क वन पिता गए मुगनाम।
 कति विरि मान काम पुर गज प्रजा प्रिय काम।

चौपाई—

कहा भरथ सुनिए रघुराई। हम नहि अवघहि जाइव भाइ।
 सग रहहि हम विपनि गवाई। तपति चरन नाथ ली आई।
 कहा भरथ तुम मारहि काजा। भजहु राज अवघपुर राजा।
 माइन मह हम सबक ताहारा। करि सवा पारहि निमतारा।
 भरथ वचन सुनि प्रभु सुख माना। कहा भरथ तुम साधु मुजाना।
 दसरथ पिता भरथ जस भाई। सत्य बही जग काउ न पाई।
 कर धरि भरथहि लान उठाइ। जाहु भरथ जव मारि दोहाई।
 प्रजा तोग सब वापहु जाइ। महुता मनी सब बठार्थ।
 निज निज काज सत्र सपरार्थ। राजकाज सब साधहु जाइ।
 वीनील्या सुमीत्रा माइ। कहेव प्रनाम सब सिर नाई।

दोहा—

पिता वचन हम मानिके चौन्ह बरख प्रमान।
 तत्र त्रि राम सभारा मार वचन हिन मान।

चौपाई—

चौन्ह बरख अवधि सुनि पाइ। तत्रहि भरथ रावहि गल आई।
 बहुरि राम बह भानि बगई। दन काठ गति कहि समझाई।
 राजनानि मन बहि ममुथाई। तुरित पात्रका आनि पगई।
 रामचंद्र की आजम पाइ। चल भरथ चरनन सिर नाइ।
 सबक घरम जानि मुन माना। जाण भरथ अवघ अमयाना।
 नगर क लाग पूछहि सब धाइ। कहा राम लडिमन दुवा भाई।
 सत्र मन कहा भरथ ममुथाइ। राम क चरन पर हम जाइ।
 जारि पानि बहु गिन मुनाई। निस्व वचन कहा समगई।
 निस्व वचन कहा समुगई। नहि आए त्रिउमन रघुराई।
 चौन्ह बरग राम नहि आए। अम कहि लागन बाध बराए।
 वीनील्या पह गण दाउ भाई। गुन क चरन परा मुरगई।
 भरथ उगाइ अर महु लाई। पाव पकरि बहुरिधि ममुगई।
 नहि आए लडिमन रघुराई। तब पीत्रा गिर गीन बहाई।
 राम लगन गिय बन मुन पाए। चरन माए मति सत्र बनाए।
 हमहु रहव पुर बाहर जाइ। नचिपान मुइ बावग गनाइ।
 बुम शिर ल माधरा बनाइ। बर जागत प्रभु मन लाए।
 आग पीत्रा धरि गिर नाइ। रामहि ज्ञान मग मुन पाए।

निज प्रति पूजा तानी करही । अवध अगार प्रान तन घरहा ।

दान—

भरथ बिनाप कथा विमल मुरजनाम कवि गाइ ।

जा नर मून जा गावहा जम सुफल हाइ जाइ ।'

१—आ उल्लेखित ग्रन्थों का प्रति स। कवि का नाम शिवराम है। नागरी प्रचारिणा मन्ना म मुद्रित हस्तलिखित ग्रन्थों १७८१० ०१ त्रिदिकान्त मवन १८८० म अन्तिम ग्राह्य रूप प्रकार है —

भरथ माताप कथा विमल मुरजनाम कवि गाइ ।

जा नर मुनया जा गावहा जम जम जय जाइ ॥

एसा प्रकार गान गिपा १ २ - १ मन्था १७५ ५० ६६८ म उरि गिनित मवन १९ का प्रति क विद्वान् म अन्तिम ग्राह्य निम्नलिखित है—

भरथ माताप कथा विमल मुरजनाम कवि गाइ ।

जा नर एत मुचिउ मन ताकर पाव ट जाइ ॥

स्वामी अप्रदास

(मुरदास व समसामयिक)

ध्यान मञ्जर

श्रीरामचन्द्रायनम

सुमिरी ध्या रघुवीर धीर रघुवर्ण विभूषण ।
गरण गटे सुप गति ह्यन अपमागर दूषण ।१।
मुदर राम उत्तर राम कर गारण धारा ।
हिय धरि प्रभु वा ध्यान विदुषजन आनन्कारी ।२।
ब्रवधपुरी निज धाम परम अति सुन्दर राज ।
हाटक मणिमय मदन नयन की कानि विराज ।३।
पीरि द्वार अति चार सुहावनि चिनित साहै ।
चपतार मन्तर कल्पतरु दपन साहै ।४।
भवन भवन चित्राम चित्र की रभा साहै ।
बनज मुवन की पानि कानि तोपन भग जाहै ।५।
नारण बन पताक ध्वजा तह विमल मुहाई ।
मनो रघुवर्ण हिनवर्ण आई त्रिभुवन छवि छाई ।६।
बोयी बगर बजार रतन गच्छि जानि उजाना ।
रहन न पाव निमिर महज हा हात प्रकामा ।७।
दधि पुता छरि भरा मध्य न अटवन रय रवि ।
हरषाहि बर्षाहि कुमुम विनय जन निर्गमि पुरा छरि ।८।
या रघुवर जग भरी पुरावर कर वा दायन ।
धममात्र नर नागि बग प्रभु मुजग परादन ।९।
गावन रघुवर शक्ति मित्रा जिन तिन त भामिनि ।
गुर जग वाकिना नर रूप वनू दमका शामिनि ।१०।
जिन जुवतिन वा भाग बरनि वाग बरि आन ।
गर्षी गारण नगगुना दधि न मन लखवाव ।११।

अवधपुरिन का जबधि यह प्रति स्मति बरना ।
 ध्यान घर मुप करनि नाम उचरत अधहरना । १२ ।
 करि करि वन्द कौम कहन उपमा जा गनीजन ।
 जय उक्ति मय जल्प जबध मम अवध भले वन । १ ।
 बापा कूप तगग रत्न मापान बनाय ।
 रह अमर जल पूरि विगसि कल्हार जु छाव । १४ ।
 सात तरु की छाह विहग कजन मन भाय ।
 चहू आर जाराम गगत उपवन ज मुहाय । १ ।
 तिन पर काकि बनात कार काकिउ किलकावत ।
 सुरधरि तिहू का कह मन प्रभ मुजसु उचारत । १६ ।
 झूमि रह गि भार डार फउ फूउन भारा ।
 पथिक जनन फउ दन मनहु यह भुजा पमारो । १७ ।
 निकटहि सरजू सरित घरे अस उजउ धारा ।
 भवमागर का तरन विन्ति यह पान उजारा । १८ ।
 हरन पाप भय ताप जना चिन्ति फउ दना ।
 मुटनी जनन जाराह मुट गकन निसनी । १९ ।
 तीर नरन का मार लगन जम परम मुगय ।
 मनहु व्याम हा त्यागि अमरगन मवन आय । २० ।
 कर जो मजन पान घय बड भाग जनन का ।
 विविध भाति क घाट तहा मन बकिन मुनिनका । २१ ।
 नार परम गभार चरन गहिर मुर गाज ।
 जहा तार व सपन कमर जति मर राज । २२ ।
 कमर कमर क मध्य जत्य मिनि भवन गजाग ।
 मानहु मनि जन वृ व धुनि ग उचार । २३ ।
 विविध बघारि विहार चहति निमि तिन अधहारा ।
 मान म मुगय परम जति जातकारा । २४ ।
 बावन चरवाक कुतार मनमा वनाव ।
 मन परम मुटम निवर मिनि गप्रव गाव । २५ ।
 कानन तप जगान माव तति तप भाज ।
 विविध भाति क का मव वराव राज । २६ ।
 मारा पव जनुव का कौ माभा उनवा ।
 क कुमु न त न निरवि मुनि रहन न तनवा । २७ ।

कल्पवक्ष के निवट तहा एव घाम मनिन जुत।
 कचनमय सब भूमि परम अति राजत अदभुत।२८।
 स्वणवेदिवा मध्य तहा एव रत्न मिहासन।
 सिंहासन के मध्य परम अति पद्म सुभासन।२९।
 ताके मध्य सुत्त कणिका सुत्त राज।
 अति अद्भुत तहा तड वद्वि सम उपमा आज।३०।
 तामधि सोमित राम नील रत्नीवर जोभा।
 अखिल रूप अजोत्त सजलघन तन कासाभा।३१।
 सिर पर लिव्य विरोट जटित मजुठ मणि मोनी।
 निरवि रुचिरता लजिन निवर दिनकर वा जोती।३२।
 कुन्ल ललित कपोल जुगठ अम परम सुत्ता।
 तिनको निरसि प्रकास लजित रागेण तिनमा। ।
 मेचक कुटिल मुचारु सरारह तपन सुत्त।
 मुप पवज क निवट मनहु अति छोना जाय। ४।
 भकुटी यष पत्त दुगुन मनहु अति अद्वि विराज।
 नासा परम मुदम वदन रूपि परज लाज।३५।
 दीरघ लित्त लिलात्त पान मुद्रादत्त घारा।
 मुदर तिलक उगार अधिक छवि साभित भारी।३६।
 परम लित्त वनमाल हार मुक्ता छवि राज।
 उर शीवत्स मुचीह कठ कौस्तुम मणि आज।३७।
 जनापदात्त सुत्त मध्यघारा जु विराज।
 उभय भुजा आजान नगन जटि कवण राज।३८।
 शूनी रत्न जराव मुक्ता अधिक मवारी।
 सोमित अद्भुत रूप अरन की छवि अनुहारी।३९।
 भूषण विविध अनेक पीतपट साभित भारी।
 लसन वार चद्वार छार कल कचन धागी।४०।
 रोमावति बनि आइ नाभि अम रूपन मुद्गाई।
 त्रिवला तारा मधि लित्त रेयावय अति छवि छाई।४१।
 कति पद्मेण सुत्त अधिक छवि विविध रात्र।
 जानु पुष्ट यन गूड गुत्त अति लित्त विरात्र।४२।
 त्रुपुर पुरत्त मुद्गाय रचि मधि मानि गाई।
 रवक मुत्त रागात्त गुना पुरत्त मन मात्त।४३।

जुगल जटण पण पणम चिह्न बुद्धिगामिनि मन्त्रि।
 पणमा निय निनेन गरणगत भवमय पन्ति।४४।
 दक्षिण भुज धर मुभग मुहावण सुन्दर राज।
 त्रिव्यापुष मुविगाठ वाम कर घनुष विराज।४५।
 पाडस वरम विगोर राम नित सुन्दर राज।
 राम रूप को निरवि विभाकर कोटिक लाज।४६।
 रूप सन्वितानत वाम दिसि जनक दुठारी।
 अस राजत रघुवार वीर आसन मुपकारा।४७।
 नगन जरे छवि भरे विविध भूषण अस सोहै।
 सुदर अग उदार विदित चामीकर को है।४८।
 जलक झलिकता स्याम पीठि सोभित कठ बनी।
 सुदरता की सोब किषी राजत अति सनी।४९।
 रचित मुविविध प्रकार मग गजतार सवारी।
 मनहु मुरमरी धार बनी सोभा अनि भारी।५०।
 पाटन का लर जोर बडे र उबल मानी।
 सपन निमिर के मध्य मनहु उरणन को जाती।५१।
 रतन रचित मनि जटित सास पर विण छाज।
 लठिन कपोल मुजुगठ करण ताव विराज।५२।
 उबल भाठ मुधार जमित उपमा जग सोहै।
 राजत घरण मुहाग भाग को भवन विरौ है।५३।
 गारोचन क निरक लठिन रपा बनि जाई।
 उयन नामा जगन मुभग बगरी सुगई।५४।
 नवुटा नयन विगाठ मौमि चितवनि जग पावनि।
 मानहु विगमन कमल वन अम जगन सुगवनि।५५।
 रतन अरर तर लमन पानि जग जगन सुगई।
 चार चिरक विचनान विण मरु छवि छा।५६।
 कठ पानि अनि ज्वाति मुजवि मरुता वरमाग।
 पन्ति रचित क घोन विराजत हृद्य विमाग।५७।
 लम तन कर रचित जगन मारा रा गाना।
 कचकि चिनिन चनुर विविध मानिन रगमाना।५८।
 वर जग छवि तन वाट अनि लगन सुगई।

पद्मराग मनिमाल जटित कवच जुग राज ।
 मनहु वनज क दूल कुर फति पकि विराजै ।६०।
 लेहगा कति परलंग भाति साभिन अति गहरी ।
 लमत अमित मिन पीन मध्य नाना रग लहरी ।६१।
 हस्ति नगन करि जरा जुगल जहरी अस राज ।
 नित तरु घुघरु जोर अग्र विठिया जु विराज ।६२।
 तिन पर नग जु अमाल-ललित चुनि गन लाए ।
 चरन चारु तल जरुन सहजहि लगत मुहाए ।६३।
 अतुलित जुगल सरूप वीन अस उपमा जिनकी ।
 जतिक उपमा लिप्त सबत करि भासन तिनकी ।६४।
 इहि विधि राजत राम अवधपुर अवध विहारी ।
 दपति चरण उगार मुजम सबत सुषवारी ।६५।
 दक्षिण भुज रिपु दलन गौर तन तज उगारा ।
 उभय हत अनुमार घर द्रत अलङ्कित घारा ।६६।
 सेम लिए कर छत्र भरत लिए चकर डुलाव ।
 अनिल सुवन कर जाति सुप्रभु की कीरति गाव ।६७।
 अज अपने निज ठौर नित्य परि करि बन भारी ।
 सुरति गकि त्रिमगादि रहत नित अग्याकारी ।६८।
 जा जा जेहि जघिरार मचिव मवा मन वास ।
 वाना घर सुरतान गान करि प्रमुहि उपास ।६९।
 यहि ध्यान उर घर स्वय तन गरु करेवा ।
 भव चतुरान आनि चपु वन्ति मन न्वा ।७०।
 यत् नित्य वर ध्यान रतिर जन निन प्रति ध्याव ।
 रगिब बिना यत् ध्यान और न मुगत नहि पाव ।७१।
 परम अनून रगधार रगिब जा न्ति रग पाण ।
 तासो निरग रम मान याग तप छाटि गये ।७२।
 परम गार या चरित मुत धननन जगहारा ।
 ध्यात धरण कथान धनदा जानकारा ।७३।
 गिाहि नूति जिन की कुन्तिना पव मन्नि मर ।
 यह उग्रवर मनि मा परिनि परम रगिब जन ।
 जगत ईश वा हत धरति कुरु कवत जगिर मनि ।
 कहा अन्य पया भावु क निरव कर दुनि ।७४।

कहा चात्रिक की गक्ति अपिल जल चौच समाव ।
 बछुक बुद मुव परे ताहिने आनद पाव ।७६।
 सुनि आगम विधि जथ बछक जो मनहि मुहायी ।
 यह मगवर ध्यान जयामति वरनि सुनायी ।७७।
 श्री गुरु सत अनग्रहते अस गो पुरवासी ।
 रसिक जनन हिन करन रहसि यह ताहि प्रवासी ।७८।
 ध्यान मजग नाम सुनत मन मोन वगव ।
 श्री रघुवर को दास मन्ति जन अग्र सुगाव ।७९।

इति श्री अग्रदास वृत्त ध्यान मजरी सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । सवत १९१४ ।
 वसाय गुल्ल ।'

जमिनीय अश्वमेध भाषा पुरपोत्तमदास

ऋषिया की परम्परा से महर्षि जमिनि का नाम प्राचीन काल से आर्य के साथ लिया जाता रहा है। महर्षि व्यास के पाँच प्रदान गिण्या में उनकी गणना का गया है महाभारत के गान्धि पर्व (२।२७।२७) में इमता उल्लेख है। श्री-मद्भागवत तथा विष्णु पुराण में उन्हें सामवन्त का जन्माय बनाया गया है। महर्षि जमिनि भीमार्जुन के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। उनके नाम से ज्यामिनिव ग्रन्थ जमिनीय भूतन्त्र भाषा मित्ता है।

परम्परा में यह प्रसिद्ध है कि महर्षि जमिनी ने विष्णु ग्रन्थ जमिनीय महाभारत की रचना का था। कालान्तर में यह ग्रन्थ अज्ञाप्य हो गया। अब इसका खोज एक पत्र जमिनीयाश्वमेध पत्र उरुग्व है। इस पत्र में महाभारत युद्ध के उपरान्त यमिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन है। व्यास प्रजापति प्रचलित महाभारत के अश्वमेध पत्र से आकार में जमिनीयाश्वमेध पत्र बड़ा है तथा कुछ अंगों में भिन्न भी है। इसमें कुल ६८ अंग हैं। अज्ञान तथा अज्ञानतुल्य बभ्रुवाहन में यमिनि अश्व के लिये युद्ध के प्रसंग में रामाश्वमेध कथा का कुण्डली वीणाध्यायन के रूप में जमिनीयाश्वमेध पत्र के २५वें अध्याय से ३६वें अध्याय तक वर्णन किया गया है।

जमिनीयाश्वमेध पत्र भारतीय समाज में समादृत रहा है। देश की विभिन्न भाषाओं में इसके अनन्त रूपान्तर मित्ता हैं। दक्षिण में बन्नड में तन्मीन द्वारा १६ वां जन्माद्य में रचित जमिनि भाष्य बहुत प्रसिद्ध हुआ। जमिनीयाश्वमेध पत्र के विभिन्न रूपान्तर का एक विष्णु परम्परा मित्ता है। इन ग्रन्थों के हिन्दी रूपान्तर यन्त्राधिक उपाध्य हूए हैं। यह इसकी लोकप्रियता का द्योतक है। हिन्दी में उपाध्य पत्र प्रथम कालान्तर जमिनीय अश्वमेध भाषा है। पुरपोत्तमदास की यह कृति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है इसकी रचना रामचरित मानस के पूर्व विद्यमान की गान्ध्या जन्माद्य में हुई थी।

पुराणमन्त्र का उल्लेख विष्णु माहट्य के इतिहास ग्रन्थों में नहीं हुआ है। ये अज्ञाप्य में अज्ञानतुल्य भीमार्जुन दक्षिण गाम्भीर्य तन्त्र पर स्थित दादुर (दन्ती)

ग्राम क निवासी थ। इनक पितामह का नाम उगविभूति तथा पिता का नाम क्षमान् था। इन्होंने काशी म अपने गुरु स वद पुराण व्याकरण आदि का अध्ययन किया था। पुण्यात्तमत्स विरक्त थ। गुरु की कृपा से उनक हृदय म राम भक्ति का स्फरण हुआ था। कवि ने ग्रंथ की रचना तिथि सवत १५९८ चत्र शुक्ल प्रतिपदा चत्वार ल्या है। उपर्युक्त प्रति का लिपिबद्ध सवत १८९९ है। इस ग्रंथ म ६९ अध्याय हैं। मत्ताइसवें अध्याय से अडतीसवें अध्याय तक के बारह अध्याय म कुशाब्बापाख्यान का बणन किया गया है। कुशाब्बा ख्यान म घात्री वतात गोकापवाट क भय से सीता का निवासन बाल्मीकि आश्रम म लव कुश का जन्म ब्रह्महत्या लोप निवारण क हेतु सीता की स्वपनयी प्रतिमा क साथ राम द्वारा जन्मोत्सव का अनुष्ठान यणिय अन्व के लिए कुश लव का गनधन लक्ष्मण भरत तथा राम क साथ युद्ध बाल्मीकि द्वारा सना का जीवित करना तथा कुश लव क राम का मतानहो का सूचना देना सीता क साथ राम का जयोध्या लाटना तथा जन्मोत्सव पूण करना बणित है। कुशाब्बा पाख्यान की कथा सुश्रावत है। जन्मोत्सव अध्याय क कुछ जग नाथ उद्धत लिख जाने हैं—

बाल्मीकिवाच—

मुन राम एव बोल हमार। कुश लव दाना पुत्र तुम्हारा ॥
 तुमहि रामरचना पनवार्। पुत्रन क तुम सीता बगार् ॥
 सीता क दानउ बनजाग। तुम । काह नर्ग प्रनिपाग ॥
 हमरे तपन तुमरी सागा। तुम्हारा हमर सीता रागा ॥
 रामप्रसाद भयउ दा वीग। तुम्हारा कृपा जभट पराग ॥
 सीता भवन रामका जागा। कन्व जहे पुण्यात्तम रामा ॥
 बाल्मीकि ऋषि सीता आनी। रत्तिनि चरण कमर मनवानी ॥
 जन्मोत्सव परवृत्त जना। राम कान माता ममागा ॥
 बाल्मीकि ऋषि मत्र परिवारा। कुश लव राम बगण पुति राग ॥
 रामहि जन्म वत्तउ मन राग। राम मुतन क दान बगार् ॥
 कुश लव राम प्रकमा राग। रामचन्द्र बगणा अति बाग ॥
 मत्र रस मात्रि निपा राग। चन्मय कुश लव राउ भाग ॥
 बाल्मीकि ऋषि मुन मगा। र्ति बगणा क लुपभगा ॥
 रामचन्द्र गिर छत्र दिगाग। भगन गभन्व लक्ष्मिन मागा ॥
 सीता भुवन वादन ददवाप। र्ति रिरि राम जयोध्या जाप ॥

सब कौनस्युं भव उभाव। गात्र नां वं मां गाय ॥
 जनता वे वाच कुं षण्ण। वृद्धिदि विषम भव अण्ण ॥
 सयं अण्ण कुं वं गण्ण। प्रभुं वं गं जयाणं नण्ण ॥
 मुनु अण्ण तुम जनमजय राजा। एणं अण्ण उण्ण युं वं भाजा ॥
 नमिदि नपया वं नमयां। मुनं वं उण्णि नय जाणि नगां ॥
 नम कुं गण्णि नया जनुजा। अण्ण वं भ्रुवाण्ण अण्ण नूना ॥
 वृद्ध एण्ण रामचन्द्र मग्राया। मुनं वं नय जिम भा विधामा ॥
 निगिण्णिकाण्ण वं उण्णामा। गण्णि अण्ण वं वि वण्णि प्रयाणा ॥
 राम मुण्ण अण्णि गावा। निगि षिण्णि वाण्ण वाज उयावा ॥
 ममान्हि उण्ण गण्ण अवा। भक्तिण्ण पुण्णानम पाया ॥
 नमिदि वं मुनं नपयाया। मुनं वया निण्णाय उण्ण ॥
 रामचण्णि मुनं मन लाइ। न्हिण्ण पण्ण उण्ण वं जा ॥
 कण्णामाण्ण प्रभुं वं नामा। अण्ण निदि महा विरामा ॥
 वं पुन वं प्रभुं वं मां। मनयाण्णि वं उण्णि उण्ण ॥
 गण्ण महाप्रभु उण्ण अयाग। जग वण्णि वं वान पनाण ॥
 उण्ण वं वक्ति वं भां। उण्ण वं उण्णि पुं वं गण्ण ॥
 मण्णतनु वण्णि अण्ण वं वाना। भक्तिण्णु नय मुं वं गण्ण ॥
 वं जया वं वण्णि उण्ण। वं वण्णि वं उण्णि उण्ण ॥
 वं उण्णि वं उण्णि उण्ण। कण्णि वण्णि वण्णि उण्ण ॥
 वण्णि उण्णि उण्णि उण्ण। मणि हमारि वं नं जाइ ॥
 नक्तवण्ण प्रम रहै न याया। मण्ण तनु वण्णि मण्ण निण्णारा ॥
 उण्णि प्रण्ण निमिष म वण्ण। वण्णि न जाइ उण्ण जा वण्ण ॥
 उण्णि मुण्ण वं पुण्णामा। वण्ण पुण्णानम वण्णि वण्णामा ॥
 उण्णि उण्ण वं वं जा पाय। वया मुनं गण्ण वित्त गण्ण ॥
 वण्णि उण्ण वं हां उण्णामा। गण्ण वण्णि उण्ण वं अण्णामा ॥
 वित्त उण्ण उण्णि उण्णामा। वण्णामा मुण्ण वण्णि उण्णामा ॥
 पुं वं वण्ण गण्ण वं हां। मुनं वं गण्ण वया नं मां ॥
 मुनं वं वया हर नपुराणा। वण्ण नं नं वण्णि उण्णामा ॥
 गण्ण मुण्ण मण्ण वं भाय। वं मुनं गण्णि वित्त गण्ण ॥
 गण्ण वं उण्णामा गण्ण। जाया गण्ण गण्ण मा उण्णामा ॥
 मुण्णामा उण्ण हं वं मुण्णामा। मुण्णामा उण्ण वया अण्णामा ॥
 वं निगुण्ण वण्ण वं वाना। उण्णामा उण्णि वित्त गण्णामा ॥

दाहा—

पुण्यात्तम जन चातक स्वानि सलिल धनयाम ॥

जह तह कितह राखहू जनि विसरो भगवान ॥३०॥

इति श्री महाभारते अश्वमेधपर्वणि लवकुशापास्यान नाम अष्टत्रिंशत्तमोऽ
ध्याय ॥३८॥

परिशिष्ट—ख

सहायक-ग्रन्थ

- जगत्स्य सन्निता—स० प० रामनारायण दास, अयोध्या १८९८ वि०
 अध्यात्म रामायण—गाता प्रम, गोग्गपुर सवत २०१७
 अपभ्रंग साहित्य—डा० हरिवंग काठ हिन्दी अनुभवान परिपत्र दिल्ली विश्व
 विद्यालय २०१२ वि०
 अभिमान गाकुत—वाग्दिनाम स० श्री एम० आर० काले बम्बई १९२४ ई०
 अष्टछाप और बल्लभ संप्रदाय—डा० दानदयाल गुप्त हिन्दी साहित्य सम्मेलन
 प्रयाग स० २० ४
 अष्ट्याम—स्वामी अग्रदास स० रामबल्लभगरग जानकीघाट अयोध्या १९८०
 विप्रमी
 अष्ट्याम—रामचरणदास छाटला श्रीवद्व जयोध्या १९५७
 आश्रित्य (गुरुग्रन्थ साहब)—तरणतारण सस्करण, भाइ माहर्नामिह
 आनन्द मानव्य—रघुवर वसन्ती रामानन्दीय वणव महामण्डल अयोध्या
 १९८६ विप्रमी
 आमर भंडार की हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची—डा० बन्धुवर कामनीवाल
 जयपुर १९५० ई०
 आल्वार चारितामृत—श्रीवद्व वैकटवर प्रम बम्बई १९८९ विप्रमी
 उत्तर रामचरित—भवभूति स० श्री एम० आर० काले बम्बई १९३४ ई०
 उत्तरा भारत की सत परम्परा—ग० परशुराम चतुर्वेदी, भारती भण्डार प्रयाग
 सवत २००८
 बजार—ग० हजारीप्रसाद द्विवेदी बम्बई १९५०
 बन्ध्याग—गीताप्रम तीपाव भक्त चरिताव गताव हिन्दू मन्त्रि अक
 गीत गावि—श्री वैकटवर प्रम बम्बई १९६७ विप्रमा
 चन्द्रवर्मा जीर उवा काव्य—ग० विपिन चिन्तरी त्रिवेणी प्रयाग १
 जन गुजर कवि (गुजराना)—ग० माहर्नाम दयाल दग्ग, बम्बई ग० १
 जन साहित्य और इतिहास—नाथूराम प्रसाद बम्बई १९४० ई०

तुलसीनाम—१० माताप्रसाद गुप्त हिन्दी परिषद् प्रयाग विश्वविद्यालय
१९५३ ई०

तुलसी दान—१० बन्धु प्रसाद मिश्र साहित्य सम्मेलन प्रयाग १९३८

तुलसी ग्रथावली—नागरी प्रचारिणा सभा १९८० विक्रमी

दशावतार चरितम्—श्रीमेद निणय नागर प्रस १९२० ई०

पउम चरिउ—स्यभू स० हरिवल्लभ मायाणी भारतीय विद्या भवन बम्ब
सवत २००९

पउम चरिउ—स्यभू भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण कागा १०४४

पउम चरिय—विमल सूरि भावनगर १०१४ ई०

पउम पुराण—रविपण माणिक चन्द्र जन प्रथमांग प्रवइ स १९८५

प्रसंग पारिजात—चेतनाम सपादक-भगवद्दाम जयाध्या १९५१ ई० जीर
रामरत्ना निपाठी अयोध्या स० २००५ वि

प्राकृत पद्यम्—स० भोलानाथ व्यास प्राकृत द्रष्टु सामाज्य वाराणसी
१९५९ इ

प्राकृत साहित्य वा इतिहास—१ जगन्नाथ चन्द्र जन चौगम्भा विद्या भवन
वाराणसी १९६१ ००

प्राचीन गजर् काव्य—गायकवाण जादियन् सीराज स० १३ १९२ ००

पथ्वीराज रागा—नागरी प्रचारिणा सभा स माहन्नाथ विष्णुनाथ पाडवा
कागा १९१२ इ

पथ्वीराज रागा—एक समाग—१ विपन त्रिगरी त्रिना पाण्ड प्रकाशा
प्रथम सम्परण लगनऊ १०६४ इ

पुरातन प्रवइ मग्रह—सपादक मति त्रिनित्रय मिधी जन प्रथमांग प्रवइ
भक्तमा—रूपरत्ना नवर्त्तिका प्रम लगनऊ १०११

भक्तमा राम रमिकावण—रपराज मि बकन्ना प्रम बम्ब १०३१ त्रिना
भविष्य पुराण—निधय माण प्रम

भागवत—गान्धाम गारवपुर मदन १८

भागवत मद्रास—१ बन्धु उपाध्याय नागरी प्रचारिणा सभा १० विक्रमी

भारतीय जयभाषा जीर त्रिना—१ मुनातित्रमन् तर्त्री (त्रिना गम्बगा)
त्रिना १०५४

मिश्र बंधु विना—मिश्रबन्धु गण पुस्तक माण लगनऊ १००१ वि०

मयिनामन् एत अभिनयन एत—प्रधान मन्त्राण १० वामुद्वारा अग्रवाल
बन्धना १० ० ०

- मयिग साहित्य का इतिहास २ भाग—१० जयकान्त मिश्र
 युग सत—श्री भट्टराज म० श्री ब्रजविहारीरारा वृत्तवन, २००९ वि०
 रघु साहित्य का आलोचनात्मक परिचय—१० राजाराम जन (गान प्रबन्ध)
 प्राकृत गिनच इत्याचर मुजफ्फरपुर (बिहार) १९६४
 रघुवा—कालिदास निणय सागर प्रम बम्बई
 रघुस्यत्रय—जयप्रताप स० रामगान्ध्या जयाध्या १९९१ वि०
 राग कल्पद्रुम—सर्वज्ञानकर्ता वृत्तान्त राग सागर वगाय साहित्य परिषद
 कन्नडा १९१४ १९१६ २०
 राग रत्नाकर—वैकुण्ठ प्रम बम्बई
 राजस्थान के जन-गायन भन्सरा का ग्रन्थ प्रगल्भ—१० कामलाबाई जयपुर
 १९५४ २०
 राजस्थानीभाषा जीव साहित्य—१० मालाबाई मनारिया प्रयाग २००६ विप्रभा
 रामनाथ युष्कीप—हृदयम राम प्रभाकर जलनाथाट अयाध्या
 रामानन्द पद्धति—स्वामी रामानन्द म० रामानन्द नयाथाट मरठु नरन
 अयाध्या १९८८ विप्रभा
 रामानन्द पद्धति—स्वामी रामानन्द म० राम नारायण दाम अयाध्या
 १९१८ २०
 रामकथा (उत्पत्ति जीव विभाग)—१० कामिन्दुल हिन्दु परिषद प्रयाग
 १९६२ २
 रामनाथ गाविन्द—जयप्रव श्री वैकुण्ठ प्रम मद्रा १ ६६ विप्रभा
 रामानन्दमार्ग—१० विद्वानायमिध्व वाणिज्य गम्भारण १९६० ई०
 रामानन्द की शिवा गता—१० १० जगप्रसाद शिवा नागरा प्रवाग्नि
 गभा वागा २ १२ विप्रभा
 रामभक्ति गाथा—१० रामनिरन्तर पाण्ड्य केरात्रा १९६० २०
 रामभक्ति म रगित मप्रथाय—१० भगवान्प्रसाद मिह बरगामपुर म० २०१६
 रामभक्ति म कथर उनाता—श्री अनन्तरनाथ मिश्र पटना १९५३ २०
 रामायणम्—गुण्डा म० पी ए० वसु माणिकवन्दर जन प्रथमाय बम्बई
 १९६ २
 रामायणम्—नानाशाम जनरत्नजिनागरा राग अयाध्या १ १ २०
 रावणरक्षा-मनुष्य—१९८० ई०
 रावणनाकर—१० शुभानि शुमार चारुया श्री वचना निर रावण एनिपात्रि
 रामायणी वगाय बम्बई १९६० ई०

बाल्मीकिय रामायणम्—स० पाण्डेय रामनरुण गान्धो पण्डित पुस्तकालय काशी
१९५१ ई०

बाल्मीकिय—प० परशुराम चतुर्वेदी प्रयाग १९५३ ई

बाल्मीकियना सन्निहित इतिहास—दुर्गाकर केवलराम गान्धो बम्बई
१९३९ ई०

बाल्मीकिय रत्नाकर—गापालनाम वैकटकर प्रम बम्बई

बाल्मीकिय मता जभाष्यर—स्वामी रामानन्द स० रामचन्द्र दास नयाघाट भरपूर
भावन अयोध्या

बाल्मीकिय मता जभाष्यर—स्वामी रामानन्द स० भगवन्नाथ अहमदाबाद
१९८६ वि०

गिरिसिंह सराज—गिरिसिंह सेंगर स० रघुनारायण पाठ उखनऊ १९२६ ई०

साताराम चाणई—स० अणुचन्द्र नाहटा वाकानर स० २ १९

सूरसारवली एक अप्रमाणिक रचना—ग० प्रमनारायण टण्डन उखनऊ
१९६१ ई०

सूररामचरितावली—गाताप्रम गारवपुर सवत २०१४

सूरसागर—स० न० दुलारे वाजमया नागरी प्रचारिणी सभा सस्करण
स० २०१५

सूर पूत्र ब्रजभाषा और उमका साहित्य—ग० गिरि प्रसाद सिंह हिन्दी प्रचारक
पुस्तकालय वाराणसी १९५८ ई

सूरराम—डा० ब्रजेश्वर वर्मा हिन्दी परिषद प्रयाग १९५० ई

संस्कृत साहित्य का इतिहास—स० बाल्मीकिय उपाध्याय काशी २०१२ विक्रमी

हनुमन्नाटक—गमान्तर मिश्र गान्धी वैकटकर प्रम बम्बई स० २०१५ वि०

हरिश्चन्द्र—श्रीवत्साम राजस्थान रिमब सातायटा कलकत्ता स० १९९५ वि०

हस्तालिखित हिन्दी प्रथा की खाज का विवरण—नागरी प्रचारिणी सभा काशी
१९००-१९४६ इ

हिन्दी का मध्यकालीन काल काव्य—ग० निवाराम निवारा हिन्दी साहित्य
समाज दिल्ली १९६४

हिन्दी साहित्य का इतिहास—आचार्य रामचन्द्र गुरु नागरी प्रचारिणी सभा
काशी स० २००७ वि०

हिन्दी साहित्य का आन्वयनात्मक इतिहास—ग० रामदुमार वर्मा सगोविन्द
संस्करण स० १९४४ इ

हिन्दी साहित्य का इतिहास—ग० इन्दारा प्रसाद त्रिपाठी बम्बई १९४० ई०

- हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक—डा० हजारायभाट्ट द्विवेदी प्रयाग १०५० इ०
 हिन्दी काव्य में निगण मन्त्राय—डा० कवचाचल अनु० परशुराम चतुर्वेदी अवध
 परिचिन्त हाउस, लखनऊ, २००७ वि०
 हिन्दी साहित्य (विनायक)—भारतीय हिन्दी परिषद् प्रयाग १९५९ इ०
 हिन्दी साहित्य का कृत इतिहास—नागरा प्रचारिणी मन्ना कागा
 हिन्दी काव्य धारा—रत्न साहित्यायन प्रयाग १९४१ ई०
 हिन्दी साहित्य का—ज्ञानमण्डल कागा
 हिन्दु साहित्य का इतिहास—(तामा) हिन्दी सम्स्करण डा० लक्ष्मीनाथ धारणीय
 हिन्दु—रामनाथ गौरी कागा स० १०९१

हस्त लिखित ग्रंथों की सूची

- अज्ञान पत्र—रत्न साहित्यायन रचनाकार मदन १५८ प० आनन्द त्रिपाठी ग्राम
 दरवाणपुर डा० भगवारा जिन्दा साहित्यायन क पाप मुग्धित।
 बुद्धिया—स्वामी अज्ञानम (मूल्यायन क मन्नामन्त्रिक) नागरा प्रचारिणी मन्ना
 मन्ना म।
 ध्यान राग—स्वामी रामानन्द रचनाकार पन्ना गती विष्णु नागरा
 प्रचारिणी मन्ना मन्ना म।
 ध्यान मन्त्रा—स्वामी अज्ञानम नागरा प्रचारिणी मन्ना मन्ना म।
 पन्नायन—स्वामी अज्ञानम प्रति डा० भगवारा प्रमत्त सिंह गान्ध्यापुर सिन्धुविद्या
 मन्ना क पाप मुग्धित।
 पद्म चरित—विनय गम्भीर रचनाकार मदन १६०४ गौडाजा मन्ना उदयपुर म।
 पद्म पुराण—रत्न रचनाकार मदन १४०६ आनन्द गान्ध्यामन्त्रा मन्ना म
 मुग्धित।
 परमगाम नागर—परशुराम देव १६४ गगा प्रति नागरा प्रचारिणी मन्ना म
 मुग्धित।
 भक्त विद्या—रत्नरदाय रचनाकार ११८ वि० नागरा प्रचारिणी मन्ना म
 मन्ना म।
 माया वातनाथ रामायण—विष्णुनाथ रचनाकार म० १४०० ध्मनिगिन्त
 म्मुजियम, इत्यायन म मुग्धित।
 मन्नायन कथा—विष्णुनाथ रचनाकार म० १४०० प्रति मन्नायन मन्ना म
 मन्ना म।
 रामायण—रत्न विद्यायन रचनाकार म० १५०० प्रति मन्नायन मन्ना म
 मन्ना म।

राममाना राम—गणकानि प्रति ननदा उन भण्णर जयपुर म सुरक्षित।

रावण मन्दादरी सवाल्—मुनि गवष्य रचनाकाळ १५०० वि० ऐल्कपत्रालाल
निगम्बर जन सरस्वती भवन बम्बई मे सुरक्षित।

रुक्मिणी मंगल—विष्णुदास रचनाकाळ सवत १४९२ नागरी प्रचारिणा सभा
सग्रह म सुरक्षित।

सरस्वती कथा—ईश्वरदास रचनाकाळ सवत १५५८ नागरी प्रचारिणी सभा
सग्रह म।

गङ्गासागर—नागरी प्रचारिणी सभा सग्रह म सग्रह ग्रथ।

सीता चउपई—ममयध्वज रचनाकाळ सवत १६११ हंमविजय लाइबरी वगैरा
म सुरक्षित।

साता प्रबन्ध—रचनाकाळ सवत १६२८ प्रति नाहर जा क सग्रह म
कवता।

सीता चरित—हेमरत्न मूरि महावार जन विद्यालय तथा अनन्त भण्णर बम्बई
एव वगैरा म सुरक्षित।

सीता चरित भाषा—रचनाकाळ १६वा गताळा प्रति श्री अगररत्न नाहरा
क सग्रह म।

मवाणम की बानी—नागरी प्रचारिणा सभा सग्रह म। सग्रह ग्रथ।

हनुमान चौपाई—ब्रह्मराय मल्ल रचनाकाळ सवत १६१६ जन पचायती मन्दि
रिल्ली म सुरक्षित।

हनुमान चरित—मुत्तदाम रचनाकाळ सवत १६१६ जन पचायती मन्दि
रिल्ली म सुरक्षित।

नामन कथा—रायम रचनाकाळ सवत १६१६ जन नाम्म भण्णर जयपुर
म प्रति सुरक्षित।

विदेशी भाषाओं के ग्रथ

अर्गे हिन्दू आफ बगैरा मन्त्र—राय चौधरी कवता १ ०

जननात्र त्रिरचर—ग० विरचिबुमार बगैरा कवता १ ६१ गवताय पा
त्रिर वन जापसम आफ अर्गे जननात्र त्रिरचर गुवागरी
विश्वविद्यालय १ ०

जाम्बान रिगामन मन्त्रम जाप बगैरा—ग० एम नामगुप्त कवता
विश्वविद्यालय १ ६० ०

इसाइक्लोपीडिया आफ रिलीजन एण्ड एथिक्स—मम्पात्रक हेमिटरज एडिनबरा
१९२१

उत्तर डाम रामायण—ए० वेजर बर्लिन १८७०

ए हिस्ट्री आफ इलियन लिटरचर भाग दाना—एम० विटरनित्स कलकत्ता
१९३३ ई०

ए रक्षक आफ हिन्दी लिटरेचर—ए० ग्रीज १९१८

ए हिस्ट्री आफ हिन्दी लिटरचर—एफ ई० वे० हरिटरज आफ इडिया साराज
१९२०

एन आउट लाइन आफ रिलीजस लिटरेचर आफ इडिया—जे० एन० फकुहर
१९२०

एमेज आन दि रिलीजस संकल्प आफ हिन्दूज—एच० एच० विल्सन
बाण्डे बनेमोरेगन वाल्यूम—पूता १९४१

गुजरात एंड इटस लिटरेचर—क० मा० मुगी भारतीय विद्या भवन, बम्बई,
१९१४ ई०

नि जनल आफ नि रायउ एगियाटिक सासायटी जुलाई १९०७—जी० प्रियसन
नि मिल रिलीजन—मन्नालिफ आकमफाड १९०९ ई०

पुस्तिक देनाडग आन हिन्दू राइन्स एंड कस्टम्स—आर० सी० हाजरा ढाका
१९४०

भक्तिवन्त इन ऐगेंट इडिया—वा० वे० गाम्बामी कलकत्ता १९२२

ब्राह्मनिम एंड हिन्दूइम—मानियर विलियम्स १८९१

माइन ब्राह्मपूत्र लिटरचर आफ हिन्दुस्तान—सर जाज प्रियसन रायउ एगिया
टिव गामायटी १८८० =

बलादिम विम एण्ड माइनर रिजीजस गिल्लमा आफ इण्डिया—आर० जी०
भन्करुवर पूता १९२८

गगन लिटरेचर—ए० वा० वीथ आकाशा १ २८

रामसीता राम—गुणवार्ति प्रति ननवा जन भणार जयपुर म
मुरक्षित।

रावण मन्त्री सवा—मुनि गवण्य रचनाकाल १५ ० वि ऐश्वर्याला
दिगम्बर जन सरस्वता भवन बम्बई म सुरक्षित।

रुक्मिणा मन्त्री—विष्णुनास रचनाकाल सवत १४९२ नागरी प्रचारिणा सभा
सग्रह म सुरक्षित।

सरस्वती कथा—ईश्वरदास रचनाकाल सवत १५५८ नागरी प्रचारिणा सभा
सग्रह म।

गन्सागर—नागरी प्रचारिणी सभा सग्रह म सग्रह ग्रथ।

सीता चउपई—समयध्वज रचनाकाल सवत १६११ हमविजय लाइब्ररी बडौग
म सुरक्षित।

सीता प्रबन्ध—रचनाकाल सवत १६२८ प्रति नाहर जा बे सग्रह म
कलकत्ता।

सीता चरित—हेमरत्न मूरि महावीर जन विद्यालय तथा अनत भणार बम्बई
एव बडौग मे सुरक्षित।

गीता चरित भाषा—रचनाकाल १६वा गताब्दी प्रति जा अगरेच नाहटा
क सग्रह म।

सवादाम की बाना—नागरी प्रचारिणी सभा सग्रह म। सग्रह ग्रथ।

हनमान चौपाई—ब्रह्मराय मल रचनाकाल सवत १६१६ जन पयापनी मन्त्री
दिल्ली म सुरक्षित।

हनमान चरित—मुत्तम रचनाकाल सवत १६१६ जन पयापनी मन्त्री
दिल्ली म सुरक्षित।

नामन कथा—राम रचनाकाल सवत १६१६ जन नाम्भणार जयपुर
म प्रति सुरक्षित।

विदेशी भाषाओं के ग्रथ

अर्थे लिम्बा आफ बणव मन्त्री—राय चौधरी कन्ता १ २

अमनाज लिखर—ग० विरचिमुमार बन्ना बन् १०६१ गवण्य पाण
लिखर वस अम्पसम आफ अर्थे अमनाज लिखर गवाहाटी
दिव्यविद्यालय १ १०

नाम्भणार लिखर मन्त्री बन्ना बन्ना—ग० एम नाम्भणार कन्ता
दिव्यविद्यालय १०६० १०

सादरुणीडिया आफ रिजाजन एण्ड एजिकम—मम्पाक न्निन्न एन्निवरा
१९०१

उरुग नाम रामायण—ए० वजर बन्नि, १८७०

ए हिन्द्री आफ इन्डियन लिटरेचर भाग नाना—एम० रिन्निन्नि, कन्कना,
१९३३ ई०

ए रक्च आफ हिन्दा लिटरेचर—ए० ग्राज १९१८

ए हिन्द्री आफ हिन्दा लिटरेचर—एफ० ई० के० हरिद्वन आफ इन्डिया मारीज
१९२०

एन आउट लाइन आफ रिजाजस लिटरेचर आफ इन्डिया—ज० एन० फुडुहर,
१९२०

एमज आन दि रिजाजस सक्कम आफ हिन्दूज—एच० एच० विरसन
बागरे कमेमारेगन बाल्युम—पूना, १९४१

गुजरान एड इन्डियन लिटरेचर—क० मा मृगी भारतिय विद्या भवन बम्बई,
१९५४ ई०

नि जतल आफ नि रायल एगियात्कि मामायनी नुगई १००७—त्रा० प्रियमन
नि मिब रिजीजन—मकारिफ आकमफा १९०० २०

पुगानिक रकाडम आन हिन्दू गदरुम एड कम्पम—त्रा० मा० हाजग दाका,
१९४०

भक्तिवट इन एर्रे इन्डिया—वा० व० गाम्बामा कन्कना १९०१

शास्त्रनिम एड लिटरेचर—मानिमर रिन्निन्नि १८०१

मान्न वनीवपुन्नि लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान—ग० जाज प्रियमन गदरुम गिया
रिब सामायरी १८१९ ई०

बलाविग गविम एण्ड मान्नर रिजाजग मिन्निम आफ इन्डिया—त्रा० जी०
भगवन् पूना १९२८

गदरुम लिटरेचर—ए० वा० वीय बरमफा १९०८



रामगाना राग—गुणगानि प्रति ननवा जन भण्णार जयपुर म
सुराति।

रायण मन्त्री सवा—मुनि लावण्य रचनाकाल १५ वि० एन्कपत्राकाल
निगम्बर जन सरस्वता भवन बम्बई म सुराति।

रुक्मिणा मन्त्री—विष्णुगान रचनाकाल सवन १४९२ नागरी प्रचारिणा सभा
सग्रह म सुराति।

सरस्वता कथा—ईश्वरदास रचनाकाल सवन १५५८ नागरी प्रचारिणा सभा
सग्रह म।

गन्तसागर—नागरी प्रचारिणी सभा सग्रह म सग्रह ग्रन्थ।

सीता चउपई—समयध्वज रचनाकाल सवन १६११ हमविजय आइबरी वगैर
म सुराति।

सीता प्रबन्ध—रचनाकाल सवन १६२८ प्रति नाहूर जा क सग्रह म
कलकत्ता।

सीता चरित्र—हेमरत्न मूरि महावार जन विद्यालय तथा अनन भण्णार बम्बई
एव बडौल म सुराति।

सीता चरित भाषा—रचनाकाल १६वा गन्तव्यी प्रति था अगररत्न नाहूर
क सग्रह म।

सवादाम की बानी—नागरी प्रचारिणी सभा सग्रह म। सग्रह ग्रन्थ।

हनुमान चौपाई—ब्रह्मराय मल्ल रचनाकाल सवन १६१६ जन पचायती मन्त्रि
दिल्ली म सुराति।

हनुमान चरित—सुन्दरदास रचनाकाल सवन १६१६ जन पचायती मन्त्रि
दिल्ली म सुराति।

हनुमान कथा—रायमन् रचनाकाल सवन १६१६ जन गान्ध भण्णार जयपुर
म प्रति सुराति।

विदेशी भाषाओ के ग्रन्थ

जर्नी हिन्दी आफ बणव सक्ठ—राय चौधरी कम्पत्ता १९२

असमाज लिन्डेर—ग० विरचिकुणार बरुआ बम्बई १९८१ गान्ध पाण
टिन्ड बरुआ जाम्पकम् आफ अर्जी असमाज लिन्डेर गुवाहाटी
विश्वविद्यालय १९१९

जाम्पकार टिन्डिन्ड सक्ठम आफ बणा—ग० एम० गान्धुन कम्पत्ता
विश्वविद्यालय १९४ ई०

- इमारतगणविद्या आफ रिजर्जन एण्ड एडिशन—नम्यान्क डेव्लिप्ट एग्जिक्शन्स
१०२१
- नया नाम समायोजन—ए वज्रर बलिन् १८७०
- ए हिस्ट्री आफ इन्डियन लिटरचर भाग नाना—एम० विन्टरनिल कल्कता
१०३३ ई०
- ए रक्च आफ हिन्दा लिटरचर—ए० ग्राज १९१८
- ए हिस्ट्री आफ हिन्दा लिटरचर—एफ० इ० क० हरिश्चन आफ इन्डिया साराज
१९२०
- एन आउट लाइन आफ रिजोचमलिटरचर आफ इडिया—ज० एन० फकुहर,
१०२०
- एमज आन दि रिजोचम सक्चम आफ हिन्दूज—एच० एच० विल्सन
काण्डर कममारागन वाल्यूम—पूना १९४१
- गुजरात एण्ड इन्डियन लिटरचर—क० मा० मुगी भारताभ विद्या नवन बम्बई,
१९५४ ई०
- हि जनेल आफ हि रायल एगियाटिक सामायटी गुगाइ १९०७—जी० प्रियसन
हि मित्र रिजोचन—मकालिफ आकमफा १९०९ ई०
- पुराणिक रजाइम आन हिन्दू राइम एड कम्पेस—आर० सा० हाजरा डाका
१९४०
- भगिन्ट इन एण्ड इडिया—गो० क० गास्त्रामा कल्कता १९२०
- ब्राह्मणिक गड हिन्दूज—मानियर विलियम् १८९१
- माडन ब्राह्मणिक लिटरचर आफ हिन्दुस्तान—मर जाज प्रियसन गण्ड एगिया
ति सामायटी १८८० २०
- बलाविण विन्ड एण्ड मानर रिजोचन मिस्त्रम् ताप इन्डिया—आर० जा०
नडारकर पूना १०२१
- गगन लिटरचर—ग० वा० पाथ आकनगाड १ २८